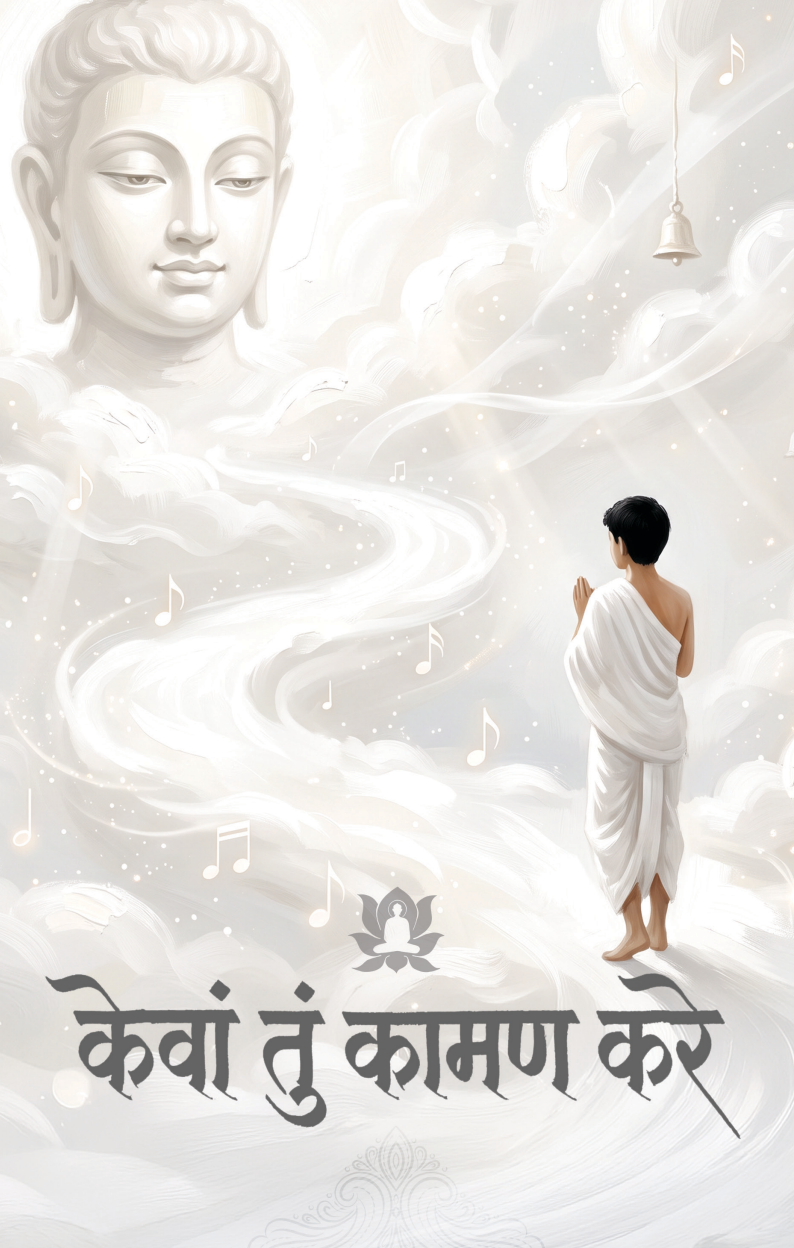
केवां तुं कामण करे



शत्रुंजय तीर्थाधिपति
श्री आदिनाथ प्रभु

गिरनार तीर्थाधिपति
श्री नेमिनाथ प्रभु

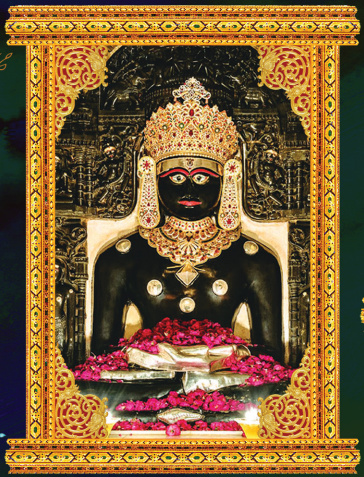



कलिकाल कल्पतरु
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ
प्रभु

सहसाधिक दीक्षादाता
प.पू.आ.भ.श्री सिद्धिसूरीश्वरजी महाराजा



समतामूर्ति, अप्रमत्तता के शिखर
प.पू.आ.भ.श्री भद्रसूरीश्वरजी महाराजा



गुरु स्तुति

जस नामे सिद्धि, कामे सिद्धि, सिद्धि के भंड़ार हैं,
जस दरिशने सिद्धि हुए, सिद्धिसूरीश्वर नाम हैं;
जस वचने सिद्धि, स्मरणे सिद्धि, शरणे पाप निकंदना,
सिद्धिदायक सिद्धि गुरु को भाव से करूँ वंदना...
भद्रदायक भद्र गुरु को भाव से करूँ वंदना...







संघ एकता के शिल्पी
प.पू.आ.भ.श्री ॐकारसूरीश्वरजी महाराजा

ऊर्जा तीर्थ समान
प.पू.आ.भ.श्री अरविंदसूरीश्वरजी महाराजा

गुरु स्तुति

प्रशांत मुद्रा, उपशांत दृष्टि, हैये वसी जेहने समष्टि;
ॐकारसूरीश्वर उपकारी, गुरु तमोने वंदना अमारी
अरविंद सूरीश्वर उपकारी, गुरु तमोने वंदना अमारी



भक्तियोगाचार्य
आ.भ.श्री यशोविजयसूरि महाराजा



शास्त्रसंशोधक
आ.भ.श्री मुनिचन्द्रसूरि महाराजा



सद्गुरु चरणोपासक
आ.भ.श्री राजपुण्यसूरि
महाराजा



आध्यात्मिक प्रवचनकार
आ.भ.श्री भाग्येशविजयसूरि
महाराजा

भक्तियोगाचार्य पूज्यपाद
आ.भ.यशोविजयसूरि महाराजा के
विहार-वाचना-प्रवचन-साहित्य-साधना
वग़ैरह के DAILY UPDATES (रोज़ के समाचार) के लिए
गुरुभक्तों द्वारा
"YASHO BHAKTI" ग्रुप का निर्माण हुआ है।
"यशो भक्ति" ग्रुप में JOIN होने के लिए SCAN कीजिए:

वोट्सएप ग्रुप

Yasho Bhakti

टेलीग्राम ग्रुप

अथवा 'PRANAM' मैसेज कीजिए 83478 96000

/YashoBhakti

॥श्री सिद्धि-भद्र-ॐकार-अरविंदसूरि सद्गुरुभ्यो नमः॥

• आशिष दाता •

भक्तियोगाचार्य प.पू.आ.भ.श्री यशोविजयसूरि महाराजा

शास्त्रसंशोधक प.पू.आ.भ.श्री मुनिचन्द्रसूरि महाराजा



Tapasvi Taro Jay Jaykar

प.पू.पंन्यास प्रवर

श्री श्रुतरत्नविजय म.सा.की 67वीं ओली

तथा उनके शिष्यरत्न प.पू.मुनिराजश्री

श्री कृपासिंधु विजय म.सा. [कुलदीपक] **का द्वितीय मासक्षमण तप**

तथा उनके प्रशिष्य प.पू.मुनिराजश्री

श्री यशोहृदय वि.म.सा. [भानेज म.सा.] **की 9वीं ओली निमित्ते**

कोरडीया लीलाबेन डाह्यालाल
वालचंदभाई परिवार (असारा)

॥श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः॥
॥श्री शत्रुंजय तीर्थाधिपति श्री ऋषभस्वामिने नमः॥
॥गिरनार मंडन श्री नेमिनाथाय नमः॥
॥श्री सिद्धि-भद्र-ॐकार-अरविंदसूरि सद्गुरुभ्यो नमः॥

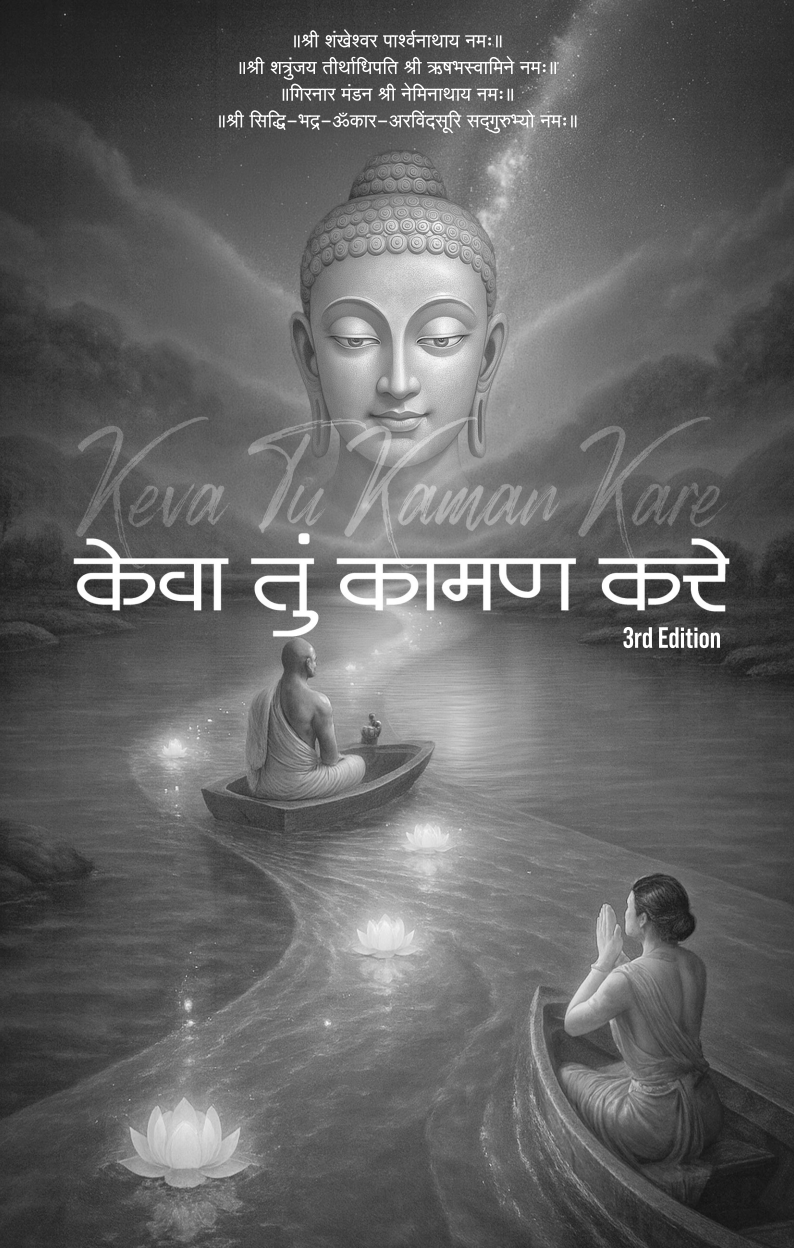

Keva Tu Kaman Kare

केवा तुं कामण करे

3rd Edition

आवृत्तिः **तृतीय – वि.सं.२०८३**

नकलः प्रथम आवृत्ति : ४०००, द्वितीय आवृत्ति : ३०००
तृतीय आवृत्ति : ९०००

मूल्यः **100/- Also Available in Gujarati**

प्रकाशकः **ॐकार परिवार – +91 99037 30108**

मुद्रकः PARMESHWAR STUDIOS
+91 99017541180

प्राप्तिस्थानः

सुरतः **ॐकारसूरि आराधना भवन-पाल**
गीरीशभाई वावडी–94284 53549
ॐकारसूरि आराधना भवन, गोपीपुरा
ॐकारसूरि आराधना भवन, वेसु
अंजल – 99307 30108
कैलाशनगरः वर्षिल – 96879 00271

अहमदाबादः **वावपथकनी वाडी-पालडीः** नीलेशभाई – 94276 05785
पालडीः जैनम – 94298 91145
कृष्णनगरः ध्रुवेन – 99984 55624

मुंबईः **अंधेरी**/B.K.C. - 98335 71776
B.K.C.: जीगरभाई वडेचा – 9820575677
गोरेगांवः नीशीतभाई – 9819298666
भायंदरः चिंतन – 98920 59590
दादरः दीक्षीतभाई – 86690 92368

बेंगलोरः हर्षिलभाई – 99000 19754
पुनाः मुकेशभाई – 98257 60988
चेन्नईः उमेशभाई बुरड – 99625 75331,
मयुरभाई बुरड – 99628 88844
हुबलीः गवेष जोगाणी – 87627 95251
भावनगरः विरागभाई – 94277 55360
राजकोटः विशालभाई – 99099 10557
हिंमतनगरः जयाबेन – 74900 39470
डीसाः आयुष – 92653 10694

इस पुस्तक के विषय में कोई भी सूचन हो तो 'केवा तुं कामण करे'
टाइटल लिखकर 98792 59460/98335 71776 पर वोट्सअप करें।

• प्रस्तावना •

કવિવર રવીન્દ્રનાથ ટાગોર એક પ્રાર્થનામાં કહતે હૈં:

'આમિ સંસારે મન દિયે છિનુ,
તુમિ આપની સે મન નીયે છ...'

(મૈંને મેરા મન સંસાર કો દિયા થા,
પ્રભુ! તુમને ઉસ મન કો તુમ્હારે પાસ
રખ લિયા!)

યહી તો હૈ ઉસકા પ્રેમ!

એક ક્ષણ!... હા, એક ક્ષણ પ્રભુ કો દેખા,
હમ ઉસકે હો ગએ!

પરમપ્રેમ કી બાતેં સુની થી, મન
ઉસ કે લિએ લાલાયિત ભી થા; ઔર
પ્રભુ ને ઉસ કે બાંહોં મેં હમેં થામ લિયા!
કૈસે વો સ્વર્ગીય ક્ષણ...

ઉન સ્વર્ગીય ક્ષણોં કા આનંદ
બારબાર લેને કે લિએ યહ ભક્તિ-
સંગીત કી હૃદયંગમ પુસ્તક।

૬/૨/૨૩
અન્નબીસજી મહારાજ

• प्रस्तावना •

महोपाध्याय यशोविजयजी गणिवर ने गाया है –

मुक्ति थी अधिक तुज भक्ति मुज मन वसी'

भक्तहृदय को भक्ति करने की तलप होती है। यदि मोक्ष में जायेंगे तो, भक्ति कैसे करेंगे ? यह समस्या भक्त-हृदय को परेशान करती है।

ऐसे प्रभुभक्तों के हृदय से प्रगट हुए स्तवन-गीत आदि का अनूठा संग्रह है –

'केवा तुं कामण करे'

यहां हर पन्ने पर, हर पंक्ति पर भक्तकवियों के हृदयोद्गार हैं। कहीं प्रभुमीलन का आनंद है, कहीं विरह की व्यथा है

भक्त कवियों की अंगुली पकड कर चलो भक्ति-यात्रा करें।

गुजराती लिपि में इस लघु-पुस्तिका की लाख आवृत्तियां परिपूर्ण हो चुकी हैं।

अनुपम आवृत्ति में हिंदीभाषी लोगों की मांग को ध्यान में रखकर हिंदी लिपि (देवनागरी) में प्रकाशित हो रही है।

हिंदीभाषी सभी इसके माध्यम से भक्ति में डूबे यही कामना।

आ. विजय मुनिचन्द्रसूरि

तृतीय आवृत्ति के प्रकाशन के समय

श्रीसंघ की एकता के लिए अपना जीवन समर्पण करनेवाले वि.सं.२०४४ के श्रमण सम्मेलन के मुख्य सूत्रधार, प.पू.आ.भ.**श्री ॐकारसूरीश्वरजी महाराजा** के शिष्य पट्टप्रभावक, भक्तियोगाचार्य प.पू.आ.भ.**श्री यशोविजयसूरीश्वरजी महाराजा** के मंगल आशीर्वाद तथा अप्रमत्तता के एवरेस्ट सम प.पू.आ.भ.**श्री मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा** की प्रेरणा से तथा सद्गुरु चरणोपासक प.पू.आ.

भ.**श्री राजपुण्यसूरीश्वरजी महाराजा** तथा आध्यात्मिक प्रवचनकार प.पू.आ.

भ.**श्री भाग्येशविजयसूरीश्वरजी महाराजा** की प्रेरणा और मार्गदर्शन से प.पू.मु.**श्री ह्रींकाररत्नवि.म.सा.**के मार्गदर्शन में '**श्री ॐकार परिवार**' सुंदर शासनभक्ति कर रहा है।

'**केवा तुं कामण करे**' पुस्तक, जिसमें स्तवन और भक्तिगीतों के बाज़ू में QR Code होने से श्रावकवर्ग ने ऐसा उल्लासभरा प्रतिसाद दिया कि अल्प समय में आज तक ३५००० से अधिक नकलें पूरी हो चूकी हैं। ऐसी अकल्पनीय सफलता मिली होने से और बावजूद इसके बहुत माँग रहती होने से साधु-साध्वीजी भगवंत की प्रेरणा से नये स्तवन, भक्तिगीत जोड़कर गुजराती की सातवीं और हिन्दी की द्वितीय आवृत्ति प्रकाशित करने का निर्णय किया है।

'**केवा तुं कामण करे**' पुस्तक के आधार से प्रभुभक्त प्रभु में मग्न बने रहे यही एक मात्र अभिलाषा...

लि.ॐकार परिवार

'केवा तुं कामण करे' की विशेषता

- नमस्कार महामंत्रमय प्राचीन श्री वज्रपंजर स्तोत्र, परमात्मा-भक्तिमय श्रीवर्धमान शक्रस्तव स्तोत्र तथा महामंगलकारी श्री भक्तामर स्तोत्र से मंडित...
- संस्कृत एवं गुजराती चौबीस भगवान के थोय जोड़े...
- श्री शत्रुंजय महातीर्थ, २४ तीर्थंकर, सीमंधर स्वामी, सामान्यजिन, पर्व तिथि के स्तवनादि और हृदयस्पर्शी अर्वाचीन गीतों से संगृहीत...
- नवकार मंत्र आराधक पंन्यासजी म.सा. और अध्यात्मयोगी, परमात्म रसिक कलापूर्णसूरि म.सा.ने जो देवचंद्र चौबीसी अने आनंदघन चौबीसी घूँटी थी, उस चौबीसी से अलंकृत...
- यशोविजय चौबीसी, मानविजय आदि चौबीसी के प्रचलित स्तवनों से तरबतर...
- चौमासी देववंदन के चैत्यवंदन, स्तवन, थोयों से युक्त....
- अनेक भाविकों को प्रभु की भक्ति करने की इच्छा होती है, लेकिन राग न आता होने से और कंठस्थ करने की क्षमता न होने से वे भक्ति कर नहीं पाते हैं। इसलिए स्तवन और भक्तिगीत के बाज़ू में QR Code से राग प्राप्त कर सकता है तथा सुनते-सुनते स्तवन-भक्तिगीत जल्दी याद हो जाते हैं इसलिए अधिकांश स्तवन-नूतन भक्तिगीतों के बाज़ू में QR Code दिये गये हैं, कि जिससे भक्त उसे Scan करके परमात्म भक्ति में लयलीन बन सकता है।
- तथा इस पुस्तक के पीछे के Cover Page पर रहे हुए QR Code को Scan करके इस पुस्तक की PDF को अपने Mobile में Download भी किया जा सकेगा।
- इस पुस्तक के पीछे प्राचीन स्तवनों की अकारादि क्रम के साथ अनुक्रमणिका दी गई है।
- अंतिम पृष्ठ पर सुबह-शाम के पच्चक्खाण दिये गये हैं...

'केवा तुं कामण करे' COLLECTION

स्तुतिः ९२ स्तवनः 333 भक्तिगीतः २२६

..अनुक्रमणिका..

श्री वज्रपंजर स्तोत्र ०९
श्री वर्धमान शक्रस्तव ०२
श्री भक्तामर स्तोत्र ०७
चैत्यवंदन विधि १५
परमात्म स्तुति विभाग २१
प्राचीन संस्कृत स्तुतियाँ २१
परमात्मा की भाववाही स्तुति २३
श्री सिद्धाचल महातीर्थ ३६
::चैत्यवंदन::
(१) विमल-केवल-ज्ञान... ३६
(२) श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र... ३७
(३) सोना रुपाना फूलडे... ३७
::स्तवन::
(१) आज मारां नयणां सफळ... ३८
(२) ऊंचा ऊंचा शत्रुंजयनां... ३८
(३) ऐसी दशा हो भगवन... ३९
(४) क्युं न भये हम मोर... ४०
(५) गिरिवर दरिसण विरला... ४०
(६) प्रीतलडी बंधाणी रे विमल... ४१
(७) बापलडा रे पातिकडा तुमे... ४२
(८) गिरिराजकुं सदा मोरी... ४३
(९) भरतनी पाटे भूपति रे... ४३
(१०) मनना मनोरथ सवि... ४४
(११) मारुं मन मोह्युं रे... ४५
(१२) यात्रा नव्वाणुं करीए... ४५
(१३) विमलगिरि विमलता... ४६
(१४) विमलगिरि शिखर सुंदर... ४६
(१५) विमलगिरि वंदो रे... ४७
(१६) विमलाचल नितु वंदीए... ४८
(१७) शत्रुंजय गढना वासी रे... ४८
(१८) शोभा शी कहुं रे शेत्रुंजा... ४९
(१९) सिद्धाचल शिखरे दीवो रे... ५०
(२०) सिद्धाचलगिरि भेट्या रे... ५१
(२१) सिद्धाचलना वासी... ५२
(२२) सिद्धाचलनो वासी प्यारो... ५२
श्री रायण पगला 55
::चैत्यवंदन::
(१) एह गिरि उपर... ५५
::स्तवन::
(१) नीलुडी रायण तरु तळे... ५५
श्री पुंडरिक स्वामी ५७
::चैत्यवंदन::
(१) आदीश्वर जिनरायनो... ५७
::स्तवन::
(१) एक दिन पुंडरीक... ५७
श्री आदिनाथ भगवान ५९
::चैत्यवंदन::
(१) आदिदेव अलवेसरु... ५९
(२) कल्पवृक्षनी छांयडी... ५९
(३) प्रथम नाथ प्रगट प्रताप... ६०
(४) चिदानन्दलीला... ६०
::स्तवन::
(१) प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए... ६१
(२) ऋषभ जिणंद दयाल रे... ६२
(३) ऋषभ जिणंदशुं प्रीतडी... ६२
(४) ऋषभ जिणंदा ऋषभ... ६३
(५) ऋषभ जिनराज मुज आज... ६३
(६) ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम... ६५

(७) ऋषभदेव हितकारी... ६५
(८) जगचिंतामणि जगगुरु... ६६
(९) जगजीवन जगवालहो... ६७
(१०) तुम दरिसण भले पायो... ६७
(११) दादा आदीश्वरजी दूरथी... ६८
(१२) नाभिराया वंशे वारुं... ६८
(१३) बाळपणे आपण ससनेही... ६९
(१४) बालुडो निःस्नेही थई गयो... ७०
(१५) भक्तवत्सल प्रभु सांभळो... ७०
(१६) माता मरुदेवीना नंद... ७१
(१७) श्री जगनाथ जगगुरु देव रे... ७२
(१८) समरथ साहिब समता... ७२
(१९) सिद्धगिरि मंडण पाय... ७३
(२०) सुगुण सुगुण सौभागी... ७४
(२१) हुं तो पाम्यो प्रभुना पाय... ७५
श्री अजितनाथ भगवान ७८
::चैत्यवंदन::
(१) अजितनाथ प्रभु अवतर्या... ७८
::स्तवन::
(१) अजित अजितजिन... ७८
(२) अजित जिणंद दया करो रे... ७९
(३) अजित जिणंदशुं प्रीतडी... ८०
(४) अजित जिणंदा!... ८०
(५) अजित जिणेसर चरणनी... ८१
(६) अजित जिनेश्वर सांभळो रे... ८१
(७) ज्ञानादिक गुण संपदा रे... ८२
(८) तुं गत मेरी जाने जिनजी... ८३
(९) पंथडो निहाळुं रे... ८३
(१०) प्रीतलडी बंधाणी रे... ८४
(११) शुभ वेळा शुभ अवसरे... ८५
श्री संभवनाथ भगवान ८६
::चैत्यवंदन::
(१) सावत्थी नयरी धणी... ८६
::स्तवन::
(१) मुजरो ल्योने माहरो साहिबा... ८६
(२) श्री संभव जिनराजजी रे... ८७
(३) श्री संभवजिन साथे में तो... ८७
(४) संभव जिन जब... ८८
(५) संभव जिनवर खुब बन्यो रे... ८९
(६) संभव जिनवर विनंती... ९०
(७) संभवदेव ते धुर सेवो सवे रे... ९०
(८) समकित दाता समकित... ९१
श्री अभिनंदनस्वामी भगवान ९२
::चैत्यवंदन::
(१) नंदन संवर रायनो... ९२
::स्तवन::
(१) अभिनंदन जिन दरिसण... ९२
(२) अभिनंदन स्वामी हमारा... ९३
(३) क्युं जाणुं कयुं बनी आवशे... ९३
(४) दीठी हो प्रभु दीठी जगगुरु... ९४
(५) प्रभु तुज दरिशन मळीयो... ९५
(६) प्रभु! तेरे नयन की... ९६
श्री सुमतिनाथ भगवान ९७
::चैत्यवंदन::
(१) सुमतिनाथ सुहंकरुं... ९७
::स्तवन::
(१) अहो श्री सुमति जिन... ९७
(२) दिलरंजन जिनराजजी रे... ९९
(३) लाग्यो लाग्यो प्रभ शुं नेह... ९९
(४) सुमति चरणकज आतम... १००
(५) सुमतिनाथ गुणशुं मिलीजी... १००
(६) हो मन! ते तो क्युं जिन... १०१
श्री पद्मप्रभस्वामी भगवान १०२
::चैत्यवंदन::
(१) कोसंबीपुर राजियो... १०२
::स्तवन::
(१) अजब बनी रे मेरे... १०२

(२) पद्मप्रभ जिन जई अलगा... १०३
(३) पद्मप्रभ जिन! तुज मुज... १०३
(४) पद्मप्रभ प्राण से प्यारा... १०४
(५) प्रभु तेरी मूरति मोहनगारी... १०५
(६) श्री पद्मप्रभ जिन गुणनिधि... १०५
(७) श्री पद्मप्रभना नामने रे... १०६
श्री सुपार्श्वनाथ भगवान १०७
::चैत्यवंदन::
(१) श्री सुपास जिणंद पास... १०७
::स्तवन::
(१) क्युं न हो सुनाई स्वामी... १०७
(२) निरखी निरखी तुज बिंबने... १०८
(३) मुज मन भमरो... १०९
(४) श्री सुपास आनंदमें... १०९
(५) श्री सुपास जिन वंदीए... ११०
(६) श्री सुपास जिनराज... १११
श्री चंद्रप्रभस्वामी भगवान ११२
::चैत्यवंदन::
(१) लक्ष्मणा माता जनमीयो... ११२
::स्तवन::
(१) चंद्रप्रभ चित्तमां वस्या... ११२
(२) चंद्रप्रभनी चाकरी नित्य... ११३
(३) चंद्रप्रभ जिन साहिबा रे... ११३
(४) देखण दे रे सखी! मुने... ११४
(५) मुज घट आवजो रे नाथ... ११५
(६) श्री चंद्रप्रभ जिनपद सेवा... ११५
(७) श्री शंकर चंद्रप्रभ रे लो... ११६
श्री सुविधिनाथ भगवान ११८
::चैत्यवंदन::
(१) सुविधिनाथ नवमा नमुं... ११८
::स्तवन::
(१) ताहरी अजबशी योगनी... ११८
(२) दीठो सुविधि जिणंद... ११९
(३) मैं कीनो नहीं... १२०
(४) लघु पण हुं तुम मन नवि... १२१
(५) सुणो सुविधि जिणंद... १२२
(६) सुविधि जिणंद मुज... १२३
(८) सुविधि जिणेसर पाय... १२४
श्री शीतलनाथ भगवान १२५
::चैत्यवंदन::
(१) नंदा द्रढरथ नंदनो... १२५
::स्तवन::
(१) तुज मुख सन्मुख निरखतां... १२५
(२) मुज मनडामां तुं वस्यो रे... १२६
(३) शीतल जिन मोहे प्यारा... १२६
(४) शीतल जिनपति प्रभुता... १२७
(५) शीतल जिनपति ललित... १२८
(६) श्री शीतलजिन भेटीए... १२८
श्री श्रेयांसनाथ भगवान १३०
::चैत्यवंदन::
(१) श्री श्रेयांस अग्यारमां १३०
::स्तवन::
(१) तारक बिरुद सुणी करी... १३०
(२) तुमे बहु मैत्री रे साहेबा... १३१
(३) मेरो मन! कितही न लागे... १३१
(४) श्री श्रेयांस कृपा करो... १३२
(५) श्री श्रेयांस जिन अंतरजामी... १३२
(६) श्री श्रेयांस जिन साहिबा... १३३
(७) श्री श्रेयांस प्रभु तणो... १३३
श्री वासुपूज्यस्वामी भगवान १३५
::चैत्यवंदन::
(१) वासव वंदित वासुपूज्य... १३५
::स्तवन::
(१) तारजो दीन दयाळ... १३५
(२) पूजना तो कीजे रे बारमा... १३६
(३) वासुपूज्य जिन अंतरजामी... १३६

(४) वासुपूज्य जिन त्रिभुवन... १३७
(५) श्री वासुपूज्य नरिंदनोजी... १३८
(६) साहिबा जिनराज हमारा... १३८
(७) स्वामी तुमे कांई कामण... १३९
(८) हो जिनवरजी अब मेरे... १४०
श्री विमलनाथ भगवान १४१
::चैत्यवंदन::
(१) कंपिलपुर विमलप्रभु... १४१
::स्तवन::
(१) दुःख दोहग दूरे टळ्यां रे... १४१
(२) प्रभुजी! मुज अवगुण... १४२
(३) विमल जिन विमलता... १४३
(४) विमल जिनेश्वर जगतनो... १४३
(५) विमल जिनेश्वर मुज... १४४
(६) विमलनाथ मुज मन वसे... १४४
(७) सेवो भवियां विमल... १४५
श्री अनंतनाथ भगवान १४६
::चैत्यवंदन::
(१) अनंत अनंत गुण आगरुं... १४६
::स्तवन::
(१) अनंत जिनराजना चरणनी... १४६
(२) अनंत प्रभु के आश की... १४७
(३) करुणायर प्रभु वीनवुं रे... १४८
(४) ज्ञान अनंतु ताहरे रे... १४८
(५) धार तलवारनी सोहिली... १४९
(६) प्रभु तुज नाम छे नाथ... १५०
(७) मूरति हो प्रभु मूरति... १५१
(८) श्री अनंतजिन शुं करो... १५२
श्री धर्मनाथ भगवान १५३
::चैत्यवंदन::
(१) भानुनंदन धर्मनाथ... १५३
::स्तवन::
(१) थाशुं प्रेम बन्यो छे राज... १५३
(२) धरम जगनाथनो धर्म... १५४
(३) धर्म जिनेश्वर गाउं रंगशुं... १५५
(४) धर्म जिनेश्वर धर्मधुरंधर... १५७
(५) धर्म जिनेश्वर सुण... १५७
(६) लागी रे मुने! धर्म... १५८
श्री शांतिनाथ भगवान १५९
::चैत्यवंदन::
(१) शान्ति जिनेश्वर सोलमा... १५९
(२) शांति जिनेश्वर साहिबा... १५९
(३) विश्वातिशायी महिमा... १६०
::स्तवन::
(१) सोलमा शांति जिनेश्वर देव... १६०
(२) क्षण क्षण सांभरो शांति... १६१
(३) जग जनमन रंजे रे... १६२
(४) जगत दिवाकर जगत... १६३
(५) तार मुज तार मुज तार... १६४
(६) तुं पारंगत तुं परमेश्वर... १६५
(७) धन दिन वेळा धन घडी... १६६
(८) मारो मुजरो ल्योने राज... १६६
(९) शांति जिन एक मुज... १६७
(१०) शांति जिनेश्वर साचो... १६८
(११) शांति जिनेश्वर साहिबा रे... १६८
(१२) शांति! तेरे लोचन है... १६९
(१३) श्री शांति जिनेश्वर दीठो... १६९
(१४) सुणो शांति जिणंद!... १७०
(१५) सुणो शांति जिनेश्वर... १७१
(१६) हम मगन भये प्रभु ... १७२
श्री कुंथुनाथ भगवान १७४
::चैत्यवंदन::
(१) कुंथुनाथ कामित दीये... १७४
::स्तवन::
(१) कुंथु जिनेश्वर जाणजो रे... १७४
(२) कुंथु जिनेश्वर साचो देव... १७५

(३) कुंथु जिनेश्वर साहिब... १७६
(४) ज्ञानी विण किण आगळ... १७६
(५) मनडुं किमहि न बाजे हो... १७७
(६) समवसरण बेसी करी रे... १७८
(७) साहेलां हे कुंथु जिनेश्वर... १७९
श्री अरनाथ भगवान १८०
::चैत्यवंदन::
(१) नागपुरे अर जीनवरुं... १८०
::स्तवन::
(१) अरनाथकुं सदा मोरी... १८०
(२) अर जिनवर दीये देशना... १८१
(३) धरम परम अरनाथनो... १८१
(४) प्रणमो श्री अरनाथ... १८२
(५) प्रभु! ताहरो ताग... १८३
(६) मारा साहिब! श्री अरनाथ... १८४
(७) श्री अरजिन भवजलनो... १८५
श्री मल्लिनाथ भगवान १८६
::चैत्यवंदन::
(१) मल्लिनाथ ओगणीशमा... १८६
::स्तवन::
(१) पंचम सुरलोकना वासी रे... १८६
(२) प्रभु मल्लिजिणंद शांति... १८७
(३) मल्लि जिणंद सदा नमीये... १८७
(४) मल्लि जिणेसर मुजने... १८८
(५) मल्लिनाथ जगनाथ ... १८८
(६) सेवक किम अवगणीए हो... १८९
श्री मुनिसुव्रतस्वामी भगवान १९१
::चैत्यवंदन::
(१) मुनिसुव्रत जिन वीशमा... १९१
::स्तवन::
(१) आज सफल दिन मुज तणो... १९१
(२) ओलगडी तो कीजे ... १९२
(३) दिल भरी दरिशन पाउं के... १९३
(४) मुनिसुव्रत जिनराय... १९३
(५) मुनिसुव्रत जिन वंदतां... १९४
(६) मुनिसुव्रत मन मोह्युं मारुं... १९५
(७) श्री मुनिसुव्रत साहिबा रे... १९५
श्री नमिनाथ भगवान १९७
::चैत्यवंदन::
(१) मिथिला नयरी राजीयो... १९७
::स्तवन::
(१) एकवीसमा जिन आगलेजी... १९७
(२) दिलभर दरशन पाउं रे... १९८
(३) मुज मन पंकज भमरलो... १९८
(४) श्री नमिजिननी सेवा करतां... १९९
(५) श्री नमि जिनवर सेव... १९९
(६) श्री नमिनाथने चरणे... २००
(७) षट्दरशण जिन अंग... २०१
श्री नेमिनाथ भगवान २०३
::चैत्यवंदन::
(१) नेमिनाथ बावीशमां... २०३
(२) अपराजितथी आविया... २०३
(३) नेमि जिनेसर नियमथी... २०३
::स्तवन::
(१) निरख्यो नेमि जिणंदने... २०४
(२) अरज सुणो हो नेम... २०४
(३) अष्ट भवांतर वालहो रे... २०५
(४) एकवार बोलो मारां नाथ... २०७
(५) गढ गिरनारे जई रह्या रे... २०७
(६) जईने रहेजो मारा वालाजी... २०८
(७) तोरण आवी रथ फेरी गया... २०९
(८) देखत ही चित्त चोर लियो... २०९
(९) देखो माई! अजब रुप... २१०
(१०) द्वारापुरीनो नेम राजियो... २१०

(११) नेमजी रे... तोरणे... २११
(१२) नेमि जिनेश्वर निज... २११
(१३) नेमि निरंजन नाथ... २१२
(१४) परमातम पूरणकला... २१३
(१५) भवियण वंदो भावशुं रे... २१४
(१६) मैं आज दरिसण पाया... २१५
श्री पार्श्वनाथ भगवान २१८
::चैत्यवंदन::
(१) आश पूरे प्रभु पासजी... २१८
(२) ॐ नमः पार्श्वनाथाय... २१८
(३) जय चिंतामणी पार्श्वनाथ... २१९
::स्तवन::
(१) जिनजी त्रेवीशमो जिन पास... २१९
(२) अंतरजामी सुण अलवेसर... २२०
(३) अखियां दरिशन की है... २२१
(४) अखियां हरखण लागी... २२१
(५) अब मोहे! ऐसी आय... २२२
(६) अहो! अहो! पासजी!... २२२
(७) आई बसो भगवान... २२३
(८) आज मनोरथ माहरो... २२४
(९) ओलगडी अवधारो... २२४
(१०) कोयल टहुंकी रही मधुवन... २२५
(११) चित्त समरी शारदा... २२६
(१२) जय! जय! पास जिणंदा... २२७
(१३) तार तुज तार मुज... २२७
(१४) तारा नयना रे प्याला... २२८
(१५) तारी मूरतिनुं नहि... २२९
(१६) तुं प्रभु मारो हुं प्रभु... २३०
(१७) ध्रुवपद रामी!... २३०
(१८) नित्य समरुं साहिब... २३२
(१९) पारसनाथ आधार... २३३
(२०) पार्श्व जिणंदा वामाजी... २३३
(२१) पार्श्व जिन! ताहरा... २३४
(२२) पास शंखेश्वरा सार... २३४
(२३) प्रणमुं पद पंकज पासना... २३५
(२४) प्रभु जगजीवन जगबंधु... २३६
(२५) प्रभु पार्श्व जिणंद सदा... २३७
(२६) भवजल पार उतार... २३७
(२७) भेटीए भेटीए... २३८
(२८) मनमोहन प्रभु पासजी... २३८
(२९) मुख खोल जरा... २३९
(३०) मुज सरीखा मेवासी ने... २३९
(३१) मेरे साहिब तुम हि हो... २४०
(३२) मेरो प्रभु पारस... २४१
(३३) राधा जेवा फूलडां ने... २४१
(३४) वामानंदन जगदानंदन... २४२
(३५) वामानंदन वंदना... २४२
(३६) शरण तुमारे आयो... २४३
(३७) शा माटे साहिब... २४४
(३८) श्री चिंतामणी प्रभु... २४४
(३९) श्री शंखेश्वर निज रंगी... २४५
(४०) समय समय सो वार... २४५
(४१) सहज गुण आगरो... २४६
(४२) सार कर सार कर स्वामी... २४७
(४३) सुखदाई रे सुखदाई... २४८
(४४) सुणो पार्श्व जिनेश्वर... २४९
(४५) सुरजमंडन पार्श्व जिणंदा... २५०
(४६) हे प्रभु! पार्श्व... २५०
(४७) हो अविनाशी! नाथ... २५१
श्री महावीरस्वामी भगवान २५२
::चैत्यवंदन::
(१) सिद्धारथ सुत वंदीए... २५४
(३) नमो दुर्वाररागादि... २५४
(२) नव चोमासी तप कर्या... २५५
::स्तवन::
(१) शासन नायक शिवसुख... २५५

(२) अहा! केवुं भाग्य जाग्युं... २५६
(३) आज जिनराज! मुज काज... २५७
(४) आव आव रे माहरा मनडा... २५८
(५) करुणासागर जीवजीवन... २५९
(६) गिरुआ रे गुण तुम तणा... २६०
(७) गोयम कहे सुणो वीरजी रे... २६०
(८) चउमासी पारणुं आवे... २६१
(९) छेल्लो बोध आपी... २६२
(१०) जगपति तुं तो देवाधिदेव!... २६२
(११) तार हो तार प्रभु मुज... २६३
(१२) तारे वयणे मनडुं वींध्युं रे... २६४
(१३) तेरो दरश मन भायो... २६४
(१४) तो शुं प्रीत बंधाणी... २६५
(१५) दीन दुखियानो तुं छे... २६६
(१६) ना रे प्रभु नहि मानुं... २६७
(१७) मनमंदिर मोहन आवीये... २६७
(१८) महावीरस्वामी रे विनंती... २६८
(१९) माता त्रिशलानंद कुमार... २६९
(२०) रुडी ने रढियाळी रे... २७०
(२१) वर्धमान जिनवरना... २७१
(२२) विरह से भयो रे उदासी... २७१
(२३) वीर जिणंद जगत... २७२
(२४) वीर जिनेश्वर चरणे... २७२
(२५) वीर वड धीर महावीर... २७३
(२६) वीर वहेला आवो रे... २७४
(२७) वीर विण वाणी कोण... २७६
(२८) वीरजी सुणो एक... २७६
(२९) सरस्वती स्वामीने पाये... २७७
(३०) सिद्धारथना रे नंदन... २७८
(३१) सुण सुगुण सनेही... २७९

श्री सीमंधरस्वामी भगवान २८३

::चैत्यवंदन::

(१) श्री सीमंधर! जगधणी... २८३
(२) श्री सीमंधर! वीतराग!... २८३
(३) वाणी पांत्रीस गुणभरी... २८४

::स्तवन::

(१) आज जिनराज मुज... २८४
(२) तमे महाविदेह जईने... २८५
(३) तारी मूरतिए मन मोह्युं रे... २८६
(४) धन्य धन्य क्षेत्र महाविदेहजी... २८७
(५) पुक्खलवई विजये जयो रे... २८८
(६) प्यारा सीमंधर स्वामी... २८८
(७) प्रभाते ऊठी करुं वंदना रे... २८९
(८) श्री सीमंधर जिनवर स्वामी... २९०
(९) श्री सीमंधर विनंती... २९०
(१०) श्री सीमंधर साहिबा... २९१
(११) श्री सीमंधर साहिबा सुणो... २९१
(१२) श्री सीमंधर साहिबा हुं... २९२
(१३) श्री सीमंधरस्वामी मुक्तिना... २९३
(१४) सीमंधर जिन वंदीऐ... २९४
(१५) सुणो चंदाजी! सीमंधर... २९४

श्री सामान्य जिन २९६

::चैत्यवंदन::

(१) श्री शाश्वता अशाश्वता... २९६
(२) अलख अगोचर अकलरूप... २९७
(३) आज देव अरिहंत नमुं... २९८
(४) जय जय तुं जिनराज आज... २९९
(५) तुज मुरतिने निरखवा... २९९
(६) पद्मप्रभु ने वासुपूज्य... ३००
(७) परमेश्वर परमातमा... ३००

::स्तवन::

(१) अनंतविरज अरिहंत!... ३००
(२) अब में साचो साहिब... ३०२
(३) अबोलडां शाना लीधां छे... ३०२

(४) आज मारा प्रभुजी सामुं... ३०३
(५) आनंद की घडी आई... ३०४
(६) क्युं कर भक्ति करुं... ३०५
(७) जिणंदा! वे दिन क्युं... ३०५
(८) जिन तेरे चरण की शरण... ३०६
(९) तो बिन ओर न जाचुं... ३०६
(१०) निरंजन नाथ मोहे... ३०६
(११) परमानंद विलासी... ३०७
(१२) पायोजी! मैंने तेरो... ३०७
(१३) प्रभु मेरे ऐसी आय... ३०८
(१४) प्रभुजी! तुम दीठे... ३०८
(१५) बेर बेर नहि आवे... ३०९
(१६) भक्ति सदा सुखदाई... ३०९
(१७) मन मोह्युं प्रभु गुण... ३१०
(१८) मारी नावलडी मझधार... ३१०
(१९) मेरे प्रभुशुं प्रगट्यो... ३११
(२०) मेरो मन! हरखे प्रभु... ३१२
(२१) विनंती कैसे करुं... ३१२
(२२) सकल समता सुरलतानो... ३१३
(२३) हम लीने हे प्रभु... ३१३

चोवीश भगवानना थोय जोडा गुजराती अने संस्कृत ३१६

विशिष्ट आराधना विभाग ३२६

पांचमनी आराधना ३२६

::चैत्यवंदन::

(१) श्री सौभाग्य पंचमी तणो... ३२६

::स्तवन::

(१) श्री जिनवरने प्रगट थयुं रे... ३२७

आठम की आराधना ३२८

::चैत्यवंदन::

(१) महा सुदि आठम दिने... ३२८

::स्तवन::

(१) श्री राजगृही शुभ ठाम... ३२९

एकादशी की आराधना ३३०

::चैत्यवंदन::

(१) शासन नायक वीरजी... ३३०

::स्तवन::

(१) पंचम सुरलोकना वासी रे... १८६

पर्युषण पर्व की आराधना ३३२

::चैत्यवंदन::

(१) पर्व पर्युषण गुण नीलो... ३३२
(२) कल्पतरुवर कल्पसूत्र... ३३३

::स्तवन::

(१) सुणजो साजन संत... ३३३
(२) रीझो रीझो श्री वीर देखी.... ३३४

सिद्धचक्र की आराधना ३३७

::चैत्यवंदन::

(१) अरिहंत पद ध्यातो थको... ३३७
(२) सकल मंगल परम कमला... ३३८

::स्तवन::

(१) अहो भवि प्राणी रे... ३३८
(२) नवपद धरजो ध्यान... ३३९

:: चौमासी देववंदन आराधना ::

(प्रत्येक भगनान का पहला चैत्यवंदन, स्तवन तथा थोय बोलनी।)

शाश्वता अशाश्वता जिन चैत्यवंदन २९६
थोय ३१४

नूतन भक्तिगीत विभाग ३४२

(१) अंतरना अंतरिक्षमां मने... ३४२
(२) अत्तर अत्तर वरसो छो... ३४३
(३) अमने देजो एक ज स्मित... ३४३
(४) अर्पण करुं शुं तने... ३४४
(५) आ मारा महाराजजी... ३४४
(६) आंखडी मींछाय छे... ३४५

(७) आंखमांथी शुं झरे छे... ३४५
(८) आगमन तारुं आगमन... ३४६
(९) आज आनंद अंग... ३४७
(१०) आटलुं आपजे नाथ!... ३४७
(११) आज टमटमाता दीवाओ... ३४८
(१२) आपत्तिओ आवे भले... ३४९
(१३) आवजो मन मंदिरीये ३४९
(१४) ईतनी शक्ति हमे देना... ३५०
(१५) एकडे एकथी शरु करावे... ३५१
(१६) एक तुं बस एक तुं... ३५२
(१७) एवुं लागे छे आजे मने... ३५२
(१८) एवो मने प्रेम छे... ३५३
(१९) ओ पालनहारे... ३५३
(२०) ओ प्यारा नाथजी... ३५४
(२१) करुणाना सिंधु... ३५५
(२२) केवा तुं कामण करे... ३५५
(२३) केवा शोभे मारा जिनराया... ३५६
(२४) खबर क्यां छे... ३५७
(२५) खुल्ला मूक्या छे में तो... ३५८
(२६) चरणों में तेरे रहकर... ३५९
(२७) चोक पुरावो... ३५९
(२८) छे मुजने तमन्ना तो... ३६०
(२९) जनम जनमथी हुं तमारो... ३६२
(३०) जिनवर सदा तुज साथ... ३६२
(३१) तमारा हृदय आकाशमां... ३६३
(३२) तमारी लागी तरस... ३६३
(३३) तमारे ईशारे तमारी... ३६४
(३४) तमे आंखे कर्यु अंजन... ३६५
(३५) तमे आटलां वसी जाशो... ३६५
(३६) तमे कल्पवृक्षनी छाया... ३६६
(३७) तारजे डुबाडजे... ३६६
(३८) तारा गुणोनी पाट मने... ३६७
(३९) तारा ज पंथे... ३६८
(४०) तारा नैनमां ३६८
(४१) तारा मस्त गुलाबी गाल... ३६९
(४२) तारा मिलननी लगन ... ३६९
(४३) तारा विना तो केम जीववुं... ३७०
(४४) तारी कृपानो स्पर्श मने... ३७१
(४५) तारी पासे एवुं शुं... ३७२
(४६) तारी प्रीतिनी केवी असर... ३७२
(४७) तारुं धार्युं बधुं थाय छे... ३७३
(४८) तारे द्वारे आवीने कोई... ३७४
(४९) तारो सथवारो... ३७४
(५०) तुं एक ज छे मारो... ३७५
(५१) तुं खूब मने गमे छे... ३७६
(५२) तुं छे मुजने सौथी प्यारो ... ३७६
(५३) तुं प्यार का सागर है... ३७७
(५४) तुं प्रेम दरियो ३७८
(५५) तुं मारो नाथ, तुं मारो... ३७९
(५६) तुज करुणाधारमां... ३८०
(५७) तुजने जोया करुं... ३८०
(५८) तुम से हे जोडी... ३८१
(५९) तू है तो... ३८२
(६०) तेरे एहसान का बदला... ३८२
(६१) तेरे द्वार पे आया हुं... ३८३
(६२) दर्शन क्यारे देशो... ३८३
(६३) दादा तारा पगला पड्या... ३८४
(६४) दीयो दयामय तव... ३८४
(६५) दोषथी हर्योभर्यो छुं... ३८५
(६६) धर्मना दायक तमे धुरंधर... ३८६
(६७) नवाब श्री शंखेश्वरा... ३८७
(६८) नाता जोड लिया... ३८८

(६९) नाम तमारुं गमी गयुं छे... ३८८
(७०) निष्फळ अमारुं जीवन... ३८९
(७१) पगथिये राह जोउं छुं... ३८९
(७२) परमात्मा बनी जाशे मारो... ३९०
(७३) परमातमा... ३९०
(७४) पल पल तुंही... ३९१
(७५) प्रभु वसंतना पगला... ३९२
(७६) प्रभु! तमारा पगले पगले... ३९२
(७७) प्रभु! तें मने जे... ३९३
(७८) प्रभु! विरह तारो हुं नहीं रे... ३९३
(७९) प्रभुने सर्व सोंपीने... ३९४
(८०) फरुं छुं पहाड ने जंगल... ३९५
(८१) बहु आश धरीने नाथ... ३९५
(८२) भगवान! हें कहां रे तुं... ३९५
(८३) भगवान पधारे छे... ३९६
(८४) भीनी है अँखिया... ३९७
(८५) मंदिर पधारो स्वामी!... ३९७
(८६) मा बनीने आवो प्रभुजी... ३९८
(८७) मारा तारणहार... ३९८
(८८) मारा व्हाला प्रभु!... ३९९
(८९) मारा हृदय सिंहासन पर... ४००
(९०) मारा होठे तमारुं स्मरण.... ४००
(९१) मुश्किल डगर छे... ४०१
(९२) मुसाफरी... ४०२
(९३) मेरा जीवन तेरी शरण... ४०३
(९४) मेरे साहेब ने मुजको ४०३
(९५) युगोथी हुं पुकारुं छुं... ४०४
(९६) रमे रोम रोम... ४०४
(९७) रात दिवस उपकारो तारा.. ४०५
(९८) रोमे रोमे हुं तारो... ४०५
(९९) लगनी लागी छे... ४०६
(१००) लावो अंतरमां... ४०६
(१०१) वालम आवोने... ४०७
(१०२) शंखेश्वर तुं सहारो... ४०८
(१०३) श्वासोनी माळामां समरुं... ४०९
(१०४) श्वासोमां मारा समावुं... ४१०
(१०५) समयनी आ सूनी सूनी... ४११
(१०६) सिद्धारथना राजकुंवरनुं... ४१२
(१०७) सूरज की गरमी से... ४१२
(१०८) स्पर्शे छे तारो प्यार... ४१३
(१०९) स्वामी! तारा स्नेहनो... ४१३
(११०) हजी नयनोनां द्वारे... ४१४
(१११) हमें रास्तो की... ४१५
(११२) हर श्वासमां स्मरुं... ४१५
(११३) हुं तने कयां मळुं?... ४१६
(११४) हुं तने समजावुं शुं ? ४१७
(११५) हुं तारो तुं मारो... ४१८
(११६) हुं दास तमारो छुं... ४१९
(११७) हुं बाळ तमारो छुं... ४१९
(११८) हुं मीरा हुं राधिका... ४२०
(११९) हृदय मंदिरना मारा देव... ४२१
(१२०) हे उपकारी कृपा... ४२१
(१२१) हे जीरावला! तुं... ४२२
(१२२) हे त्रिशलाना जाया!... ४२३
(१२३) हे दीनबंधु! हे दीनानाथ... ४२३
(१२४) हे प्रभु! हे प्रभु!... ४२४
(१२५) हे वीर महावीर... ४२५
(१२६) होठ करे छे तारुं कीर्तन... ४२५
नमो आदीश्वरम् **४२६**
(१) अंतरनी अयोध्यानो राम छे... ४२६

(२) आदिनाथ दादा मारे हैये... ४२६
(३) ऋषभजी बोलावे... ४२७
(४) गिरिवर पर बेठा छे... ४२८
(५) जेनी कीकी काळी छे... ४२९
(६) दिल में बस जाओ... ४३०
(७) प्रथम राजेश्वर प्रथम... ४३१
(८) व्हाला आदिनाथ में तो... ४३२
(९) सिद्धगिरीने भेटवानो... ४३२
(१०) सिद्धाचल दरबार... ४३३
(११) सिद्धाचल मारो सिद्धाचल... ४३४
(१२) सिद्धाचलना शिखरोने... ४३५
(१३) हुं तो शत्रुंजय नदीनी पासे... ४३५
(१४) हो राज! मने लाग्यो छे... ४३६
नेमरस ४३८
(१) आनंद रंग... ४३८
(२) गिरनारीनां नेम... ४३८
(३) गिरनारे शोभे देखो नेमजी... ४३९
(४) गिरनारे श्री प्रभु नेम छे... ४४०
(५) जय जय गरवो गिरनार... ४४१
(६) जय हो गिरनार... ४४२
(७) जोगी बनीने चाल्या नेम... ४४३
(८) निरखी नयणा भींजाय... ४४४
(९) नेम तुं प्राण आधार... ४४५
(१०) नेमजीना नामनी तुं लूंट... ४४६
(११) नेम रस... ४४६
(१२) नेमि निरंजन... ४४७
(१३) नेमि प्रीतम प्यारा... ४४९
(१४) मारा चित्तमां... ४४९
(१५) मारा शमणामां नेम प्रभु... ४५०
(१६) राजुलने नेम मळी जाशे... ४५१
(१७) रोमे रोमे गिरनार... ४५२
(१८) श्याम! कहोने क्यारे?... ४५३
(१९) सामुं जुओने-१... ४५३
(२०) सामुं जुवोने-२... ४५४
सुगंधनुं सरनामुं संयम ४५६
(१) क्यारे बनीश हुं साचो रे... ४५६
(२) छोडवा जेवो संसार छोडी... ४५६
(३) जेनां पावन पगलांथी... ४५७
(४) झूमे रे झूमे आनंदे ४५८
(५) थावुं मारे रजोहरण रसिया... ४५९
(६) धन्य धन्य बनावीश जन्म... ४५९
(७) परथी थया पराया... ४६०
(८) परमनी सफरमां... ४६१
(९) मनडो लागो रे लागो रे... ४६२
(१०) मने वेश श्रमणनो मळजो... ४६२
(११) मारे तो लेवानी छे दीक्षा... ४६३
(१२) मारे बनवुं छे अणगार... ४६४
(१३) मुनि क्यारे बनीए... ४६५
(१४) रजोहरण संग लगी... ४६५
(१५) विरती आपो... ४६६
(१६) संयम क्यारे मळशे... ४६७
(१७) संयम मनोरथ... ४६८
(१८) सर्व स्वीकारनी संयम... ४६९
(१९) साधनाना पंथे आजे... ४७०
(२०) हवे सामुं जुओ प्रभु... ४७१
मने सद्गुरु मळ्यां ४७२
(१) ऐसा चिद्रस दियो... ४७२
(२) आप छो मारा संवेग दाता... ४७२
(३) गुरु एवा मळ्या... ४७३
(४) गुरु तत्त्व तुं... ४७३
(५) देवाधिदेव... गुरुदेव... ४७४
(६) गुरुमा मने स्वीकारजो... ४७४

(७) गुरुवर यशोविजय सूरीश्वर... ४७५
(८) जय जय यशोविजय... ४७६
(९) जय हो... यशोविजय... ४७७
(१०) तमे छो भगवन् तमे... ४७८
(११) तुं गौतम सम लागे मने... ४७८
(१२) तुं छे तो... ४७९
(१३) दर्शनथी तारा... ४८०
(१४) नानी मारी पगली उपर... ४८०
(१५) मारी तो दुनिया... ४८१
(१६) परमात्मानुं रुप तुं... ४८२
(१७) मने सद्गुरु मळ्या... ४८३
(१८) मळ्या संत स्वरुपे भगवंत... ४८३
(१९) महा उपकारीने वंदन... ४८४
(२०) मानुं गुरु अनहद आभार... ४८५
(२१) मारी गुरुमाँ व्हाली छे... ४८६
(२२) मीले हो गुरु हमको... ४८७
(२३) में झाल्यो तारो हाथ... ४८७
(२४) मोहे लागी लगन गुरु... ४८८
(२५) रंगी दो प्रभुना रंगे ... ४८८
(२६) रोमे रोमे परमनो वास... ४८९
(२७) सदगुरु परमात्मा... ४९०

तारी अभिषेक धारा ४९१

(१) स्तुति... ४९१
(२) करीए महा-अभिषेक... ४९२
(३) झूले महावीरजी खेले... ४९२
(४) तारी अभिषेक धारा... ४९३
(५) मारा रुपाळा भगवान... ४९४
(६) वीर झूले, त्रिशला झुलावे... ४९४
(७) सोना रुपाना कळशे... ४९५
(८) सोनाना पारणीये झूले... ४९५
(९) हाथमां कळशा भरी आज... ४९६

अजब धून अर्हम्नी ४९७

(१) अजब धुन अर्हम् नी लागी... ४९७
(२) आणी मन शुद्ध आस्था... ४९७
(३) आदेश्वर वंदना... ४९८

मारवाड़ी भक्ति गीत... ४९९

(१) एक बार मुखडो बताओ... ४९९
(२) ओ गुरुसा... ४९९
(३) झूलो झूलो रे थे तो... ५०१
(४) नाकोडा रा पारसजी... ५०२
(५) प्रभुजी आछी लागी रे... ५०२
(६) बोल बोल आदेश्वर व्हाला... ५०३
(७) भक्ति की है रात... ५०४
(८) म्हारी अरजी सुणो... ५०५
(९) वारी जाउं रे... ५०५
(१०) हर जनम में दादा... ५०६

अहो! जिनशासनम् ५०७

(१) अहो! जिनशासनम्... ५०७
(२) आ शासन तारणहारु... ५०९
(३) जिनवर! तारुं शासन... ५१०
(४) जिनशासन का परचम... ५११
(५) वंदे शासनम्... ५१२
(६) शासन मेरे शासन... ५१३
(७) रजा आपो हवे दादा!.. ५१४

सज्झाय विभाग ५१५

(१) जगत है स्वार्थ का साथी... ५१५
(२) धर्म दृढतानी सज्झाय... ५१५
(३) क्रोधनी सज्झाय... ५१६

अनुक्रमणिका-२

(प्राचीन स्तवन अकारादि क्रम से) ५२३

सुबह-शाम के पच्चक्खाण ५२८



श्री वज्रपंजर स्तोत्र

(रागः रघुपति राघव राजा राम.../एक पंखी आवीने...)

ॐ परमेष्ठि नमस्कारं, सारं नव-पदात्म-कम् ।
आत्म-रक्षा-करं वज्र-पंज-राभं स्मराम्यहम् ॥ ॥१॥

ॐ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितम् ।
ॐ नमो सव्व-सिद्धाणं, मुखे मुख-पटं वरम् ॥ ॥२॥

ॐ नमो आयरियाणं, अंग-रक्षाति-शायिनी ।
ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयो-र्दृढम् ॥ ॥३॥

ॐ नमो लोए सव्व-साहूणं, मोचके पादयोः शुभे ।
एसो पंच नमुक्कारो, शिला वज्र-मयी तले ॥ ॥४॥

सव्व-पाव-प्पणासणो, वप्रो वज्र-मयो र्बहिः ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, खादि-रांगार-खातिका ॥ ॥५॥

स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं, पढमं हवई मंगलं ।
वप्रो-परि-वज्र-मयं, पिधानं देह-रक्षणे ॥ ॥६॥

महा-प्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रव-नाशिनी ।
परमेष्ठि-पदोद्भूता, कथिता पूर्व-सूरिभिः ॥ ॥७॥

यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठि-पदैः सदा ।
तस्य न स्याद् भयं व्याधि-राधि-श्चापि कदाचन ॥ ॥८॥

आचार्यश्री सिद्धसेनसूरि विरचित

श्री वर्धमान शक्रस्तवः

जयतु जयतु नित्यं श्री वीतरागः
जयतु जयतु नित्यं श्री शक्रेन्द्रः
जयतु जयतु नित्यं श्री सिद्धसेनसूरिः
जयतु जयतु नित्यं परमोपकारी श्री गुरूदेवः
जयतु जयतु नित्यं श्री शक्रस्तवः

ॐ नमोऽर्हते, भगवते, परमात्मने, परम-ज्योतिषे,
परम-परमेष्ठिने, परमवेधसे, परमयोगिने,
परमेश्वराय, तमसःपरस्तात्, सदोदिता-दित्यवर्णाय,
समूलोन्मूलितानादिसकल-क्लेशाय ॥१॥

ॐ नमोऽर्हते,
भूर्भुवःस्वस्त्रयीनाथमौलिमन्दारमालार्चितक्रमाय,
सकलपुरूषार्थयोनि-निरवद्यविद्याप्रवर्तनैकवीराय,
नमःस्वस्तिस्वधास्वाहावषडथैंकान्तशान्तमूर्तये,
भवद्भाविभूतभावावभासिने, कालपाशनाशिने,
सत्त्वरजस्तमो गुणातीताय, अनन्तगुणाय,
वाङ्मनोऽगोचरचरित्राय, पवित्राय, करण-कारणाय,
तरण-तारणाय, सात्त्विक-दैवताय, तात्त्विक-जीविताय,
निर्ग्रन्थपरमब्रह्महृदयाय, योगीन्द्रप्राणनाथाय,
त्रिभुवनभव्यकुलनित्योत्सवाय,
विज्ञानानन्दपरब्रह्मैकात्म्यसात्म्य समाधये,

हरिहरहिरण्यगर्भादिदेवता-परिकलितस्वरूपाय,
सम्यकश्रद्धेयाय, सम्यग्ध्येयाय, सम्यकशरण्याय,
सुसमाहित-सम्यक्स्पृहणीयाय ॥२॥

ॐ नमोऽर्हते, भगवते, आदिकराय, तीर्थंकराय,
स्वयंसम्बुद्धाय, पुरूषोत्तमाय, पुरूषसिंहाय, पुरूषवरपुंडरिकाय,
पुरूषवरगन्धहस्तिने, लोकोत्तमाय, लोकनाथाय, लोकहिताय,
लोकप्रदीपाय, लोकप्रद्योतकारिणे, अभयदाय, दृष्टिदाय,
मुक्तिदाय, मार्गदाय, बोधिदाय, जीवदाय, शरणदाय,
धर्मदाय, धर्मदेशकाय, धर्मनायकाय, धर्मसारथये,
धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्तिने, व्यावृत्तच्छद्मने,
अप्रतिहत-सम्यग्ज्ञानदर्शनसद्मने ॥३॥

ॐ नमोऽर्हते, जिनाय जापकाय, तीर्णाय तारकाय,
बुद्धाय बोधकाय, मुक्ताय मोचकाय, त्रिकालविदे,
पारंगताय, कर्माष्टकनिषूदनाय, अधीश्वराय, शम्भवे,
जगत्प्रभवे, स्वयम्भुवे, जिनेश्वराय, स्याद्वादवादिने,
सार्वाय, सर्वज्ञाय, सर्वदर्शिने, सर्वतीर्थोपनिषदे,
सर्वपाषण्डमोचिने, सर्वयज्ञफलात्मने, सर्वज्ञकलात्मने,
सर्वयोगरहस्याय, केवलिने, देवाधिदेवाय, वीतरागाय ॥४॥

ॐ नमोऽर्हते, परमात्मने, परमाप्ताय, परमकारूणिकाय,
सुगताय, तथागताय, महाहंसाय, हंसराजाय,
महासत्त्वाय, महाशिवाय, महाबोधाय, महामैत्राय,
सुनिश्चिताय, विगतद्वन्द्वाय, गुणाब्धये,
लोकनाथाय, जितमारबलाय ॥५॥

ॐ नमोऽर्हते, सनातनाय, उत्तमश्लोकाय, मुकुन्दाय,
गोविन्दाय, विष्णवे, जिष्णवे, अनन्ताय, अच्युताय, श्रीपतये,
विश्वरूपाय, हृषीकेशाय, जगन्नाथाय, भूर्भुवःस्वःसमुत्ताराय,
मानञ्जराय, कालञ्जराय, ध्रुवाय, अजाय, अजेयाय, अजराय,
अचलाय, अव्ययाय, विभवे, अचिन्त्याय, असंख्येयाय,
आदिसंख्याय, आदिकेशवाय, आदिशिवाय, महाब्रह्मणे,
परमशिवाय, एकानेकानन्तस्वरूपिणे, भावाभावविवर्जिताय,
अस्तिनास्तिद्वयातीताय, पुण्यपापविरहिताय, सुखदुःख
विविक्ताय, व्यक्ताव्यक्तस्वरूपाय, अनादिमध्यनिधनाय,
नमोऽस्तु मुक्तिश्वराय, मुक्तिस्वरूपाय. ॥६॥

ॐ नमोऽर्हते, निरातंकाय, निःसंगाय, निःशंकाय, निर्मलाय,
निर्द्वन्द्वाय, निस्तरंगाय, निरूर्मये, निरामयाय, निष्कलंकाय,
परमदैवताय, सदाशिवाय, महादेवाय, शंकराय, महेश्वराय,
महाव्रतिने, महायोगिने, महात्मने, पंचमुखाय, मृत्युंजयाय,
अष्टमूर्तये, भूतनाथाय, जगदानन्ददाय, जगत्पितामहाय,
जगद्देवाधिदेवाय, जगदीश्वराय, जगदादिकन्दाय, जगद्भास्वते,
जगत्कर्मसाक्षिणे, जगच्चक्षुषे, त्रयीतनवे, अमृतकराय,
शीतकराय, जयोतिश्चक्रचक्रिणे, महाज्योतिर्द्योतिताय,
महातमःपारेसुप्रतिष्ठिताय, स्वयंकर्त्रे, स्वयंहर्त्रे,
स्वयंपालकाय, आत्मेश्वराय, नमो विश्वात्मने ॥७॥

ॐ नमोऽर्हते, सर्वदेवमयाय, सर्वध्यानमयाय, सर्वज्ञानमयाय,
सर्वतेजोमयाय, सर्वमन्त्रमयाय, सर्वरहस्यमयाय,
सर्वभावाभावजीवाजीवेश्वराय, अरहस्यरहस्याय,
अस्पृहस्पृहणीयाय, अचिन्त्यचिन्तनीयाय, अकामकामधेनवे,

असंकल्पितकल्पद्रुमाय, अचिन्त्यचिन्तामणये,
चतुर्दशरज्ज्वात्मकजीवलोकचूडामणये,
चतुरशीतिलक्षजीवयोनिप्राणिनाथाय, पुरूषार्थनाथाय,
परमार्थनाथाय, अनाथनाथाय, जीवनाथाय,
देव-दानव-मानव-सिद्धसेनाधिनाथाय ॥८॥

ॐ नमोऽर्हते, निरंजनाय, अनन्तकल्याणनिकेतनकीर्तनाय,
सुगृहीतनामधेयाय, महीमामयाय, धीरोदात्त, धीरोद्धत,
धीरशान्त, धीरललितपुरूषोत्तम, पुण्यश्लोकशतसहस्रलक्ष-
कोटिवन्दितपादारविन्दाय, सर्वगताय ॥९॥

ॐ नमोऽर्हते, सर्वसमर्थाय, सर्वप्रदाय, सर्वहिताय,
सर्वाधिनाथाय, कस्मैचन-क्षेत्राय, पात्राय, तीर्थाय,
पावनाय, पवित्राय, अनुत्तराय, उत्तराय,
योगाचार्याय, संप्रक्षालनाय, प्रवराय, आग्रेयाय,
वाचस्पतये, मांगल्याय, सर्वात्मनीनाय,
सर्वार्थाय, अमृताय, सदोदिताय, ब्रह्मचारिणे, तायिने,
दक्षिणीयाय, निर्विकाराय, वज्र-ऋषभनाराचमूर्तये,
तत्त्वदर्शिने, पारदर्शिने, परमदर्शिने,
निरूपमज्ञानबलवीर्यतेजःशक्त्यैश्वर्यमयाय, आदिपुरूषाय,
आदिपरमेष्ठिने, आदिमहेशाय, महाज्योतिः-सत्त्वाय,
महार्चिधनेश्वराय, महामोहसंहारिणे, महासत्त्वाय,
महाज्ञामहेन्द्राय, महालयाय, महाशान्ताय, महायोगीन्द्राय,
अयोगिने, महामहीयसे, महाहंसाय, हंसराजाय, महासिद्धाय,
शिव-मचल-मरूज-मनन्त-मक्षय-मव्याबाध-मपुनरावृत्ति-
महानन्दं-महोदयं, सर्वदुःख-क्षयं, कैवल्यं, अमृतं,

निर्वाणमक्षरं, परब्रह्मनिःश्रेयस-मपुनर्भवं, सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं
संप्राप्तवते, चराचरं अवते, नमोऽस्तु श्री महावीराय
त्रिजगत्स्वामिने श्री वर्धमानाय ॥१०॥

ॐ नमोऽर्हते, केवलिने, परमयोगिने,
भक्तिमार्गयोगिने, विशालशासनाय, सर्वलब्धिसंपन्नाय,
निर्विकल्पाय, कल्पनातीताय, कलाकलापकलिताय,
विस्फुरदुरूशुक्लध्यानाग्निनिर्दग्धकर्मबीजाय,
प्राप्तानन्तचतुष्ट्याय, सौम्याय, शान्ताय, मंगलवरदाय,
अष्टादशदोषरहिताय, संसृत-विश्वसमीहिताय स्वाहा ॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हम् नमः (मंत्र का १०८ बार जाप करें)

लोकोत्तमो निष्प्रतिमस्त्वमेव, त्वं शाश्वतं मंगलमप्यधीश!।
त्वामेकमर्हन्! शरणं प्रपद्ये, सिद्धर्षि सद्धर्ममयस्त्वमेव ॥ ॥१॥

त्वं मे माता पिता नेता, देवो धर्मो गुरूः परः।
प्राणाःस्वर्गोऽपवर्गश्च, सत्त्वं तत्त्वं गतिर्मतिः ॥ ॥२॥

जिनो दाता जिनो भोक्ता, जिनः सर्वमिदं जगत्।
जिनो जयति सर्वत्र, यो जिनः सोऽहमेव च ॥ ॥३॥

यत् किञ्चित् कुर्महे देव! सदा सुकृतदुष्कृतम्।
तन्मे निजपदस्थस्य, हुं क्षः क्षपय त्वं जिन! ॥ ॥४॥

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं, गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिः श्रयति माम् येन, त्वत् प्रसादात् त्वयि स्थितम् ॥ ॥५॥

॥ इति श्री वर्धमान जिन नाम मंत्र स्तोत्रं समाप्तम् ॥



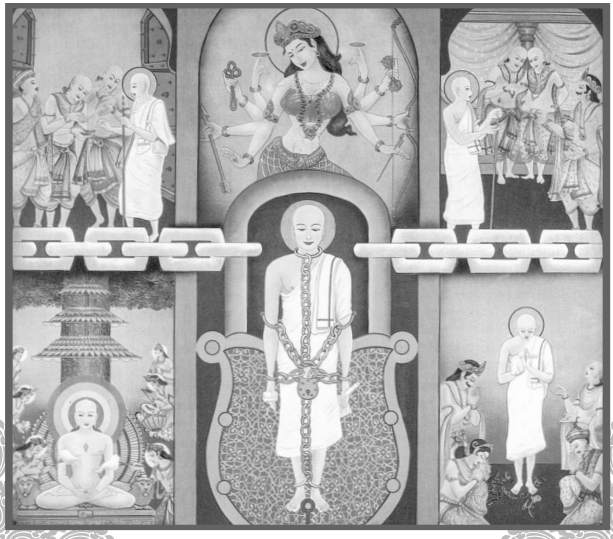

आचार्य श्री मानतुंगसूरि विरचित

श्री भक्तामर स्तोत्र

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्द्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम् ।
सम्यक-प्रणम्य जिन-पाद-युगं युगादा-
वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम् ॥ ॥१॥

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्त्व-बोधा-
दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुरलोक-नाथैः ।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितय-चित्त-हरै-रुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ ॥२॥

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित-पादपीठ!
स्तोतुं समुद्यत-मतिर्विगत-त्रपोऽहम् ।
बालं विहाय जल-संस्थित-मिन्दु-बिम्ब,
मन्यः क ईच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्? ॥ ॥३॥

वक्तुं गुणान् गुण-समुद्र! शशांक-कांतान्,
कस्ते क्षमः सुर-गुरु-प्रतिमोऽपि बुद्धया ।
कल्पांत-काल-पवनोद्धत-नक्र-चक्रं,
को वा तरीतु-मल मम्बुनिधिं भुजाभ्याम्? ॥ ॥४॥

सोऽहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश!
कर्तुं स्तवं विगत-शक्ति-रपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्यात्म-वीर्य-मविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निज-शिशोः परिपालनार्थम् ॥ ॥५॥

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास धाम,
त्वद्भक्तिरेव-मुखरी-कुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चारु-चूत-कलिका-निकरैक-हेतुः ॥ ॥६॥

त्वत्संस्तवेन भव-संतति-सन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षय-मुपैति शरीर-भाजाम् ।
आक्रांत-लोक-मलिनीलमशेषमाशु,
सूर्यांशु-भिन्न-मिव शार्वर-मन्धकारम् ॥ ॥७॥

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनु धियापि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु,
मुक्ताफल-द्युति-मुपैति ननूद-बिन्दुः ॥ ॥८॥

आस्तां तव स्तवन-मस्त-समस्त-दोषं,
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्र-किरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकास-भांजि ॥ ॥९॥

नात्यद्भुतं भुवन-भूषण! भूत! नाथ!
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्त-मभिष्टुवन्तः ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा!
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति? ॥ ॥१०॥

दृष्ट्वा भवन्त-मनिमेष-विलोकनीयं,
नान्यत्र तोष-मुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकर-द्युति-दुग्ध-सिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत्? ॥ ॥११॥

यैः शान्तराग-रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैक-ललामभूत ।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ ॥१२॥

वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरगनेत्र-हारि,
निःशेष-निर्जित-जगत्त्रित-योपमानम् ।
बिम्बं कलंक-मलिनं क्व निशाकरस्य?,
यद्वासरे भवति पाण्डु-पलाश-कल्पम् ॥ ॥१३॥

सम्पूर्ण-मण्डल-शशाङ्क-कला-कलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति ।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर! नाथमेकं,
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥ ॥१४॥

चित्रं किमत्र? यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि-
र्नीतं मनागपि मनो न विकार-मार्गम्? ।
कल्पान्त-काल-मरुता चलिता-चलेन,
किं मन्दराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित्? ॥ ॥१५॥

निर्धूम-वर्तिर-पवर्जित-तैलपूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटी-करोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिता-चलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ! जगत्प्रकाशः ॥ ॥१६॥

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहु-गम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति; ।
नाम्भोधरोदर-निरुद्ध-महा-प्रभावः,
सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र! लोके. ॥ ॥१७॥

नित्योदयं दलितमोह महान्धकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्ज-मनल्प-कान्ति,
विद्योतयज्जगदपूर्व शशाङ्क बिम्बम् ॥ ॥१८॥

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा?
युष्मन्मुखेन्दु दलितेषु तमस्सु नाथ! ।
निष्पन्न शालि-वन-शालिनि जीवलोके,
कार्यं कियज्जलधरै-र्जलभार-नम्रैः? ॥ ॥१९॥

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काचशकले किरणा-कुलेऽपि ॥ ॥२०॥

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।
किं वीक्षितेन भवता? भुवि येन नाऽन्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि ॥ ॥२१॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्-
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता; ।
सर्वादिशो दधति भानु सहस्र-रश्मिं,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥ ॥२२॥

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्यवर्ण-ममलं तमसः परस्तात् ।
त्वामेव सम्य-गुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः ॥ ॥२३॥

त्वामव्ययं विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वरमनन्त-मनंगकेतुम् ।
योगीश्वरं विदित-योगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ ॥२४॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धिबोधात्,
त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रय-शंकरत्वात् ।
धाताऽसि धीर! शिवमार्गविधेर्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि ॥ ॥२५॥

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय ॥ ॥२६॥

को विस्मयोऽत्र ? यदि नाम गुणैरशेषै,
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ! ।
दोषैरूपात्त-विविधाश्रय-जातगर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ ॥२७॥

उच्चैरशोक-तरु संश्रित मुन्मयूख,
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत्किरण मस्त-तमो वितानं,
बिम्बं रवेरिव पयोधर-पार्श्ववर्ति ॥ ॥२८॥

सिंहासने मणिमयूख-शिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।
बिम्बं वियद्विलसदंशु-लतावितानं,
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ ॥२९॥

कुन्दावदात-चलचामर-चारुशोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् ।
उद्यच्छशाङ्क-शुचि-निर्झरवारिधार,
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥ ॥३०॥

छत्रत्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त,
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकर प्रतापम् ।
मुक्ताफल-प्रकर-जाल-विवृद्धशोभं,
प्रख्यापयत्-त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ॥३१॥

उन्निद्र-हेम-नवपङ्कज-पुञ्जकान्ति,
पर्युल्लसन्-नख-मयूख-शिखाभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ॥३२॥

ईत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र!
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि? ॥ ॥३३॥

श्च्योतन्मदाविल-विलोल-कपोल मूल,
मत्तभ्रमद् भ्रमरनाद विवृद्धकोपम् ।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ॥३४॥

भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्जवल-शोणिताक्त,
मुक्ताफल-प्रकर-भूषित-भूमिभागः ।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम युगाचल-संश्रितं ते ॥ ॥३५॥

कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्निकल्पं,
दावानलं ज्वलित-मुज्जवलमुत्स्फुलिङ्गम् ।
विश्वं जिघत्सु-मिव सम्मुखमापतन्तं,
त्वन्नाम-कीर्तन जलं शमयत्य-शेषम् ॥ ॥३६॥

रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठनीलं,
क्रोधोद्धतं फणिन-मुत्फण-मापतन्तम् ।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्त-शङ्क,
स्त्वन्नाम-नागदमनी-हृदि यस्य पुंसः ॥ ॥३७॥

वल्गत्तुरङ्ग-गजगर्जित-भीमनाद,
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ।
उद्यद्दिवाकर-मयूख-शिखापविद्धं,
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ॥३८॥

कुन्ताग्रभिन्न-गजशोणित-वारिवाह,
वेगावतार तरणातुर योधभीमे ।
युद्धे जयं विजित-दुर्जय जेयपक्षा,
स्त्वत्-पादपङ्कज-वनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ॥३९॥

अम्भोनिधौ क्षुभित-भीषण-नक्रचक्र,
पाठीन पीठ भय दोल्बण-वाडवाग्नौ ।
रङ्गत्तरङ्ग-शिखर-स्थित-यानपात्रा,
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्-व्रजन्ति॥ ॥४०॥

उद्भूत-भीषण-जलोदर-भारभुग्राः,
शोच्यां दशा-मुपगताश्च्युत-जीविताशाः ।
त्वत्पाद-पङ्कज-रजोऽमृत-दिग्ध-देहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्यरूपाः ॥ ॥४१॥

आपाद-कण्ठ-मुरु शृङ्खल-वेष्टिताङ्गा,
गाढं बृहन्निगड-कोटि-निघृष्ट-जङ्घाः ।
त्वन्नाम-मन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगतबंध-भया भवन्ति ॥ ॥४२॥

मत्त-द्विपेन्द्र-मृगराज-दवानलाहि,
सङ्ग्राम-वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम् ।
तस्याशु नाश-मुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तव-मिमं मतिमानधीते ॥ ॥४३॥

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र! गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रुचिर-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं;
तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ॥४४॥

॥ इति श्री भक्तामर स्तोत्र समाप्तम् ॥



चैत्यवंदन विधि

* खमासमण सूत्र *

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए,
निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ॥१॥

* इरियावहियं सूत्र *

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि? इच्छं,
इच्छामि पडिक्कमिउं ॥१॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥२॥
गमणागमणे ॥३॥ पाण-क्कमणे, बीय-क्कमणे, हरिय-क्कमणे,
ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी मक्कडा संताणा-संकमणे ॥४॥ जे
मे जीवा विराहिया ॥५॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया,
पंचिंदिया ॥६॥ अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया,
परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया,
जीवियाओ ववरोविया,तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥७॥

* तस्स-उत्तरी सूत्र *

तस्स-उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं,
विसोहीकरणेणं, विसल्ली-करणेणं,
पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥१॥

* अन्नत्थ सूत्र *

अन्नत्थ-ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं,
उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए ॥१॥
सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं,
सुहुमेहिं दिट्ठी-संचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं,
अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥
जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं
ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(यहाँ एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करें। 'नमो अरिहंताणं' बोलकर काउस्सग्ग पारें। फिर प्रकट लोगस्स बोलें।)

* लोगस्स सूत्र *

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वंदे ॥२॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिजंस-वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीण-जर-मरणा
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥
कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्ग बोहि लाभं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु ॥६॥
चंदेसु निम्मल यरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवर-गम्भीरा,सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥७॥

(इसके बाद तीन खमासमण देकर बैठकर
बायाँ घुटना ऊँचा करके चैत्यवंदन करें।)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करुं? इच्छं
सकलकुशलवल्ली पुष्करावर्त्तमेघो,
दुरिततिमिर-भानुः कल्पवृक्षोपमानः,
भवजलनिधिपोतः सर्वसम्पत्तिहेतुः,
स भवतु सततं वः श्रेयसे शान्तिनाथः, श्रेयसे पार्श्वनाथः॥

* चैत्यवंदन *

तुज मूरतिने निरखवा, मुज नयणा तरसे;
तुज गुण गणने बोलवा, रसना मुज हरखे. ॥१॥
काया अति आनंद मुज, तुम युगपद फरशे;
तो सेवक तार्या विना कहो किम हवे सरशे. ॥२॥
एम जाणीने साहिबा ए, नेक नजर मोहे जोय;
'**ज्ञानविमल**' प्रभु नजरथी, तेह शुं जे नवि होय.॥३॥

(आप पुस्तक में से कोई अन्य चैत्यवंदन भी बोल सकते हैं।)

* जं किंचि सूत्र *

जं किंचि नाम-तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए,
जाइं जिण-बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥१॥

* नमुत्थुणं सूत्र *

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥१॥
आइगराणं, तित्थयराणं, सयं-संबुद्धाण ॥२॥
पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिस-वर-पुंडरीआणं,
पुरिस-वर-गंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोग-नाहाणं,

लोग-हिआणं, लोगपईवाणं,लोग-पज्जोअ-गराणं ॥४॥
अभय-दयाणं, चक्खु-दयाणं, मग्ग-दयाणं, सरण-दयाणं,
बोहि-दयाणं ॥५॥ धम्म-दयाणं, धम्म-देसयाणं,
धम्म-नायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-
चक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहय-वरनाण-दंसणधराणं, वियट्ट-
छउमाणं ॥७॥ जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं,
बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं, सव्व-
दरिसीणं,सिव-मयल-मरूअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-
मपुणरावित्ति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं
जिअ-भयाणं ॥९॥ जे अ अईया सिद्धा,जे अ भविस्संति-णागए
काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

(बाद में ललाट पर हाथ रखकर निम्नलिखित सूत्र बोलें।)

* जावंति चेईआइं सूत्र *

जावंति चेईआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ-लोए अ;
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

(बाद में खमासमण देकर और ललाट पर हाथ रखकर
निम्नलिखित सूत्र बोलें।)

* जावंत के वि साहू सूत्र *

जावंत केवि साहू, भरहेरवय-महाविदेहे अ;
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदण्ड-विरयाणं ॥१॥

* नमोऽर्हत् सूत्र *

(स्त्रियाँ यह सूत्र न बोलें।)

नमोऽर्हत्-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः ॥१॥

(पुस्तक में से स्तवन बोलें।)

* उवसग्गहरं सूत्र *

उवसग्गहर-पासं, पासं वंदामि कम्म-घण-मुक्कं,
विसहर-विस-निन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं ॥१॥
विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ,
तस्स गह-रोग-मारी-दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ॥२॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहु-फलो होइ,
नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ॥३॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्पपाय-वब्भहिए,
पावंति अविग्घेणं,जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥
इअ संथुओ महायस! भत्तिब्भर-निब्भरेण हियएण,
ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास! जिणचंद! ॥५॥

(ललाट पर निम्नलिखित सूत्र बोलें।)

* जय वीयराय सूत्र *

जय वीयराय! जग गुरु! होउ ममं तुह पभावओ भयवं,
भव-निव्वेओ, मग्गाणु-सारिआ इट्ठ-फल-सिद्धि ॥१॥
लोग-विरूद्ध-च्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च,
सुहगुरु-जोगो तव्वयण-सेवणा आभव-मखंडा ॥२॥

(ललाट पर से हाथ नीचे करें।)

वारिज्जइ जइवि नियाण-बंधणं वीयराय! तुह समये,
तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥
दुक्ख-क्खओ कम्म-क्खओ, समाहि-मरणं च बोहि-लाभो अ,
संपज्जउ मह एअं, तुह नाह! पणाम-करणेणं ॥४॥
सर्व-मंङ्गल-माङ्गल्यं,सर्व-कल्याण-कारणम्,
प्रधानं सर्व-धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥५॥

(तत्पश्चात् खड़े होकर निम्नलिखित सूत्र बोलें।)

* अरिहंत-चेइयाणं सूत्र *

अरिहंत-चेइयाणं, करेमि काउस्सग्गं वंदण-वत्तिआए,
पूअण-वत्तिआए, सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए,
बोहि-लाभ-वत्तिआए निरूवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए,
धिइए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं॥

अन्नत्थ-ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं,
उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए ॥१॥
सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं,
सुहुमेहिं दिट्ठी-संचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं,
अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥
जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं
ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(यहाँ एक नवकार का काउस्सग्ग करें।
'नमो अरिहंताणं' बोलकर काउस्सग्ग पारें।
'नमोऽर्हत्-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः' बोलकर स्तुति बोलें।)

* स्तुति *

(आप पुस्तक में से कोई अन्य स्तुति भी बोल सकते हैं।)
शंखेश्वर पासजी पूजिए, नरभवनो ल्हावो लीजिए।
मनवांछित पूरण सुरतरु, जय वामासुत अलवेसरुं॥
(तत्पश्चात् एक खमासमण दें और
'अविधि आशातना मिच्छा मि दुक्कडं' बोलें।)





परमात्म स्तुति विभाग

प्राचीन संस्कृत स्तुतियाँ

(रागः ॐ भूर्भुवस्वः-गायत्री मंत्रधून)

दर्शनं देव-देवस्य, दर्शनं पाप-नाशनम्;
दर्शनं स्वर्ग-सोपानं,दर्शनं मोक्ष-साधनम् ॥१॥

धन्योऽहं कृत-पुण्योऽहं, निस्तीर्णोऽहं भवार्णवात्;
अनादि भव-कान्तारे, दृष्टो येन जिनो मया ॥२॥

अद्य मे सफलं जन्म, अद्य मे सफला क्रिया;
अद्य मे सफलं गात्रं, जिनेन्द्र! तव दर्शनात् ॥३॥

अद्य प्रक्षालितं गात्रं, नेत्रे च विमली-कृते;
मुक्तोऽहं सर्व-पापेभ्यो, जिनेन्द्र! तव दर्शनात् ॥४॥

दर्शनात् दुरित-ध्वंसी, वंदनात् वांछित-प्रदः;
पूजनात् पूरकः श्रीणां, जिनः साक्षात् सुरद्रुमः ॥५॥

(रागः भक्तामर प्रणत मौलि मणि...)

अद्या-भवत्-सफलता नयन-द्वयस्य,
देव! त्वदीय-चरणाम्बुज वीक्षणेन।
अद्य त्रिलोक-तिलक! प्रतिभासते मे,
संसार-वारिधि-रयं चुलुक-प्रमाणः ॥६॥

(राग : स्नातस्याप्रतिमस्य.../ छे प्रतिमा मनोहारिणी...)

पूर्णा-नन्द-मयं, महो-दय-मयं, कैवल्य-चिद्-दृग्मयं,
रूपा-तीत-मयं, स्वरूप-रमणं, स्वाभाविकी श्रीमयम् ।
ज्ञानो-द्योत-मयं, कृपा-रस-मयं, स्याद्वाद-विद्यालयं,
श्री सिद्धाचल-तीर्थराज-मनिशं, वन्देऽह-मादीश्वरम् ॥ ॥७॥

किं कर्पूर-मयं, सुधा-रस-मयं, किं चंद्र-रोचिर्मयं,
किं लावण्य-मयं, महा-मणि-मयं, कारुण्य-केलि-मयम् ।
विश्वा-नंद-मयं, महो-दय-मयं, शोभा-मयं चिन्मयं,
शुक्लध्यानमयं, वपु-र्जिनपते-र्भूयाद् भवा-लम्बनम् ॥ ॥८॥

नेत्रा-नन्द-करी, भवो-दधि-तरी, श्रेयस्तरो-र्मंजरी,
श्रीमद्-धर्म-महा-नरेन्द्र-नगरी, व्यापल्लता धूमरी ।
हर्षोत्कर्ष-शुभ-प्रभाव-लहरी, राग-द्विषां जित्वरी,
मूर्त्तिः श्री जिन-पुंगवस्य भवतु, श्रेयस्करी देहिनाम् ॥ ॥९॥

कदा त्वदाज्ञा-करणाप्त-तत्त्व-
स्त्यक्त्वा ममत्वादि भवैककन्दम् ।
आत्मैकसारो निरपेक्षवृत्ति
र्मोक्षेऽप्यनिच्छो भवितास्मि नाथ! ॥१०॥

विलोकिते महाभाग! त्वयि संसार-पारगे ।
आसितुं क्षण-मप्येकं संसारे नास्ति मे रतिः ॥११॥

निशि दीपोऽम्बुधौ द्वीपं, मरौ शाखी हिमे शिखी ।
कलौ दुरापः प्राप्तोऽयं, त्वत्पादाब्जरजःकणः ॥ ॥१२॥

नारका अपि मोदन्ते, यस्य कल्याणपर्वसु ।
पवित्रं तस्य चारित्रं, को वा वर्णयितुं क्षमः ? ॥ ॥१३॥



परमात्मा की भाववाही स्तुतियाँ

जे साधना प्रभु ते करी, ते साधना प्रभु हुं करुं,
जे साधनो तुजने मळ्या, ते साधनो मुजने मळे;
जे साध्य हतुं प्रभु ताहरुं, ते साध्य रहो प्रभु माहरुं,
जे सिद्धि प्रभु तुजने मळी, ते सिद्धि प्रभु मुजने मळे. ॥१॥

तुज भक्तिमां लयलीन बनवुं, एक छे मुज कामना,
आ जीवननी रंगोळीमां, रंगो पूर्या तुज नामना;
हे मीत तारी प्रीत तारी, झंखना दिलमां रहे,
वीतराग तुज आराधनामां, क्षण क्षण मारी वीते. ॥२॥

मळजो मने जनमो जनम, बस आपनी संगत प्रभु,
रेलाय मारा जीवनमां, तुज भक्तिनी रंगत प्रभु;
तुज स्मरण भीनो वायरो, मुज आसपास वहो सदा,
मुज अंगे अंगे नाथ तुज, गुणमय सुवास वहो सदा ॥३॥

ठगवा विभु आ विश्वने, वैराग्यनां रंगो धर्या,
ने धर्मनो उपदेश रंजन, लोकने करवा कर्या;
विद्या भण्यो हुं वाद माटे, केटली कथनी कहुं?
साधु थईने हुं बहारथी, दांभिक अंदरथी रहुं. ॥४॥

सुख दुःख सकल विसरुं विभु, एवी मळो भक्ति मने,
सौने करुं शासन रसी, एवी मळो शक्ति मने;
संक्लेश अगन बुझावती, मळजो अभिव्यक्ति मने,
मनने प्रसन्न बनावती, मळजो अनासक्ति मने. ॥५॥

थाक्यां हता ने रथ मळ्यो, तरस्यां हता ने नदी मळी!
तडके तप्या ने तरु मळ्यां, रोगी हता औषधि मळी!
रस्तो भूल्या'ता प्रभु! अमे, ने मार्गदर्शक सांपड्यो!
अंधकारमां दीवडो मळ्यो, भवमां भटकतां तुं मळ्यो! ॥६॥

मुज पुण्यनी पुष्टि तमे, संकल्पनी मुष्टि तमे,
भव ग्रीष्म तापे तप्त जीवो, पर अमीवृष्टि तमे;
आ विश्वनी हस्ती तमे, मुज मनतणी मस्ती तमे,
मुज नेत्रनी दृष्टि तमे, मुज स्वप्ननी सृष्टि तमे...! ॥७॥

मार्गस्थ जीवो काज, भवनिस्तारणुं तरणुं तमे,
अध्यात्मना गुण बागमां, मन मोहतुं हरणुं तमे;
मुज पुण्यनुं भरणुं तमे, मुज प्रेमनुं झरणुं तमे,
आ विश्वना चोगानमां छो, शाश्वतुं शरणुं तमे..! ॥८॥

क्यारे प्रभु! षट्काय जीवना वध थकी हुं विरमुं?
क्यारे प्रभु! रत्नत्रयी आराधवा उज्जवळ बनुं?
क्यारे प्रभु! मदमान मूकी समतारसमां लीन बनुं?
क्यारे प्रभु! तुज भक्ति पामी मुक्तिगामी हुं बनुं? ॥९॥

क्यारे प्रभु! सम्यक्त्वनी ज्योति हृदयमां स्थिर थशे?
क्यारे प्रभु! वैराग्यवासित माहरी हर पल हशे?
क्यारे प्रभु! सुविशुद्ध भावे सर्वविरति स्पर्शशे?
क्यारे प्रभु! संसारमां पण मुक्तिनी झांखी थशे? ॥१०॥

पुद्गल परावर्तो अनंता में कीधा संसारमां,
भटक्यो अनंती वार वळी योनि चोराशी लाखमां,
पाम्यो महापुण्योदये शासन तमारू आ भवे,
पामी तने आ भव वने भमवु नथी मारे हवे. ॥११॥

झिलमिल थतां दीपक तणां अजवासना पडदा परे,
हरपल अने हरक्षण प्रभु! तुं नवनवा रूपो धरे;
हे विश्वमोहन निरखतां अनिमेष नयने आपने,
त्रण जगत न्योछावर करूं तारी उपर थातुं मने. ॥१२॥

भले भावरूपे ना मळ्यो पण, नामरूपे मळ्यो खरो,
भले रूप तव दीठुं नहीं, प्रतिमा स्वरूपे मळ्यो खरो;
भले वदन तव दीठुं नहीं पण वचन तारा में ग्रह्या,
सुख शांति समृद्धि समाधि सिद्धि सुख में कर ग्रह्या. ॥१३॥

भवितव्यता, कर्मो, स्वभाव ने काळ हो विपरीत भले,
ने मुक्ति माटे माहरो, पुरुषार्थ हो नबळो भले;
तुज भक्तिए अनुकूळ थाये, ए बधा तुज दास छे,
तुं मुख्य हेतु मोक्षनो, मुजने सबल विश्वास छे. ॥१४॥

में प्रीत पुद्गलथी करी, तेथी भम्यो संसारमां,
जो प्रीत तुज संगे करुं, तो मुक्ति पण पलवारमां;
तारो अचिंत्यप्रभाव जाणी, प्रीत करतो हुं तने,
जो कर्मवश भूलुं तने, तो पण समरजे तुं मने. ॥१५॥

प्रियतम स्वीकार्या में तने, प्रीति अनादिकाळनी,
तरछोडी किम चाल्या तमे, निष्ठूर ने निर्दय बनी;
भमता अनादिकाळमां, शोध्यो तने आ भववने,
थाक्यो हवे बोलावजे, जल्दी मने तारी कने. ॥१६॥

तारुं स्मरण, तारुं रटण, तारा सुपन जोया करुं,
तारुं श्रवण, तारुं मनन, तारु ज ध्यान कर्या करुं;
क्यारे तरीश आ भवथकी, चिंता नथी मुजने जरा,
सुक्या बधा भवसागरो, तारा प्रभावे माहरा. ॥१७॥

भोगोमही में वेडफ्यो मानव जनम अति दोहिलो,
ना साधना करी मन थकी, शिवराज जेथी सोहिलो;
तुज आण हैये ना धरी, करी मोहराजनी चाकरी,
थाक्यो प्रभु हवे माहरो, उद्धार कर करणा करी. ॥१८॥

पाम्यो तने परख्यो नहीं, जाण्यो तने माण्यो नहि,
होंठे सदा तुज वात पण, हैये कदी आण्यो नहि;
शिवनगरनी करुं झंखना, शिवमार्गथी डरतो सदा,
द्यो तुम समुं सामर्थ्य प्रभु, जेथी हरुं कर्मो बधा. ॥१९॥

कांटा अने कंकर वळी पथ्थर भरेला आ पथे,
हुं चालु त्यारे आवजो प्रभु आप मुज स्मृतिपथे;
घेराय जो आंखो तो मारा दृष्टिपथ पर आवजो,
आ राजपथनो पथिक बनु वरदान एवुं आपजो. ॥२०॥

हे जगतबंधु! जगतजीवनो बंधु हुं क्यारे बनुं,
हे विश्ववत्सल! प्राणीमात्रनो, मित्र हुं क्यारे बनुं;
जीवमात्रना ऋणथी रह्यो, ऋणमुक्त हुं क्यारे बनुं,
छे एक मारी भावना जे तुं बन्यो ते हुं बनुं. ॥२१॥

शासन वस्युं छे ताहरुं प्रत्येक श्वासोश्वासमां,
शासन थकी तरीश हुं जीवुं छुं ए विश्वासमां;
सूरज अने चंद्र छलके ज्यां लगी आकाशमां,
जयवंतु वर्त्तो नित रहो शासन तुज प्रकाशमां. ॥२२॥

संसारथी सिद्धि सुधीना पंथनो तुं सारथी,
मुज कर्मवनने बाळनारो, एक छे तुं महारथी;
भवचक्रने तुं भेदतो, तारी कृपाना चक्रथी,
छे केवी मुज विडंबना, हजु ओळख्यो तुजने नथी. ॥२३॥

मळी होत नहि जो आंख तो दुःख एटलुं लेखाय ना,
अथवा जो पांखो होत तो तुज दर्श दूरे थाय ना;
आंखो मळी पांखो नथी प्रभु! शुं करूं समजाय ना,
कां दृष्टि द्यो, कां शक्ति द्यो क्षण एक हवे रहेवाय ना. ॥२४॥

वीतराग वल्लभ विश्वना वात्सल्यता तारी केटली!
सहु जीवमां तुं शिव जोतो भव्यता तारी केटली!
पोते तर्या तेम सहुं तरे तारकता तारी केटली!
सहु जीवना कल्याण माटे धर्मनी बक्षिस धरी! ॥२५॥

तव नयनमांथी निखरतां, निर्मळ किरण झिल्या करुं,
ने निर्विकार दशा तणो, हरपळ प्रभु अनुभव करुं;
मुजने करावी शुद्धिनुं, महास्नान पछी शणगारजो,
हे नाथ! निर्मळता तणुं, वरदान मुजने आपजो. ॥२६॥

मननां मलीन विचारनो, कोई अंत देखातो नथी,
काया तणी शुभ करणीनो, कांई अर्थ लेखातो नथी;
हवे एक औषध आप तारक, प्रार्थना अवधारजो,
हे नाथ! निर्मळता तणुं, वरदान मुजने आपजो. ॥२७॥

उपसर्ग करनारा जीवोने पण क्षमा प्रभु! दई दीधी,
आसक्तने वैराग्य केरी स्पर्शना प्रभु! दई दीधी;
स्तवना करीने याचता आ बाळनुं मन राखजो,
हे नाथ! निर्मळता तणुं वरदान मुजने आपजो. ॥२८॥

जे शरदऋतुना जळ समा, निर्मळ मनोभावो वडे,
उपकार काज विहार करता, जे विभिन्न स्थळो विशे;
जेनी सहनशक्ति समीपे, पृथ्वी पण झांखी पडे,
एवा प्रभु अरिहंतने पंचांग भावे हुं नमुं. ॥२९॥

कुंजरसमा शूरवीर जे छे, सिंहसम निर्भय वळी,
गंभीरता सागर समी, जेना हृदयने छे वरी;
जेना स्वभावे सौम्यता छे, पूर्णिमाना चंद्रनी,
एवा प्रभु अरिहंतने पंचांग भावे हुं नमुं. ॥३०॥

निर्विघ्न स्थिरने अचल अक्षय, सिद्धिगति ए नामनुं,
छे स्थान अव्याबाध ज्यांथी नहि पुनः फरवापणुं;
ए स्थानने पाम्या अनंता, ने वळी जे पामशे,
एवा प्रभु अरिहंतने पंचांग भावे हुं नमुं. ॥३१॥

उपसर्ग करनारो कमठ उपसर्ग हरनारो धरण!
बन्ने उपर करुणासुधा वरसावता जेनां नयन!
जेनां हृदयमां वही रह्युं वात्सल्यनुं पावन झरण!
एवा प्रभु अरिहंतने पंचांग भावे हुं नमुं. ॥३२॥

मूर्ति प्रशम पावनसुधा वरसावनारी जेमनी,
वाणी हृदयवैराग्यसुख उपजावनारी जेमनी;
आज्ञा परमशाश्वत पदे पहोंचाडनारी जेमनी,
एवा प्रभु अरिहंतने पंचांग भावे हुं नमुं... ॥३३॥

मुज हृदयना धबकारमां, तारुं रटण चाली रहो,
हर श्वासने उच्छ्वासमां, तारुं स्मरण चाली रहो;
मुज नेत्रनी हर पलकमां, तारुं ज तेज रमी रहो,
मुज जिंदगीनी हर पळोमां, तुं ज प्राण बनी रहो. ॥३४॥

आकाश भूषण सूर्य जेवा, दीपता तपतेजथी,
वळी पूरता दिगंतने, करुणा-उपेक्षा-मैत्रीथी;
हरखावता जे विश्वने, मुदिता तणा संदेशथी,
एवा प्रभु अरिहंतने पंचांग भावे हुं नमुं. ॥३५॥

जे पूर्ण केवलज्ञान, लोकालोकने अजवाळतुं,
जेना महासामर्थ्य केरा, पार को नव पामतुं;
ए प्राप्त जेणे चार, घाती कर्मने छेदी कर्युं,
एवा प्रभु अरिहंतने पंचांग भावे हुं नमुं. ॥३६॥

सवि रूपथी अधिका तमे, सवि तेजथी अधिका तमे,
सवि पुण्यथी अधिका तमे, सवि आत्मथी अधिका तमे;
सवि विश्वना कल्याणना शुभ भावे अदकेरा तमे,
हे नाथ! हैयुं दइ दीधुं, हवे आजथी मारा तमे. ॥३७॥

संतप्त चित्तने ठारवा, समतानी जलधारा तमे,
चंचल आ चित्तने बांधवा छो,ध्याननी धारा तमे;
मुज भवदुःख निवारवा, भक्तिनी रसधारा तमे,
हे नाथ! हैयुं दइ दीधुं, हवे आजथी मारा तमे. ॥३८॥

प्रभु! पूर्ण तुं ने अपूर्ण हुं, निष्कामी तुं ने कामी हुं,
ते स्वरूपमां स्थिरता करी, विभावोनी में भीड करी;
प्रभु! आभ-गाभनुं आंतरू, दूरे करो विनंति करूं,
हे नाथ! हैयुं दइ दीधुं हवे आजथी मारा तमे. ॥३९॥

आ सृष्टिने अनुकूल थईने साधना तें जे करी,
तेना प्रभावे सृष्टिमां अनुकूळता सौ पांगरी;
तुज चोतरफ रेलाय आह्लादक हवा मस्तीभरी!
अरिहंत! अतिशयवंत, तुजने भावथी करूं वंदना. ॥४०॥

तुज एक वचने भविहृदयने भव्य सुखशान्ति मळे!
सुख एक पुद्गलभोगमां छे - आ महाभ्रान्ति टळे!
ने अंतरात्मामां अनेरी झगझगित कान्ति भळे,
अरिहंत! अतिशयवंत, तुजने भावथी करूं वंदना. ॥४१॥

करुणाजळे घुघवी रह्यां, सागर समा तारा नयन,
महातेजथी चमकी रह्या छे, सूर्य समा तारा नयन;
ज्यां सौम्यता छलकी रही छे, चंद्र सम तारा नयन,
करुणारसे अंजन करो, जेथी खुले मारा नयन. ॥४२॥

अमृतझरा तारा नयन, अश्रु भरा मारा नयन,
करुणाभीना तारा नयन, भावे भीनां मारा नयन;
अविकार छे तारा नयन, अनुरागी छे मारा नयन,
करुणारसे अंजन करो, जेथी खुले मारा नयन. ॥४३॥

तल्लीन थई तुज आंखमां, पीगळी गया मारा नयन,
तुज तेजने स्पर्शी करी, चमकी गया मारा नयन;
अंधार मारो दूर थयो, उजळां थया मारा नयन,
करुणारसे अंजन करो, जेथी खुले मारा नयन. ॥४४॥

भीनाशनी आ पृष्ठभू पर, मळशे मने मारा प्रभु,
हवे कोई नथी चिंता मने, मळशे मने मारा प्रभु;
विश्वास छे खुदथी अधिक, मळशे मने मारा प्रभु,
आनंद छे, आनंद छे, आनंद बस आनंद छे. ॥४५॥

प्रीति करी में तारी साथे, कारण विना मारा प्रभु,
प्रभु तुं मने गमी गयो, कारण विना मारा प्रभु;
निश्चे बनीश हुं तारा जेवो, कारण विना मारा प्रभु,
आनंद छे, आनंद छे, आनंद बस आनंद छे. ॥४६॥

संसारनी निःसारता, निर्वाणनी रमणीयता,
क्षणक्षण रहे मारा जीवनमां, धर्मनी करणीयता;
सम्यक्त्वनी ज्योति हृदयमां, झळहळे श्रेयस्करी,
प्रभु! आटलुं जनमोजनम, देजे मने करुणा करी. ॥४७॥

सवि जीव करुं शासनरसी, आ भावना हैये वहुं,
करुणाझरणमां रातदिन हुं, जीवनभर वहेतो रहुं;
शणगार संयमनो सजुं, झंखुं सदा शिवसुंदरी,
प्रभु! आटलुं जनमोजनम, देजे मने करुणा करी. ॥४८॥

गुणीजन विशे प्रीति धरुं, निर्गुण विशे मध्यस्थता,
आपत्ति हो, संपत्ति हो, राखुं हृदयमां स्वस्थता;
सुखमां रहुं वैराग्यथी, दुःखमां रहुं समता धरी,
प्रभु! आटलुं जनमोजनम, देजे मने करुणा करी. ॥४९॥

मनमां स्मृति, मूर्ति नयनमां, वचनमां स्तवना रहे,
मुज रक्तना हर बुंदमां, जिनराज! तुज आज्ञा वहे;
पहोंचाडशे मोक्षे मने, जिनधर्म एवी खातरी,
प्रभु! आटलुं जनमोजनम, देजे मने करुणा करी. ॥५०॥

जेना प्रभावे जीवनमां हुं परमशान्ति अनुभवुं,
जेना प्रभावे वरसमाधि मरणमां पामीश हुं;
जेना प्रभावे पवनवेगे मोक्षमां पहोंचीश हुं,
ते आदिनाथ जिनेन्द्रने पंचागभावे हुं नमुं. ॥५१॥

तव जीवनमां विषयो विकारो, नाथजी एकेय नथी,
मुज शुं कहुं? मारा जीवनमां, ए विना कशुंये नथी;
विनवुं हवे मुजमां, अनासक्ति ज्वलंत जगाडजो,
हे नेमिजिन! मारा हृदयमां, शौर्यरस जन्मावजो. ॥५२॥

हुं इन्द्रियोना संगमां, दिनरात स्वामी राचतो,
एवो नचाव्यो नाचतो, घेलो बनीने नाचतो;
इन्द्रियविजयनो चांदलो, मुज भाल पर चमकावजो,
हे नेमिजिन! मारा हृदयमां, शौर्यरस जन्मावजो. ॥५३॥

तमने प्रभु! पामी पळे पळ परमशाता अनुभवुं,
हे नाथ! तमने छोडीने बीजे नथी मारे जवुं;
मारे जवु छे मोक्षमां मुज मार्गने अजवाळजो,
हे नेमिनाथ! जिनेन्द्र! मारी प्रार्थना स्वीकारजो. ॥५४॥

हे नाथ ! तृष्णा अग्निए जन्मोजनम बाळ्यो मने,
नेहाळ नयनोमां डूबाडी प्रभु! तमे ठार्यो मने!
छे झंखना बस एक के मुजने भवोभव ठारजो!
हे नेमिनाथ! जिनेन्द्र मारी, प्रार्थना स्वीकारजो. ॥५५॥

रे! चंडकौशिक सर्प निर्दय क्रूर गोशालक अधम,
अंगार लई आव्या हता तो पण तमे आप्युं प्रशम!
शुभ भाव लई आव्यो छुं हुं मुज पाप ताप शमावजो!
हे वीर! करूणानीर अनराधार थई वरसावजो. ॥५६॥

सुलसा अने श्री चंदनानो मोहज्वर सत्वर हण्यो!
संगम सुराधमने य करूणापात्र वीर! तमे गण्यो!
तो हे कृपा सागर! हवे मुज काम अगन बुझावजो,
हे वीर! करूणानीर अनराधार थई वरसावजो. ॥५७॥

नवजात शैशवमां ध्रुजाव्यो मेरुने जे चरणथी,
हे वीर! एकलवीर थई कर्मो हण्या जे चरणथी;
बन्ने चरण हे वीर ! मारा स्मरणमां पधरावजो!
हे वीर! करूणानीर अनराधार थई वरसावजो. ॥५८॥

स्वाधीन सुंदर रूपरमणी राज्यसुखमां दुःख अने,
जोयुं तमे सुख साधुतामां आ न समजातुं मने!
आनुं रहस्य कृपाळु! मुजने झट हवे समजावजो!
हे वीर! करूणानीर अनराधार थई वरसावजो. ॥५९॥

तुं वृक्ष तो हुं पुष्प ने, तुं पुष्प तुज सुगंध हुं,
तुं वृक्ष तो हुं पर्ण ने, तुं पर्ण तो नीलरंग हुं;
तुं वृक्ष तो हुं वेल थई, वींटळाईने वळग्यो हतो,
हुं तुं हतो तुं हुं हतो, हवे आज आ शुं थई गयुं? ॥६०॥

चारित्र जो ना होय तो, सुज्ञान पण निष्फळ रहे,
चारित्र जो ना होय तो, सद्दर्शनम् निर्बळ रहे;
सुज्ञान दर्शन पण सदा, चारित्रयुक्त सफळ रहे,
चारित्रमां मुज मन वसो, चारित्र मुज तनमां वसो. ॥६१॥

चूमे निरंतर देवता, चारित्रधरना चरणने,
झंखे निरंतर इन्द्र पण, चारित्रना आचरणने;
चाहे निरंतर चित्त मुज, चारित्रधरना शरणने,
चारित्रमां मुज मन वसो, चारित्र मुज तनमां वसो. ॥६२॥

षट्खंड महासाम्राज्यमां, पण जे महादुःख देखतां,
ते चक्रवर्तीओ सदा, चारित्रमां सुख देखतां;
सिंहासने बेसे छतां, चारित्र सन्मुख देखतां,
चारित्रमां मुज मन वसो, चारित्र मुज तनमां वसो. ॥६३॥

विश्वे अनंता काळथी, चारित्रनो छे पंथडो,
आ पंथ पर चाल्या अनंता, जिनवरो ने गणधरो;
आत्मा अनंता शिव वर्या, चारित्रनो लई आशरो,
चारित्रमां मुज मन वसो, चारित्र मुज तनमां वसो. ॥६४॥

आराधनानुं अवतरण आनंदनुं वहेतुं झरण,
सावद्य सघळी पाप करणीओ तणुं ज्यां विस्मरण;
मारा प्रभुनी जीवन शैलीनुं ज ज्यां छे अनुसरण,
भय मुक्त भावे युक्त ते चारित्र पदने वंदना. ॥६५॥



वेदनानी संवेदना...

(रागः महा हेतवाळी...)

करुणा करी नाथ जगतने खमावो,
भूलोने भूली आपोने हवे किनारो,
खबर ना हती थाशे शुं अंत आनो,
नादान हुं प्रभु बाळ छुं घणो ज नानो... ॥६६॥

विरहतानी वेदनाने तुं शके ना जाणी,
हरखी रह्युं छे तन स्पर्श तारो माणी,
जे थयुं प्रभु एने तुं भुलावी देजे,
संतान ना पडे विखूटो संभाळी लेजे... ॥६७॥

गुणलां गातां तारां रे प्रेममां हुं नाचुं,
निष्पाप-निष्कलंक-निर्विकार जीवन याचुं;
रजोहरण पामी तुज पंथमां हुं राचुं,
धरतो रहुं हुं एकमात्र ध्यान तारुं साचुं... ॥६८॥

तुजमां रहुं हवे बीजे क्यांय ना हुं दोडुं,
विलासने मूकी मनडुं धर्ममार्गे जोडुं,
साथे जो जिनेश्वर तो शुं बगडशे मारुं,
वैराग्यना रंगोमां मारे छे रंगावुं... ॥६९॥

तुज ध्याननना उद्यानमां उषा-निशा वितावुं,
गुण परिमल श्वासने उच्छवासमां वहावुं,
निज बाळ पर प्रभु करुणा ना करो शाने,
वस्यां छो मुज ग्रंथना पाने-पाने... ॥७०॥

लखुं आ हृदयनी व्यथा कोना नामे,
जई बेठो तुं प्रभु मुक्तिसुखनां धामे,
लगावी छे दोड तारां सरनामे,
हवे दुःख शाने सतत प्रभु सामे... ॥७१॥

उगता परोढिये एक शरुआत थाशे,
जे जीव रमतो रागमां ए गीत तारां गाशे,
बस एक आश छे के जो तुं साथ रहेशे,
भले पडे ने कष्ट बाळ हसतो हसतो सहेशे... ॥७२॥

उत्संगमां विभु मुजने तारां रे राखो,
नहीं चाहुं सुख-दुःखना ए विपाको,
अरज करुं एटली के 'हुं' ने खोवुं,
हे नाथ! तारी भीतर हवे मुजने जोवुं... ॥७३॥

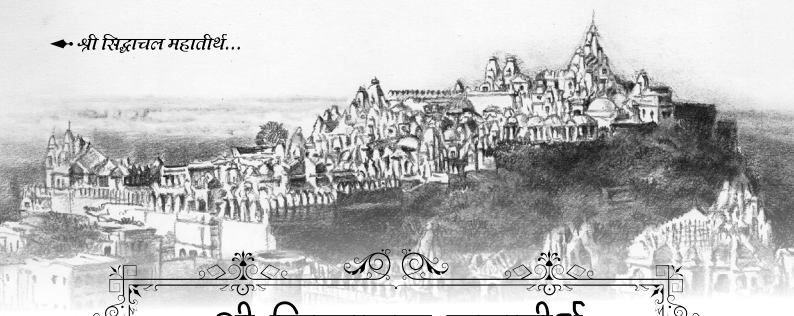

श्री सिद्धाचल महातीर्थ

चैत्यवंदन

(१) विमल-केवल-ज्ञान-कमला...

विमल-केवल-ज्ञान-कमला, कलित त्रिभुवन हितकरं;
सुरराज संस्तुत चरणपंकज, नमो आदि जिनेश्वरं. ॥१॥
विमल गिरिवर शृंगमंडण, प्रवर गुणगण भूधरं;
सुर असुर किन्नर कोडि सेवित, नमो आदि जिनेश्वरं. ॥२॥
करती नाटक किन्नरी गण, गाय जिनगुण मनहरं;
निर्जरावली नमे अहोनिश, नमो आदि जिनेश्वरं. ॥३॥
पुंडरिक गणपति सिद्धि साधित, कोडी पण मुनि मनहरं;
श्री विमलगिरिवर शृंग सिध्या, नमो आदि जिनेश्वरं. ॥४॥
निज साध्य साधक सुर मुनिवर, कोडिनंत ए गिरिवरं;
मुक्तिरमणी वर्या रंगे, नमो आदि जिनेश्वरं. ॥५॥
पाताल नर सुर लोकमांहि, विमल गिरिवर तो परं;
नहि अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो आदि जिनेश्वरं. ॥६॥
इम विमलगिरिवर शिखर मंडण, दुःखविहंडण ध्याइए;
निज शुद्धसत्ता साधनार्थं, परम ज्योति निपाइए. ॥७॥
जित मोह कोह विछोह निद्रा, परमपद स्थित जयकरं;
गिरिराज सेवा करण तत्पर, '**पद्मविजय**' सुहितकरं. ॥८॥

(२) श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र...

श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे;
भाव धरीने जे चढे, तेने भवपार उतारे. ॥१॥
अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीर्थनो राय;
पूर्व नव्वाणुं ऋषभदेव; ज्यां ठविया प्रभु पाय. ॥२॥
सूरज कुंड सोहामणो, कवड जक्ष अभिराम,
नाभिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं प्रणाम. ॥३॥

(3) सोना रूपाना फूलडे...

सोना रूपाना फूलडे, सिद्धाचलने वधावो;
ध्यान धरी दादा तणुं, आनंद मनमां लावो. ॥१॥
पूजा करी पावन थयो, अम मन निर्मल देह;
रचना रचुं शुभ भावथी, करुं कर्मनो छेह. ॥२॥
अभविने दादा वेगळा, भविने हैडा हजूर;
तन मन ध्यान एक लगनथी, कीधां कर्म चकचूर. ॥३॥
कांकरे कांकरे सिद्ध थया ए, सिद्ध अनंतनुं धाम;
शाश्वत गिरिवर पूजतां, जीव पामे विश्राम. ॥४॥
दादा दादा हुं करुं, दादा वसिया दूर;
द्रव्यथी दादा वेगळा, भावथी हैडां हजूर. ॥५॥
दुःषम काळे पूजतां, इन्द्र धरी बहु प्यार;
ते प्रतिमाने वंदना, श्वासमांहे सो वार. ॥६॥
सुवर्ण गुफाए पूजतां, रत्न प्रतिमा इन्द्र;
ज्योतिशुं ज्योति मिले, पूजो भवि सुखकंद. ॥७॥
रिद्धि सिद्धि घेर संपजे, पहोंचे मननी आश;
त्रिकरण शुद्धे पूजतां, '**ज्ञानविमल**' प्रकाश. ॥८॥

स्तवन

(१) आज मारां नयणां सफळ थयां...

(राग : तारा विना श्याम मने.../ओघो छे अणमुलो.../
होशवालो को...)

आज मारां नयणां सफळ थयां, श्री सिद्धाचल नीरखी;
गिरिने वधावुं मोतीडे, मारा हैयामां हरखी. ॥१॥
धन्य धन्य सोरठ देशने, जिहां ए तीरथ जोडी;
विमलाचल गिरनारने, वंदुं बे कर जोडी. ॥२॥
साधु अनंता ईण गिरि, सिध्या अनशन लेई;
राम पांडव नारदऋषि, बीजा मुनिवर केई. ॥३॥
मानवभव पामी करी, नवि ए तीरथ भेटे;
पाप करम जे आकरां, कहो केणी पेरे मेटे. ॥४॥
तीर्थराज समरुं सदा, सारे वांछित काज;
दुःख दोहग दूरे करी, आपे अविचल राज. ॥५॥
सुखना अभिलाषी प्राणीआ, वांछे अविचल सुखडा;
'**माणेकमुनि**' गिरिध्यानथी, भांजे भवोभव दुःखडां. ॥६॥

(२) ऊंचा ऊंचा शत्रुंजयनां शिखरो सोहाय...

(राग : मेरा जीवन कोरा कागज.../आंख मारी उघडे...)

ऊंचा ऊंचा शत्रुंजयना शिखरो सोहाय,
वच्चे मारा दादा केरा देरा झगमग थाय,
दादा तारी यात्रा करवा, मारुं मन ललचाय,
तळेटीए शीश नमावी, चढवा लागुं पाय,
पावन गिरिनो स्पर्श थातां, पापो दूर पलाय. ऊंचा०॥१॥

लीली लीली झाडीओमां, पंखी करे कलशोर,
सोपान चढतां चढतां जाणे, हैयुं अषाढी मोर,
कांकरे कांकरे सिध्यां अनंता, लळी लळी लागुं पाय. ऊंचा०॥२॥
पहेली आवे राम पोळ ने, त्रीजी वाघणपोळ,
शांतिनाथनां दर्शन करतां, पहोंच्या हाथी पोळ,
सामे मारा दादा केरा, दरबार देखाय. ऊंचा०॥३॥
दोडी दोडी आवुं दादा, दर्शन करवा आज,
भाव भरेली भक्ति करीने, साधुं आतम काज,
मरुदेवाना नंदन नीरखी, जीवन पावन थाय. ऊंचा०॥४॥
क्षमा भावे ओमकार पदनो, नित्य करीश हुं जाप,
दादा तारां गुणलां गातां, कापीश भवनां पाप,
'**पद्मविजय**'ने हैये आजे, आनंद ऊभराय. ऊंचा०॥५॥

(3) ऐसी दशा हो भगवन...

(रागः रुडां राजमहेल.../ए मरे वतन.../यह है पावन...)

ऐसी दशा हो भगवन, जब प्राण तन से निकले...
गिरिराज की हो छाया, मन में न होवे माया;
तप से हो शुद्ध काया, जब प्राण तन से निकले. ॥१॥
उरमें न मान होवे, दिल एक तान होवे;
तुम चरण ध्यान होवे, जब प्राण तन से निकले. ॥२॥
संसार दुःख हरना, जिन धर्म हो शरणा;
हो कर्म भर्म खरना, जब प्राण तन से निकले. ॥३॥
अनशन को सिद्धवट हो, प्रभु आदिदेव घट हो;
गुरुराज भी निकट हो, जब प्राण तन से निकले. ॥४॥
यह दान मुज को दीजे, ईतनी दया तो कीजे;
अरजी '**तिलक**' की लीजे, जब प्राण तन से निकले. ॥५॥



(४) क्युं न भये हम मोर विमलगिरि...

(राग : पार्श्व चिंतामणि मेरो... /जिन तेरे...)

क्युं न भये हम मोर विमलगिरि, क्युं न भये हम मोर.. ॥१॥
सिद्धवड रायण रुख की शाखा, झुलत करत झकोर... ॥२॥
आवत संघ रचावत अंगीया, गावत गुण घमघोर.. ॥३॥
हम भी छत्र कला करी निरखत, कटने कर्म कठोर.. ॥४॥
मूरत देख सदा मन हरखे, जैसे चंद चकोर... ॥५॥
श्री '**रिसहेसर दास**' तिहारो, अरज करत कर जोर... ॥६॥



(५) गिरिवर दरिसण विरला पावे...

(राग : शांति जिनेश्वर साचो.../आ भव मळीया.../
गिरनारे शोभे देखो...)

गिरिवर दरिसण विरला पावे, पूरव संचित कर्म खपावे;
ऋषभ जिनेश्वर पूजा रचावे, नव नव नामे गिरिगुण गावे. ॥१॥
सहसकमल ने मुक्तिनिलय गिरि, सिद्धाचल ने शतकूट कहावे;
ढंक कदंबने कोडि निवासो, लोहित तालध्वज सुर गावे. ॥२॥
ढंकादि पंच कूट सजीवन, सुरनर मुनि मळी नाम थपावे;
रयणखाण जडीबुट्टी गुफाओ, रसकुंपिका गुरु ईहां बतावे. ॥३॥
पण पुण्यवंता प्राणी पावे, पुण्य कारण प्रभु पूजा रचावे;
दस कोटि श्रावकने जमाडे, जैन तीर्थ यात्रा करी आवे. ॥४॥
तेथी एक मुनि दान दियंता, लाभ घणो सिद्धाचल थावे;
चंद्रशेखर निज भगिनी भोगी, ते पण ए गिरि मोक्षे जावे. ॥५॥
चार हत्यारा नर परदारा, देव गुरुद्रव्य चोरी पावे;
चैत्री कार्तिकी पूनम यात्रा, तप जप ध्यानथी पाप जलावे. ॥६॥
ऋषभसेन जिन आदि असंख्या, तीर्थंकर मुक्तिसुख पावे;
शिववधू वरवा मंडप ए गिरि, श्री '**शुभवीर**' वचन रस गावे. ॥७॥

(६) प्रीतलडी बंधाणी रे विमल गिरींदशुं...

(राग : प्रीतलडी बंधाणी रे अजित.../आंखडी मारी...)

प्रीतलडी बंधाणी रे विमल गिरींदशुं,
निशिपति निरखी हरखे जेम चकोर जो;
कमला गौरी हरिहरथी राची रहे,
जलधर जोईने मस्त बने वन मोर जो. प्रीतलडी०॥१॥
आदिश्वर अलवेसर आवी समोसर्या,
पुण्य भूमिमां पुरव नव्वाणुं वार जो;
अरिहंत श्री अजित जिनेश्वर शांतिनाथजी,
रह्यां चोमासुं जाणी शिवपुर द्वार जो. प्रीतलडी०॥२॥
सूर्यवंशी सोमवंशी यादव वंशना,
नृप गुण पाम्या निर्मळ पद निर्वाण जो;
महा मुनीश्वर ईश्वरपद पूरण वर्या,
शिवपुर श्रेणी आरोहण सोपान जो. प्रीतलडी०॥३॥
तीन भुवनमां तीरथ तुज सम को' नहीं,
एम प्रकाशे सीमंधर महाराज जो;
तारे शरणे आव्यो हुं उतावळो,
तार तार ओ गिरिवर गरीब निवाज जो. प्रीतलडी०॥४॥
हुं अपराधी पापी मिथ्याआडंबरी,
फोगट भूल्यो भवमां तुम विना एक जो;
हवे न मूकुं मोहन मुद्रा ताहरी,
ए मुज मोटी वंकनाळनी टेक जो. प्रीतलडी०॥५॥
पल्लो पकडी बापजी बेठो लांघवा,
आप आप तुं भक्त वत्सल भगवंत जो;
अंते पण देवुं रे पडशे साहिबा,
शी करवी हवे खाली खेंचताण जो. प्रीतलडी०॥६॥

मूळ विक्षेप ने आवरण त्रिक दुरे करी,
छेल छबीला आव्यो आप हजूर जो;
समर्पण कीधुं अति उमंगथी,
प्रेम पयोनिधि प्रगट्यो अभिनव पूरो जो. प्रीतलडी०॥७॥
श्री सिद्धाचल गिरिवर मंडन शेखरा,
परम कृपाळु पालक प्राण आधार जो;
विछडशो नहीं कदीए प्यारा प्राणथी,
रसिया करो '**धर्मरत्न**' विस्तारजो. प्रीतलडी०॥८॥



(७) बापलडा रे पातिकडा तुमे...

(राग : चार दिवसना.../मेरे नैना.../फूल तुमे भेजा...)

बापलडा रे पातिकडा तुमे, शुं करशो हवे रहीने रे;
श्री सिद्धाचल नयणे निरख्यो, दूर जाओ तमे वहीने रे. ॥१॥
काळ अनादि लगे तुम साथे, प्रीत करी निरवहीने रे;
आज थकी प्रभु चरणे रहेवुं, एम शीखवीयुं मनने रे. ॥२॥
दुषम काले ईणे भरते, मुक्ति नहीं संघयणने रे;
पण तुम भक्ति मुक्तिने खेंचे, चमक उपल जिम लोहने रे. ॥३॥
शुद्ध सुवासन चूरण आप्युं, मिथ्या पंक शोधनने रे;
आतम भाव थयो मुज निर्मळ, आनंदमय तुज भजने रे. ॥४॥
अक्षय निधान तुज समकित पामी, कुण वंछे चल धनने रे;
शांत सुधारस नयण कचोले, सींचो सेवक तनने रे. ॥५॥
बाह्य अभ्यंतर शत्रु केरो, भय न होवे हवे मुजने रे;
सेवक सुखीयो सुजस विलासी, ए महिमा प्रभु तुजनो रे. ॥६॥
नाम मंत्र तुमारो साध्यो, ते थयो जग मोहनने रे;
तुज मुख मुद्रा निरखी हरखुं, जिम चातक जलधरने रे. ॥७॥
तुज विण अवरने देव करीने, नव चाहुं फरी फरीने रे;
'**ज्ञानविमल**' कहे भवजल तारो, सेवक बांह्य ग्रहीने रे. ॥८॥

(८) गिरिराजकुं सदा मोरी वंदना...



वंदना वंदना वंदना रे, गिरिराज कुं सदा मोरी वंदना,
वंदना ते पाप निकंदना रे, आदिनाथकुं सदा मोरी वंदना;
जिनको दरिसण दुर्लभ देखी, कीधी ते कर्म निकंदना रे गि०॥१॥
विषय कषाय ताप उपशमीये, जिम मले बावन चंदना रे गि०॥२॥
धन धन ते दिन कबही होंशे, थाशे तुम मुख दर्शना रे. गि०॥३॥
तिहां विशाल भाव पण होंशे, जिहां प्रभु पदकज फर्शना रे गि०॥४॥
चित्तमांहेथी कबहुं न विसारुं, प्रभु गुणगणनी ध्यावना रे गि०॥५॥
वळी वळी दरिसण वहेलुं लहीये, एहवी रहे नित्य भावना रे गि०॥६॥
भवोभव एही ज चित्तमां चाहुं, मेरे ओर नहिं विचारणा रे गि०॥७॥
चित्रगयंदना महावतनी पेरे, फेर न होय उतारना रे. गि०॥८॥
'**ज्ञानविमल**' प्रभु पूर्णकृपाथी, सुकृत सुबोध सुवासना रे. गि०॥९॥

(९) भरतनी पाटे भूपति रे...

(राग : धन धन श्री अरिहंतने रे.../बंध समये चित्त...)

भरतनी पाटे भूपति रे, सिद्धि वर्या एणे ठाम, सलुणा;
असंख्याता तिहां लगे रे, हुआ अजित जिनराय, सलुणा. ॥१॥
जिम जिम ए गिरि भेटीए रे, तिम तिम पाप पलाय, सलुणा;
अजित जिनेश्वर साहिबो रे, चोमासुं रही जाय, सलुणा. ॥२॥
सागर मुनि एक कोडिशुं रे, तोड्या कर्मना पास, सलुणा;
पांच कोडी मुनिराजशुं रे, भरत लह्यां शिववास, सलुणा. ॥३॥
आदीश्वर उपकारथी रे, सत्तर कोडी साथ, सलुणा;
अजितसेन सिद्धाचले रे, झाल्यो शिववहु हाथ, सलुणा. ॥४॥
अजितनाथ मुनि चैत्रनी रे, पूनमे दशहजार, सलुणा;
आदित्ययशा मुक्ति वर्या रे, एक लाख अणगार, सलुणा. ॥५॥

अजरामर क्षेमंकरुं रे, अमरकेतु गुणकंद, सलुणा;
सहस्रपत्र शिवंकरुं रे, कर्मक्षय तमो कंद, सलुणा. ॥६॥
राजराजेश्वर ए गिरि रे, नाम छे मंगल रूप, सलुणा;
गिरिवर रज तरु मंजरी रे, शीश चढावे भूप, सलुणा. ॥७॥
देवयुगादि पूजतां रे, कर्म होये चकचूर, सलुणा;
श्री '**शुभवीर**' ने साहिबा रे, रहेजो हैडा हजुर, सलुणा. ॥८॥



(१०) मनना मनोरथ सवि फळ्या ए...

(रागः नीले गगन के तले.../दीन दुःखियानो...)

मनना मनोरथ सवि फळ्या ए, सिध्या वांछित काज;
पूजो गिरिराजने रे; वंदो गिरिराजने रे, जय गिरिराज (४)!
प्राये ए गिरि शाश्वतो ए, भवजळ तरवा जहाज. पूजो०॥१॥
मणि माणेक मुक्ताफळे ए, रजत कनकनां फूल;
केशर चंदन घसी घणां ए, बीजी वस्तु अमूल. पूजो०॥२॥
छट्ठे अंगे दाखीयो ए, आठमे अंगे भाख;
थिरावली पयन्ने वर्णव्यो ए, ए आगमनी साख. पूजो०॥३॥
विमल करे भविलोकने ए, तेणे विमलाचल जाण;
शुकराजथी विस्तर्यो ए, शत्रुंजय गुण खाण. पूजो०॥४॥
पुंडरीक गणधरथी थयो ए, पुंडरीक गिरि गुणधाम;
सुर-नरकृत एम जाणीए ए, उत्तम एकवीश नाम. पूजो०॥५॥
ए गिरिवरना गुण घणा ए, नाणीए नवि कहेवाय;
जाणे पण कही नवि शके ए, मूक गुडने न्याय. पूजो०॥६॥
गिरिवर फरसन नवि कर्यो ए, ते रह्यो गर्भावास;
नमन दरसन फरसन कर्यो ए, पूरे मननी आश. पूजो०॥७॥
आज महोदय में लह्यो ए, पाम्यो प्रमोद रसाळ;
'**मणिउद्योत**' गिरि सेवतां ए, घेर घेर मंगल माळ. पूजो०॥८॥

(११) मारुं मन मोह्युं रे...



(राग : धारणी मनावे रे... / रुडी ने रढियाली रे...)

मारुं मन मोह्युं रे श्री सिद्धाचले रे, देखीने हरखित थाय;
विधिशुं कीजे रे यात्रा एहनी रे, भवभवनां दुख जाय. मारुं०॥१॥
पांचमे आरे रे पावन कारणे रे, ए समुं तीरथ न कोय;
मोटो महिमा रे जगमां एहनो रे, आ भरते इहां जोय. मारुं०॥२॥
इण गिरि आव्या रे जिनवर गणधरा रे, सिध्यां साधु अनंत;
कठिन कर्म पण ए गिरि फरसतां रे, होवे कर्म निशांत. मारुं०॥३॥
जैन धर्म ते साचो जाणीए रे, मानुं तीरथ ए स्थंभ;
सुरनर किन्नर नृप विद्याधरा रे, करतां नाटारंभ. मारुं०॥४॥
धन्य ते दहाडो रे धन्य वेळा घडी रे, धरीए हृदय मोझार;
'**ज्ञानविमलसूरि**' गुण एहना घणां रे, कहेतां न आवे पार मारुं०॥५॥

(१२) यात्रा नव्वाणुं करीए...



(राग : मेरुशिखरे नवरावे हो.../पहेले डुंगरीए...)

यात्रा नव्वाणु करीए, विमलगिरि यात्रा नव्वाणु करीए;
पूरव नव्वाणु वार शत्रुंजयगिरि, ऋषभ जिणंद समोसरीए. ॥१॥
कोटि सहस भव पातिक तूटे, शत्रुंजय समो डग भरीए. ॥२॥
सात छठ्ठ दोय अठ्ठम तपस्या, करी चढीए गिरिवरीए. ॥३॥
पुंडरीक पद जपीए मन हरखे, अध्यवसाय शुभ धरीए. ॥४॥
पापी अभव्य नजरे न देखे, हिंसक पण उद्धरीए. ॥५॥
भूमि संथारो ने नारी तणो संग, दूर थकी परिहरीए. ॥६॥
सचित्त परिहारी ने एकल आहारी, गुरु साथे पद चरीए. ॥७॥
पडिक्कमणां दोय विधिशुं करीए, पाप पडल विखरीए. ॥८॥
कळिकाळे ए तीरथ मोटुं, प्रवहण जिम भर दरीए. ॥९॥
उत्तम ए गिरिवर सेवंता, '**पद्म**' कहे भव तरीए. ॥१०॥

(९३) विमलगिरि विमलता समरीये...

(राग : चेतन ज्ञान अजवाळीये../पार्श्व चिंतामणी मेरो...)

विमलगिरि विमलता समरीये, कमलदल नयन जगदीश रे;
त्रिभुवन दीपक दीपतो, जिहां जयो श्री युगादीश रे. ॥१॥
पापना ताप सवि उपशमे, प्रह समे समरता नाम रे;
पूजतां पाय श्रीऋषभना, संपजे वांछित काम रे. ॥२॥
ऋद्धि राणी घर घर मळे, पय तळे कनकनी कोडी रे;
नाभि नरनाथ सुत समरणे, ईम भणे '**विनय**' करजोडी रे. ॥३॥

(९४) विमलगिरि शिखर सुंदर...

(राग : मेरा जीवन कोरा कागज.../आंख मारी उघडे त्यां.../
आज मारा प्रभुजी....)

विमलगिरि शिखर सुंदर, सकल तीरथ सार रे;
नाभिनंदन त्रिजगवंदन, ऋषभजिन जयकार रे. विमल०॥१॥
चैत्य तरुवर रुख रायण, तले अति मनोहार रे;
नाभिनंदन तणा पगला, भेटतां भव पार रे. विमल०॥२॥
समवसरीया आदि जिनवर, जाणी लाभ अनंत रे;
अजित शांति चोमासुं रहीया, साथ अनेक महंत रे. विमल०॥३॥
साधु सिध्या जिहां अनंता, पुंडरीक गणधार रे;
सांबने प्रद्युम्न पांडव, प्रमुख बहु अणगार रे. विमल०॥४॥
नेमिजिननो शिष्य थावच्चो, एक सहस अणगार रे;
अंतगडजी सूत्र मांहे, ज्ञातासूत्र मोझार रे. विमल०॥५॥
भावशुं जे भविक भेटे, सिद्धक्षेत्र मुकाम रे;
नरक तिरि गति दोष निवारे, जे जपे लाख जिननाम रे. विमल०॥६॥
रयणमणिनी ऋषभ पडीमा, पंचसया धनु मान रे;
नित्य प्रत्ये जिहां इन्द्र पूजे, दुषम समय प्रमाण रे. विमल०॥७॥

त्रीजे भवे मुक्ति पहोंचे, भविक भेटे जेह रे;
देव सांनिध्य सकल वांछित, पूरवे ससनेह रे. विमल०॥८॥
एणी परे ए तीरथ महिमा, कह्यो शास्त्र मोझार रे;
'**ज्ञानविमल**' गिरि ध्यान धरता, आवागमन निवार रे. विमल०॥९॥

(१५) विमलगिरि वंदो रे...

(राग : अंतरजामी सुण.../वीर! मने तारो...)

श्री आदीश्वर अंतरजामी, जीवन जगत आधार,
शांत सुधारस ज्ञाने भरियो, सिद्धाचल शणगार;
रायण रुडी रे, जिहां प्रभु पाय धरे, विमलगिरि वंदो रे,
देखत दुःख हरे, पुण्यवंता प्राणी रे, प्रभुजीनी सेवा करे. वि०॥१॥
गुण अनंता गिरिवर केरा, सिध्या साधु अनंत,
वळी रे सिद्धशे वार अनंती, एम भाखे भगवंत;
भवोभव केरां रे, पातिक दूर करे. वि०॥२॥
वावडियुं रस कुंपा केरी, मणि माणेकनी खाण,
रत्नखाण बहु राजे हो तीरथ, एहवी श्री जिनवाण;
सुखना स्नेही रे, बंधन दूर करे. वि०॥३॥
पांच कोटिशुं पुंडरीक सिध्यां, त्रण कोटिशुं राम,
वीश कोटिशुं पांडव सिध्यां, सिद्धक्षेत्र सिद्ध ठाम;
मुनिवर मोटा रे, अनंता मुक्ति वरे. वि०॥४॥
एसो तीरथ ओर न जग में, एम भाखे श्री जिनभाण,
दुर्गति कापे ने पार उतारे, वहालो आपे केवलनाण;
भविजन भावे रे, जे एहनुं ध्यान धरे. वि०॥५॥
द्रव्य भावशुं पूजा करतां, पूजो श्री जिनपाय,
चिदानंद सुख आतम वेदी, ज्योति से ज्योति मिलाय;
कीर्ति एहनी रे, '**माणेक**' मुनि करे. वि०॥६॥

(१६) विमलाचल नितु वंदीए...

(राग : छट्ठो आरो एवो आवशे.../तुं मने भगवान.../
ओघो छे अणमोलो.../कडवा फळ छे क्रोधना...)

विमलाचल नितु वंदीए, कीजे एहनी सेवा;
मानुं हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फळ लेवा. वि०॥१॥
उज्ज्वल जिन गृह मंडली, तिहां दीपे उत्तंगा;
मानुं हिमगिरि विभ्रमे, आई अंबर गंगा. वि०॥२॥
कोई अनेरुं जग नहि, ए तीरथ तोले;
एम श्रीमुख हरि आगळे, श्री सीमंधर बोले. वि०॥३॥
जे सघळां तीरथ कह्यां, यात्रा फळ कहीए;
तेहथी ए गिरि भेटतां, शतगणुं फळ लहीए. वि ॥४॥
जन्म सफल होय तेहनो , जे ए गिरि वंदे;
'**सुजशविजय**' संपद लहे, ते नर चिर नंदे. वि०॥५॥

(१७) शत्रुंजय गढना वासी रे...

(राग : गुजराती गरबो.../ओघो छे अणमूलो.../रुडीने रढियाळी रे...)

शत्रुंजय गढना वासी रे, मुजरो मानजो रे,
सेवकनी सुणी वातो रे, दिलमां धारजो रे;
प्रभु में दीठो तुम देदार, आज मने ऊपन्यो हरख अपार,
साहिबानी सेवा रे, भव दुःख भांजशे रे. सा०॥१॥
एक अरज अमारी रे, दिलमां धारजो रे,
चोराशी लाख फेरा रे, दूर निवारजो रे;
प्रभु मने दुर्गति पडतो राख, दरिसण वहेलुं रे दाख. सा०॥२॥
दोलत सवाई रे, सोरठ देशनी रे,
बलिहारी हुं जाउं रे, प्रभु तारा वेशनी रे;
प्रभु तारुं रुडुं दीठुं रूप, मोह्यां सुरनर वृंद ने भूप. सा०॥३॥

तीरथ न कोई रे, शत्रुंजय सारीखुं रे,
प्रवचन पेखीने, कीधुं में पारखुं रे;
ऋषभने जोई जोई हरखे जेह, त्रिभुवन लीला पामे तेह. सा०॥४॥
भवोभव मांगुं रे, प्रभु तारी सेवना रे,
भावठ न भांजे रे, जगमां जे विना रे;
प्रभु मारा पूरो मनना कोड, ईम कहे '**उदयरत्न**' करजोड. सा०॥५॥

(९८) शोभा शी कहुं रे शेत्रुंजा तणी...

(रागः प्रीतलडी बंधाणी रे.../आंखडी मारी प्रभु.../
निरख्यो नेमि जिणंद..)

शोभा शी कहुं रे शेत्रुंजा तणी,
जिहां बिराजे छे प्रथम तीर्थंकर देव जो;
रुडी रे... रायण तळे ऋषभ समोसर्या,
चोसठ सुरपति... सारे प्रभुनी सेव जो. ॥१॥
नीरख्यो रे नाभिराया केरा पुत्रने,
माता मरुदेवी केरा नंद जो;
रुडी रे.... विनीता नगरीनो धणी,
मुखडुं ते सोहे... शरद पूनमनो चंद जो. ॥२॥
नित्य ऊठीने नारी कंथ ने विनवे,
पिउडा मुजने पालीताणा देखाडजो;
ए गिरिए... पूर्व नव्वाणुं समोसर्या,
माटे मुजने... आदीश्वर भेटाडजो. ॥३॥
मारे मन जावानी घणी होंश छे,
क्यारे जावुं ने क्यारे करुं दर्शन जो;
ते माटे... मन मारुं तलसे घणुं,
नयणे निहाळुं तो... ठरे मारां लोचन जो. ॥४॥

एवी रे अरज अमारी सांभळो,
हुकम करो तो आवुं तमारी पास जो;
महेर करीने.... एक वार दरिसण दीजिये,
श्री '**शुभवीर**'नी... पहोंचे मननी आश जो. ॥५॥

(१९) सिद्धाचल शिखरे दीवो रे...

(राग : गुजराती गरबो...)

सिद्धाचल शिखरे दीवो रे, आदीश्वर अलबेलो रे;
जाणे दर्शन अमृत पीवो रे, आदीश्वर अलबेलो रे;
शिव सोमजसानी लारे रे, आ०,
तेर कोडी मुनि परिवारे रे, आ० ॥१॥
करे शिवसुंदरीनुं आणुं रे, आ०,
नारदजी लाख एकाणुं रे; आ०
वसुदेवनी नारी प्रसिद्धि रे, आ०,
पांत्रीस हजार ते सिद्धि रे, आ० ॥२॥
लाख बावनने एक कोडी रे, आ०,
पंचावन सहसने जोडी रे; आ०
सातसोने सित्योत्तेर साधु रे, आ०,
प्रभु शांति चोमासुं कीधुं रे, आ० ॥३॥
तव ए वरिया शिवनारी रे, आ०,
चौद सहस मुनि दमितारी रे; आ०
प्रद्युम्नप्रिया अचंभी रे, आ०,
चौवालीससें वैदर्भी रे, आ० ॥४॥
थावच्चापुत्र हजारे रे, आ०,
शुक्र परिव्राजक ए धारे रे; आ०

सेलग पणसय विख्याते रे, आ०,
सुभद्रमुनि सयसाते रे, आ० ॥५॥
भवतरिया तेणे भवतारण रे, आ०,
गजचंद्र महोदय कारण रे; आ०
सुरकांत अचल अभिनंदो रे, आ०,
सुमति श्रेष्ठी भयकंदो रे, आ० ॥६॥
इहां मोक्षे गया केई कोटी रे, आ०,
अमने पण आशा मोटी रे; आ०
श्रद्धा संवेगे भरियो रे, आ०,
में मोटो दरियो तरियो रे, आ० ॥७॥
श्रद्धा विण कुण इहां आवे रे, आ०,
लघु जळमां केम ते नावे रे; आ०
तिणे हाथ हवे प्रभु झालो रे, आ०,
'**शुभवीर**'ने हैडे वहालो रे, आ० ॥८॥

(२०) सिद्धाचलगिरि भेट्या रे...

(राग : हे प्रभुजी! नहि जाउं नरकनी गेहे.../ माईन माईन.../ आंख मारी उघडे.../ऐ मेरे वतन के...)

सिद्धाचलगिरि भेट्यां रे, धन्यभाग्य हमारा,
ए गिरिवरनो महिमा मोटो, कहेतां न आवे पारा;
रायण रुख समोसर्या स्वामी, पूर्व नव्वाणुं वारा रे. ॥१॥
मूळनायक श्री आदिजिनेश्वर, चौमुख प्रतिमा चारा;
अष्ट द्रव्यशुं पूजो भावे, समकित मूळ आधारा रे. ॥२॥
भाव भक्तिशुं प्रभु गुण गावे, अपना जन्म सुधारा;
यात्रा करी भविजन शुभ भावे, नरक तिर्यंच गति वारा रे. ॥३॥

दूर देशांतरथी हुं आव्यो, श्रवणे सुणी गुण तोरा;
पतित उद्धारण बिरुद तमारुं, ए तीरथ जग सारा रे. ॥४॥
संवत अढार त्र्यासी मास अषाढा, वदि आठम सोमवारा;
प्रभुजी के चरण प्रताप के संघमें, '**खिमारतन**' प्रभु प्यारा रे ॥५॥

(२१) सिद्धाचलना वासी...

सिद्धाचलना वासी, विमलाचलना वासी,
जिनजी प्यारा, आदिनाथने वंदन अमारा;
प्रभुजीनुं मुखडुं मलके, नयनोमांथी वरसे,
अमीरस धारा, आदिनाथने वंदन अमारा. ॥१॥
प्रभुजीनुं मुखडुं छे मलक मिलाकर, दिलमें भक्ति की ज्योत जगाकर;
भज ले प्रभुने भावे, दुर्गति कदी न आवे, जिनजी०॥२॥
भमीने लाख चोरासी हुं आव्यो, पुण्ये दरिसन तमारा पायो;
धन्य दिवस मारो, भवना फेरा टाळो, जिनजी०॥३॥
अमे तो मायाना विलासी, तमे छो मुक्तिपुरीना वासी;
कर्मबंधन कापो, मोक्षसुख आपो, जिनजी०॥४॥
अरजी उरमां धरजो अमारी, अमने आशा छे प्रभुजी तमारी;
कहे '**हर्ष**' हवे, साचा स्वामी तमे, वंदन करीए अमे. जिनजी०॥५॥

(२२) सिद्धाचलनो वासी प्यारो लागे...

(राग : आंख मारी ऊघडे त्यां../बेसवुं होय तो बेसी जाओ../
आज मारा देरासरमां.../अखिया हरखण लागी...)

सिद्धाचलनो वासी प्यारो लागे, मोरा राजिंदा...!
ईण रे डुंगरीयामां झीणी झीणी कोरणी, उपर शिखर बिराजे. ॥१॥
काने कुंडल माथे मुगुट बिराजे, बांहे बाजुबंध छाजे. ॥२॥
चउमुख बिंब अनुपम छाजे, अद्भुत दीठे दुःख भांजे. ॥३॥

चुवा चुवा चंदन ओर अगरजा, केसर तिलक बिराजे. ॥४॥
ईण गिरि साधु अनंता सिध्या, कहेतां पार न आवे. ॥५॥
'**ज्ञानविमल**' प्रभु एणी पेरे बोले, आ भव पार उतारो. ॥६॥

थोय

(१) श्री शत्रुंजय मंडन...

श्री शत्रुंजय मंडन, ऋषभ जिणंद दयाल,
मरुदेवा नंदन, वंदन करुं त्रण काळ;
ए तीरथ जाणी, पूर्व नव्वाणुं वार,
आदीश्वर आव्या, जाणी लाभ अपार. ॥१॥
त्रेवीश तीर्थंकर, चढीया ईण गिरि राय,
ए तीरथना गुण, सुर-असुरादिक गाय;
ए पावन तीरथ, त्रिभुवन नहि तस तोले,
ए तीरथना गुण, सीमंधर मुख बोले. ॥२॥
पुंडरीकगिरि महिमा, आगममां प्रसिद्ध,
विमलाचल भेटी, लहीए अविचल रिद्ध;
पंचमी गति पहोंता, मुनिवर कोडा कोड,
इण तीरथे आवी, कर्म विपाक विछोड. ॥३॥
श्री शत्रुंजय केरी, अहोनिश रक्षाकारी,
श्री आदिजिनेश्वर, आण हृदयमां धारी;
श्री संघ विघनहर, कवडजक्ष गणभूर,
श्री '**रविबुधसागर**', संघना संकट चूर. ॥४॥





(२) शैले शत्रुंजयाऽऽख्ये भवजल....

(राग : आमूलालोल-धूलि...)

शैले शत्रुंजयाऽऽख्ये भवजलधि-पतज्जन्तु-पोतायमाने,
चैत्ये चंचत्पताका-प्रकट-सितपटे कूपकाऽऽभे गुणाढ्ये;
नेतुं पारे परस्मिन् शिवनगर-महा-राज्य-लाभाय लोकं,
कुर्वन् निर्यामकत्वं जयति जिनपति-र्नाभि-भुपालसूनुः.॥१॥
यत्पादाऽम्भोजरेणु-स्तबक-तिलकिता भाविनो भावनम्रा,
भुक्तेर्मुक्तेश्च लक्ष्म्याः स्फुटमिह सुभगं भावुकत्वं भजन्ति;
ते सन्तो भाव्यतीता विमलगिरिमहा-शृङ्ग-शृङ्गारकाः ये,
पायासु-र्लोकसारा जिनवर-वृषभाः कल्पपृप्रविश्वोपकाराः.॥२॥
शैले श्री पुण्डरीके समवसृति-मुखान् उन्नतै-र्यद् घनाभै-
र्भव्यानानन्द-यदभिः शिखिन इव लसद्-देशना-गर्जितेन;
उद्गीर्णं तीर्थराजैः श्रुत-ममृत-मिदं बोधि-बीजानुरूपं,
श्रेयः सम्पत् फलाद्यं प्रथयतु सुकृताङ्कुर-पूरं-जगत्याम्. ॥३॥
पुण्यात्पुण्यानुबन्धान् नियम-लवभवात् पूर्वजन्मानुचीर्णात्,
देवत्वं प्राप यः श्रीविमलगिरि-महातीर्थ-सेवापवित्रम्;
कल्याणी-भक्ति-रुच्चै प्रथमजिनपतेः पाद पद्मार्चनेऽसौ,
श्रीयक्षेशः कपर्दी भवतु भव-भृतां भूतये शान्तये नः. ॥४॥

श्री रायण पगला

चैत्यवंदन

(१) एह गिरि उपर...

एह गिरि उपर आदि देव, प्रभु प्रतिमा वंदो;
रायण हेठे पादुका, पूजीने आणंदो. ॥१॥
एह गिरिनो महिमा अनंत, कुण करे वखाण;
चैत्री पुनमने दिने, तेह अधिको जाण. ॥२॥
एह तीरथ सेवो सदा, आणी भक्ति उदार;
श्री शत्रुंजय सुखदायको, **दानविजय** जयकार. ॥३॥

स्तवन

(१) नीलुडी रायण तरु तळे...

(राग : आंखडी मारी../प्रीतलडी बंधाणी रे../निरख्यो नेमि..)

नीलुडी रायण तरु तळे, सुणसुंदरी;
पीलुडां प्रभुनां पाय रे, गुणमंजरी. ॥१॥
उज्वल ध्याने ध्याईए, सुण० ;
एही ज मुक्ति उपाय रे. गुण० ॥२॥
शीतल छांयडे बेसीए, सुण० ;
रातडो करी मन रंग रे. गुण० ॥३॥
पूजीए सोवन फूलडे, सुण० ;
जेम होय पावन अंग रे. गुण० ॥४॥
खीर झरे जेह उपरे, सुण० ;
नेह धरीने एह रे. गुण० ॥५॥
त्रीजे भवे ते शिव लहे, सुण० ;
थाये निर्मळ देह रे.गुण०. ॥६॥

प्रीत धरी प्रदक्षिणा, सुण० ;
दीए एहने जे सार रे. गुण० ॥७॥
अभंग प्रीति होय तेहने, सुण० ;
भवोभव तुम आधार रे. गुण०. ॥८॥
कुसुम पत्र फळ मंजरी, सुण० ;
शाखा थड ने मूळ रे. गुण० ॥९॥
देव तणा वासाय छे, सुण० ;
तीरथने अनुकूळ रे. गुण० ॥१०॥
तीरथ ध्यान धरो मुदा, सुण० ;
सेवो एहनी छांय रे.गुण० ॥११॥
'**ज्ञानविमल**' गुण भाखियो, सुण० ;
शत्रुंजय महात्म्य मांह्य रे. गुण० ॥१२॥

थोय

श्री शत्रुंजय आदि जिन आव्या, पूर्व नव्वाणु वारजी,
अनंत लाभ इहां जिनवर जाणी, समोसर्या निरधारजी;
विमल गिरिवर महिमा मोटो, सिद्धाचल इण ठामजी,
कांकरे कांकरे अनंता सिध्यां, एकसो ने आठ गिरिनामजी ॥१॥



श्री पुंडरिक स्वामी

चैत्यवंदन

(१) आदीश्वर जिनरायनो...

आदीश्वर जिनरायनो, गणधर गुणवंत;
प्रगट नाम पुंडरीक, जास महिमाए महंत. ॥१॥
पंच क्रोड मुणींद साथे, अणसण जिहां कीध;
शुक्ल ध्यान ध्याता अमूल, केवल तिहां लीध. ॥२॥
चैत्री पूनमने दिने ए, पाम्या पद महानंद;
ते दिनथी पुंडरीकगिरि, नाम '**दान**' सुखकंद. ॥३॥

स्तवन

(१) एक दिन पुंडरीक गणधरुं रे लाल...

(राग : जननीनी जोड सखी.../मालकौंस...)

एक दिन पुंडरीक गणधरुं रे लाल,
पूछे श्री आदि जिणंद सुखकारी रे;
कहीए ते भवजल उतरीए रे लाल,
पामीश परमानंद भववारी रे. एक०॥१॥
कहे जिन इणगिरि पामशो रे लाल,
ज्ञान अने निर्वाण जयकारी रे;
तीरथ महिमा वाधशे रे लाल,
अधिक अधिक मंडाण निरधारी रे. एक०॥२॥
ईम निसुणीने इहां आविया रे लाल,
घाती कर्म कर्यां दूर तमवारी रे;

पंच क्रोड मुनि परिवर्या रे लाल,
हुआ सिद्धि हजूर भवपारी रे. एक०॥३॥
चैत्री पूनम दिन कीजीए रे लाल,
पूजा विविध प्रकार दिलधारी रे;
फळ प्रदक्षिणा काउसग्गा रे लाल,
लोगस्स थुई नमुक्कार नरनारी रे. एक०॥४॥
दस वीश त्रीश चालीस भला रे लाल,
पचास पुष्पनी माळ अति सारी रे;
नरभव लाहो लीजीए रे लाल,
जेम होय '**ज्ञान**' विशाळ मनोहारी रे. एक०॥५॥

थोय

(राग : वीर जिनेश्वर अति अलवेसर...)

पुंडरीक मंडन पाय प्रणमीजे, आदीश्वर जिनचंदाजी,
नेम विना त्रेवीश तीर्थंकर, गिरि चढिया आणंदाजी;
आगम मांही पुंडरीक महिमा, भाख्यो ज्ञान जिणंदाजी,
चैत्री पुनम दिन देवी चक्रेश्वरी, '**सौभाग्य**' द्यो सुखकंदाजी ॥१॥





श्री आदिनाथ भगवान

चैत्यवंदन

(१) आदिदेव अलवेसरु...

आदिदेव अलवेसरु, विनीतानो राय;
नाभिराया कुल मंडणो, मरुदेवा माय. ॥१॥
पांचशे धनुषनी देहडी, प्रभुजी परम दयाळ;
चोराशी लाख पूर्वनुं, जस आयु विशाळ. ॥२॥
वृषभ लंछन जिन वृषधरुं ए, उत्तम गुणमणि खाण;
तस पद '**पद्म**' सेवन थकी, लहीए अविचल ठाण. ॥३॥

(२) कल्पवृक्षनी छांयडी...

(रागः तुं मने भगवान...)

कल्पवृक्षनी छांयडी, नानडीयो रमतो;
सोवन हिंडोळे हिंचतो, माताने मन गमतो. ॥१॥
सहु देवी बाळक थई, ऋषभजीने तेडे;
व्हाला लागो छो कही, प्रभु हईडाशुं भीडे. ॥२॥
जिनपति यौवन पामीया, भावे शुं भगवान;
ईन्द्रे घाल्यो मांडवो, विवाहनो मंडाण. ॥३॥

चोरी बांधी चिहुं दिशे, सुर गौरी गीत गावे;
सुनंदा सुमंगला, प्रभुजीने परणावे. ॥४॥
सकळ संग छंडी करी, केवळज्ञानने पामे;
अष्टकर्मनो क्षय करी, पहोंच्या शिवपुर धामे. ॥५॥
भरते बिंब भरावीया ए, शत्रुंजय गिरिराय;
श्री **विजयप्रभसूरि** तणा, '**उदयरत्न**' गुण गाय. ॥६॥

(3) प्रथम नाथ प्रगट प्रताप...

प्रथम नाथ प्रगट प्रताप, जेहनो जगे राजे,
पाप, ताप, संताप, व्याप, जस नामे भांजे. ॥१॥
परम तत्त्व परमात्मा रूप, परमानंद दाई,
परम ज्योति जस झलहले, परम प्रभुता पाई. ॥२॥
चिदानंद सुख संपदाए, विलसे अक्षय सनूर,
ऋषभदेव चरणे नमे, श्री '**ज्ञानविमल**' गुणशूर. ॥३॥

(४) चिदानन्दलीला...

(राग : संसार दावानल...)

चिदानन्दलीलारसास्वादलीनं, गुणैः सिद्धिभाजामनन्तैरहीनम् ।
मुदा सर्वदा श्रीयुगादीशदेवं, स्तुवे भद्रदायिक्रमाम्भोजसेवम् ॥१॥
गृहस्थो बभाषे कलाशिल्पसारं, क्रमात् केवली यश्च धर्मप्रकारम् ।
स एव प्रभुः सर्वलोकोपकारी, न चान्यस्ततो ज्ञाननैर्मल्यधारी ॥२॥
महाशुद्धसिद्धान्तमध्ये प्रसिद्धं, प्रतीतं पुराणेषु शोभासमृद्धम्।
वेदवेदान्तशास्त्रेऽवदातं, यदीयं चरित्रं न च क्वापि मातम् ॥३॥
अनन्तं पुनन्तं जनं भक्तिमन्तं, हरन्तं दुरन्तं प्रमादं स्फुरन्तम् ।
जिनं नाभिभूपालवंशावतंसं, श्रये तं शरण्यं शिवाम्भोजहंसम् ॥४॥
कलाकेलिसर्प प्रणाशे सुपर्णः, सुवर्णोपमानोल्लसद्देहवर्णः।
वृषाङ्कःसुखाङ्कुरमेघः सुरम्यं, युगादीश्वरो मे प्रदत्तां सुसाम्यम् ॥५॥

स्तवन

(१) प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए...

(राग : एक पंखी आवीने.../संभव जिनवर विनंति.../
परमेश्वर परमात्मा.../वैष्णव जन...)

प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए, जास सुगंधी रे काय;
कल्पवृक्ष परे तास, इन्द्राणी नयन जे, भृंग परे लपटाय. प्र०॥१॥
रोग उरग तुज नवि नडे, अमृत जेह आस्वाद;
तेहथी प्रतिहत तेह, मानुं कोई नवि करे, जगमां तुमशुं रे वाद. प्र०॥२॥
वगर धोई तुज निर्मळी, काया कंचनवान;
नहीं प्रस्वेद लगार, तारे तुं तेहने, जे धरे ताहरुं ध्यान. प्र०॥३॥
राग गयो तुज मन थकी, तेहमां चित्र न कोय;
रुधिर आमिषथी, राग गयो तुज जन्मथी, दूध सहोदर होय. प्र०॥४॥
श्वासोश्वास कमल समो, तुज लोकोत्तर वात;
देखे न आहार निहार, चरम चक्षु धणी,
एहवा तुज अवदात. प्र०॥५॥
चार अतिशय मूळथी, ओगणीश देवना कीध;
कर्म खप्याथी अगियार, चोत्रीश एम अतिशया,
समवायांगे प्रसिद्ध. प्र०॥६॥
जिन उत्तम गुण गावतां, गुण आवे निज अंग;
'**पद्मविजय**' कहे एह, समय प्रभु! पाळजो,
जिम थाउं अक्षय अभंग. प्र०॥७॥





(२) ऋषभ जिणंद दयाल रे...

(राग : आई वसन्त बहार रे.../ईन्हीं लोगोने ले लिया...)

लागी रे लागी रे लागी रे, मोहे तुमसे लगन लागी... हो...
ऋषभ जिणंद दयाल रे, मोहे लागी लगनवा...
लागी लगनवा छोडी न छूटे, जब लग घट में हो प्राण रे. ॥१॥
विमलाचल मंडण दुःखखंडण, मंडण धर्म विशाल रे. ॥२॥
विषधर मोर चोर कामीजन, दर्शन कर निहाल रे. ॥३॥
हुं अनाथ तुं त्रिभुवन नाथ, कर मोरी संभाल रे. ॥४॥
'**आतम**' आनंद कंद के दाता, त्राता परम कृपाल रे. ॥५॥



(3) ऋषभ जिणंदशुं प्रीतडी...

(राग : क्यारे बनीश हुं.../दिल है छोटा सा.../
एक पंखी.../वैष्णवजन...)

ऋषभ जिणंदशुं प्रीतडी, कीम कीजे हो कहो चतुर विचार;
प्रभुजी जई अलगा वस्या, तिहां किणे नवि हो कोई वचन उच्चार. ॥१॥
कागळ पण पहोंचे नहि, नवि पहोंचे हो तिहां को परधान;
जे पहोंचे ते तुम समो, नवि भाखे हो कोईनुं व्यवधान. ॥२॥
प्रीति करे ते रागीया, जिनवरजी हो तुमे तो वीतराग;
प्रीतडी जेह अरागीथी, भेळववी हो ते लोकोत्तर मार्ग. ॥३॥
प्रीति अनादिनी विष भरी, ते रीते हो करवा मुज भाव;
करवी निर्विष प्रीतडी, किण भांते हो कहो बने बनाव. ॥४॥
प्रीति अनंती पर थकी, जे तोडे हो ते जोडे एह;
परमपुरुषथी रागता, एकत्वता हो दाखी गुण गेह. ॥५॥
प्रभुजीने अवलंबतां, निज प्रभुता हो प्रगटे गुण राश;
'**देवचंद्र**'नी सेवना, आपे हो मुज अविचल सुख वास. ॥६॥

(४) ऋषभ जिणंदा ऋषभ जिणंदा...

(राग : आजनो चांदलियो.../तुं प्रभु मारो.../
बहोत प्यार करते है.../मैया यशोदा.../तारी प्रीतिनी केवी...)

ऋषभ जिणंदा ऋषभ जिणंदा, तुम दरिसन हुए परमानंदा;
अहर्निश ध्याउं तुम देदारा, महेर करीने करजो पारा. ॥१॥
आपणने पूंठे जे वळगा, किम सरे तेहने करता अळगा;
अळगा कीधा पण रहे वळगा, मोरपींछ परे न हुए ऊभगा. ॥२॥
तुम पण अळगे थये किम सरशे, भक्ति भली आकर्षी लेशे;
गगने ऊडे जिम दूरे पडाई, दोरी बळे हाथे रहे आई. ॥३॥
मुज मनडुं छे चपल स्वभावे, तोये अंतर्मुहूर्त प्रस्तावे;
तुं तो समय समय बदलाये, ईम किम प्रीति निर्वाहो थाये. ॥४॥
ते माटे तुं साहिब माहरो, हुं छुं सेवक भवोभव ताहरो;
एह संबंधे मा होजो खामी, '**वाचक मान**' कहे शिरनामी. ॥५॥

(५) ऋषभ जिनराज मुज आज...

(रागः पास शंखेश्वरा.../खुल्ला मूक्यां छे... /जय गणेश (२))

ऋषभ जिनराज मुज आज दिन अति भलो,
गुणनीलो जेणे तुज नयणे दीठो;
दुःख टळ्यां सुख मळ्यां स्वामी! तुज निरखतां,
सुकृत संचय हुवो पाप नीठो. ॥१॥
कल्पशाखी फळ्यो कामघट मुज मल्यो,
आंगणे अमीयनो मेह वुठो;
मुज महीराण महीभाण तुज दर्शने,
क्षय गयो कुमति अंधार जूठो. ॥२॥
कवण नर कनकमणि छंडी तृण संग्रहे?
कवण कुंजर तजी करह लेवे?

कवण बेसे तजी कल्पतरु बाउले?
तुज तजी अवर सुर कोण सेवे? ॥३॥
एक मुज टेक सुविवेक साहिब सदा,
तुज विना देव दुजो न इहुं;
तुज वचन-राग सुखसागरे झीलतो,
कर्मभर भ्रम थकी हुं न बीहुं. ॥४॥
कोडी छे दास विभु! ताहरे भलभला,
माहरे देव तुं एक प्यारो;
पतित पावन समो जगत उद्धार कर,
महेर करी मोहे भवजलधि तारो. ॥५॥
मुक्तिथी अधिक तुज भक्ति मुज मन वसी,
जेहशुं सबळ प्रतिबंध लागो;
चमक पाषण जिम लोहने खेंचशे,
मुक्तिने सहज तुज भक्तिरागो. ॥६॥
धन्य! ते काय, जेणे पाय, तुज प्रणमीया,
तुज थुणे जेह धन्य धन्य! जिहा;
धन्य! ते हृदय जिणे तुज सदा समरीयां,
धन्य! ते रातने धन्य! दिहा. ॥७॥
गुण अनंता सदा तुज खजाने भर्या,
एक गुण देत मुज शुं विमासो?
रयण एक देत शी हाण रयणायरे,
लोकनी आपदा जेणे नासो. ॥८॥
गंग सम रंग तुज कीर्ति कल्लोलिनी,
रवि थकी अधिक तपतेज ताजो;
नयविजय विबुध सेवक हुं आपनो,
'**जश**' कहे अब मोहे भव निवाजो. ॥९॥

(६) ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम माहरो रे...



(राग : विरतिधरनो वेष.../ प्रभु तमारा पगले.../
होंशवालो को खबर क्यां.../वैष्णव जन तो.../दिल दिया है...)

ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम माहरो रे, ओर न चाहुं रे कंत;
रीझ्यो साहिब संग न परिहरे रे, भांगे सादि अनंत. ॥१॥
प्रीत सगाई रे जगमां सहु करे रे, प्रीत सगाई न कोय;
प्रीत सगाई रे निरूपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय. ॥२॥
कोई कंत कारण काष्ठ भक्षण करे रे, मिलशुं कंतने धाय;
ए मेळो नवि कदीये संभवे रे, मेळो ठाम न ठाय. ॥३॥
कोई पतिरंजन अति घणुं तप करे रे, पतिरंजन तन ताप;
ए पतिरंजन में नवि चित्त धर्युं रे, रंजन धातु मिलाप. ॥४॥
कोई कहे लीला रे अलख अलख तणी रे, लख पूरे मन आश;
दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास. ॥५॥
चित्त प्रसन्ने रे पूजन फल कह्युं रे, पूजा अखंडित एह;
कपट रहित थई आतम अरपणा रे, '**आनंदघन**' पद रेह. ॥६॥

(७) ऋषभदेव हितकारी...



(राग : तुम दरिसण भले.../सोनामां सुगंध भळे.../
हे प्रभु! पार्श्व चिंतामणि...)

ऋषभदेव हितकारी.. जगतगुरु! ऋषभदेव हितकारी;
प्रथम तीर्थंकर प्रथम नरेसर, प्रथम यति व्रतधारी. ॥१॥
वरसीदान देई तुम जग में, ईलति ईति निवारी;
तैसी काही करत नाहि करुणा, साहिब बेर हमारी. ॥२॥
मांगत नहीं हम हाथी घोडे, धन कन कंचन नारी;
दीयो मोहे चरणकमल की सेवा, याहि लागत मोहे प्यारी. ॥३॥

भव लीला वासित सुर डारे, तुम पर सब ही उवारी;
में मेरो मन निश्चल कीनो, तुम आणा शिर धारी. ॥४॥
ऐसो साहिब नहि कोउं जग में, याशुं होय दिलदारी;
दिल ही दलाल प्रेम के बीचे, तिहां हठ खेंचे गमारी. ॥५॥
तुम हो साहिब मैं हुं बंदा, या मत दीयो विसारी;
'**श्री नयविजय विबुध सेवक**' के, तुम हो परम उपकारी. ॥६॥



(८) जगचिंतामणि जगगुरु...

(राग : होंशवालो को खबर.../जननीनी जोड सखी.../
वैष्णवजन तो.../आशावरी...)

जगचिंतामणि जगगुरु, जगत शरण आधार लाल रे;
अढार कोडाकोडी सागरे, धरम चलावणहार लाल रे. जग०॥१॥
अषाढ वदि चोथे प्रभुजी, स्वर्गथी लीये अवतार लाल रे;
चैतर वदि आठम दिने, जनम्या जगदाधार लाल रे. जग०॥२॥
पांचसे धनुषनी देहडी, सोवन वरण शरीर लाल रे;
चैतर वदि आठम लीये, संजम महावडवीर लाल रे. जग०॥३॥
फागुण वदि ईग्यारसें, पाम्या पंचम नाण लाल रे;
महा वदि तेरसे शिववर्या, जोग निरोध करी जाण लाल रे. जग०॥४॥
चोरासी लाखपूर्वनुं, जिनवर उत्तम आय लाल रे;
'**पद्मविजय**' कहे प्रणमतां, वहेलुं शिवसुख थाय लाल रे. जग०॥५॥

(९) जगजीवन जगवालहो...



(राग : जननीनी जोड.../ होंशवालो को खबर.../
गुरुए आप्यो ओघो...)

जगजीवन जगवालहो, मरुदेवीनो नंद लाल रे,
मुख दीठे सुख ऊपजे, दरिशन अतिहि आनंद लाल रे. ॥१॥
आंखडी अम्बुज पांखडी, अष्टमी शशि सम भाल लाल रे;
वदन ते शारद चंदलो, वाणी अतिहि रसाल लाल रे. ॥२॥
लक्षण अंगे विराजतां, अडहिय सहस उदार लाल रे;
रेखा कर चरणादिके, अभ्यंतर नहि पार लाल रे. ॥३॥
इन्द्र चन्द्र रवि गिरि तणां, गुण लही घडीयुं अंग लाल रे;
भाग्य किहां थकी आवीयुं, अचरिज एह उत्तंग लाल रे. ॥४॥
गुण सघळा अंगी कर्या, दूर कर्या सवि दोष लाल रे;
वाचक '**जशविजये**' थुण्यो, देजो सुखनो पोष लाल रे. ॥५॥

(१०) तुम दरिसण भले पायो...



(राग : संयमजीवननो लीधो.../
मैली चादर ओढके.../होंशवालो को...)

तुम दरिसण भले पायो, प्रथम जिन! तुम दरिसण भले पायो;
नाभि नरेसर नंदन निरूपम, माता मरुदेवी जायो. ॥१॥
आज अमीरस जलधर वूठो, मानुं गंगाजले नाह्यो;
सुरतरु सुरमणि प्रमुख अनुपम, ते सवि आज में पायो. ॥२॥
युगलाधर्म निवारण तारण, जग जस मंडप छायो;
प्रभु! तुज शासन वासन समकित, अंतर वैरी हरायो. ॥३॥
कुदेव कुगुरु कुधर्मनी वासे, मिथ्यामतमें फसायो;
में प्रभु! आज से निश्चय कीनो, सवि मिथ्यात्व गमायो. ॥४॥
बेर बेर करुं विनंती ईतनी, तुम सेवा रस पायो;
'**ज्ञानविमल**' प्रभु साहिब नजरे, समकित पूरण सवायो. ॥५॥



(११) दादा आदीश्वरजी दूरथी आव्यो...

(राग : दादा का दरबार सुहाना.../माता मरुदेवीना नंद.../

दादा आदीश्वरजी... दूरथी आव्यो दादा दरिशन द्यो..!
कोई आवे हाथी घोडे, कोई आवे चढे पलाणे;
कोई आवे पग पाळे, दादाने दरबार; हा हा दादाने दरबार. ॥१॥
शेठ आवे हाथी घोडे, राजा आवे चडे पलाणे;
हुं आवुं पग पाळे, दादाने दरबार; हा हा दादाने दरबार. ॥२॥
कोई मूके सोना रूपा, कोई मूके महोर;
कोई मूके चपटी चोखा, दादाने दरबार; हा हा दादाने दरबार. ॥३॥
शेठ मूके सोना रूपा, राजा मूके महोर;
हुं मुकूं चपटी चोखा, दादाने दरबार; हा हा दादाने दरबार. ॥४॥
कोई मांगे कंचन काया, कोई मांगे आंख;
कोई मांगे चरणोनी सेवा, दादाने दरबार; हा हा दादाने दरबार. ॥५॥
पांगळो मांगे कंचन काया, आंधळो मांगे आंख;
हुं मांगुं चरणोनी सेवा, दादाने दरबार; हा हा दादाने दरबार. ॥६॥
हीरविजय गुरु हीरलो ने, '**वीरविजय**' गुण गाय;
शत्रुंजयनां दर्शन करतां, आनंद अपार; हा हा आनंद अपार. ॥७॥



(१२) नाभिराया वंशे वारुं उदयो दिणंद...

(राग : आंख मारी ऊघडे.../राधा जेवां...)

नाभिराया वंशे वारुं उदयो दिणंद,
देवनो में देव दीठो आदि जिणंद;
आदि जिणंद मरुदेवानो नंद
देवनो में देव दीठो आदि जिणंद. ॥१॥
मीठुं लागे महाराज रूप तारुं आज,
मुजरो लीयोने मारा सारोने काज;

दिवस घणे दीठो नाथ! मुने नेह,
उपन्यो आनंद तेनो कोण लहे छेह. ॥२॥
ता ता थै थै ताल बाजे धीन धीन ध्रोम्,
मृदंग देवदुंदुभि बाजे ध्रोम् ध्रोम्;
ॐ शंख बाजे बाजे एक साद,
धपमप धपमप धमके बादल रसाद. ॥३॥
धीन कीट धीन कीट थै थै थाय,
पधनी धप मप थई अति वाय;
घम घम घूघरा घमके रे पाय,
भण भण भणकारा भेरीना थाय. ॥४॥
नाची कूदी पाय वंदी भविजन भावे,
भक्तिथी भगवंतने शीश नमावे;
मुक्तिनी मोज आपो मांगुं बे करजोड,
'**उदयरत्न**' कहे प्रभु भवदुःख छोड. ॥५॥

(१३) बाळपणे आपण ससनेही...

(राग : हो प्रभुजी! मुज अवगुण.../होठो से छुं लो.../
अबोलडा शाना...)

बाळपणे आपण ससनेही, रमता नव नव वेषे;
आज तुमे पाम्या प्रभुताई, अमे तो संसार निवेशे,
हो प्रभुजी! ओलंभडे मत खीजो, तुमे कांई करीने रीझो. ॥१॥
जो तुम ध्यातां शिवसुख लहीए, तो तुमने केई ध्यावे;
पण भवस्थिति परिपाक थया विण, कोई न मुगति जावे. ॥२॥
सिद्ध निवास लहे भवसिद्धि, तेहमां शो पा'ड तुमारो;
तो उपगार तुमारो वहिये, अभव्यसिद्धने तारो. ॥३॥
नाण रयण पामी एकांते, थई बेठा मेवासी;
ते मांहेलो एक अंश जो आपो, ते वाते शाबाशी. ॥४॥

अक्षयपद देतां भविजनने, संकीर्णता नवि थाय;
शिवपद देवा जो समरथ छो, तो जश लेता शुं जाय? ॥५॥
सेवा गुण रंज्यो भविजनने, जो तुमे करो वडभागी;
तो तुमे स्वामी किम कहावो, निर्मम ने निरागी. ॥६॥
नाभिनंदन जगवंदन प्यारो, जगगुरु जग हितकारी;
रूपविबुधनो '**मोहन**' पभणे, वृषभ लंछन बलिहारी. ॥७॥

(१४) बालुडो निःस्नेही थई गयो रे...

(रागः संसार धुमाडाना बाचका रे...)

बालुडो निःस्नेही थई गयो रे, छोड्युं विनीतानुं राज (२),
संयम रमणी आराधवा, लेवा मुक्तिनुं राज (२);
मेरे दिल वसी गयो वालमो, मेरे मन वसी गयो वालमो. ॥१॥
माताने मेल्या एकला रे, जाये दिन नवि रात (२);
रत्न सिंहासन बेसवा, चाले अडवाणे पाय (२). ॥२॥
व्हालानुं नाम नवि वीसरे रे, झरे आंसुडानी धार (२);
आंखलडी छाया वळी, गया वर्ष हजार (२). ॥३॥
केवल रत्न आपी करी रे, पूरी मातानी आश (२);
समोवसरण लीला जोईने, साध्या आतम काज (२). ॥४॥
भक्तवत्सल भगवंतने रे, नमे निर्मळ काय (२);
आदि जिणंद आराधतां, '**महिमा**' शिवसुख थाय (२). ॥५॥

(१५) भक्तवत्सल प्रभु सांभळो रे...

(राग : आज मारा प्रभुजी.../जननीनी जोड सखी...)

भक्तवत्सल प्रभु सांभळो रे, ओलंभे अरदास, हो जिनराज;
छांडता केम छूटशो, अरे कांई करशो नहीं निराश, हो जिनराज. ॥१॥

तुम सरीखा साहेब तणी रे, जो सेवा निष्फळ जाय, हो जिन० ;
लाज कहो प्रभु केहनी रे, हवे सेवकनुं शुं थाय, हो महा० ॥२॥
गुण देखाडीने हेळव्यो रे, ते केम छेडो छोडे, हो जिन० ;
जिहां जलधर तिहां बपैया रे, पियु पियु करी मुख मांडे, हो महा० ॥३॥
लाख चोरासी हुं भम्यो रे, भमियो काल अनादि अनंत, हो जिन० ;
मूर्ति दीठी प्रभु ताहरी रे, भांगी छे भवोभव भ्रांत, हो महा० ॥४॥
अवगुण गणतां माहरा रे, नहि आवे प्रभु पार, हो जिन० ;
पण जीव प्रवहणनी पेरे रे, तुमे छो तारणहार, हो महा० ॥५॥
जो रे पोतानो दाखवो रे, तो हवे करो न विचार, हो जिन० ;
सो वाते एक वातडी रे, भवोभव प्रीत निवार, हो महा० ॥६॥
तुम सरीखा कोई दाखवो रे, किजीए तेहनी सेव, हो जिन० ;
'**आनंदघन**' प्रभु ऋषभजी रे, मरुदेवा नंदन देव, हो महा० ॥७॥

(१६) माता मरुदेवीना नंद...

(राग : दादा आदेश्वरजी दूरथी आव्यो...)

माता मरुदेवीना नंद!, देखी ताहरी मूरति मारुं मन लोभाणुं जी ;
मारुं दिल लोभाणुं जी, देखी ताहरी मूरति मारुं चित्त चोराणुं जी.
करुणानागर करुणासागर, काया कंचनवान ;
धोरी लंछन पाउले कांई, धनुष पांचसे मान. ॥१॥
त्रिगडे बेसी धर्म कहंता, सुणे पर्षदा बार ;
जोजन गामिनी वाणी मीठी, वरसंती जलधार. ॥२॥
उर्वशी रुडी अपच्छरा ने रामा छे मनरंग ;
पाये नेउर रणझणे कांई, करती नाटारंभ. ॥३॥
तुं ही ब्रह्मा तुं ही विधाता, तुं जग तारणहार ;
तुज सरीखो नहि देव जगतमां, अडवडिया आधार. ॥४॥

तुं ही भ्राता तुं ही त्राता, तुं ही जगतनो देव;
सुर नर किन्नर वासुदेवा, करतां तुज पद सेव. ॥५॥
श्री सिद्धाचल तीरथ केरो, राजा ऋषभ जिणंद;
कीर्ति करे '**माणेकमुनि**' ताहरी, टाळो भवभय फंद. ॥६॥



(१७) श्री जगनाथ जगगुरु देव रे...

(राग : पुक्खलवई विजये जयो रे.../एक घडी प्रभु.../
श्री रामचन्द्र कृपाळु...)

श्री जगनाथ जगगुरु देव रे, आदीश्वर जिनराय रे,
तुज मुख देखी साहिबा रे, आनंद अंग न माय रे;
ऋषभ जिन तुं मोटो महाराज, तुज दरिसण दीठुं आज रे. ॥१॥
आंखडी कमलनी पांखडी रे, जिह्वा अमीरस कंद रे;
मुख अनुपम दीपतुं रे, नयन चकोरो चंद रे. ऋषभ०॥२॥
मूर्ति जन मन मोहिनी रे, जाणे मोहन वेल रे;
मनना मनोरथ पूरती रे, जिम सुरतरु रंगरेल रे. ऋषभ०॥३॥
एकण जीभे ताहरा रे, गुण केटला कहेवाय रे;
गंगा वालुका कण तणी रे, कीणी परे संख्या थाय रे. ऋषभ०॥४॥
शत्रुंजय गिरि राजवी रे, नाभिराया कुलचंद रे;
'**केसरविमल**' एम विनवे रे, द्यो दरिशन सुखकंद रे. ऋषभ०॥५॥



(१८) समरथ साहिब समता दरियो...

(राग : तेरा मेरा प्यार अमर.../ तुं प्रभु मारो.../वैष्णवजन तो...)

समरथ साहिब समता दरियो, गिरुओ जिनपति गुणमणि भरियो;
नाभि नरेसर नंदन दीठो, माहरे नयणे अमीय पईठो. ॥१॥
मुज घर आंगणे सुरतरु फळीयो, करे चिंतामणि आवी मळीयो;
आंगणे अमीयना मेह वूठा, समकित दृष्टि सुर सवि तूठा. ॥२॥

मुज मंदिर सुरधेनु बंधाणी, प्रभुशुं वाधी प्रीति पुरानी;
काम कलश पण सामो आयो, प्रभु देखी में बहु सुख पायो. ॥३॥
अष्टमहासिद्धि आवे होडी, नवनिधि तो मुज पास न छोडी;
प्रभु ध्याने नवि कांई अधूरुं, जिहां जोई तिहां दीसे पूरुं. ॥४॥
पूरव पुण्य अंकुरा जाग्या, आज ढळिया मुज पासा मांग्या;
शंख दक्षिणावर्त ते लहियो, प्रभु देखी हुं अति गहगहियो. ॥५॥
गुरु आशिष फळी मुज सारी, भवनी भावठ दूर निवारी;
नयन मिलावे मिलीयो स्वामी, तो में सहेजे मुगति ज पामी. ॥६॥
धन्य दिवसने धन्य ए वेला, जिहां हुआ तुज दरिशन भेला;
चंद चकोरा मेहा मोरा, तिम अमे चाहुं दरिशन तोरा. ॥७॥
भवभय भगति गुणादर पूरो, दर्शन देई पातक चूरो;
जो जाणो तो अधिकुं देयो, पण एहमां ओछुं म करेयो. ॥८॥
श्री नयविजय विबुधने सीसे, वाचक '**जसविजये**' सुजगीशे;
श्री रीसहेसरना गुण गाया,तेहथी निज मनवांछित पाया. ॥९॥

(१९) सिद्धगिरि मंडण पाय नमीजे...

(राग : तुं प्रभु माहरो.../वीर मने तारो...)

सिद्धगिरि मंडण पाय नमीजे, रिसहेसर जिनराय;
नाभिभूप मरुदेवा नंदन, जगत जंतु सुखकार रे...
हो स्वामी रे... हो जिनजी रे... हो प्रभुजी रे...!
तुम दरिसन सुखकार, ऋषभजिन! तुम दरिसन सुखकार रे!
तुम दरिसनथी समकित प्रगटे, निजगुण ऋद्धि उदार रे. ॥१॥
भारे कर्मी पण तें तार्या, भवजलधिथी उगार्या;
मुज सरीखा किम नवि संभार्या, चित्तथी केम विसार्या रे. ॥२॥
पापी अधम पण तुम सुपसाये, पाम्या गुण समुदाय;
अमे पण तरशुं शरण स्वीकारी, महेर करो महाराय रे. ॥३॥

तरण तारण जगमांहि कहावो, हुं छुं सेवक ताहरो;
अवर आगळ जईने किम याचुं, महिमा अधिक तुमारो रे. ॥४॥
मुज अवगुण सामुं मत जुओ, बिरुद तमारुं संभाळो;
पतित पावन तुमे नाम धरावो, मोह विडंबणा टाळो रे. ॥५॥
पूर्व नव्वाणुं वार पधारी, पवित्र कर्युं शुभ धाम;
साधु अनंता कर्म खपावी, पहोंच्या अविचल ठाम रे. ॥६॥
श्री नयविजय विबुध पय सेवक, '**वाचक जश**' कहे साचुं;
विमलाचल भूषण स्तवनाथी, आनंद रसभर माचुं रे. ॥७॥



(२०) सुगुण सुगुण सौभागी...

(राग : अरज अरज सुणो ने रुडा.../ पहाडी.../ यमन...)

सुगुण (२) सोभागी साचो साहिबो होजी, मीठडो आदि जिणंद;
मोहन (२) सूरती रूडी देखतां होजी, वाधे परम आणंद. सु०॥१॥
सुंदर (२) जिन चितडे चड्यो होजी, चोक्कस पदह ठराय;
वेधक (२) तन मननो थयो होजी, उतार्यो किम जाय. सु०॥२॥
तुज गुण (२) कहेवा मुज जीभडी होजी, राती रंगे रहंत;
अंतर (२) गतनी जे वातडी होजी, ते मुखे आवी चडंत. सु०॥३॥
कामण (२) गारो प्यारो प्राणथी होजी, भेटण उजम अंग;
चंदन (२) थी अति शीतलो होजी, जगमां उत्तम संग. सु०॥४॥
त्रिकरण (२) शुं तुजथी कर्यो होजी, नवलो प्रेम प्रकाश;
दिलभरी (२) '**कांतिविजय**' तणा होजी, पूरो प्रेम प्रकाश. सु०॥५॥



(२९) हुं तो पाम्यो प्रभुना पाय रे...

(राग : तारी अजबशी योगनी रे.../
तारी मूरतिनुं नहीं मूल रे.../अभिनंदन स्वामी...)

हुं तो पाम्यो प्रभुना पाय रे, आण न लोपुं रे;
हुं तो सांभळी प्रभुजीनां वेण रे, कानमां रोपुं रे. ॥१॥
जनम-मरणना फेरा फरतां, में तो ध्याया न देवाधिदेवा रे;
कुगुरु कुशास्त्र तणा उपदेशे, पामी नहीं प्रभु सेवा रे. ॥२॥
कनक कथीरनो भेद न जाण्यो, काच मणि सम तोल्यां रे;
विवेकतणी में वात न जाणी, विष अमृत करी घोल्यां रे. ॥३॥
समकितनो लवलेश न समज्यो, हुं तो मिथ्यात्वमां खूंच्यो रे;
पाप तणा पंथे परिवरियो, विषये करी विलुद्धो रे. ॥४॥
कोईक पूरव पुण्य संयोगे, आरज कुळे अवतरियो रे;
आदीश्वर साहिब मुज मलियो, तारक भवजल तरियो रे. ॥५॥
आटला दिन में वात न जाणी, तुजथी रह्यो हुं अळगो रे;
'**उदयरत्न**' कहे आज थकी हुं, तारे पाये वळगो रे. ॥६॥

थोय

(१) आदि जिनवर राया...

आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया,
मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया;
जगत स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया,
केवलसिरि राया, मोक्ष नगरे सिधाया. ॥१॥
सवि जिन सुखकारी, मोह मिथ्या निवारी,
दुर्गति दुःखभारी, शोक संताप वारी;
श्रेणि क्षपक सुधारी, केवलानंत धारी,
नमीये नरनारी, जेह विश्वोपकारी. ॥२॥
समवसरण बेठा, लागे छे जिनजी मीठा,
करे गणप पईट्ठा, इंद्र चंद्रादि दीठा;
द्वादशांगी वरिट्ठा, गूंथता टाळे रिट्ठा,
भविजन होई हिट्ठा, देखी पुण्ये गरिट्ठा. ॥३॥
सुर समकितवंता, जेह रिद्धे महंता,
जेह सज्जन संता, टाळीये मुज चिंता;
जिनवर सेवंता, विघ्न वारो दुरंता,
जिन उत्तम थुणंता, **'पद्म'**ने सुख दिंता. ॥४॥

(२) प्रह ऊठी वंदु...

प्रह ऊठी वंदु, ऋषभदेव गुणवंत,
प्रभु बेठा सोहे, समवसरण भगवंत;
त्रण छत्र बिराजे, चामर ढाळे इंद्र.
जिनना गुण गावे, सुरनर नारीना वृंद. ॥१॥
बार पर्षदा बेसे, इंद्र इंद्राणी राय,
नव कमळ रचे सुर, तिहां ठवतां प्रभु पाय;

देवदुंदुभि वागे, कुसुमवृष्टि बहु हुंत,
एहवा जिन चोवीश, पूजो एकण चित्त. ॥२॥
जिन जोजनभूमि, वाणीनो विस्तार,
प्रभु अर्थ प्रकाशे, रचना गणधर सार;
सो आगम सुणतां, छेदीजे गति चार,
जिन वचन वखाणी, लीजे भवनो पार. ॥३॥
जक्ष गोमुख गिरवो, जिननी भक्ति करेव,
तिहां देवी चक्केसरी, विघ्न कोडी हरेव;
श्री तपगच्छ नायक, विजयसेन सूरिराय,
तस केरो श्रावक, '**ऋषभदास**' गुण गाय. ॥४॥

(3) भावानयानेगनरिंदविंदं...

(राग : कल्लाणकंदं...)

भावानया-नेग-नरिंदविंदं, सव्विंद-संपुज्ज-पयारविंदं;
वंदे जसो-निज्जिय चारुचंदं, कल्लाण-कंदं पढमं जिणिंदं ॥१॥
चित्तेग-हारं रिउ-दप्प-दारं, दुक्खग्गि-वारं सम-सुक्ख-कारं;
तित्थेसरा दिंतु सया निवारं, अपार संसार-समुद्द-पारं ॥२॥
अन्नाण-सत्तुक्खलणे सुवप्पं, सन्नाय-संहीलिय-कोहदप्पं;
संसेमि सिद्धंतमहो अणप्पं, निव्वाणमग्गे वरजाणकप्पं. ॥३॥
हंसाधिरुढा वर-दाण-धन्ना, वाएसिरि दाण-गुणोव-वण्णा;
निच्चंपि अम्हं हवउप्पसन्ना, कुंदिंदुगोक्खीर-तुसारवन्ना ॥४॥



श्री अजितनाथ भगवान

चैत्यवंदन

(१) अजितनाथ प्रभु अवतर्या...

अजितनाथ प्रभु अवतर्या, विनीताना स्वामी;
जितशत्रु विजया तणो, नंदन शिवगामी. ॥१॥
बहोंतेर लाख पूरव तणुं, पाळ्युं जिणे आय;
गज लंछन लंछन नहीं, प्रणमे सुर राय. ॥२॥
साडा चारशें धनुषनी ए, जिनवर उत्तम देह;
पाद '**पद्म**' तस प्रणमीये, जिम लहीए शिव गेह. ॥३॥

स्तवन

(१) अजित अजितजिन साहिबा रे...

अजित अजितजिन साहिबा रे, सुणो सेवकनी अरदास;
प्रेम भर्यो प्रभु तुजथी रे, चोळमजीठनो पास रे. अजित०॥१॥
तुज समकित रसास्वादनो रे, में लीधो हवे ते भेद;
तन मन माहरे उपन्यो रे, प्रभु भक्तितणो उमेद रे. अजित०॥२॥
निशदिन सुतां जागतां रे, मने सांभळो प्राणाधार;
आज थकी आप माहरा रे, साहिब तुं निरधार. अजित०॥३॥
देव अनेरा छे घणा रे, मुज मन न आवे दाय;
तरणतारण त्रिभुवन ताहरो, कोण छोडी बीजो ध्याय रे. अजित०॥४॥
मिथ्यामति भूल्यो भम्यो रे, तेणे पामीयो नहि पार;
नरक निगोदादिक थकी रे, आप उगारण हार. अजित०॥५॥

प्रभु नेक नजरे निहाळजो रे, बोलावो कहीने दास;
कर्म निकाचितनो तिहां रे, त्रुटे मुज मोह पास. अजित०॥६॥
आप पासे आ बालने, आवडे नहि अरदास;
माय ताय विण पुत्रने रे, कोण कहे वचन विलास. अजित०॥७॥
विनयधरी प्रभु विनवुं रे, प्रसन्न थयो महाराज;
सो वाते एक वातडी रे, द्यो मुज अविचल राज. अजित०॥८॥
भवोभव तुम पद सेवना रे, मांगु छुं महाराज;
'**उदयवाचक**' शिष्य एम वदे रे, आपीजे शिरताज रे. अजित०॥९॥

(२) अजित जिणंद दया करो रे...

(राग : तारी प्रीतिनी.../ कसमे वादे.../
वीर मने तारो.../पहेले भवे...)

अजित जिणंद दया करो रे, आणी अधिक प्रमोद;
जाणी सेवक आपणो रे, सुणीये वचन विनोद रे,
जिनजी सेवना, भव भव ताहरी होजो रे, ए मनकामना. ॥१॥
कर्मशत्रु तुमे जीतीया रे, तिम मुजने जिताड;
अजित थाउं दुश्मन थकी रे, ए मुज पूरो हाड रे. ॥२॥
जितशत्रु नृपनंदनो रे, जीते वयरी जेह;
अचरिज ईहां कणे को नहि रे, अवधारो गुण गेह रे. ॥३॥
सकल पदारथ पामीए रे, दीठे तुम देदार;
सोभागी महिमा नीलो रे, विजयामात मल्हार रे. ॥४॥
'**ज्ञानविमल**' सुप्रकाशथी रे, भासित लोकालोक;
शिवसुंदरीना वालहा रे, प्रणमे भविजन थोक रे. ॥५॥



(3) अजित जिणंदशुं प्रीतडी...

(राग : ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम.../
परमातम पूरणकला.../एक पंखी...)

अजित जिणंदशुं प्रीतडी, मुज न गमे हो बीजानो संग के;
मालती फुले मोहियो, किम बेसे हो बावळ तरु भृंग के. ॥१॥
गंगा जलमां जे रम्या, किम छिल्लर हो रति पामे मराल के;
सरोवर जलधर जल विना, नवि चाहे हो जग चातक बाल के. ॥२॥
कोकिल कल कुजित करे, पामी मंजरी हो पंजरी सहकार के;
ओछां तरुवर नवि गमे, गिरुआशुं हो होये गुणनो प्यार के. ॥३॥
कमलिनी दिनकर कर ग्रहे, वळी कुमुदिनी हो धरे चंदशुं प्रीत के;
गौरी गिरीश गिरिधर विना, नवि चाहे हो कमला निज चित्त के. ॥४॥
तिम प्रभुशुं मुज मन रम्युं, बीजाशुं हो नवि आवे दाय के;
श्री नयविजय सुगुरु तणो, वाचक '**जस**' हो नित नित गुण गाय के. ॥५॥



(४) अजित जिणंदा! अजित जिणंदा!...

(राग : आजनो चांदलियो.../तुं प्रभु मारो.../
शांति जिनेश्वर साचो.../ऋषभ जिणंदा! (२)...)

अजित जिणंदा! अजित जिणंदा!, तुं मेरा साहिब में तेरा बंदा. ॥१॥
जितशत्रु नृप विजयादे नंदा, लंछन चरण सोहे गयंदा. ॥२॥
सकल करम जीती अजित कहाया, आप बळे थया सिद्ध सहाया. ॥३॥
मोह नृपति जेह अटल अटारो, तुम आगे न रह्यो तस चारो. ॥४॥
विषय कषाय जे जगने नडिया, तुम ध्यानानले शलभ ज्युं पडिया. ॥५॥
दुश्मन दाव न कोई फावे, तिणथी अजित तुम नाम सुहावे. ॥६॥
अजित थाउं हुं तुमचे नाम, बहोत वधारो प्रभु जगमांही माम. ॥७॥
सकळ सुरासुर प्रणमे पाया, '**न्यायसागरे**' प्रभुना गुण गाया. ॥८॥

(५) अजित जिणेसर चरणनी सेवा...



(राग : होंशवालो को खबर.../कसमें वादे.../
मेरा जीवन.../ मारो मुजरो.. .)

अजित जिणेसर! चरणनी सेवा, हेवाये हुं हळियो;
कदीए अणचाख्यो पण अनुभव, रसनो टाणो मळियो;
प्रभुजी! महेर करीने आज, काज हमारा सारो. प्र०॥१॥
मुकाव्यो पण हुं नवि मुकूं, चुकूं नवि ए टाणो;
भक्ति भाव ऊठ्यो जे अंतरमां, ते किम रहे शरमाणो. प्र०॥२॥
लोचन शांत सुधारस सुभगा, मुख मटकाळुं सुप्रसन्न;
योग मुद्रानो लटको चटको, अतिशय तो अति धन्न. प्र०॥३॥
पिंड पदस्थ रूपस्थे लीनो, चरणकमळ तुज ग्रहियां;
भ्रमर परे रसस्वाद चखावो, विरसो कां करो महियां. प्र०॥४॥
बाल्यकाळमां वार अनंती, सामग्रीए नवि जाग्यो;
यौवनकाळे ते रस चाख्यो, तुं समरथ प्रभु मांग्यो. प्र०॥५॥
तुं अनुभव रस देवा समरथ, हुं पण अर्थी तेहनो;
चित्त वित्तने पात्र संबंधे, अजर रह्यो हवे केहनो. प्र०॥६॥
प्रभुनी महेरे ते रस चाख्यो, अंतरंग सुख पाम्यो;
'**मानविजय**' वाचक ईम जंपे, हुओ मुज मन काम्यो. प्र०॥७॥

(६) अजित जिनेश्वर सांभळो रे...



(राग : श्री जिनवरने प्रगट थयुं रे.../दुख दोहग दूरे...)

अजित जिनेश्वर सांभळो रे, एक सेवकनी अरदास,
भवभयथी हुं उभग्यो रे, क२ निज चरणनो दास;
भवियां भावे भजो जिनचंद, सेवे चोसठ इंद. भ०॥१॥
मुज सरीखा तुजने घणा रे, माहरे तो तुं एक;
कदीए न छोडुं तुज छेडलो रे, ए मुज मोटी टेक. भ०॥२॥

निर्गुणी जाणी उवेखशो रे, आदि गुणी कोण होय;
गुणीजनने जो तारशो तो, अधिकता किहां तुज जोय. भ०॥३॥
भवभय भंजनी ताहरी रे, मूर्ति शोभे महाराय;
जे तुज ध्याने सदा रमे, ध्येयपणुं तस थाय. भ०॥४॥
मन मंदिरिये पधारिये रे, कृपा करी जिनराय;
'**कमलविजय**' पद सेवतां रे, '**मोहन**'ना वांछित थाय. भ०॥५॥



(७) ज्ञानादिक गुण संपदा रे...

(राग : चांदी जैसा रंग है.../
चार दिवसना.../पूर्या धनाश्री...)

ज्ञानादिक गुण संपदा रे, तुज अनंत अपार;
ते सांभळतां उपनी रे, रुची तेणे पार उतार,
अजित जिन तारजो रे, तारजो दीनदयाळ. अ०॥१॥
जे जे कारण जेहनुं रे, सामग्री संयोग;
मळतां कारज निपजे रे, कर्ता तणे प्रयोग. अ०॥२॥
कार्यसिद्धि कर्ता वसु रे, लहि कारण संयोग;
निजपद कारक, प्रभु मिल्या रे, होय निमित्त भोग. अ०॥३॥
अजकुल गत केसरी लहे रे, निजपद सिंह निहाळ;
तिम प्रभु भक्ते भवि लहे रे, आतम शक्ति संभाळ. अ०॥४॥
कारण पद कर्ता पणे रे, करी आरोप अभेद;
निज पद अर्थी प्रभु थकी रे, करे अनेक उमेद. अ०॥५॥
एहवा परमातम प्रभु रे, परमानंद स्वरूप;
स्याद्वाद सत्ता रसी रे, अमल अखंड अनूप. अ०॥६॥
आरोपित सुख भ्रम टल्यो रे, भास्यो अव्याबाध;
समर्युं अभिलाषीपणुं रे, कर्ता साधन साध्य. अ०॥७॥
ग्राहकता स्वामित्वता रे, व्यापक भोक्ता भाव;
कारणता कारजदशा रे, सकल ग्रह्युं निज भाव. अ०॥८॥

श्रद्धा भासन रमणता रे, दानादिक परिणाम;
सकल थया सत्तारसी रे, जिनवर दरिसण पाम. अ०॥९॥
तिणे निर्यामक माहणो रे, वैद्य गोप आधार;
'**देवचंद्र**' सुख सागरुं रे, भाव धरम दातार. अ०॥१०॥

(८) तुं गत मेरी जाने जिनजी...

(राग : ओ साथी रे.../ जिन तेरे चरण की.../
पार्श्व चिंतामणि मेरो...)

तुं गत मेरी जाने जिनजी!... तुं गत मेरी जाने...!
में जगवासी सही दुःख राशि, सो तो तुमसे न छाने... ॥१॥
सब लोकन में जो जिउंकी सत्ता, देखत दरिसन ज्ञाने... ॥२॥
ईन कारण कहा तुमसे कहेवो, कहीये तो न सुणो काने... ॥३॥
अपनो ही ज जान निवाजस कीजे, देई समकित दाने... ॥४॥
मानो अजित प्रभु अरज है इतनी, ज्युं '**अमृत**' मन माने... ॥५॥

(९) पंथडो निहाळुं रे बीजा जिन तणो रे...

(राग : वैष्णवजन.../आंख मारी ऊघडे.../
धारिणी मनावे रे.../आशावरी...)

पंथडो निहाळुं रे बीजा जिन तणो रे, अजित अजित गुणधाम;
जेणे तें जीत्या रे तेणे हुं जीतीयो रे, पुरुष किश्युं मुज नाम. ॥१॥
चरम नयने करी मारग जोवतां रे, भूल्यो सयल संसार;
जेणे नयने करी मारग जोईए रे, नयन ते दिव्य विचार. ॥२॥
पुरुष परंपर अनुभव जोवतां रे, अंधोअंध पुलाय;
वस्तु विचारे रे आगमे करी रे, चरण धरण नहि ठाय. ॥३॥
तर्क विचारे रे वाद परंपरा रे, पार न पहुंचे कोय;
अभिमत वस्तु वस्तुगते कहे रे, ते विरला जग जोय. ॥४॥

वस्तु विचारे रे दिव्य नयण तणो रे, विरह पड्यो निरधार;
तरतम जोगे रे तरतम वासना रे, वासित बोध आधार. ॥५॥
काळ लब्धि लही पंथ निहाळशुं रे, ए आशा अवलंब;
ए जन जीवे रे जिनजी जाणजो रे, '**आनंदघन**' मत अंब. ॥६॥

(१०) प्रीतलडी बंधाणी रे अजित जिणंदशुं...

(राग : अपूर्व अवसर.../शोभा शी कहुं.../आंखडी मारी...)

प्रीतलडी बंधाणी रे अजित जिणंदशुं,
प्रभु पाखे क्षण एक मने न सुहाय जो;
ध्याननी तारी रे लागी नेह शुं,
जलद घटा जिम शिव सुत वाहन दाय जो. प्रीत०॥१॥
नेह घेलुं मन मारुं रे प्रभु अलजे रहे,
तन मन धन ते कारणथी प्रभु मुज जो;
माहरे तो आधार रे साहिब रावरो,
अंतरगतनी प्रभु आगळ कहुं गुंज जो. प्रीत०॥२॥
साहेब ते साचो रे जगमां जाणीए,
सेवकना जे सहेजे सुधारे काज जो;
एहवे रे आचरणे केम करी रहुं,
बिरुद तमारुं तारण तरण जहाज जो. प्रीत०॥३॥
तारकता तुज मांहे रे श्रवणे सांभळी,
ते भणी हुं आव्यो छुं दीनदयाळ जो;
तुज करुणानी लहेरे मुज कारज सरे,
शुं घणुं कहीए जाण आगळ कृपाळ जो. प्रीत०॥४॥
करुणाद्रष्टि कीधी रे सेवक उपरे,
भव भय भावठ भांगी भक्ति प्रसंग जो;
मनवांछित फळिया रे तुज आलंबने,
करजोडीने '**मोहन**' कहे मनरंग जो. प्रीत०॥५॥

(११) शुभ वेळा शुभ अवसरे...

(राग : सोनामां सुगंध भळे.../
वामानंदन वंदना.../रघुपति राघव...)

शुभ वेळा शुभ अवसरे रे, लाग्यो प्रभु शुं नेह;
वाधे मुज मन वालहो रे, दिन दिन बमणो नेह,
अजित जिन! विनतडी अवधार.
मन माहरुं लागी रह्युं रे, तुज चरणे एक तार. ॥१॥
हियडुं मुज हेजा लउं रे, करे उमाहो अपार;
घडी घडीने अंतरे रे, चाहे तुज देदार. ॥२॥
मीठो अमृतनी परे रे, साहिब ताहरो संग;
नयणे नयण मिलावतां रे, शीतल थाये अंग. ॥३॥
अवश्यपणे एक घडी रे, जाये तुज विण जेह;
वरस सो सम साहिबा रे, लागे मुज मन तेह. ॥४॥
तुजने तो मुज उपरे रे, महेर न आवे कांय;
तो पण मुज मन लालचुं रे, तुम विण अलगुं न थाय. ॥५॥
आसंगायत आपणो रे, जाणीने जिनराय;
दरिशण दीजे दीन प्रति रे, '**हंसरतन**' सुख थाय. ॥६॥

थोय

विजया सुत वंदो, तेजथी ज्युं दिणंदो,
शीतलताए चंदो, धीरताए गिरींदो;
मुख जिम अरविंदो, जास सेवे सुरींदो,
लहो परमाणंदो, सेवना सुख कंदो.

श्री संभवनाथ भगवान

चैत्यवंदन

(१) सावत्थी नयरी धणी...

सावत्थी नयरी धणी, श्री संभवनाथ;
जितारि नृप नंदनो, चलवे शिव साथ. ॥१॥
सेना नंदन चंदने, पूजो नव अंगे;
चारशें धनुषनुं देहमान, प्रणमो मनरंगे. ॥२॥
साठ लाख पूरव तणुं ए, जिनवर उत्तम आय;
तुरग लंछन पद '**पद्मने**', नमतां शिवसुख थाय. ॥३॥

स्तवन

(१) मुजरो ल्योने माहरो साहिबा...

(रागः मुश्किल डगर छे.../अमी भरेली.../तारी प्रीतिनी केवी असर.../
ऊंची मेडी ते मारा.../वैष्णवजन.../सिद्धारथना राजकुंवरनुं...)

मुजरो ल्योने माहरो साहिबा, गिरुआ गरीब-निवाज;
अवसर पामीजी एहवो, अरज न करशोजी आज. ॥१॥
तरु आपे फळ-फूलडां, जळ आपे जळधार;
आप स्वारथ को नहीं, केवळ पर उपकार. ॥२॥
तिम प्रभु जग जन तारवा, तुं पाम्यो अवतार;
माहरी वेळाजी एवडो, ए छे कवण विचार. ॥३॥
खिजमतगार हुं ताहरो, खामी न करुंजी कोई;
बिरुद संभाळी आपणो, हितनी नजरे जोई. ॥४॥
संभव साहिब माहरा, तुं मुज मळियोजी ईश;
वाचक विमलविजय तणो, '**राम**' कहे शुभ शीश. ॥५॥

(२) श्री संभव जिनराजजी रे...



(राग : प्रेम भरेलुं हैयुं लईने.../तारा विना श्याम...)

श्री संभव जिनराजजी रे, ताहरुं अकल स्वरूप; जिनवर पूजो,
स्व पर प्रकाशक दिनमणि रे, समतारसनो भूप. जिनवर पूजो.

पूजो पूजो रे भविक जन पूजो, प्रभु पूज्या परमानंद. जि० ॥१॥
अविसंवाद निमित्त छो रे, जगत जंतु सुखकाज; जि०
हेतु सत्य बहुमानथी रे, जिन सेव्यां शिवराज. जि० ॥२॥
उपादान आतम सही रे, पुष्टालंबन देव; जि०
उपादान कारणपणे रे, प्रगट करे प्रभु सेव. जि० ॥३॥
कार्यगुण कारणपणे रे, कारण कार्य अनूप; जि०
सकल सिद्धता ताहरी रे, माहरे साधनरूप. जि० ॥४॥
एक वार प्रभु वंदना रे, आगम रीते थाय; जि०
कारण सत्ये कार्यनी रे, सिद्धि प्रतीत कराय. जि० ॥५॥
प्रभुपणे प्रभु ओळखी रे,अमल विमल गुण गेह; जि०
साध्यदृष्टि साधकपणे रे, वंदे धन्य नर तेह. जि० ॥६॥
जन्म कृतारथ तेहनो रे, दिवस सफल पण तास; जि०
जगत शरण जिन चरणने रे, वंदे धरीय उल्लास. जि० ॥७॥
निज सत्ता निज भावथी रे, गुण अनंतनुं ठाण; जि०
'**देवचंद्र**' जिनराजजी रे, शुद्ध सिद्ध सुख खाण. जि० ॥८॥

(3) श्री संभवजिन साथे में तो...



(राग : तारी प्रीतिनी केवी असर.../संयम जीवनो.../
अमी भरेली नजरो.../मैत्री भावनुं...)

श्री संभवजिन साथे में तो, अविहड प्रीति बांधी रे;
छोडावी छूटे नहि ए तो, कोई जो आवे पण आंधी रे;
साचुं मानो संभवजिनवर, आपनो सेवक जाणी रे. ॥१॥

रात-दिवस हुं तुजने ध्यावुं, तुं तो अळगो बेठो रे;
सात राजनुं अंतर छे पण, ध्याने मुज मन पेठो रे. ॥२॥
जेम रवि मंडल रहे गगनमां, कमळ रहे जलमांही रे;
दूर थकी पण विकसित थावे, प्रीतम छो दिल मांही रे. ॥३॥
तुं पुरुषोत्तम परमपुरुष है, जेता नेता देवा रे;
परमानंद विलासी तुं ही, आपो शिवसुख मेवा रे. ॥४॥
खोट नथी खजाने तारे, रत्नत्रयी मुज आपो रे;
लळी लळी हुं विनवुं प्रभुजी, कर्मनी कासळ कापो रे. ॥५॥
पुण्ये आज हुं दरिशन पायो, दुःखडां सघळा नाठां रे;
रंगविजयनो '**अमृत**' बोले, श्री संभवजिन तुठां रे. ॥६॥

(४) संभव जिन जब...

(राग : संयम जीवननो.../
ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम.../फूल नहीं तो पांखडी...)

संभव जिन जब नयन मिल्यो हो,
संभव जिन जब नयन मिल्यो हो,
प्रगटे पूरव पुण्य के अंकुर,
तब थें दिन मोही सफल वळ्यो हो;
अब थें विषय पंक कलन में,
बेहर नवि जाउं कल्यो हो. संभव०॥१॥
अंगन में अमीय मेह वूठे,
जन्म ताप को व्याप गल्यो हो;
बोधि बीज प्रगट्यो तिहुं जग में,
तप संयम को खेत फल्यो हो. संभव०॥२॥
जेसी भक्ति तैसी प्रभु करुणा,
श्वेत शंख में दूध भळ्यो हो;
दरशन थें नविनिध में पाई,
दुख दोहग सवि दूर टळ्यो हो. संभव०॥३॥

डरत फिरत हे दूर ही दिल थें,
मोहमल्ल जिणे जगत्रण छळ्यो हो;
समकित रतन लहुं दरिसण थें,
अब नवि जाउं फुगति रुल्यो हो. संभव०॥४॥
नेह नजर भर निरखत ही,
मुज प्रभुशुं हियडो हेजे हल्यो हो;
'**श्री नयविजय विबुध सेवक**' कुं,
साहिब सुरतरु होई फल्यो हो. संभव०॥५॥

(५) संभव जिनवर खुब बन्यो रे...

(राग : मनाजी तुं तो.../
सुमतिनाथ गुणशुं.../दुख दोहग दूरे...)

संभव जिनवर खुब बन्यो रे, अविहड धर्म सनेह,
दिन दिन ते वधतो अछे रे, कहि न होवे छेह!
सौभागी जिन! मुज मन तुंही सुहाय;
ए तो बीजा नावे दाय, हुं तो लळी लळी लागुं पाय. ॥१॥
दुधमांहि जिम घृत वस्युं रे, वस्तुमांहि सामर्थ्य,
तंतुमांहि जिम पट वस्यो रे, सूत्रमांहि जिम अर्थ. ॥२॥
कंचन पारस पाषाणमां रे, चंदनमां जिम वास;
पृथ्वीमांही जिम औषधी रे, कार्यो कारण वास. ॥३॥
जिम स्याद्वादे नय मिले रे, जिम गुणमां पर्याय;
अरणीमां पावक वस्या रे, जिम लोके षटकाय. ॥४॥
तेणी परे तुं मुज चित्त वस्यो रे, सेना मात मल्हार;
जो अभेद बुद्धि मिले रे, '**ज्ञानविमल**' सुखकार. ॥५॥



(६) संभव जिनवर विनंती...

(राग : यह है पावन भूमि.../तारा विना श्याम.../
एक पंखी आवीने.../ए मेरे वतन के...)

संभव जिनवर विनंती, अवधारो गुण ज्ञाता रे;
खामी नहि मुज खिजमते, कदीये होशो फल दाता रे. ॥१॥
करजोडी ऊभो रहुं, रात-दिवस तुम ध्याने रे;
जो मनमां आणो नहीं, तो शुं कहीए थाने रे. ॥२॥
खोट खजाने को नहीं, दीजिये वांछित दानो रे;
करुणा नजर प्रभुजी तणी, वाधे सेवक वानो रे. ॥३॥
काळ लब्धि मुज मति गणो, भाव लब्धि तुम हाथे रे;
लडथडतुं पण गजबच्चुं, गाजे गयवर साथे रे. ॥४॥
देशो तो तुम ही भला, बीजा तो नवि याचुं रे;
वाचक **'यश'** कहे सांईशुं, फलशे ए मुज साचुं रे. ॥५॥



(७) संभवदेव ते धुर सेवो सवे रे...

(राग : मैली चादर.../ ऐसा चिद्रस.../तारी प्रीतिनी.../
संयम जीवननो.../एक दिन आप हमको...)

संभवदेव ते धुर सेवो सवे रे, लहि प्रभु सेवन भेद;
सेवन कारण पहेली भूमिका रे, अभय अद्वेष अखेद. सं०॥१॥
भय चंचलता हो जे परिणामनी रे, द्वेष अरोचक भाव;
खेद प्रवृत्ति हो करतां थाकीए रे, दोष अबोध लखाव. सं०॥२॥
चरमावर्त्त हो चरम करण तथा रे, भवपरिणति परिपाक;
दोष टळे वळी दृष्टि खुले भली रे, प्राप्ति प्रवचन वाक. सं०॥३॥
परिचय पातिक घातक साधु शुं रे, अकुशल अपचय चेत;
ग्रंथ अध्यातम श्रवण मनन करी रे, परिशीलन नय हेत. सं०॥४॥
कारण जोगे हो कारज नीपजे रे, एमां कोई न वाद;
पण कारण विण कारज साधीये रे, ए निज मत उन्माद. सं०॥५॥

मुग्ध सुगम करी सेवन आदरे रे, सेवन अगम अनूप;
देजो कदाचित सेवक याचना रे, '**आनंदघन**' रस रूप. सं०॥६॥

(८) समकित दाता समकित आपो...

(राग : मारो मुजरो ल्योने राज.../
प्रभु तें मने जे आप्युं.../अभिनंदन स्वामी...)

समकित दाता समकित आपो, मन मांगे थई मीठुं;
छती वस्तु देतां शुं सोचो? मीठुं जे सहुए दीठुं;
प्यारा प्राण थकी छो राज! संभव जिनजी! मुजने. ॥१॥
ईम मत जाणो जे आपे लहीए, ते लाधुं शुं लेवुं?
पण परमारथ प्रीछी आपे, तेही ज कहीए देवुं. ॥२॥
अर्थी हुं, तुं अर्थ समर्पक, ईम मत करज्यो हांसुं;
प्रगट हतुं तुजने पण पहेलां, ए हांसानुं पासुं. ॥३॥
परमपुरुष तुमे प्रथम भजीने, पाम्या ईम प्रभुताई;
तेणे रूपे तुमने अमे भजीए, तिणे तुम हाथ वडाई. ॥४॥
तुमे स्वामी हुं सेवा कामी, मुजरो स्वामी निवाजे;
नहि तो हठ मांडी मांगतां, किणविध सेवक लाजे. ॥५॥
ज्योते ज्योति मिले मत प्रीछो, कुण लहेशे कुण भजशे?
साची भक्ति जे हंस तणी परे, खीर-नीर नय करशे. ॥६॥
ओलग कीधी जे लेखे लागी, चरण भेट प्रभु दीधी;
रूप विबुधनो '**मोहन**' पभणे, रसना पावन कीधी. ॥७॥

थोय

संभव सुखदाता,जेह जगमां विख्याता,
षट् जीवना त्राता, आपता सुखशाता;
माताने भ्राता, केवल ज्ञान ज्ञाता,
दुःख दोहग व्राता, जास नामे पलाता.

श्री अभिनंदनस्वामी भगवान

चैत्यवंदन

(१) नंदन संवर रायनो...

नंदन संवर रायनो, चोथा अभिनंदन;
कपि लंछन वंदन करो, भवदुःख निकंदन. ॥१॥
सिद्धारथा जस मावडी, सिद्धारथ जिनराय;
साडा त्रणशें धनुष मान, सुंदर जस काय. ॥२॥
विनीतावासी वंदीये ए, आयु लख पचास;
पूरव तस पद '**पद्म**'ने, नमतां शिवपुर वास. ॥३॥

स्तवन

(१) अभिनंदन जिन दरिसण तरसीए...

(राग : तारी प्रीतिनी.../तुज करुणाधारमां.../एक पंखी.../
अमी भरेली.../होंशवालो को...)

अभिनंदन जिन दरिसण तरसीऐ, दरिसण दुर्लभ देव;
मत मत भेदे रे जो जई पूछीये, सहु थापे अहमेव. ॥१॥
सामान्ये करी दरिसण दोहिलुं, निर्णय सकल विशेष;
मद में घेर्यो रे अंधो किम करे, रवि शशि रूप विलेख. ॥२॥
हेतु विवादे हो चित्त धरी जोईए, अति दुर्गम नयवाद;
आगमवादे हो गुरुगम को नहीं, ए सबलो विखवाद. ॥३॥
घाती डुंगर आडा अति घणा, तुज दरिसण जगनाथ;
धीट्ठाई करी मारग संचरुं, सेंगुं कोई न साथ. ॥४॥
दरिसण दरिसण रटतो जो फिरुं, तो रण रोझ समान;
जेहने पिपासा हो अमृत पाननी, किम भांजे विषपान? ॥५॥

तरस न आवे हो मरण जीवन तणो, सीझे जो दरिसण काज;
दरिसण दुर्लभ सुलभ कृपा थकी, '**आनंदघन**' महाराज. ॥६॥

(२) अभिनंदन स्वामी हमारा...

(राग : जिंदगी एक सफर.../रोमे रोमे हुं तारो.../
ए मेरे वतन.../आ धारा तो.../ओघो छे अणमूलो...)

अभिनंदन स्वामी हमारा, प्रभु भवदुःख भंजनहारा;
ये दुनिया दुःख की धारा, प्रभु ईनसे करो निस्तारा. ॥१॥
हुं कुमति कुटिल भरमायो, दूर नीति करी दुःख पायो;
अब शरण लियो है थारो, मुजे भवजल पार उतारो. ॥२॥
प्रभु शीख हैये नहि धारी, दुर्गतिमां दुःख लीयो भारी;
ईन कर्मो की गति न्यारी, करे बेर बेर खुवारी. ॥३॥
तुमे करुणावंत कहावो, जगतारक बिरुद धरावो;
मेरी अरजीनो एक दावो, ईण दुःख से क्युं न छुडावो? ॥४॥
में विरथा जन्म गुमाव्यो, नहीं तन धन स्नेह निवार्यो;
अब पारस परसंग पामी, नहीं '**वीरविजय**' कुं खामी. ॥५॥

(3) क्युं जाणुं कयुं बनी आवशे...

(राग : मने वेश श्रमणनो.../तारी प्रीतिनी.../एक पंखी...)

क्युं जाणुं कयुं बनी आवशे, अभिनंदन रस रीत हो मित्त;
पुद्गल अनुभव त्यागथी, करवी जसु परतीत हो मित्त. क्युं०॥१॥
परमातम परमेश्वरुं, वस्तुगते ते अलिप्त हो मित्त;
द्रव्ये द्रव्य मिले नहिं, भावे ते अन्य अव्याप्त हो मित्त. क्युं०॥२॥
शुद्ध स्वरूप सनातनो, निर्मल जे निःसंग हो मित्त;
आत्मविभूते परिणम्यो, न करे ते परसंग हो मित्त. क्युं०॥३॥
पण जाणुं आगम बळे, मिलवुं तुम प्रभु साथ हो मित्त;
प्रभु तो स्वसंपत्तिमयी, शुद्ध स्वरूपनो नाथ हो मित्त. क्युं०॥४॥

पर परिणामिकता अछे, जे तुज पुद्गल योग हो मित्त;
जड चल जगनी एंठनो, न घटे तुजने भोग हो मित्त. क्युं०॥५॥
शुद्ध निमित्त प्रभु ग्रह्यो, करी अशुद्ध पर हेय हो मित्त;
आत्मालंबी गुणालयी, सहु साधकनो ध्येय हो मित्त. क्युं०॥६॥
जिम जिनवर आलंबने, वधे सधे एक तान हो मित्त;
तिम तिम आत्मालंबनी, ग्रहे स्वरूप निदान हो मित्त. क्युं०॥७॥
स्वस्वरूप एकत्वता, साधे पूर्णानंद हो मित्त;
रमे भोगवे आतमा, रत्नत्रयी गुणवृंद हो मित्त. क्युं०॥८॥
अभिनंदन अवलंबने, परमानंद विलास हो मित्त;
'**देवचंद्र**' प्रभु सेवना, करी अनुभव अभ्यास हो मित्त. क्युं०॥९॥

(४) दीठी हो प्रभु दीठी जगगुरु तुज रे...

(राग : तुं मने भगवान.../ आंखडी मारी.../
प्रीतलडी बंधाणी.../ऋषभ जिनराज.../अपूर्व अवसर...)

दीठी हो प्रभु दीठी जगगुरु तुज रे,
मूरति हो प्रभु मूरति मोहनवेलडी जी;
मीठी हो प्रभु मीठी ताहरी वाण रे,
लागे हो प्रभु लागे जैसी शेलडीजी. ॥१॥
जाणुं हो प्रभु जाणुं जन्म कयत्थ रे,
जो हुं हो प्रभु जो हुं तुम साथे मिल्योजी;
सुरमणि हो प्रभु सुरमणि पाम्यो हत्थ रे,
आंगण हो प्रभु आंगण मुज सुरतरु फल्योजी. ॥२॥
जाग्या हो प्रभु जाग्या पुण्य अंकुर रे,
मांग्या हो प्रभु मुह मांग्या पासा ढल्याजी;
वूठा हो प्रभु वूठा अमीरस मेह रे,
नाठा हो प्रभु नाठा अशुभ शुभ दिन वल्याजी. ॥३॥

भूख्यां हो प्रभु भूख्यां मळ्यां घृतपूर रे,
तरस्या हो प्रभु तरस्या दिव्य उदक मिल्यांजी;
थाक्या हो प्रभु थाक्या मळ्या सुखपाल रे;
चाहता हो प्रभु चाहता सज्जन हेजे हल्याजी. ॥४॥
दीवो हो प्रभु दीवो, निशा वन गेह रे;
शाखी हो प्रभु शाखी थळे, जळे नौ मिलीजी,
कलियुगे हो प्रभु कलियुगे दुल्लहो तुज रे;
दरिसण हो प्रभु दरिसण लह्युं आशा फळीजी. ॥५॥
वाचक हो प्रभु वाचक **'यश'** तुम दास रे;
विनवे हो प्रभु विनवे अभिनंदन सुणोजी,
कदीये हो प्रभु कदीये म देशो छेह;
देजो हो प्रभु देजो सुख दरिसन तणोजी. ॥६॥

(५) प्रभु तुज दरिशन मळीयो अलवे...

(रागः सागर किनारे... / होंशवालो को.../ तारी प्रीतिनी.../
प्रभु तमारा (२).../स्वामी तुमे...)

प्रभु तुज दरिशन मळीयो अलवे, मन थयुं हवे मारुं हळवे हळवे,
पुण्योदय ए मोटो मारो, अणचिंत्यो थयो दर्शन तारो;
साहिबा अभिनंदन देवा, मोहना अभिनंदन देवा. ॥१॥
देखत खेव हरी मन लीधुं, कामणगारे कामण कीधुं;
मनडुं जाय नहीं कोई पासे, रात-दिवस रहे ताहरी पासे. ॥२॥
पहेला तो जाण्युं हतुं सोहिलुं, पण मोटाशुं मळवुं दोहिलुं;
सोहिलुं जाणी मनडुं वळगुं, थाय नहि हवे कीधुं अळगुं. ॥३॥
रूप देखाडी होवे अरूपी, किम ग्रहवाए अकल अरूपी;
ताहरी वात जाणी न जाये, कहो मनडानी शी गति थाये. ॥४॥

पहेला जाणी पछी करे किरिया, ते परमारथ सुखना दरिया;
वस्तु अजाणे मन दोडावे, ते तो मूरख बहु पस्तावे. ॥५॥
ते माटे तुं रूपी अरूपी, तुं शुद्ध बुद्धने सिद्ध स्वरूपी;
एह स्वरूप ग्रह्युं जब तारुं, तव भ्रम रहित थयुं मन मारुं. ॥६॥
तुज गुण ज्ञान ध्यानमां रहीये, ईम हळवुं पण सुलभ ज कहीए;
'**मानविजय**' वाचक प्रभु ध्याने, अनुभव रस मळीयो एक ताने. ॥७॥



(६) प्रभु! तेरे नयन की बलिहारी...

(राग : जिन! तेरे चरण की शरण.../पार्श्व चिंतामणी...)

प्रभु! तेरे नयन की बलिहारी...!!
याकी शोभा विजीत तपसा, कमल करतुं है जलधारी;
विधुके शरण गयो मुख अरिके, वनथें गगन हरिण हारी. ॥१॥
सहज हि अंजन मंजुल निरखत, खंजन गर्व दीयो दारी;
छिन लही है चकोर की शोभा, अग्नि भखे सो दुःख भारी. ॥२॥
चंचलता गुण लीयो मीनको, अलि ज्युं तारी हे कारी;
कहु सुभगता केति ईनको, मोही सब ही अमर नारी. ॥३॥
घुमत है समता रस माते, जैसे गजवर मदवारी;
तीन भुवन में नहीं कोई नीको, अभिनंदन जिन अनुकारी. ॥४॥
मेरे मन तो तुं ही रुचत है, परे कोण पर की लारी;
तेरे नयन की मेरे नयन में, '**जश**' कहे दीओ छबी अवतारी. ॥५॥

थोय

संवर सुत साचो, जास स्याद्वाद वाचो,
थयो हीरो जाचो, मोहने देई तमाचो;
प्रभु गुण गण माचो, एहना ध्याने राचो,
जिन पद सुख साचो, भव्य प्राणी निकाचो.

श्री सुमतिनाथ भगवान

चैत्यवंदन

(१) सुमतिनाथ सुहंकरुं...

सुमतिनाथ सुहंकरुं, कोसल्ला जस नयरी;
मेघराय मंगला तणो, नंदन जितवयरी. ॥१॥
क्रौंच लंछन जिनराजीयो, त्रणशें धनुषनी देह;
चालीस लाख पूरव तणुं, आयु अति गुणगेह. ॥२॥
सुमति गुणे करी जे भर्या ए, तर्या संसार अगाध;
तस पद '**पद्म**' सेवा थकी, लहो सुख अव्याबाध. ॥३॥

स्तवन

(१) अहो श्री सुमति जिन शुद्धता ताहरी...

(राग : तार हो तार प्रभु.../साथ गिरनारनो...)

अहो श्री सुमति जिन शुद्धता ताहरी,
स्वगुण पर्याय परिणामी रामी;
नित्यता एकता अस्तिता ईतर युत,
भोग्य भोगी थको प्रभु अकामी. अहो०॥१॥
ऊपजे व्यय लहे तहवि तेहवो रहे,
गुण प्रमुख बहुलता तहवि पिंडी;
आत्मभावे रहे अपरता नवि ग्रहे,
लोक प्रदेश मित पण अखंडी. अहो०॥२॥
कार्य कारणपणे परिणमे तहवि ध्रुव,
कार्य भेदे करे पण अभेदी;
कर्तृता परिणमे नव्यता नवि रमे,
सकलवेत्ता थको पण अवेदी. अहो०॥३॥

शुद्धता बुद्धता देव परमात्मता,
सहज निजभाव भोगी अयोगी;
स्व पर उपयोगी तादात्म्य सत्तारसी,
शक्ति प्रयुंजतो न प्रयोगी. अहो०॥४॥
वस्तु निज परिणते सर्व परिणामिकी,
एटले कोई प्रभुता न पामे;
करे जाणे रमे अनुभवे ते प्रभु,
तत्त्व स्वामित्व शुचि तत्त्व धामे. अहो०॥५॥
जीव नवि पुग्गली नैव पुग्गल कदा,
पुग्गलाधार नहि तास रंगी;
पर तणो ईश नहि अपर ऐश्वर्यता,
वस्तु धर्मे कदा न परसंगी. अहो०॥६॥
संग्रहे नहीं आपे नहीं परभणी,
नवि करे आदरे न पर राखे;
शुद्ध स्याद्वाद निजभाव भोगी जिके,
तेह परभावने केम चाखे. अहो०॥७॥
ताहरी शुद्धता भास आश्चर्यथी,
उपजे रुचि तेणे तत्व इहे;
तत्त्वरंगी थयो दोषथी उभग्यो,
दोष त्यागे ढले तत्त्व लीहे. अहो०॥८॥
शुद्ध मार्गे वध्यो साध्य साधन सध्यो,
स्वामी प्रतिछंद सत्ता आराधे;
आत्म निष्पत्ति तिम साधना नवि टके,
वस्तु उत्सर्ग आतम समाधे. अहो०॥९॥
माहरी शुद्ध सत्ता तणी पूर्णता,
तेहनो हेतु प्रभु तुंहि साचो;
'**देवचंद्रे**' स्तव्यो मुनिगणे अनुभव्यो,
तत्त्व भक्ते भविक सकळ राचो अहो०॥१०॥

(२) दिलरंजन जिनराजजी रे...



(राग : ऋषभ जिणंदने रे../
शांति जिनेश्वर साचो.../भरतनी पाटे...)

दिलरंजन जिनराजजी रे, सुमतिनाथ जग स्वामी सलुणा;
जगतारक जगहितकरुं रे, भविजन मन विश्रामी सलुणा. ॥१॥
मुज चित्त लाग्युं तुम थकी रे, किम रहो न्यारा देव सलुणा;
समरथ जाणी साहिबा रे, कीजे पदकज सेव सलुणा. ॥२॥
दायक नाम धरावीने रे, वळी धरो कृपणता दोष सलुणा;
न वधे जग जस ईम कर्या रे, तिणे प्रभु दीजे संतोष सलुणा. ॥३॥
करुणासागर दीजीए रे, रत्नत्रयी अभिराम सलुणा;
ललचावीने आपतां रे, जलद हुओ जुओ श्याम सलुणा. ॥४॥
तार्या तुमे केई जीवने रे, अपराधी सुखी कीध सलुणा;
शिवसुख आप्युं भक्तने रे, तेणे मने शुं दीध सलुणा. ॥५॥
एक थकी दूर रहो रे, एकने दियो सुख काज सलुणा;
ईम करतां तारकपणुं रे, न रहे गरीब निवाज सलुणा. ॥६॥
सो वाते एक वातडी रे, सुणजो त्रिभुवननाथ सलुणा;
अमृत पद देई **'रंग'** ने, तारजो झाली हाथ सलुणा. ॥७॥

(3) लाग्यो लाग्यो प्रभु शुं नेह...

(रागः तुमको देखा तो ये... / जिंदगी की ना तूटे...)

लाग्यो लाग्यो प्रभु शुं नेह, वसियो मारा हैयामां;
मारो साहिबो अति ससनेह, वसियो मारा हैयामां.
दर्शन प्रभुनुं देखतां रे, जोतां प्रभु मुख ज्योत;
दूरित पडल दूरे थयो, प्रगट्यो ज्ञान उद्योत. लाग्यो०॥१॥
मुरत मुज मनमां वसी, कागळ जिम चित्राम;
निशदिन सूतां जागतां, संभारुं हुं तुज नाम. लाग्यो०॥२॥

जेना मनमां जे वस्यो, तेहने तेहनुं काम;
मधुकरने मन मालती, मोर तणे मन मेह. लाग्यो०॥३॥
देव अवर देखी घणा, कीहां नवि राचे मन;
पण गुणे सांकळे सांकळ्युं, ए तो आलोचे नहि. लाग्यो०॥४॥
साहिबा सुमति जिणंदनी, चाहुं हुं भवोभव सेव;
'**हंसरतन**' कहे माहरे, मुज मन लागी टेव. लाग्यो०॥५॥

(४) सुमति चरणकज आतम अरपणा...

(राग : सुरज मंडण पार्श्व.../तुज करुणाधार... /मैली चादर...)

सुमति चरणकज आतम अरपणा, दरपण जिम अविकार; सुज्ञानी
मति तरपण बहु सम्मत जाणीए, परिसर पण सुविचार. सु० ॥१॥
त्रिविध सकल तनुधर गत आतमा, बहिरातम धुरिभेद; सु०
बीजो अंतर आतम तीसरो, परमातम अविच्छेद. सु० ॥२॥
आतम बुद्धे हो कायादिक ग्रह्यो, बहिरातम अघरूप; सु०
कायादिकनो हो साखीधर कह्यो, अंतर आतम रूप. सु० ॥३॥
ज्ञानानंदे हो पूरण पावनो, वर्जित सकल उपाधि; सु०
अतीन्द्रिय गुणगण मणि आगरु, ईम परमातम साध. सु० ॥४॥
बहिरातम तजी अंतर आतमा, रूप थई थिरभाव; सु०
परमातमनुं हो आतम भाववुं, आतम अर्पण दाव. सु० ॥५॥
आतम अर्पण वस्तु विचारतां, भरम टले मतिदोष; सु०
परम पदारथ संपत्ति संपजे, '**आनंदघन**' रसपोष. सु० ॥६॥

(५) सुमतिनाथ गुणशुं मिलीजी...

(राग : तुज करुणाधारमां.../मुज अवगुण मत देखो.../वैष्णवजन...)

सुमतिनाथ गुणशुं मिलीजी, वाधे मुज मन प्रीति;
तेल बिंदु जिम विस्तरेजी, जळमांहे भली रीति,
सौभागी जिनशुं लाग्यो अविहड रंग... वैरागी जिनशुं... ॥१॥

सज्जनशुं जे प्रीतडीजी, छानी ते न रखाय;
परिमल कस्तूरी तणोजी, मही मांहे महकाय. ॥२॥
आंगळीए नवि मेरु ढंकाए, छाबडीए रवि तेज;
अंजलिमां जिम गंग न माए, मुज मन तिम प्रभु हेज. ॥३॥
हुओ छीपे नहि अधर अरुण जिम, खाता पान सुरंग;
पीवत भरभर प्रभु गुण प्याला, तिम मुज प्रेम अभंग. ॥४॥
ढांकी इक्षु पराळशुंजी, न रहे लही विस्तार;
'**वाचक यश**' कहे प्रभु तणोजी, तिम मुज प्रेम प्रकार. ॥५॥

(६) हो मन! ते तो क्युं जिन भक्ति विसारी...

(राग : अब मोहे ऐसी आय.../जिन! तेरे चरण की...)

हो मन! तें तो क्युं जिन भक्ति विसारी... हो मन! तें तो!
सुमति सरूप प्रभु वाणी, सुणी सुणी मोह गुमावी. हो०॥१॥
भूल्यो चार गतिमें भटके, घर घर जेम भिखारी. हो०॥२॥
उपशम रसशुं क्युं न बुझावे, ए छीपी चिनगारी. हो०॥३॥
इंद्र चंद्र नागेन्द्र विद्याधर, ताकुं हो सेवा प्यारी. हो०॥४॥
रूप विबुधनो '**मोहन**' पभणे, अपगत को गत न्यारी. हो०॥५॥

थोय

सुमति सुमति दाई, मंगला जास माई,
मेरुने वळी राई, ओर एहने तुलाई;
क्षय कीधा घाई, केवलज्ञान पाई,
नहि उणिम कांई, सेवीये ए सदाई.

श्री पद्मप्रभस्वामी भगवान

चैत्यवंदन

(१) कोसंबीपुर राजियो...

कोसंबीपुर राजियो, धर नरपति ताय;
पद्मप्रभ प्रभुतामयी, सुसीमा जस माय. ॥१॥
त्रीस लाख पूरव तणुं, जिन आयु पाळी;
धनुष अढीशें देहडी, सवि कर्मने टाळी. ॥२॥
पद्म लंछन परमेश्वरुं ए, जिनपद पद्मनी सेव;
'**पद्मविजय**' कहे कीजिए, भविजन सहु नितमेव. ॥३॥

स्तवन

(१) अजब बनी रे मेरे अजब बनी रे...

(राग : चंदनसा बदन.../धन्य बन्यो रे पेलो गढ...)

अजब बनी रे मेरे अजब बनी रे, प्रभु साथे प्रीति अजब बनी रे;
जोर बनी रे मेरे जोर बनी, प्रभु साथे प्रीति जोर बनी. ॥१॥
अजब बनी प्रभु साथे प्रीति, तो मुज दुर्गतिनी शी भीति;
देखी प्रभुनी मोटी रीति, पामी पूरण रीति प्रतीति. ॥२॥
जे दुनियामें दुर्लभ नेह, ते में पामी प्रभुनी भेट;
आळसुने घेर आवी गंग, पाम्यो पंथी सखर तुरंग. ॥३॥
तिरसे पायो मानस नीर, वाद करतां वाधी भीर;
चित्त चोर्यो साजननो संग, अणचिंत्ये मिल्यो चडते रंग. ॥४॥

जिम जिम निरखुं प्रभु मुख नूर, तिम तिम पाउं आनंदपूर;
सुणतां जनमुख प्रभुनी वात, हरखे माहरी साते धात. ॥५॥
पद्मप्रभ जिनना गुणगान गाता, लहीए शिवपदवी असमान;
विमलविजय वाचकनो शिश, '**रामे**' पायो परम जगीश. ॥६॥

(२) पद्मप्रभ जिन जई अलगा रह्या...

(राग : वैष्णवजन.../ मिले मन भीतर.../श्री श्रेयांस जिन...)

पद्मप्रभ जिन जई अलगा रह्या, जिहांथी नावे लेखोजी;
कागळने मसी तिहां नवि संपजे, न चले वाट विशेषोजी,
सुगुण सनेहा रे कदीय न विसरे. ॥१॥
ईहांथी तिहां जई कोई आवे नहि, जेह कहे संदेशोजी;
जेहनुं मिलवुं रे दोहिलुं तेहशुं, नेह ते आप किलेशोजी. ॥२॥
वीतरागशुं रे राग ते एक पखो, कीजे कवण प्रकारोजी;
घोडो दोडे रे साहिब वाजमां, मन नाणे असवारोजी. ॥३॥
साची भक्ति रे भावन रस कह्यो, रस होय तिहां दोय रीझेजी;
होडाहोडे रे बीहुं रस रीझथी, मनना मनोरथ सीझेजी. ॥४॥
पण गुणवंता रे गोठे गाजीए, मोटा ते विश्रामजी;
'**वाचक जश**' कहे एह ज आशरे, सुख लहुं ठामोठामजी. ॥५॥

(3) पद्मप्रभ जिन! तुज मुज आंतरुं रे...

(राग : तुं प्रभु मारो.../तारी प्रीतिनी केवी.../आशावरी../
वैष्णवजन.../वीर जिणंद जगत...)

पद्मप्रभ जिन! तुज मुज आंतरुं रे, किम भांजे भगवंत;
कर्म विपाके हो कारण जोईने रे, कोई कहे मतिमंत. ॥१॥
पयई ठिई अणुभाग प्रदेशथी रे, मूल उत्तर बिहुं भेद;
घाती अघाती हो बंधोदय उदीरणा रे, सत्ता कर्म विछेद. ॥२॥

कनकोपलवत् पयडी पुरुष तणी रे, जोडी अनादि स्वभाव;
अन्य संयोगी जिहां लगे आतमा रे, संसारी कहेवाय. ॥३॥
कारण योगे हो बांधे बंधने रे, कारण मुगति मुकाय;
आश्रव संवर नाम अनुक्रमे रे, हेय उपादेय सुणाय. ॥४॥
युंजनकरणे हो अंतर तुज पड्यो रे, गुणकरणे करी भंग;
ग्रंथ उक्ते करी पंडित जन कह्यो रे, अंतर भंग सुअंग. ॥५॥
तुज मुज अंतर अंतर भांजशे रे, वाजशे मंगल तूर;
जीव सरोवर अतिशय वाधशे रे, '**आनंदघन**' रसपूर. ॥६॥



(४) पद्मप्रभ प्राण से प्यारा...

(राग : बहारो फूल बरसाओ.../जगत है स्वार्थ का.../
तुं मने भगवान.../होंशवालों को...)

पद्मप्रभ प्राण से प्यारा, छुडावो कर्म की धारा;
करम फंद तोडवा धोरी, प्रभुजी से अर्ज है मोरी. ॥१॥
लघुवय एक थें जीया, मुक्ति में वास तुम कीया;
न जानी पीड तें मोरी, प्रभु अब खींच ले दोरी. ॥२॥
विषयसुख मानी मों मन में, गयो सब काल गफलत में;
नरक दुःख वेदना भारी, नीकळवा ना रही बारी. ॥३॥
परवश दीनता कीनी, पाप की पोट शिर लीनी;
न जाणी भक्ति तुम केरी, रह्यो निशदिन दुःख घेरी. ॥४॥
ईस विध विनति मोरी, करुं मैं दोय कर जोडी;
आतम आनंद मुज दीजो, '**वीरनुं**' काज सब कीजो. ॥५॥



(५) प्रभु तेरी मूरति मोहनगारी...



(राग : मनना मंदिरीये आवो... / जिन तेरे! चरण की.../
तुम दरिसन भले.../तुं प्यार का...)

प्रभु तेरी मूरति मोहनगारी... प्रभु तेरी...
पद्मप्रभ जिन तेरे ही आगे, और देव की छबी हारी. ॥१॥
समता शीतल भरी दोय अखियां, कमल पंखरीया वारी;
आनन ते राका चंद सो राजे, वाणी सुधारस सारी. ॥२॥
लक्षण अंगभर्यो तन तेरो, सहस्र अठ्योतर धारी;
भीतर गुण को पार न आवे, जो कोउ कहत बिचारी. ॥३॥
शशि रवि गिरि हरि को गुण लेई, निरमित गात्र संचारी;
वचन बुलंद कहा से आयो, ए अचरिज मुज भारी. ॥४॥
यो गुण अनंत भरी छबी प्यारी, परम धरम हितकारी;
कवि '**अमृत**' कहे चित्त अवधारी, बिसरत नहि बिसारी. ॥५॥

(६) श्री पद्मप्रभ जिन गुणनिधि रे लाल...



(राग : विरतिधरनो वेष... /मारा शमणामां.../
निरख्यो नेमि जिणंदने.../वैष्णवजन...)

श्री पद्मप्रभ जिन गुणनिधि रे लाल, जगतारक जगदीश रे; वालेसर
जिन उपगार थकी लहे रे लाल, भवि जन सिद्धि जगीश रे. वा० ॥१॥
तुज दरिसण मुज वालहो रे लाल, दरिसण शुद्ध पवित्त रे; वा०
दरिसण शब्द नये करे रे लाल, संग्रह एवंभूत रे. वा० ॥२॥
बीजे वृक्ष अनंतता रे लाल, प्रसरे भूजल योग रे; वा०
तिम मुज आतम संपदा रे लाल, प्रगटे प्रभु संयोग रे. वा० ॥३॥
जगत जंतु कारज रुचि रे लाल, साधे उदये भाण रे; वा०
चिदानंद सुविलासता रे लाल, वाधे जिनवर झाण रे. वा० ॥४॥
लब्धि सिद्धि मंत्राक्षरे रे लाल, उपजे साधक संग रे; वा०
सहज अध्यातम तत्त्वता रे लाल, प्रगटे तत्त्वी रंग रे. वा० ॥५॥

लोह धातु कंचन हुवे रे लाल, पारस फरसन पामी रे; वा०
प्रगटे अध्यातम दशा रे लाल, व्यक्त गुणी गुणग्राम रे. वा० ॥६॥
आत्मसिद्धि कारज भणी रे लाल, सहज नियामक हेतु रे; वा०
नामादिक जिनराजना रे लाल, भवसागर महा सेतु रे.वा० ॥७॥
स्थंभन इन्द्रिय योगनो रे लाल. रक्त वर्ण गुण राय रे; वा०
'**देवचंद्र**' वृंदे स्तव्यो रे लाल, आप अवर्ण अकाय रे. वा० ॥८॥



(७) श्री पद्मप्रभना नामने रे...

(राग : क्यारे बनीश हुं.../सोनामां सुगंध.../
ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम.../निरखी नयणा भींजाय...)

श्री पद्मप्रभना नामने रे, जाउं हुं बलिहार;
नाम जपंता दिहां गमुं रे, भवभय भंजणहार रे.
मिले मन भीतर भगवान, मिले मन भीतर भगवान. ॥१॥
नाम सुणंता मन उल्लसे रे, लोचन विकसित होय;
रोमांचित हुए देहडी रे, जाणे मिलीयो सोय रे. ॥२॥
पंचम काले पामवो रे, दुर्लभ तुज देदार;
तो पण तारा नामनो रे, छे मोटो आधार रे. ॥३॥
नाम ग्रहे आवी मिले रे, मन भीतर भगवान;
मंत्र बळे जिम देवता रे, वाहलो कीधो आह्वान रे. ॥४॥
ध्यान पदस्थ प्रभावथी रे, चाख्यो अनुभव स्वाद;
'**मानविजय**' वाचक कहे रे, मुको बीजो वाद रे. ॥५॥

थोय

अढीषे धनुष काया, त्यक्त मद मोहमाया,
सुसीमा जस माया, शुकल जे ध्यान ध्याया;
केवल वर पाया, चामरादि धराया,
सेवे सुरराया, मोक्षनगरे सिधाया.

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान

चैत्यवंदन

(१) श्री सुपास जिणंद पास...

श्री सुपास जिणंद पास, टाळ्यो भव फेरो;
पृथ्वी मात उरे ज्यो, ते नाथ हमेरो. ॥१॥
प्रतिष्ठित सुत सुंदरुं, वाराणसी राय;
वीश लाख पूरव तणुं, प्रभुजीनुं आय. ॥२॥
धनुष बसें जिन देहडीए, स्वस्तिक लंछन सार;
पद '**पद्मे**' जस राजतो, तार तार भव तार. ॥३॥

स्तवन

(१) क्युं न हो सुनाई स्वामी...

(राग : तुं प्रभु माहरो.../ जिंदगी की ना टूटे.../
लगनी लागी छे अमने...)

क्युं न हो सुनाई स्वामी, ऐसा गुन्हा क्या किया?
औरों की सुनाई जावे, मेरी बारी नहीं आवे;
तुम बिन कौन मेरा, मुझे क्युं भूला दिया? क्युं०॥१॥
भक्तजनों को तार दिया, तारने का काम किया;
बिन भक्तिवाला मों पे, पक्षपात कयुं किया? क्युं०॥२॥
राय रंक एक जानो, मेरा तेरा नहीं मानो;
तरणतारण ऐसा, बिरुद क्युं धार लिया? क्युं०॥३॥
गुन्हा मेरा बक्ष दीजे, मों पे अति रहेम कीजे;
पक्का ही भरोसा तेरा, दिलों में जमा लिया क्युं०॥४॥

तुं ही एक अंतरयामी, सुणो श्री सुपार्श्व स्वामी;
अब तो आशा पूरो मेरी, कहना था सो कह दिया. क्युं०॥५॥
शहेर अंबाले भेटी, प्रभुजी का मुख देखी;
मनुष्य जनम का ल्हावा, लेना था सो ले लिया, क्युं०॥६॥
उन्नीसो छासठ छबीला, दीपमाला दिन रंगीला;
कहे '**वीरविजय**' प्रभु, भक्ति में जमा लिया. क्युं०॥७॥



(२) निरखी निरखी तुज बिंबने...

(राग : थोडा सा प्यार हुआ है.../वामानंदन वंदना.../
ऐ मेरे वतन के.../होंशवालों को.../वैष्णवजन...)

निरखी निरखी तुज बिंबने, हरखित हुयें मुज मन;
निर्विकारता नयनमां रे, मुखडुं सदा सुप्रसन्न,
श्रीसुपास सोहामणा. ॥१॥
भाव अवस्था सांभरे रे, प्रतिहारजनी शोभ;
कोडी गमे देवा सेवा रे, करतां मूकी लोभ. ॥२॥
लोकालोकना सवि भावो रे, प्रतिभासे प्रत्यक्ष;
तोहे न राचे नवि रुषे रे, नवि अविरतिनो पक्ष. ॥३॥
हास्य रति अरति नहीं रे, नहीं भय शोक दुर्गंछ;
नहीं कंदर्प कदर्थना रे, नहीं अंतरायनो संच. ॥४॥
मोह मिथ्यात्व निद्रा गई रे, नाठा दोष अढार;
चोत्रीस अतिशय राजतो रे, मूलातिशय चार. ॥५॥
पांत्रीस वाणी गुणे करी रे, देता भवि उपदेश;
ईम तुज बिंबे ताहरा रे, भेदनो नहीं लवलेश. ॥६॥
रूपथी प्रभु गुण सांभरे रे, ध्यान रूपस्थ विचार;
'**मानविजय**' वाचक वदे रे, जिन प्रतिमा जयकार. ॥७॥

(3) मुज मन भमरो...

(राग : मन रोवे एनुं दिल रोवे एनुं...)

मुज मन भमरो प्रभु गुण फूलडे, रमण करे दिनरात;
सुणजो स्वामी सुपार्श्व सोहामणा रे, करजोडी कहुं वात. मुज०॥१॥
मनडुं चाहे छे प्रभु मळवा भणी रे, पण दीसे छे अंतराय;
जीव प्रमादी कर्म तणे वश रे, तो किम मळवुं थाय. मुज०॥२॥
लाख चोराशी जीवयोनिमां रे, भव अटवी गति चार;
काळ अनादि अनंत भमतां थका रे, किमही न आवे पार. मुज०॥३॥
मार्ग बतावो साहेब माहरा रे, जिम आवुं तुम पास;
लाज वधारो सेवक तणी रे, द्यो दरिसण महाराज. मुज०॥४॥
मूरति ताहरी रूपे रुडी रे, अनुभव पद दातार;
नित्य **लाभ** प्रभुशुं प्रेमे विनवे रे, तुमथी बहु सुखसार. मुज०॥५॥

(४) श्री सुपास आनंदमें...

(राग : मिले मन भीतर.../दिल है छोटासा.../
और इस दिल में.../पहेले भवे.../वैष्णवजन...)

श्री सुपास आनंदमें, गुण अनंतनो कंद हो; जिनजी
ज्ञानानंदे पूरणो, पवित्र चारित्रानंद हो. जिनजी ॥१॥
संरक्षण विण नाथ छो, द्रव्य विना धनवंत हो; जिनजी
कर्तापद किरिया विना, संत अजेय अनंत हो. जिनजी ॥२॥
अगम अगोचर अमर तुं, अन्वय ऋद्धि समूह हो; जिनजी
वर्ण गंध रस फरस विणु, निज भोक्ता गुण व्यूह हो.जिनजी ॥३॥
अक्षयदान अचिंतना, लाभ अयत्ने भोग हो; जिनजी
वीर्य शक्ति अप्रयासता, शुद्ध स्वगुण उपभोग हो. जिनजी ॥४॥
एकांतिक आत्यंतिको, सहज अकृत स्वाधीन हो; जिनजी
निरूपचरित निर्द्वंद्व सुख, अन्य अहेतुक पीन हो. जिनजी ॥५॥

एक प्रदेशे ताहरे, अव्याबाध समाय हो; जिनजी
तसु पर्याय अविभागता, सर्वाकाश न माय हो.जिनजी ॥६॥
इम अनंत गुणनो धणी, गुणगणनो आनंद हो; जिनजी
भोग रमण आस्वाद युत, प्रभु! तुं परमानंद हो. जिनजी ॥७॥
अव्याबाध रुचि थई, साधे अव्याबाध हो; जिनजी
'**देवचंद्र**' पद ते लहे, परमानंद समाध हो. ॥८॥

(५) श्री सुपास जिन वंदीए...

(राग : एक पंखी आवीने.../ भरतनी पाटे.../
वैष्णवजन.../ए मेरे वतन...)

श्री सुपास जिन वंदीए, सुखसंपत्तिनो हेतु ललना;
शांतसुधारस जलनिधि, भवसागरमां सेतु ललना. श्री०॥१॥
सात महाभय टाळतो, सप्तम जिनवर देव ललना;
सावधान मनसा करी, धारो जिनपद सेव ललना. श्री०॥२॥
शिव शंकर जगदीश्वरुं, चिदानंद भगवान ललना;
जिन अरिहा तीर्थंकरुं, ज्योति स्वरूप असमान ललना. श्री०॥३॥
अलख निरंजन वच्छलु, सकलजंतु विसराम ललना;
अभयदान दाता सदा, पूरण आतमराम ललना. श्री०॥४॥
वीतराग मद कल्पना, रति अरति भय शोग ललना;
निद्रा तंद्रा दुर्दशा, रहित अबाधित योग ललना. श्री०॥५॥
परमपुरुष परमातमा, परमेश्वर परधान ललना;
परम पदारथ परमेष्ठी, परमदेव परमान ललना. श्री०॥६॥
विधि विरंचि विश्वंभरु, ऋषिकेश जगनाथ ललना;
अघहर अघमोचन धणी, मुक्त परमपद साथ ललना. श्री०॥७॥
ईम अनेक अभिधा धरे, अनुभवगम्य विचार ललना;
जेह जाणे तेहने करे, '**आनंदघन**' अवतार ललना. श्री०॥८॥

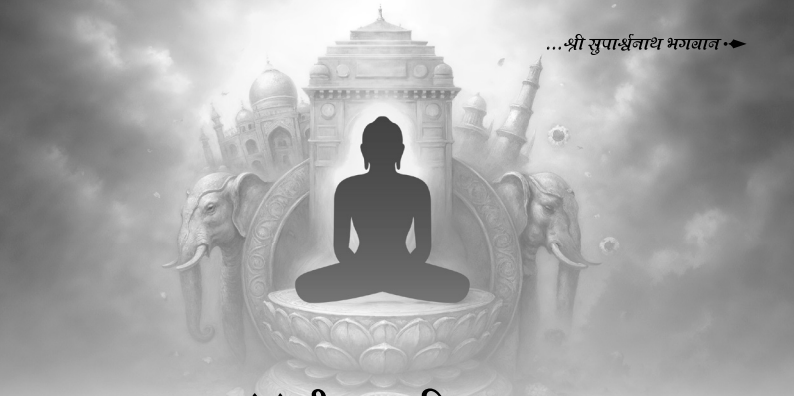

(६) श्री सुपास जिनराज...

(राग : विरतिधरनो वेष.../
निशदिन तुजने हुं.../ए मेरे वतन...)

श्रीसुपास जिनराज, तुं त्रिभुवन शिरताज;
आज हो! छाजे रे ठकुराई, प्रभु तुज पद तणीजी. ॥१॥
दिव्यध्वनि सुर फूल चामर छत्र अमूल;
आज हो! राजे रे भामंडल, गाजे दुंदुभिजी. ॥२॥
अतिशय सहजना चार, कर्म खप्याथी अग्यार;
आज हो! कीधा रे ओगणीसे, सुरगण भासुरेजी. ॥३॥
वाणी गुण पांत्रीश, प्रतिहारज जगदीश;
आज हो! राजे रे दीवाजे, छाजे आठशुंजी. ॥४॥
सिंहासन अशोक, बेठा मोहे लोक;
आज हो! स्वामी रे शिवगामी, वाचक '**जश**' थुण्योजी. ॥५॥

थोय

सुपास जिन वाणी, सांभळे जेह प्राणी,
हृदये पहोंचाणी, ते तर्या भव्य प्राणी;
पांत्रीश गुण खाणी, सूत्रमां जे गूंथाणी,
षट् द्रव्यशुं जाणी, कर्म पीले ज्युं घाणी.

श्री चंद्रप्रभस्वामी भगवान

चैत्यवंदन

(१) लक्ष्मणा माता जनमीयो...

लक्ष्मणा माता जनमीयो, महसेन जस ताय;
उडुपति लंछन दीपतो, चंद्रपुरीनो राय. ॥१॥
दश लाख पूरव आऊखुं, दोढसो धनुषनी देह;
सुरनरपति सेवा करे, धरता अति ससनेह. ॥२॥
चंद्रप्रभ जिन आठमा ए, उत्तम पद दातार;
'**पद्मविजय**' कहे प्रणमीये, मुज प्रभु पार उतार. ॥३॥

स्तवन

(१) चंद्रप्रभ चित्तमां वस्या...

(राग : ए मेरे वतन के.../
एक पंखी आवीने.../प्रेम भरेलुं...)

चंद्रप्रभ चित्तमां वस्या, जीवन प्राण आधार रे;
तुम विण को दीसे नहीं,भविजनने हितकार रे. ॥१॥
निशदिन सूतां जागतां, चित्त धरुं ताहरुं ध्यान रे;
रातदिवस तलसे बहु, रसना तुम गुणगान रे. ॥२॥
माहरे तुम सम को नहि, मुज सरीखा तुज लाख रे;
तोहि निज सेवक गणी, कांईक करुणा दाख रे. ॥३॥
अंतरजामी तुं खरो, न गमे बीजुं नाम रे;
सेवक अवसरे आवीयो, राखो एहनी लाज रे. ॥४॥
करुणावंत कृपा करीने, आपो निजपद वास रे;
'**उदयरत्न**' एम उच्चरे, दीजे तत्त्व सुवास रे. ॥५॥

(२) चंद्रप्रभनी चाकरी नित्य...



(राग : वीर कुंवरनी वातलडी.../
आंखडी मारी प्रभु.../विमलाचल नितु...)

चंद्रप्रभनी चाकरी नित्य करीए रे, नित्य करीए रे नित्य करीए;
करीए तो भवजल तरीए, हां रे चढते परिणाम. चं०॥१॥
लक्ष्मणा माता जनमिया जिनराय, जिन ऊडुपति लंछन पाय;
ए तो चंद्रपुरीना राया, हां रे नित्य लीजे नाम. चं०॥२॥
महसेन पिता जेहना प्रभु बळीया, मने जिनजी एकांते मळीया;
मारा मनना मनोरथ फळीया, हां रे दीठे दुःख जाय. चं०॥३॥
दोढसो धनुषनी देहडी जिन दीपे, तेजे करी दिनकर झीपे;
सुर कोडी ऊभा समीपे, हां रे नित्य करतां सेव. चं०॥४॥
दश लाख पूर्वनुं आउखुं जिन पाळी, निज आतमने अजवाळी;
दुष्ट कर्मना मर्मने टाळी, हां रे लह्युं केवलज्ञान. चं०॥५॥
सम्मेतशिखर गिरि आवीया प्रभु रंगे, मुनि कोटि सहस प्रसंगे;
पाळी अणसण ऊलट अंगे, हां रे पाम्या परमानंद. चं०॥६॥
श्री जिन उत्तम रूपने जे ध्यावे, ते कीर्ति कमला पावे;
'**मोहनविजय**' गुण गावे, हां रे आपो अविचल राज. चं०॥७॥

(3) चंद्रप्रभ जिन साहिबा रे...



(राग : एक दिन यु आप हमको.../चार दिवसना चांदरडा.../
जिम जिम ए गिरि भेटिये.../विमलाचल नितु वंदीए...)

चंद्रप्रभ जिन! साहिबा रे, तुमे छो चतुर सुजाण! मनना मान्या;
सेवा जाणो दासनी रे, देशो फल निर्वाण. मनना मान्या
आवो आवो रे चतुर! सुख भोगी, कीजे वात एकांत अभोगी;
गुण गोठे प्रगटे प्रेम मनना मान्या. ॥१॥

ओछुं अधिकुं पण कहे रे, आसंगायत जेह; मनना०
आपे फल जे अणकह्या रे, गिरुओ साहिब तेह. मनना० ॥२॥
दीन कह्या विण दानथी रे, दातानी वाधे माम; मनना०
जल दीयें चातक खीजवी रे, मेघ हुओ तेणे श्याम. मनना० ॥३॥
पिउं पिउं करी तुमने जपुं रे, हुं चातक तुमे मेह! मनना०
एक लहेरमां दुःख हरो रे, वाधे बमणो नेह. मनना० ॥४॥
मोडुं वहेलुं आपवुं रे, तो शी ढील कराय?; मनना०
वाचक '**जश**' कहे जग धणी रे, तुम तुठे सुख थाय. मनना० ॥५॥

(४) देखण दे रे सखी! मुने देखण दे...

(राग : प्रेमना बंधन जो जे.../सामुं जुओने मारी.../केदार.../
आदिनाथ दादा मारा हैये.../बेना रे.../जिम जिम ए गिरि...)

देखण दे रे सखी! मुने देखण दे, चंद्रप्रभ मुखचंद; सखी०
उपशम रसनो कंद सखी०, गत कलिमल दुःखदंद. सखी० ॥१॥
सूक्ष्म निगोदे न देखीयो सखी०, बादर अतिही विशेष; सखी०
पुढवी आउ न लेखीयो सखी०, तेउ-वाउ न लेश. सखी० ॥२॥
वनस्पति अति घण दीहा सखी०, दीठो नहि दीदार; सखी०
बिति चउरदि जळलिहा सखी०, गतसन्नी पण धार.सखी० ॥३॥
सुरतिरि निरय निवासमां सखी०,मनुज अनारज साथ; सखी०
अपज्जत्ता प्रतिभासमां सखी०, चतुर न चढिओ हाथ. सखी० ॥४॥
इम अनेक थल जाणीऐ सखी०,दरिसण विण जिनदेव; सखी०
आगमथी मति आणीये सखी०, कीजे निर्मल सेव. सखी० ॥५॥
निर्मल साधु भगति लही सखी०, योग अवंचक होय; सखी०,
किरिया अवंचक तिम सही सखी०, फळ अवंचक जोय. सखी० ॥६॥
प्रेरक अवसर जिनवरु सखी०,मोहनीय क्षय थाय; सखी०
कामित पूरण सुरतरु सखी०, '**आनंदघन**' प्रभु पाय. सखी० ॥७॥

(५) मुज घट आवजो रे नाथ...

(राग : मनमां आवजो रे नाथ.../
आशावरी.../प्रभुजी अजवाळां...)

मुज घट आवजो रे नाथ,
करुणा कटाक्षे जोईने, दासने करजो सनाथ. मुज०॥१॥
चंद्रप्रभ जिन राजिया, तुज वास विषमो दूर;
मळवा मन अळजो घणो, किम आवीए हजूर. मुज०॥२॥
विरह वेदना आकरी, लखी पाठवुं कुण साथ;
पंथी तो आवे नहि, ते मारगे जगनाथ. मुज०॥३॥
तुं तो निरागी छे प्रभु!, पण वालहो मुज जोर;
एक पखी ए प्रीतडी, जिम चंद्रमा ने चकोर. मुज०॥४॥
तुज साथे जे प्रीतडी रे, अतिविषम खांडाधार;
पण तेहना आदर थकी, तस फळ तणो नहि पार. मुज०॥५॥
अमे भक्तियोगे आणशुं, मनमंदिरे तुम आज;
वाचक विमलना '**राम**'शुं, घणुं रीझशो महाराज. मुज०॥६॥

(६) श्री चंद्रप्रभ जिनपद सेवा...

(राग : रात दिवस उपकारो तारा.../वैष्णवजन...
मारा हृदय सिंहासन पर.../रुडा राजमहेलने त्यागी...)

श्री चंद्रप्रभ जिनपद सेवा, हेवाए जे हळियाजी;
आतम गुण अनुभवथी मलिया, ते भवभयथी टलियाजी. ॥१॥
द्रव्य सेव वंदन नमनादिक, अर्चन वली गुणग्रामोजी;
भाव अभेद थवानी इहा, परभावे निष्कामोजी. ॥२॥
भाव सेव अपवादे नैगम, प्रभु गुणने संकल्पेजी;
संग्रह सत्ता तुल्यारोपे, भेदाभेद विकल्पेजी. ॥३॥
व्यवहारे बहुमान ज्ञान निज, चरणे जिन गुण रमणाजी;
प्रभु गुण आलंबी परिणामे, ऋजुपद ध्यान स्मरणाजी. ॥४॥

शब्दे शुकल ध्यानारोहण, समभिरुढ गुण दशमेजी;
बीअ शुकल अविकल्प एकत्वे, एवंभूत ते अममेजी. ॥५॥
उत्सर्गे समकित गुण प्रगट्ये, नैगम प्रभुता अंशेजी;
संग्रह आतम सत्तालंबी, मुनि पद भाव प्रशंसेजी. ॥६॥
ऋजुसूत्रे जे श्रेणी पदस्थे, आत्मशक्ति प्रकाशेजी;
यथाख्यात पद शब्द स्वरूपे, शुद्ध धर्म उल्लासेजी. ॥७॥
भाव सयोगी अयोगी शैलेशे, अंतिम दुग नय जाणोजी;
साधनताए निज गुण व्यक्ति, तेह सेवना वखाणोजी. ॥८॥
कारण भाव तेह अपवादे, कार्यरूप उत्सर्गेजी;
आत्मभाव ते भाव द्रव्यपद, बाह्य प्रवृत्ति निसर्गेजी. ॥९॥
कारणभाव परंपर सेवन, प्रगटे कारज भावोजी;
कार्य सिद्धे कारणता व्यय, शुचि पारिणामिक भावोजी. ॥१०॥
परम गुणी सेवन तन्मयता, निश्चय ध्याने ध्यावेजी;
शुद्धातम अनुभवे आस्वादी, '**देवचंद्र**' पद पावेजी. ॥११॥

(७) श्री शंकर चंद्रप्रभ रे लो...

(राग : विरतिधरनो वेष.../मारी शेरीएथी.../
वैष्णवजन.../तारा विना श्याम...)

श्री शंकर चंद्रप्रभ रे लो,
तुं ध्याता जगनो विभु रे लो;
तिणे हुं ओलगे आवीओ रे लो,
तुमे पण मुज मन भावीओ रे लो. ॥१॥
दीधी चरणनी चाकरी रे लो,
हुं सेवुं हरखे करी रे लो;
साहिब सामुं निहाळजो रे लो,
भवसमुद्रथी तारजो रे लो. ॥२॥

अगणित गुण गणवा तणी रे लो,
मुज मन होंश धरे घणी रे लो;
जिम नभने पाम्या पंखी रे लो,
दाखे बाळक करथी लखी रे लो. ॥३॥
जो जिन तुं छे पांसरो रे लो,
करम तणो श्यो आशरो रे लो;
जो तुमे राखशो गोदमां रे लो,
तो किम जाशुं निगोदमां रे लो. ॥४॥
जब ताहरी करुणा थई रे लो,
कुमति कुगति दूरे गई रे लो;
अध्यातम रवि उगियो रे लो,
पाप तिमिर कीहां पुगियो रे लो. ॥५॥
तुज मूरतिनी माया जीसी रे लो,
उर्वशी थई उरे वसी रे लो;
रखे प्रभु टाळो एक घडी रे लो,
नजर वादळनी छांहडी रे लो. ॥६॥
ताहरी भक्ति भली बनी रे लो,
जिम औषधी संजीवनी रे लो;
तव मन आनंद उपन्यो रे लो,
कहे **'मोहन'** कवि रूपनो रे लो. ॥७॥

थोय

सेवे सुर वर वृंदा, जास चरणारविंदा,
अठ्ठम जिन चंदा, चंदवर्णे सोहंदा;
महसेन नृप नंदा, कापतां दुःख दंदा,
लंछन मिष चंदा, पाय मानुं सेविंदा.

श्री सुविधिनाथ भगवान

चैत्यवंदन

(१) सुविधिनाथ नवमा नमुं...

सुविधिनाथ नवमा नमुं, सुग्रीव जस तात;
मगर लंछन चरणे नमुं, रामा रुडी मात. ॥१॥
आयु बे लाख पूरव तणुं, शत धनुषनी काय;
काकंदी नयरी धणी, प्रणमुं प्रभु पाय. ॥२॥
उत्तमविधि जेहथी लह्यो ए, तेणे सुविधि जिननाम;
नमतां तस पद '**पद्मने**', लहीये शाश्वत धाम. ॥३॥

स्तवन

(१) ताहरी अजबशी योगनी मुद्रा रे...

(राग : तारी मूरतिए मन../सुणजो साजन संत../वैष्णवजन..)

ताहरी अजबशी योगनी मुद्रा रे, लागे मने मीठी रे;
ए तो टाळे मोहनी निद्रा रे, प्रत्यक्ष दीठी रे...
लोकोत्तरशी जोगनी मुद्रा,
व्हाला माहरा निरूपम आसन सोहे रे;
सरस रचित शुक्लध्याननी धारे,
सुरनरना मन मोहे रे. लागे०॥१॥
त्रिगडे रतन सिंहासन बेसी,
व्हाला माहरा चिहुं दिशे चामर ढलावे रे;
अरिहंत पद प्रभुतानो भोगी,
तो पण जोगी कहावे रे. लागे०॥२॥

अमृत झरणी मीठी तुज वाणी,
व्हाला माहरा जेम अषाढो गाजे रे;
कान मारग थई हियडे पेसी,
संदेह मनना भांजे रे. लागे०॥३॥
कोडी गमे ऊभा दरबारे,
व्हाला माहरा जय मंगल सुर बोले रे;
त्रण भुवननी रिद्धि तुज आगे,
दीसे ईम तृण तोले रे. लागे०॥४॥
भेद लहुं नहि जोग जुगतिनो,
व्हाला माहरा सुविधि जिणंद! बतावो रे;
प्रेमशुं '**कान्ति**' कहे करी करुणा,
मुज मन मंदिर आवो रे. लागे०॥५॥

(२) दीठो सुविधि जिणंद...

(राग : मारा व्हाला प्रभु.../अपूर्व अवसर...)

दीठो सुविधि जिणंद, समाधि रसे भर्यो, हो लाल
भास्यो आत्मस्वरूप, अनादिनो विसर्यो; हो लाल
सकळ विभाव उपाधि, थकी मन ओसर्यो, हो लाल
सत्ता साधन मार्ग भणी ए संचर्यो. हो लाल दीठो०॥१॥
तुम प्रभु जाणंग रीति, सर्व जग देखतां, हो लाल
निज सत्ताए शुद्ध, सहुने लेखतां; हो लाल
पर परिणति अद्वेषपणे, उवेखतां, हो लाल
भोग्यपणे निज शक्ति, अनंत गवेषता. हो लाल दीठो०॥२॥
दानादिक निज भाव, हता जे परवशा, हो लाल
ते निज सन्मुख भाव, ग्रहे लही तुज दशा; हो लाल
प्रभुनो अद्भूत योग, स्वरूप तणी रसा, हो लाल
भासे वासे तास, जास गुण तुज जिसा. हो लाल दीठो०॥३॥

मोहादिकनी घूमी, अनादिनी ऊतरे, हो लाल
अमल अखंड अलिप्त, स्वभाव ज सांभरे; हो लाल
तत्त्वरमण शुचि ध्यान, भणी जे आदरे, हो लाल
ते समतारस धाम, स्वामी मुद्रा वरे. हो लाल दीठो०॥४॥
प्रभु! छो त्रिभुवन नाथ, दास हुं ताहरो, हो लाल
करुणानिधि अभिलाष, अछे मुज ए खरो; हो लाल
आतम वस्तु स्वभाव, सदा मुज सांभरो, हो लाल
भासन वासन एह, चरण ध्याने धरो. हो लाल दीठो०॥५॥
प्रभु मुद्राने योग, प्रभु! प्रभुता लखे, हो लाल
द्रव्य तणे साधर्म्य, स्वसंपत्ति ओळखे; हो लाल
ओळखता बहुमान, सहित रुचि पण वधे, हो लाल
रुचि अनुयायी वीर्य, चरण धारा सधे. हो लाल दीठो०॥६॥
क्षायोपशमिक गुण सर्व, थया तुज गुण रसी, हो लाल
सत्ता साधन शक्ति, व्यक्तता उल्लसी; हो लाल
हवे संपूरण सिद्धि तणी शी वार छे, हो लाल
'**देवचंद्र**' जिनराज, जगत आधार छे. हो लाल दीठो०॥७॥

(3) मैं कीनो नहीं...

(राग : पायोजी मेंने राम रतन.../
दरिसन द्यो घनश्याम.../ जिन! तेरे...)

मैं कीनो नहीं तुम बिन और शुं राग... (२)
दिन दिन वान चढत गुण तेरो, ज्युं कंचन पर भाग;
औरन में है कषाय की कालिमा, सो क्युं सेवा लाग. मैं०॥१॥
राजहंस तुं मान सरोवर, और अशुचि रुचि काग;
विषय भुजंगम गरुड ते कहीऐ, और विषय विष नाग. मैं०॥२॥

और देव जल छिल्लर सरीखे, तुं तो समुद्र अथाग;
तुं सुरतरु जग वांछित पूरण, और तो सूके साग. मैं०॥३॥
तुं पुरुषोत्तम, तुं हीं निरंजन, तुं शंकर वडभाग;
तुं ब्रह्मा, तुं बुद्ध महाबल, तुं हीं ज देव वीतराग. मैं०॥४॥
सुविधिनाथ तुम गुण फुलन को, मेरो दिल है बाग;
'**जस**' कहे भ्रमर रसिक होई तामें, लीजे भक्ति पराग. मैं०॥५॥

(४) लघु पण हुं तुम मन नवि मावुं रे...

(राग : हमें रास्तों की.../प्रभु तमारा पगले.../
तुम को देखा तो.../हमें और जीने की.../श्री श्रेयांस जिन.../वैष्णवजन...)

लघु पण हुं तुम मन नवि मावुं रे,
जगगुरु! तुमने दिलमां लावुं रे;
कुणने दीजे ए शाबाशी रे,
कहो श्री सुविधि जिणंद! विमासी रे. ॥१॥
मुज मन अणु मांहे भगति छे झाझी रे,
तेह दरीनो तुं छे माझी रे;
योगी पण जे वात न जाणे रे,
ए अचरिज कुणथी हुओ टाणे रे. ॥२॥
अथवा थिरमांहे अथिर न मावे रे,
मोटो गज दर्पणमां आवे रे;
जेहने तेजे बुद्धि प्रकाशी रे,
तेहने दीजे ए शाबाशी रे, ॥३॥
ऊर्ध्व मूल तरुवर अध शाखा रे,
छंद पुराणे एहवी छे भाषा रे;
अचरिजवाळे अचरिज कीधुं रे,
भगते सेवक कारज सीधुं रे. ॥४॥

लाड करी जे बाळक बोले रे,
मातपिता मन अमीयने तोले रे;
श्री नयविजय विबुधनो शीशो रे,
'**जश**' कहे एम जाणो जगीशो रे. ॥५॥



(५) सुणो सुविधि जिणंद सोभागी...

(राग : इतनी शक्ति हमें.../
ये मेरे वतन के.../सुणो शांति जिणंद...)

सुणो सुविधि जिणंद सोभागी, मुज तुज चरणे लय लागी;
हुं तो भवदव दाहे दाझ्यो, तें तो सुख संपूर्ण साध्यो. ॥१॥
हुं तो माया मत्सर भरियो, तुं तो आर्जव गुणनो दरियो;
हुं तो क्रोध कषाये बळीयो, तुं तो समता रसमां भळीयो. ॥२॥
हुं तो लोभ मांहे मुंझाणो, तुं तो संतोष गुणनो राणो;
हुं तो जाति मदादिके माच्यो, तुं तो मार्दव गुणमां राच्यो. ॥३॥
हुं तो विषय सुखनो संगी, तुं तो विषयातीत निःसंगी;
हुं तो चिहुं गतिमांही रुल्यो, तुं तो शिव सुंदरीने मलियो. ॥४॥
प्रभु तुं तो निःसंगी निःक्लेशी, हुं परिणामे संक्लेषी;
तुं तो ज्ञानानंदे पूरो, हुं तो कर्मबंधन मांहे शूरो. ॥५॥
तुं तो वीतराग प्रसिद्ध, मने राग द्वेषे वश कीध;
तुं तो केवलज्ञानी अनुप, में तो आवर्युं आप स्वरूप. ॥६॥
तुं तो सत्यवादमां लीन, हुं तो अवगुण ग्राही अबीह;
तुं तो सर्ववेदी स्याद्वादी, हुं तो मोही मिथ्यावादी. ॥७॥
तुं तो देवनो देव दयाळ, हुं तो तुज सेवक एक बाळ;
मुज सरीखा सेवक झाझा, तुं तो मारे एक जिनराजा. ॥८॥

मुज उपर करो महेरबानी, तुम जाणो सेवक वाणी;
जो भेद रहित मुजने नीरखो, तो थाय सेवक तुम सरीखो. ॥९॥
हीरे हीरो वेधाय, एम लोक कहेवत कहेवाय;
गुणवंत थई गुणी ध्यावे, तो ऋद्धि अनंती पावे. ॥१०॥
तुम सहज स्वभाव विलासी, निज शुद्ध स्वरूप प्रकाशी;
ध्याता ध्येय ध्यानमां ध्यावे, तो '**जिन**' उत्तम पद पावे. ॥११॥

(६) सुविधि जिणंद मुज...

(राग : मले ताहरुं शासन जनमो.../बहोत प्यार करते हैं...)

सुविधि जिणंद मुज दरिसण द्योने, दिलभर दिलथी मारा सामुं जुओने;
हसी तारा चित्तनी वात मने कहोने, प्रीतनी रीतमां शुं तें वहोने. ॥१॥
अंतर चित्तनी वारता रे, प्रभु कहुं ते चित्तमां धरोने;
प्रीत प्रतीत जिम ऊपजे रे, तिम अविहड प्रीत करोने. ॥२॥
सुंदर तुम मुख मटकडे रे, प्रभु! लोभाव्या तें अमने;
मुज मन मळवा अति घणुं रे, चाहे क्षण मांही तुजने. ॥३॥
ललचावशो दिन केटला रे, ईम मुजने दिलासो दईने;
हा ना मुखथी भाखीए रे, बेसी शुं रह्या मौन लईने. ॥४॥
हसित वदने बोलावीने रे, आज मुजने राजी करोने;
वांछित देई अमने रे, तुमे जगमां सुजश वरोने. ॥५॥
रोग शोग दुःख दोहग रे, पाप संताप ने ताप हरीने;
पंडित प्रेमना '**भाण**'ने रे, तुमे प्रसन्न होजो हेज धरीने. ॥६॥



(७) सुविधि जिणेसर पाय नमीने...

(राग : नेमि निरंजन नाथ हमारा.../ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम.../
मैत्री भावनुं.../वैष्णवजन...)

सुविधि जिणेसर पाय नमीने, शुभ करणी ईम कीजे रे;
अति घणो ऊलट अंग धरीने, प्रह ऊठी पूजी जे रे. सु०॥१॥
द्रव्य भाव शुचि भाव धरीने, हरखे देहरे जईए रे;
दह तिग पण अहिगम साचवतां, एकमना धुरि थईऐ रे. सु०॥२॥
कुसुम अक्षत वर वास सुगंधी, धूप दीप मन साखी रे;
अंगपूजा पण भेद सुणी ईम, गुरु मुख आगम भाखी रे. सु०॥३॥
एहनुं फळ दोय भेद सुणीजे, अनंतर ने परंपर रे;
आणा पालन चित्तप्रसन्नी, मुगति सुगति सुरमंदिर रे. सु०॥४॥
फूल अक्षत वर धूप पईवो, गंध नैवेद्य फळ जळ भरी रे;
अंग अग्र पूजा मळी अडविध, भावे भविक शुभगति वरी रे. सु०॥५॥
सत्तर भेद एकवीस प्रकारे, अष्टोत्तर शत भेदे रे;
भावपूजा बहुविध निरधारी, दोहग दुर्गति छेदे रे. सु०॥६॥
तुरीय भेद पडिवत्ति पूजा, उपशम खीण सयोगी रे;
चउहा पूजा ईम उत्तराध्ययने, भाखी केवळ भोगी रे. सु०॥७॥
ईम पूजा बहु भेद सुणीने, सुखदायक शुभ करणी रे;
भविक जीव करशे ते लहेशे, '**आनंदघन**' पद धरणी रे. सु०॥८॥

थोय

नरदेव भाव देवो, जेहनी सारे सेवो,
जेह देवाधिदेवो, सार जगमां ज्युं मेवो;
जोतां जग एहवो, देव दीठो न तेहवो,
'सुविधि' जिन जेहवो, मोक्ष दे तत्तखेवो.

श्री शीतलनाथ भगवान

चैत्यवंदन

(१) नंदा द्रढरथ नंदनो...

नंदा द्रढरथ नंदनो, शीतल शीतलनाथ;
राजा भद्दिलपुर तणो, चलवे शिव साथ. ॥१॥
लाख पूरवनुं आउखुं, नेवुं धनुष प्रमाण;
काया माया टाळीने, लह्यां पंचम नाण. ॥२॥
श्रीवत्स लंछन सुंदरुं ए, पाद '**पद्मे**' रहे जास;
ते जिननी सेवा थकी, लहीये लील विलास. ॥३॥

स्तवन

(१) तुज मुख सन्मुख निरखतां...

(राग : जेना रोम रोमथी.../रुडा राजमहेलने.../
प्रभु पार्श्वनुं मुखडुं.../वैष्णवजन...)

तुज मुख सन्मुख नीरखतां, मुज लोचन अमीय ठरंता;
जेहनी शीतलता व्यापे, किम रहेवाये कहो तापे. ॥१॥
तुज नाम सुण्युं जब काने, हईडुं आवे तव साने;
मूर्च्छायो माणस वाटे, जिम सज्ज हुये अमृत छांटे. ॥२॥
शुभ गंधने तरतम योगे, आकुलता हुई भोगे;
तुज अद्भुत देह सुवासे, तेह मिट गई रहत उदासे. ॥३॥
तुज गुण संस्तवने रसना, छांडे अन्य लयनी तृष्णा;
पूजाए तुज तनु फरसे, फरसन शीतल थई उल्लसे. ॥४॥
मननी चंचलता भागी, सवि छंडी थयो तुज रागी;
कवि '**मान**' कहे तुज संगे, शीतलता थई अंगो अंगे. ॥५॥

(२) मुज मनडामां तुं वस्यो रे...



(राग : तारे द्वारे आवीने.../क्या करते थे साथिया.../
एक पंखी आवी ने...)

मुज मनडामां तुं वस्यो रे, ज्युं कुसुममां वास;
अळगो न रहे एक घडी रे, सांभरे श्वासोश्वास.
तुजशुं रंग लाग्यो, रंग लाग्यो साते धात;
श्री जिनराज तुजशुं रंग लाग्यो त्रिभुवननाथ. तुज०॥१॥
शीतल स्वामी जे दिने रे, दीठो तुम देदार;
ते दिनथी मन माहरुं रे, लाग्युं ताहरी लार. तुज०॥२॥
मधुकर चाहे मालती रे, चाहे चन्द्र चकोर;
तिम मुजने प्रभु ताहरी रे, लागी लगन अति जोर. तुज०॥३॥
भर्या सरोवर ऊमटे रे, नदीयां नीर न माय;
तो पण याचे मेघकुं रे, जिम चातक जगमांय. तुज०॥४॥
ईम जगमां प्रभु तुम विना रे, मुज मन नावे रे कोय;
'**उदय**' वदे पद सेवना रे, दीजे सन्मुख जोय. तुज०॥५॥

(3) शीतल जिन मोहे प्यारा...



(राग : अजवाळा देखाडो.../अब मोहे ऐसी आय.../
मेरे नैना सावन.../जिन तेरे! चरण की.../श्वास तमारा नामे...)

शीतल जिन मोहे प्यारा, साहिबा! शीतल जिन मोहे प्यारा;
भुवन विरोचन पंकज लोचन, जिउ के जिउ हमारा. ॥१॥
ज्योतशुं ज्योत मिलत जब ध्यावत, होवत नहि तब न्यारा;
बांधी मूठी खूले भव माया, मिटे महाभ्रम भारा. ॥२॥
तुम न्यारे तब सबहि न्यारा, अंतर कुटुंब उदारा;
तुम ही नजीक नजीक है सबहि, ऋद्धि अनंत अपारा. ॥३॥
विषय लगन की अगन बुझावत, तुम गुण अनुभव धारा;
भई मगनता तुम गुण रस की, कुण कंचन? कुण दारा? ॥४॥

शीतलता गुण होड करत तुम, चंदन काहुं बिचारा?
नाम हि तुमचा ताप हरत है, वांकु घसत घसारा. ॥५॥
करहुं कष्ट जन बहुत हमारे, नाम तिहारो आधारा;
'**जश**' कहे जनम मरण भय भांगो, तुम नामे भवपारा. ॥६॥

(४) शीतल जिनपति प्रभुता प्रभुनी...

(राग : एक पंखी आवीने.../तारी प्रीतिनी.../
वैष्णवजन.../होंशवालों को.../मीयां मल्हार...)

शीतल जिनपति प्रभुता प्रभुनी, मुजथी कही न जायजी;
अनंतता निर्मलता पूर्णता, ज्ञान विना न जणायजी. ॥१॥
चरम जलधि जल मिने अंजलि, गति जीपे अति वायजी;
सर्व आकाश उल्लंघे चरणे, पण प्रभुता न गणायजी. ॥२॥
सर्व द्रव्य प्रदेश अनंता, तेहथी गुण पर्यायजी;
तास वर्गथी अनंतगुणुं प्रभु! केवलज्ञान कहायजी. ॥३॥
केवल दरिशण एम अनंतुं, ग्रहे सामान्य स्वभावजी;
स्व-पर अनंतथी चरण अनंतुं, समरण संवर भावजी. ॥४॥
द्रव्य क्षेत्रने काळ भाव गुण, राजनीति ए चारजी;
त्रास विना जड चेतन प्रभुनी, कोई न लोपे कारजी. ॥५॥
शुद्धाशय थिर प्रभु उपयोगे, जे समरे प्रभु नामजी;
अव्याबाध अनंतुं पामे, परम अमृत सुखधामजी. ॥६॥
आणा ईश्वरता निर्भयता, निर्वांछकता रूपजी;
भाव स्वाधीन ते अव्यय रीते, इम अनंतगुण भूपजी. ॥७॥
अव्याबाध सुख निर्मल ते तो, करण ज्ञाने न जणायजी;
तेह ज एहनो जाणंग भोक्ता, जे तुम सम गुणरायजी. ॥८॥
ईम अनंत दानादिक निज गुण, वचनातीत पंडूरजी;
वासन भासन भावे दुर्लभ, प्राप्ति तो अति दूरजी. ॥९॥

सकळ प्रत्यक्षपणे त्रिभुवन गुरु, जाणुं तुज गुणग्रामजी;
बीजुं कांई न मांगु स्वामी, एहि करो मुज कामजी. ॥१०॥
इम अनंत प्रभुता सद्दहतां, अर्चे जे प्रभु रूपजी;
'**देवचंद्र**' प्रभुता ते पामे, परमानंद स्वरूपजी. ॥११॥

(५) शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी...

(राग : सांभळजो ससनेही.../प्रभु तमारा पगले.../
चार दिवसना चांदरणां.../मीयां मल्हार.../वैष्णवजन...)

शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी, विविध भंगी मन मोहे रे;
करुणा कोमलता तीक्षणता, उदासीनता सोहे रे. शी०॥१॥
सर्वजंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्षण रे;
हान दान रहित परिणामी, उदासीनता वीक्षण रे. शी०॥२॥
परदुःख छेदन इच्छा करुणा, तीक्षण परदुःख रीझे रे;
उदासीनता उभय विलक्षण, एक ठामें केम सीझे रे. शी०॥३॥
अभयदान ते करुणा, मळक्षय तीक्षणता गुण भावे रे;
प्रेरक विण कृति उदासीनता, ईम विरोध मति नावे रे. शी०॥४॥
शक्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता, निर्ग्रन्थता संयोगे रे;
योगी भोगी वक्ता मौनी, अनुपयोगी उपयोगी रे. शी०॥५॥
इत्यादिक बहु भंग त्रिभंगी , चमत्कार चित्ते देती रे;
अचरिजकारी चित्र विचित्रता, '**आनंदघन**' पद लेती रे. शी०॥६॥

(६) श्री शीतलजिन भेटीए...

(राग : चरणो में तेरे.../तारी प्रीतिनी.../होंशवालो को.../
तारे द्वारे आवीने.../एक पंखी...)

श्री शीतलजिन! भेटीए, करी भगते चोखुं चित्त हो;
तेहशुं कहो छानुं किश्युं?, जेहने सोंप्यां तन मन वित्त हो. ॥१॥

दायक नामे छे घणा, पण तुं सायर ते कूप हो;
ते बहु खजूआ तगतगे, तुं दिनकर तेज स्वरूप हो. ॥२॥
मोटो जाणीने आदर्यो, दारिद्र भांजो जगतात हो;
तुं करुणावंत शिरोमणि, हुं करुणापात्र विख्यात हो. ॥३॥
अंतरजामी सवि लहो, अम मननी जे छे वात हो;
मां आगळ मोसाळना, शा वर्णववा अवदात हो. ॥४॥
जाणो तो ताणो किश्युं, सेवा फळ दीजे देव हो;
'**वाचकजश**' कहे ढीलनी, ए मुज मन नवि गमे टेव हो. ॥५॥

थोय

शीतल जिन स्वामी, पुण्यथी सेव पामी,
प्रभु आतमरामी, सर्व परभाव वामी;
जे शिवगति गामी, शाश्वतानंद धामी,
भवि शिवसुख कामी, प्रणमीए शिश नामी.

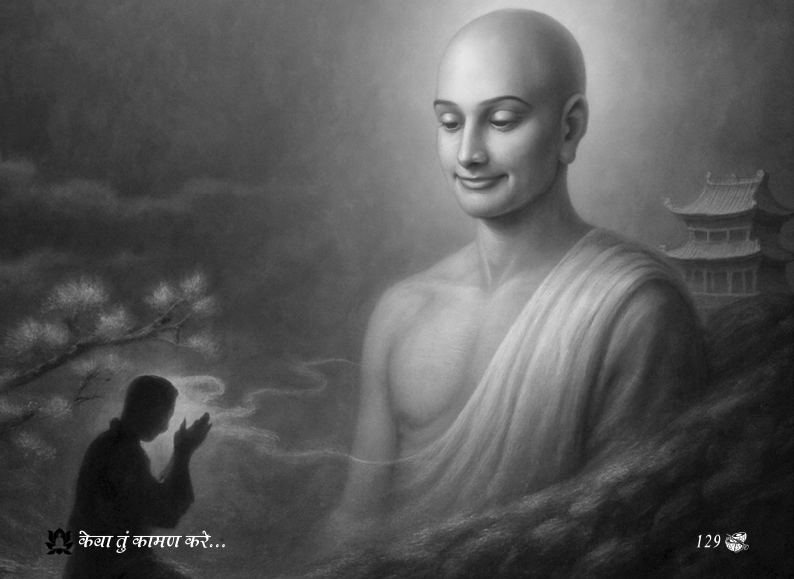

श्री श्रेयांसनाथ भगवान

चैत्यवंदन

(१) श्री श्रेयांस अग्यारमां...

श्री श्रेयांस अग्यारमां, विष्णु नृप ताय;
विष्णु माता जेहनी, एंशी धनुषनी काय. ॥१॥
वरस चोराशी लाखनुं, पाळ्युं जेणे आय;
खड्गी लंछन पद कजे, सिंहपुरीनो राय. ॥२॥
राज्य तजी दीक्षा वरीए, जिनवर उत्तम ज्ञान;
पाम्या तस पद '**पद्म**'ने, नमतां अविचल थान. ॥३॥

स्तवन



(१) तारक बिरुद सुणी करी...

(राग : युगोथी हुं.../ तुज करुणाधारमां.../
वैष्णवजन.../होंशवालों को...)

तारक बिरुद सुणी करी, हुं आवी ऊभो दरबार;
प्रभु! घणी ताण न कीजिये, मुज उतारो पार,
श्री श्रेयांस साहिबा... ॥१॥
काळादिक दूषण दाखतां, दातारपणुं किम थाय;
जो विण अवलंबन तारीए, जग सघळो तो जश गाय. ॥२॥
बाळकने समजाववा, कहेशो भोलामणी वात;
पण हठ कीधी मूकीश नहि, विण तार्ये त्रिभुवन तात. ॥३॥
जो मन तारणनुं छे, तो ढील तणुं शुं काम;
चातक निर्मूक दुषणे, थई मेघ घटा जगश्याम. ॥४॥

तुज दरिसणथी ताहरो, हुं कहेवायो जगमांय;
हवे मुज कुण लोपी शके, बळियानी झाली बांय. ॥५॥
विष्णुकुमार वालेसरु, प्रभु सिंहपुरीनो राय;
लाख चोरासी वरसनुं, प्रभु पाळ्युं पूरण आय. ॥६॥
धनुष एंशी तनुं शोभतुं, खड्गी लंछन जगदीश;
हरख धरीने विनवुं, '**सुमतिविजय**' कवि शीश. ॥७॥

(२) तुमे बहु मैत्री रे साहेबा...

(राग : उंचा उंचा../मिले मन भीतर.../
स्वामी तुमे कांई.../जननीनी जोड...)

तुमे बहु मैत्री रे साहेबा, माहरे तो मन एक;
तुम विण बीजो रे नवि गमे, ए मुज मोटी रे टेक.
श्री श्रेयांस जिन कृपा करो... ॥१॥
मन राखो तुमे सवि तणां, पण कीहां एक मळी जाओ;
ललचावो लख लोकोने, साथी सहज न थाओ.! श्री०॥२॥
राग भरे जन मन रहे, पण तिहुं काल विराग;
चित्त तुमारो रे समुद्रनो, कोई न पामे रे ताग. श्री०॥३॥
एहवा शुं चित्त मेळव्युं, केळव्युं पहेलां न कांई;
सेवक निपट अबूझ छे, निर्वहशो तुमे सांई. श्री०॥४॥
निरागीशुं रे किम मिले?, पण मळवानो एकांत;
'**वाचक यश**' कहे मुज मिल्यो, भगते कामण तंत. श्री०॥ ५ ॥

(3) मेरो मन! कितही न लागे...

(राग : ऋषभ जिणंद दयाल.../जिन! तेरे.../संत परम हितकारी...)

मेरो मन! कितही न लागे... श्रेयांस जिणंदा!
सुखकर श्री श्रेयांस जिणंद सो, प्रेम वध्यो गुणरागे. ॥१॥

समताभरी तुज सूरत नीकी, देखत ही हित जागे. ॥२॥
लगन लगी अटक्यो रहे अहनिशि, अलि ज्युं कमल परागे. ॥३॥
एती निवाजस करन में राजी, तुम गुण एक विभागे. ॥४॥
कहे '**अमृत**' ईतनो ही दीजे, कछुअ न चाहुं आगे. ॥५॥

(४) श्री श्रेयांस कृपा करो...

(राग : संभव जिनवर विनति.../चार दिवसना चांदरणा.../
यह है पावनभूमि.../ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम.../तुं मने भगवान...)

श्री श्रेयांस कृपा करो, तुं जगबांधव तात रे;
अलख निरंजन तुं ज्यो, तुं जग मांहे विख्यात रे; ॥१॥
धन्य धन्य नरभव तेहनो रे! जेने तुज दरिसण पायो रे;
मानुं चिंतामणि सुरतरु रे, तस घर चाली आयो रे. ॥२॥
धन्य ते गाम नगर पुरी, जस घरे तुं प्रभु आयो रे;
भक्ति करी पडिलाभियो, तेणे बहु सुकृत कमायो रे. ॥३॥
जिहां जिहां इम प्रभु तुं गयो, तिहां तिहां बहु पाप पलायो रे;
तुज मूरति निरखी भली, जेणे तुं दिलमां धार्यो रे. ॥४॥
हवे प्रभु! मुजने आपीए, तुज चरण निवासो रे;
रिद्धि अनंती आपीए, '**कीर्ति**' अनंती आवासो रे. ॥५॥

(५) श्री श्रेयांस जिन अंतरजामी...

(रागः प्रेम भरेलुं हैयुं लईने.../ एक पंखी.../छू लेने दो.../तेरे सूर.../
आंधळी मांनो.../प्रभु तमारा पगले-२.../गिरुआ रे.../ मैली चादर...)

श्री श्रेयांस जिन अंतरजामी, आतमरामी नामी रे;
अध्यातम मत पूरण पामी, सहज मुगति गति गामी रे. ॥१॥
सयल संसारी इन्द्रियरामी, मुनिगण आतमरामी रे;
मुख्यपणे जे आतमरामी, ते केवल निष्कामी रे. ॥२॥

निज स्वरूप जे किरिया साधे, तेह अध्यातम लहीये रे;
जे किरिया करी चउगति साधे, ते न अध्यातम कहीये रे. ॥३॥
नाम अध्यातम ठवण अध्यातम, द्रव्य अध्यातम छंडो रे;
भाव अध्यातम निज गुण साधे, तो तेहशुं रढ मंडो रे. ॥४॥
शब्द अध्यातम अर्थ सुणीने, निर्विकल्प आदरजो रे;
शब्द अध्यातम भजना जाणी, हान ग्रहण मति धरजो रे. ॥५॥
अध्यातम जे वस्तु विचारी, बीजा जाण लबासी रे;
वस्तुगते जे वस्तु प्रकाशे, '**आनंदघन**' मत वासी रे. ॥६॥

(६) श्री श्रेयांस जिन साहिबा...

(राग : युगोथी हुं पुकारुं छुं... /
विनंती कैसे.../जननीनी जोड...)

श्री श्रेयांस जिन साहिबा! अवधारो अरदास;
दास करी जो लेखवो, तो पूरो मन आश. ॥१॥
मोटा नाना आंतरु, लेखवे नहिं दातार;
सम-विषम स्थळ नवि गणे, वरसंतो जलधार. ॥२॥
नाना ने मोटा मील्या, सहि ते मोटा थाय;
वाहुलीया गंगा मील्या, गंग प्रवाह कहाय. ॥३॥
मोटा ने मोटा करो, ए तो जगतनी रीत;
नाना ने मोटा करो, तो तुम प्रेम प्रतीत. ॥४॥
गुण अवगुण नवि लेखवे, अंगीकृत जे अमंद;
कुटिल कलंकी जेम वह्यो, इश्वर शिशे चंद. ॥५॥
अवगुणीए पण ओलग्यो, गुणवंत तुं भगवंत;
निज सेवक जाणी करी, दीजीए सुख अनंत. ॥६॥
घणी शी विनंती कीजीए? जगजीवन जिननाह;
'**रूपविजय**' कहे कीजीए, अंगीकृत निर्वाह. ॥७॥



(७) श्री श्रेयांस प्रभु तणो...

(राग : ओघो छे अणमूलो.../मारा हृदय सिंहासन.../
श्री श्रेयांस जिन अंतरजामी.../वैष्णवजन...)

श्री श्रेयांस प्रभु तणो, अति अद्भुत सहजानंद रे;
गुण इक विध त्रिक परिणम्यो, इम अनंत गुणनो वृंद रे;
मुनिचंद! जिणंद! अमंद दिणंद परे, नित्य दीपतो सुखकंद रे. ॥१॥
निज ज्ञाने करी ज्ञेयनो, ज्ञायक ज्ञाता पद ईश रे;
देखे निज दर्शन करी, निज दृश्य सामान्य जगीश रे. मु०॥२॥
निज रम्ये रमण करो, प्रभु! चारित्रे रमता राम रे;
भोग्य अनंतने भोगवो, भोगे तेणे भोक्ता स्वामी रे. मु०॥३॥
देय दान नित दीजते, अति दाता प्रभु स्वयमेव रे;
पात्र तुमे निज शक्तिना, ग्राहक व्यापकमय देव रे. मु०॥४॥
परिणामिक कारज तणो, कर्ता गुण करणे नाथ रे;
अक्रिय अक्षय स्थितिमयी, निःकलंक अनंती आथ रे. मु०॥५॥
परिणामिक सत्ता तणो, आविर्भाव विलास निवास रे;
सहज अकृत्रिम अपराश्रयी, निर्विकल्पने निःप्रयास रे. मु०॥६॥
प्रभु प्रभुता संभारतां, गातां करतां गुणग्राम रे;
सेवक साधनता वरे, निज संवर परिणति पाम रे. मु०॥७॥
प्रगट तत्त्वता ध्यावतां, निज तत्त्वनो ध्याता थाय रे;
तत्त्वरमण एकाग्रता, पूरण तत्त्वे एह समाय रे. मु०॥८॥
प्रभु दीठे मुज सांभरे, परमातम पूरणानंद रे;
'**देवचंद्र**' जिनराजना, नित वंदो पय अरविंद रे. मु०॥९॥

थोय

विष्णु जस मात, जेहना विष्णु तात,
प्रभुना अवदात, तीन भुवनमें विख्यात;
सुरपति संघात, जास निकटे आयात,
करी कर्मनो घात, पामीया मोक्ष शात.

श्री वासुपूज्यस्वामी भगवान

चैत्यवंदन

(१) वासव वंदित वासुपूज्य...

वासव वंदित वासुपूज्य, चंपापुरी ठाम;
वसुपूज्य कुळ चंद्रमा, माता जया नाम. ॥१॥
महिष लंछन जिन बारमा, सित्तेर धनुष प्रमाण;
काया आयु वरस वली, बहोंतेर लाख वखाण. ॥२॥
संघ चतुर्विध थापीने ए, जिन उत्तम महाराय;
तस मुख '**पद्म**' वचन सुणी, परमानंदी थाय. ॥३॥

स्तवन

(१) तारजो दीन दयाळ वासुपूज्य...

(राग : मिले मन भीतर.../विनंति कैसे.../तेरा मेरा प्यार...)

तारजो दीन दयाळ वासुपूज्य, तारजो दीन दयाळ वासुपूज्य;
मोहनी रचना नवी नवी देखी, तेहमां गयो मारो काळ. ता०॥१॥
पूरव पुण्ये प्रभु मळ्याथी, थाय आतम उद्धार. ता०॥२॥
दुषम काळे जीव प्रमादी, श्रद्धा नथी लगार.. ता०॥३॥
निर्मोही वीतराग बन्या छो, लेजो सेवक संभाळ. ता०॥४॥
'**मान**' कहे शुद्ध श्रद्धा राखी, भक्ति आपे सुखकार. ता०॥५॥

(२) पूजना तो कीजे रे बारमा जिनतणी रे...

(राग : पंथडो निहाळुं.../आशावरी.../होंशवालो को.../
आजनो चांदलियो.../मिले मन भीतर...)

पूजना तो कीजे रे बारमा जिनतणी रे, जसु प्रगट्यो पूज्य स्वभाव;
पर कृत पूजा रे जे इच्छे नहि रे, साधक कारज दाव. ॥१॥
द्रव्यथी पूजा रे कारण भावनुं रे, भाव प्रशस्त ने शुद्ध;
परम इष्ट वल्लभ त्रिभुवन धणी रे, वासुपूज्य स्वयंबुद्ध. ॥२॥
अतिशय महिमा रे अति उपगारता रे, निरमल प्रभु गुणराग;
सुरमणि सुरघट सुरतरु तुच्छ ते रे, जिनरागी महाभाग. ॥३॥
दर्शन ज्ञानादिक गुण आत्मना रे, प्रभु प्रभुता लयलीन;
शुद्ध स्वरूपी रूपे तन्मयी रे, तसु आस्वादन पीन. ॥४॥
शुद्ध तत्त्व रसरंगी चेतना रे, पामे आत्म स्वभाव;
आत्मालंबी निज गुण साधतो रे, प्रगटे पूज्य स्वभाव. ॥५॥
आप अकर्ता सेवाथी हुवे रे, सेवक पूरण सिद्धि;
निज धन न दीये पण आश्रित लहे रे, अक्षय अक्षर रिद्धि. ॥६॥
जिनवर पूजा रे ते निज पूजना रे, प्रगटे अन्वय शक्ति;
परमानंद विलासी अनुभवे रे, **'देवचंद्र'** पद व्यक्ति. ॥७॥

(3) वासुपूज्य जिन अंतरजामी...

(रागः आ धारा तो.../गिरुआ रे गुण.../तुं प्रभु मारो.../
ए मेरे वतन के.../श्री श्रेयांस जिन अंतरजामी.../वैष्णवजन...)

वासुपूज्य जिन अंतरजामी, हुं प्रणमुं शिरनामी रे;
त्रिकरण योगे ध्यान तमारुं, करतां भवभय वारुं रे. ॥१॥
चोत्रीश अतिशय शोभाकारी, तुमची जाउं बलिहारी रे;
ध्यान विन्नाणे शक्ति प्रमाणे, सुरपति गुण वखाणे रे. ॥२॥
देशना देता तख्त बिराजे, जलधरनी परे गाजे रे;
वाणी सुधारस गुणमणि खाणी, भाव धरी सुणो प्राणी रे. ॥३॥

दुविध धर्म दयानिधि भाखे, हेतु जुगते प्रकाशे रे;
भेदरहित प्रभु नीरखो मुजने, तो शोभा छे तुजने रे. ॥४॥
मुद्रा सुंदर दीपे ताहरी, मोह्या अमर नरनारी रे;
साहिब समता रसनो दरियो, मार्दव गुणे जे भरियो रे. ॥५॥
सहजानंदी साहिब साचो, जेम होय हीरो जाचो रे;
परमातम प्रभु ध्याने ध्यावो, तो अक्षय लीला पावो रे. ॥६॥
रक्त वरण दीपे तनु कांति, जोतां टळे भवभ्रांति रे;
उत्तम विजय विबुधनो शिष्य, '**रतनविजय**' सुजगीश रे. ॥७॥

(४) वासुपूज्य जिन त्रिभुवन स्वामी...

(रागः आजनो चांदलियो.../जय जय त्रिशलानंदन.../
मिले मन भीतर.../वैष्णवजन.../ऐसा चिद्रस...)

वासुपूज्य जिन त्रिभुवन स्वामी, घननामी परिणामी रे;
निराकार साकार सचेतन, करम करम फल कामी रे. ॥१॥
निराकार अभेद संग्राहक, भेद ग्राहक साकारो रे;
दर्शन ज्ञान दुभेद चेतना, वस्तु ग्रहण व्यापारो रे. ॥२॥
कर्ता परिणामी परिणामो, कर्म जे जीवे करीऐ रे;
एक अनेक रूप नयवादे, नियते नय अनुसरीऐ रे. ॥३॥
दुःख सुख रूप करम फल जाणो, निश्चय एक आनंदो रे;
चेतनता परिणाम न चूके, चेतन कहे जिनचंदो रे. ॥४॥
परिणामी चेतन परिणामो, ज्ञान करम फल भावी रे;
ज्ञान करम फल चेतन कहीऐ, लेजो तेह मनावी रे. ॥५॥
आतमज्ञानी श्रमण कहावे, बीजा तो द्रव्यलिंगी रे;
वस्तुगते जे वस्तु प्रकाशे, '**आनंदघन**' मत संगी रे. ॥६॥

(५) श्री वासुपूज्य नरिंदनोजी...

(रागः वैष्णवजन तो...../ए मेरे प्यारे वतन...)

श्री वासुपूज्य नरिंदनोजी, नंदन गुण मणि धाम;
वासुपूज्य जिनराजीयोजी, अतिशय रत्ननिधान.
प्रभु चित्त धरीने अवधारो मुज वात. ॥१॥
दोष सयल मुज सांसहोजी, स्वामी करी सुपसाय;
तुम चरणे हुं आवियोजी, महिर करो महाराय. प्रभु०॥२॥
कुमति कुसंगति संग्रहीजी, अविधि असदाचार;
ते मुजने आवी मिल्याजी, अनंत अनंती वार. प्रभु०॥३॥
जब में तुमने नीरखियाजी, तव ते नाठा दूर;
पुण्ये प्रगटे शुभ दशाजी, आयो तुम हजूर. प्रभु०॥४॥
'**ज्ञानविमल**' प्रभु जाणनेजी, शुं कहेवुं बहु वार;
दास आश पूरण करोजी, आपो समकित सार. प्रभु०॥५॥



(६) साहिबा जिनराज हमारा...

(राग : तुं पारंगत तुं परमेश्वर.../
होंशवालो को खबर.../हे अविनाशी!...)

श्री वासुपूज्य स्वामी हमारा, प्रभु लागो छो तुमे प्रेम प्यारा;
तन-मन-चित्त वळग्युं तुमशुं, हवे अंतर राखो कहो किम अमशुं?
साहिबा जिनराज हमारा, मोहना जिनराज हमारा. ॥१॥
दासनी आशा पूरीए प्यारा, जो नाम धरावो छो जगदाधारा;
सकल लीला तुम पासे स्वामी, हेत आणी दीजिये अंतरयामी! ॥२॥
एटली विमासण शी छे तुमने, ए तो वंछित देतां स्वामी मुजने;
खोट खजाने नहि पडे तारे, पण अक्षय खजानो होशे माहरे. ॥३॥
भलो भूंडो पण पोतानो जाणी, वळी करुणानी लहेर ते मनमां आणी;
अमने मनोगत वांछित देजो, प्रभु हेत धरीने सामुं जोजो. ॥४॥

वारंवार कहुं शुं तुजने, सेवा फळ देजो स्वामी! अमने;
प्रेम विबुधना '**भाण**' नी प्रभुजी! तुम नामे दोलत चढती विभुजी! ॥५॥

(७) स्वामी तुमे कांई कामण कीधुं...

(राग : प्रभु तमारा पगले.../आ भव मळिया ने.../
सागर किनारे.../तारी प्रीतिनी.../ये दोलत भी ले लो...)

स्वामी तुमे कांई कामण कीधुं,
चित्तडुं अमारुं चोरी लीधुं;
अमे पण तुमशुं कामण करशुं,
भक्ते ग्रही मन घरमां धरशुं;
साहिबा वासुपूज्य जिणंदा,
मोहना वासुपूज्य जिणंदा. स्वामी०॥१॥
मन घरमां धरीया घर शोभा,
देखत नित्य रहेशो थिर थोभा;
मन वैकुंठ अकुंठित भगते,
योगी भाखे अनुभव युक्ते. स्वामी०॥२॥
क्लेशे वासित मन संसार,
क्लेश रहित मन ते भवपार;
जो विशुद्ध मन घर तुमे आव्या,
तो अमे नवनिधि रिद्धि पाया. स्वामी०॥३॥
सात राज अळगा जई बेठा,
पण भगते अम मनमां ही पेठा;
अळगाने वळग्या जे रहेवुं,
ते भाणा खडखड दुःख सहेवुं. स्वामी०॥४॥
ध्याता ध्येय ध्यान गुण एके,
भेद छेद करशुं हवे टेके;
क्षीर नीर परे तुमशुं मिलशुं,
'**वाचक यश**' कहे हेजे हळशुं. स्वामी०॥ ५॥



(८) हो जिनवरजी अब मेरे बनी आई...

(राग : आई बसो भगवान.../जिन! तेरे चरण की.../
पार्श्व चिंतामणी मेरो.../आशावरी.../प्रभु तुम चंदन...)

हो जिनवरजी! अब मेरे बनी आई;
ओर सकल सुर की सेवा तजी, एकशुं लय लाई. हो. ॥१॥
वासुपूज्य जिनवर विणु चित्त में, धारुं ओर न कांई;
परम प्रमोद भयो अब मेरे, जो तुम सेवा पाई. हो. ॥२॥
त्रिभुवननाथ धर्यो शिर उपर, जाकी बहुत वडाई;
कहे '**जिनहर्ष**' अवर न मागुं, द्यो भवपाश छुडाई. हो. ॥३॥

थोय

विश्वना उपगारी, धर्मना आदिकारी,
धर्मना दातारी, काम क्रोधादि वारी;
तार्या नर नारी, दुःख दोहग हारी,
वासुपूज्य निहारी, जाउं हुं नित्य वारी.

श्री विमलनाथ भगवान

चैत्यवंदन

(१) कंपिलपुर विमलप्रभु...

कंपिलपुर विमलप्रभु, श्यामा मात मल्हार;
कृतवर्मा नृप कुल नभे, उगमीयो दिनकार. ॥१॥
लंछन राजे वराहनुं, साठ धनुषनी काय;
साठ लाख वरसा तणुं, आयु सुख समुदाय. ॥२॥
विमल विमल पोते थया ए, सेवक विमल करेह;
तुज पद '**पद्म**' विमल प्रति, सेवुं धरी ससनेह. ॥३॥

स्तवन

(१) दुःख दोहग दूरे टळ्यां रे...

(राग : आ धारा तो.../वीर मने तारो.../
मीयां मल्हार.../पहेले भवे...)

दुःख दोहग दूरे टळ्यां रे, सुख संपदशुं भेट;
धींग धणी माथे कियो रे, कुण गंजे नर खेट?
विमलजिन! दीठां लोयण आज, मारा सिध्यां वांछित काज. ॥१॥
चरण कमल कमला वसे रे, निर्मल थिर पद देख;
समल अथिर पद परिहरी रे, पंकज पामर पेख. विमल०॥२॥
मुज मन तुज पद पंकजे रे, लीनो गुण मकरंद;
रंक गणे मंदर धरा रे, इंद चंद नागिंद. विमल०॥३॥
साहिब समरथ तुं धणी रे, पाम्यो परम उदार;
मन विसरामी वालहो रे, आतमचो आधार. विमल०॥४॥

दरिसण दीठे जिनतणुं रे, संशय न रहे वेध;
दिनकर करभर प्रसरता रे, अंधकार प्रतिषेध. विमल०॥५॥
अमीय भरी मूरति रची रे, उपमा न घटे कोय;
शांत सुधारस झीलती रे, नीरखत तृप्ति न होय. विमल०॥६॥
एक अरज सेवक तणी रे, अवधारो जिनदेव;
कृपा करी मुज दीजिये रे, '**आनंदघन**' पद सेव. विमल०॥७॥

(२) प्रभुजी! मुज अवगुण मत देखो...

(राग : ओ साथी रे.../में कीनो नहिं.../
प्रभुजी अजवाळा देखाडो...)

प्रभुजी! मुज अवगुण मत देखो...
राग दशाथी तुं रहे न्यारो, हुं मन रागे वाळुं;
द्वेषरहित तुं समता भीनो, द्वेष मारग हुं चालुं. ॥१॥
मोह लेश फरस्यो नहीं तुजने, मोह लगन मुज प्यारी;
तुं अकलंकी कलंकित हुं तो, ए पण रहेणी न्यारी. ॥२॥
तुं ही निराशी भावपद साधे, हुं आशा संग विलुद्धो;
तुं निश्चल हुं चल तुं सुद्धो, हुं आचरणे ऊंधो. ॥३॥
तुज स्वभावथी अवळां माहरां, चरित्र सकळ जगे जाण्या;
एहवा अवगुण मुज अतिभारी, न घटे तुज मुख आण्यां. ॥ ४॥
प्रेम नवल जो होये सवाई, विमलनाथ मुख आगे;
'**कांति**' कहे भवरान ऊतरतां, तो वेळा नवि लागे. ॥५॥

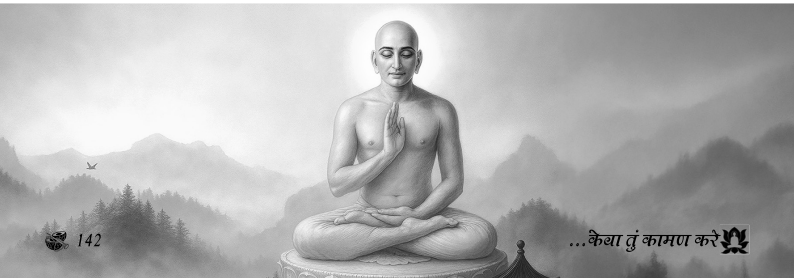

(3) विमल जिन विमलता ताहरीजी...



(राग : सिद्धारथना राजकुंवरनुं.../
वैष्णवजन तो.../चेतन ज्ञान...)

विमल जिन विमलता ताहरीजी, अवर बीजे न कहाय;
लघु नदी जिम तिम लंघीएजी, पण स्वयंभूरमण न तराय. ॥१॥
सयल पुढवी गिरि जल तरुजी, कोई तोले एक हत्थ;
तेह पण तुज गुणगण भणीजी, भाखवा नहि समरथ. ॥२॥
सर्व पुद्गल नभ धरमनाजी, तेम अधर्म प्रदेश,
तास गुण धर्म पज्जव सहुजी, तुज गुण ईक तणो लेश. ॥३॥
एम निज भाव अनंतनीजी, अस्तिता केटली थाय;
नास्तिता स्व पर पद अस्तिताजी, तुज सम काळ समाय. ॥४॥
ताहरा शुद्ध स्वभावनेजी, आदरे धरी बहुमान;
तेहने तेहीज नीपजेजी, ए कोई अद्भुत तान. ॥५॥
तुम प्रभु तुम तारक विभुजी, तुम समो अवर न कोई;
तुम दरसण थकी हुं तर्योजी, शुद्ध आलंबन होय. ॥६॥
प्रभु तणी विमलता ओळखीजी, जे करे थिर मन सेव;
'**देवचंद्र**' पद ते लहेजी, विमल आनंद स्वयमेव. ॥७॥

(४) विमल जिनेश्वर जगतनो प्यारो...



(राग : आजनो चांदलियो.../
उंचा उंचा शत्रुंजय.../वैष्णवजन...)

विमल जिनेश्वर जगतनो प्यारो, जीवन प्राण आधार हमारो;
साहिब! मोहे विमल जिणंदा, मोहना! सम सुरतरुकंदा. ॥१॥
सात राज अलगो जई वसीयो, पण मुज भक्तितणो छे रसीयो. ॥२॥
मुज चित्त अंतर क्युं करी जासी, सेवक सुखीयो प्रभु शाबाशी. ॥३॥
आळस करशो जो सुख देवा, तो कुण करशे तुमची सेवा. ॥४॥
मोहादिक प्रभु दिलथी उगारो, जन्म जराना दुःख निवारो. ॥५॥

सेवक दुःख जो स्वामी न भांजे, पूरव पातिक नहि मुज मांजे. ॥६॥
तो कुण बीजो आशा पूरे, साहिब कांई इच्छित पूरे. ॥७॥
'**ज्ञानविमल**' सूरि जिनगुण गावे, सहेजे समकित बहुगुण पावे. ॥८॥

(५) विमल जिनेश्वर मुज परमेश्वर...

(राग : तेरा साथ है कितना.../पहेले भवे.../
युगोथी हुं पुकारुं.../संयम जीवननो...)

विमल जिनेश्वर मुज परमेश्वर, अलवेसर उपगारी रे;
सुण साहिबा साचा, जगजीवन जिनराज जयंकर.
मुजने तुज सुरति प्यारी रे... ॥१॥
महिर करी जे वांछित दिजे, सेवक चित्त धरीजे;
एवा जाणी शिवसुख प्राणी, भक्ति सहि नाणी दीजे रे. ॥२॥
कामकुंभने सुरतरुथी पण, प्रभुभक्ति मुज प्यारी रे;
जेओए एक क्षण लगी सेवी, शिवसुखनी दातारी रे. ॥३॥
भक्ति सुवासना वासे वासित, जे होये भवि प्राणी रे;
जीव मुक्ति चिदानंदरूपी, ते कहीए शुद्ध नाणी रे. ॥४॥
प्रभु तुज शक्ति तणी अति मोटी, शक्ति ए जगमां व्यापे रे;
एक वार पण भावे सेवी, चिदानंद पद आपे रे. ॥५॥
पूरण पूरव पुण्य पसाये, जो तुम्ह भगति में पामी रे;
तो हुं दुस्तर ए भव दरियो, तरियो सहेज स्वामी रे. ॥६॥
साहिब सेवक जाणी साचो, नेकशुं नजरे जोजो रे;
'**नयविजय**' कहे भवोभव जिनजी, तुम भक्ति मुज होजो रे. ॥७॥

(६) विमलनाथ मुज मन वसे...

(राग : वामानंदन वंदना.../तुं मने भगवान.../वैष्णवजन...)

विमलनाथ मुज मन वसे, जिम सीता मन राम. ॥१॥
पिक वंछे सहकारने, पंथी मन जिम धाम. वि०॥२॥

कुंजर चित्त रेवा वसे, कमला मन गोविंद. वि०॥३॥
गौरी मन शंकर वसे, कुमुदिनी मन जिम चंद. वि०॥४॥
अलि मन विकसित मालती, कमलिनी चित्त दिणंद. वि०॥५॥
वाचक '**जस**'ने वाहलो, तिम श्री विमल जिणंद. वि०॥६॥

(७) सेवो भवियां विमल जिणेसर...

(राग : चार दिवसना.../वैष्णवजन.../
संयम जीवननो लीधो.../आतम भक्ति मळ्या.../गिरुआ रे...)

सेवो भवियां विमल जिणेसर, दुल्लहा सज्जन संगाजी;
एहवा प्रभुनुं दरिशन लेवुं, ते आळस मांहे गंगाजी. ॥१॥
अवसर पामी आळस करशे, ते मूरखमां पहेलोजी;
भूख्याने जेम घेबर देतां, हाथ न मांडे घेलोजी. ॥२॥
भव अनंतमां दर्शन दीठुं, प्रभु एहवा देखाडेजी;
विकट ग्रंथि जे पोळ पोळियो, कर्म विवर उघाडेजी. ॥३॥
तत्त्व प्रीतिकर पाणी पाए, विमला लोके आंजीजी;
लोयण गुरु परमान्न दिये तव, भ्रम नांखे सवि भांजीजी. ॥४॥
भ्रम भांग्यो तव प्रभुशुं प्रेमे, वात करुं मन खोलीजी;
सरलतणे जे हईडे आवे, तेह जणावे बोलीजी. ॥५॥
श्री नयविजय विबुध पय सेवक, वाचक '**यश**' कहे साचुंजी;
कोडि कपट जो कोई दिखावे, तोये प्रभु विण नवि राचुंजी. ॥६॥

थोय

विमल जिन जुहारो, पाप संताप वारो,
श्यामांब मल्हारो, विश्व कीर्ति विस्तारो;
योजन विस्तारो, जास वाणी प्रसारो,
गुणगण आधारो, पुण्यना ए प्रकारो.

श्री अनंतनाथ भगवान

चैत्यवंदन

(१) अनंत अनंत गुण आगरुं...

अनंत अनंत गुण आगरुं, नयरी अयोध्यावासी;
सिंहसेन नृप नंदनो, थयो पाप निकासी. ॥१॥
सुजसा माता जनमीयो, त्रीस लाख उदार;
वरस आउखुं पालीयुं, जिनवर जयकार. ॥२॥
लंछन सिंचाणा तणुं ए, काया धनुष पचास;
जिन पद '**पद्म**' नम्या थकी, लहीये सहज विलास. ॥३॥

स्तवन

(१) अनंत जिनराजना चरणनी सेवना...

(राग : ऋषभ जिनराज मुज.../ जय गणेश... जय गणेश...)

अनंत जिनराजना चरणनी सेवना,
पावना भावना चित्त सुहावे;
जुगति श्युं जगत में जतनथी जोवतां,
अवर उपमा न कहो कुण आवे. ॥१॥
संत नवि अंत तुज गुण तणो को लहे,
नहि वहे एहवो गर्व कोई;
सकलरूपे करी वचनगोचर थकी,
यद्यपि मोहनो अंत होई. ॥२॥
वस्तु उपमान सवि रूपथी भाखीये,
तुं अरूपी कहो किम मवीजे;

ध्यान सापेक्ष आलंबने ध्याईए,
तुं निरालंब निरपेक्ष कहीजे. ॥३॥
विधितणी सेवना अविधि अणसेवना,
एह तुज आण निर्धार लहीये;
जे निराशंस आशंस सममिच्छिए,
मोक्ष संसारनो हेतु कहीए. ॥४॥
सिंहसेनांग जो श्येन लंछन धरो,
मात सुयशातणो तुं मल्हारो;
'**ज्ञानविमलादि**' गुण उदय अविचलपणे,
तो हवे जो दिले दास धारो. ॥५॥

(२) अनंत प्रभु के आश की...

(राग : मैली चादर.../ विमलाचल नितु.../
जनम जनम का साथ.../एक घडी.../ए मेरे वतन...)

अनंत प्रभु के आश की, आई बनी है ऐसी;
घन शिखी चंद चकोर ज्युं, जल ने मीन जैसी. अनंत०॥१॥
औरशुं रति सब विसारी, प्रभु की लगे प्यारी;
जनम जनम अब चाहते हैं, इनही शुं यारी. अनंत०॥२॥
नैन न चाहे और कुं, लगन जोर लगी है;
जीहा और जपे नहीं, भ्रान्त दूर भगी है. अनंत०॥३॥
पंच विषय सुख पास से, दुनिया का दिलासा;
जीव अब जाने झहेरशां, नहि और की आशा. अनंत०॥४॥
आखर आप समा करे, सेवक को सांई;
'**उदय**' वदे सब छोड के, मिलुं उनसे धाई. अनंत०॥५॥

(3) करुणायर प्रभु वीनवुं रे...

(राग : गगननी आंखोमां पवननी पांखोमां.../
पहेले भवे एक गामनो रे.../धनधन मुनिवरा.../वैष्णवजन...)

करुणायर प्रभु विनवुं रे, विनतडी अवधार;
तुज दर्शन विण हुं भम्यो रे, काल अनंत अपार;
जिणंदराय! हवे मुज पार उतार... ॥१॥
सूक्ष्म निगोदमां हुं भम्यो रे, पुद्गल परिवर्त्त अनंत;
अव्यवहार राशि वस्यो रे, भव क्षुल्लक अति जंत. ॥२॥
सूक्ष्म थावरपणुं पामियो रे, अनुक्रमे बादर भाव;
जन्ममरण प्रभु बहु कर्या रे, जिहां सुखनो अटकाव. ॥३॥
विकलपणुं पाम्या पछी रे, तिरि पंचेन्द्रिय जाण;
शुद्ध तत्त्व जाण्या विना रे, भमियो नवनव ठाण. ॥४॥
ईम कोई पूरव पुण्यथी रे, मनुष्य जन्म सुजाण;
शुद्ध सामग्री संयोगथी रे, दीठो तुं त्रिभुवन भाण. ॥५॥
अनंतनाथ जिनेश्वरु रे, तारक तुं जगदेव;
'**मोहन**' कहे तुज नामथी रे, टळशे अनादि कुटेव. ॥६॥

(४) ज्ञान अनंतु ताहरे रे...

(रागः माईन माईन.../तमे आवजो रे.../श्री शंखेश्वर.../
वैष्णवजन तो.../होशवालों को.../पहेले भवे...)

ज्ञान अनंतु ताहरे रे, दरिशन ताहरे अनंत;
सुख अनंतमय साहिबा रे, वीर्य पण उलस्युं अनंत.
अनंत जिन! आपजो रे, मुज एह अनंता चार;
मुजने नहि अवरश्युं प्यार, तुजने आपतां शी वार.
एह छे तुज यशनो ठार... अनंत०॥१॥
आप खजानो न खोलवो रे, पण नहि मिलवानी चिंता;
माहरे पोते छे सवे रे, पण विचे आवरणनी भींत. अनंत०॥२॥

तप जप किरिया मोगरे रे, भांजी पण भांगी न जाय;
एक तुज आणा लहे थके रे, हेलामां परही थाय. अनंत०॥३॥
निज माता मरुदेवीने रे, जिन ऋषभे क्षणमां दीध;
आप परायुं विचारतां रे, ईम किम वीतरागता सिद्ध. अनंत०॥४॥
ते माटे तस अरथिया रे, तुज प्रार्थे जे कोई लोक;
तेहने आपो आंफणी रे, तिहां न घटे करावबी टोक. अनंत०॥५॥
तेहने तेहनुं आपवुं रे, तिहां शो ऊपजे छे खेद;
प्रार्थना करते ताहरे रे, प्रभुताईनो पण नहि छेद. अनंत०॥६॥
पाम्या पामे पामशे रे, ज्ञानादिक जेह अनंत;
ते तुज आणाथी सवेरे, कहे '**मानविजय**' उल्लसंत. अनंत०॥७॥

(५) धार तलवारनी सोहिली दोहिली...

(राग : साथ गिरनारनो.../
आजनो चांदलियो.../ऋषभ जिनराज मुज...)

धार तलवारनी सोहिली दोहिली,
चौदमा जिन तणी चरणसेवा;
धार पर नाचतां देख बाजीगरा,
सेवना धार पर रहे न देवा. ॥१॥
एक कहे सेविये विविध किरिया करी,
फल अनेकांत लोचन न देखे;
फल अनेकांत किरिया करी बापडा,
रडवडे चार गतिमांहे लेखे. ॥२॥
गच्छना भेद बहु नयण निहाळतां,
तत्त्वनी वात करतां न लाजे!
उदरभरणादि निज काज करतां थका,
मोह नडिया कलिकाल राजे. ॥३॥

वचन निरपेक्ष व्यवहार जूठो कह्यो,
वचन सापेक्ष व्यवहार साचो;
वचन निरपेक्ष व्यवहार संसार फळ,
सांभळी आदरी कांई राचो? ॥४॥
देव गुरु धर्मनी शुद्धि कहो किम रहे?
किम रहे शुद्ध श्रद्धान आणो!
शुद्ध श्रद्धान विण सर्व किरिया करी,
छार पर लींपणुं तेह जाणो. ॥५॥
पाप नहि कोई उत्सूत्र भाषण जिस्यो,
धर्म नहीं कोई जग सूत्र सरीखो;
सूत्र अनुसार जे भविक किरिया करे,
तेहनुं शुद्ध चारित्र परीखो. ॥६॥
एह उपदेशनो सार संक्षेपथी,
जे नरा चित्तमां नित्य ध्यावे,
ते नरा दिव्य बहुकाल सुख अनुभवी,
नियत '**आनंदघन**' राज पावे. ॥७॥

(६) प्रभु तुज नाम छे नाथ अनंत...

(राग : क्यारे बनीश हुं.../वैष्णवजन.../सूरज मंडण पार्श्व...)

प्रभु तुज नाम छे नाथ अनंत, तुम गुण पण छे अकल अनंत;
छे अनंत सुखनो तुज भोग, दुःख अनंतनो कर्यो वियोग. ॥१॥
वीर्य अनंत तुज पासे वसे, ज्ञान अनंते तुं उल्लसे;
तिम अनंत दरिसन श्रीकार, आप अनंत थया अविकार. ॥२॥
तुं अनंत करुणाजल कूप, ताहरी ज्योति अनंत स्वरूप;
तुज अनंत वाणी विस्तरे, तेहथी भविक अनंत तरे. ॥३॥
द्रव्य अनंत तुजने प्रत्यक्ष, तिम अनंत पर्यायनुं लक्ष्य;
तुं अनंत लक्षणनो गेह, बळ अनंत पूरण तुज देह. ॥४॥

ते माटे सुण देव! अनंत!, ताहरी छे प्रभु शक्ति अनंत;
मुजने पण सुख देहि अनंत, '**दान**' कहे धरी हरख अनंत. ॥५॥

(७) मूरति हो प्रभु मूरति अनंत...

(राग : तार मुज तार.../प्रीतलडी बंधाणी.../अपूर्व अवसर...)

मूरति हो प्रभु मूरति अनंत जिणंद,
ताहरी हो प्रभु ताहरी मुज नयणे वसीजी;
समता हो प्रभु समता रसनो कंद,
सहेजे हो प्रभु सहेजे अनुभव रसलसीजी. ॥१॥
भव दव हो प्रभु भव दव तापित जीव,
तेहने हो प्रभु तेहने अमृतघन समीजी;
मिथ्या हो प्रभु मिथ्या विषनी खीव,
हरवा हो प्रभु हरवा जांगुली मन रमीजी. ॥२॥
भाव हो प्रभु भाव चिंतामणि एह,
आतम हो प्रभु आतम संपत्ति आपवाजी;
एहिज हो प्रभु एहिज शिव सुख गेह,
तत्त्व हो प्रभु तत्त्वालंबन थापवाजी. ॥३॥
जाये हो प्रभु जाये आश्रव चाल,
दीठे हो प्रभु दीठे संवरता वधेजी;
रत्न हो प्रभु रत्नत्रयी गुणमाळ,
अध्यात्म हो प्रभु अध्यात्म साधन सधेजी. ॥४॥
मीठी हो प्रभु मीठी सूरत तुज,
दीठी हो प्रभु दीठी रुचि बहुमानथीजी;
तुज गुण हो प्रभु तुज गुण भासन युक्त,
सेवे हो प्रभु सेवे तसु भव भय नथीजी. ॥५॥
नामे हो प्रभु नामे अद्भुत रंग,
ठवणा हो प्रभु ठवणा दीठे उल्लसेजी;

गुण आस्वाद हो प्रभु गुण आस्वाद अभंग,
तन्मय हो प्रभु तन्मयताए जे धसेजी. ॥६॥
गुण अनंत हो प्रभु गुण अनंतनो वृंद,
नाथ हो प्रभु नाथ अनंतने आदरेजी;
देवचंद्र हो प्रभु देवचंद्रने आनंद,
परम हो प्रभु परम महोदय ते वरेजी. ॥७॥



(८) श्री अनंतजिन शुं करो...

(रागः निरख्यो नेमि जिणंदने...)

श्री अनंतजिन शुं करो साहेलडीयां,
चोल मजीठनो रंग रे गुणवेलडीयां;
साचो रंग ते धर्मनो, सा०... बीजो रंग पतंग रे. गु० ॥१॥
धरम रंग जीरण नहि, सा०... देह ते जीरण थाय रे; गु०
सोनुं ते विणसे नहि, सा०... घाट घडामण जाय रे. गु० ॥२॥
त्रांबुं जे रस वेधीयुं, सा०... ते होय ज्युं हेम रे; गु०
फरी त्रांबुं ते नवि होवे, सा०.. एहवो जगगुरु प्रेम रे. गु० ॥३॥
उत्तम गुण अनुरागथी सा०... लहिए उत्तम ठाम रे; गु०
उत्तम निज महिमा वधे, सा०... दीपे उत्तम धाम रे. गु० ॥४॥
उदक बिन्दु सायर भळ्यो, सा०... जिम होय अक्षय अभंग रे; गु०
वाचक जस कहे प्रभु गुणे सा०... तिम मुज प्रेम प्रसंग रे. गु० ॥५॥

थोय

अनंत अनंत नाणी, जास महिमा गवाणी,
सुरनर तिरि प्राणी, सांभळे जास वाणी;
एक वचन समजाणी, जेह स्याद्वाद जाणी,
तर्या ते गुण खाणी, पामीया सिद्धि राणी.

श्री धर्मनाथ भगवान

चैत्यवंदन

(१) भानुनंदन धर्मनाथ...

भानुनंदन धर्मनाथ, सुव्रता भली मात;
वज्र लंछन वज्री नमे, त्रण भुवन विख्यात. ॥१॥
दश लाख वरसनुं आउखुं, वपु धनु पिस्तालीश;
रत्नपुरीनो राजीयो, जगमां जास जगीश. ॥२॥
धर्म मारग जिनवर कहे ए, उत्तम जन आधार;
तेणे तुज पाद '**पद्म**' तणी, सेवा करुं निरधार. ॥३॥

स्तवन

(१) थाशुं प्रेम बन्यो छे राज...

(राग : तुज करुणाधारमां.../मारो मुजरो.../हे त्रिशलाना जाया.../
मैली चादर.../आज मनोरथ.../अबोलडा शाना लीधा छे...)

थाशुं प्रेम बन्यो छे राज, निरवहेशो तो लेखे;
में रागी प्रभु! थें छो निरागी, अणजुगते होय हांसी;
एक पखो जे नेह निर्वहेशो, तेमां की शाबाशी. ॥१॥
निरागी सेवे कांई होवे, इम मनमें नवि आणुं;
फळ अचेतन पण जिम सुरमणि, तिम तुम भगति प्रमाणुं. ॥२॥
चंदन शीतलता उपजावे, अग्नि ते शीत मिटावे;
सेवकनां तिम दुःख गमावे, प्रभु गुण प्रेम स्वभावे. ॥३॥
व्यसन उदय जलधि अनुहरे, शशिने नेह संबंधे;
अणसंबंधे कुमुद अणुहरे, शुद्ध स्वभाव प्रबंधे. ॥४॥
देव अनेरा तुमथी छोटा, थें जगमें अधिकेरा;
'**जश**' कहे धर्म जिनेसर थाशुं, दिल मान्या हे मेरा. ॥५॥



(२) धरम जगनाथनो धर्म शुचि गाईये...

(रागः साथ गिरनारनो.../जय गणेश (२).../
तार मुज तार.../अपूर्व अवसर..)

धरम जगनाथनो धर्म शुचि गाईये,
आपणो आतमा तेहवो भाविये;
जाति जसु एकता तेह पलटे नहि,
शुद्ध गुण पज्जवा वस्तु सत्तामयी. ॥१॥
नित्य निरवयव वळी एक अक्रियपणे,
सर्वगत तेह सामान्य भावे भणे;
तेहथी इतर सावयव विशेषता,
व्यक्ति भेदे पडे जेहनी भेदता. ॥२॥
एकता पिंडने नित्य अविनाशता,
अस्ति निज रिद्धिथी कार्य गत भेदता;
भावश्रुत गम्य अभिलाप्य अनंतता,
भव्य पर्यायनी जे परावर्तिता. ॥३॥
क्षेत्र गुण भाव अविभाग अनेकता,
नाश उत्पाद अनित्य परनास्तिता;
क्षेत्र व्याप्यत्व अभेद अवक्तव्यता,
वस्तु ते रूपथी नियत अभव्यता. ॥४॥
धर्म प्राग्भावता सकळ गुण शुद्धता,
भोग्यता कर्तृता रमण परिणामता;
शुद्ध स्वप्रदेशता तत्त्व चैतन्यता,
व्याप्य व्यापक तथा ग्राह्य ग्राहकता. ॥५॥
संग परिहारथी स्वामी निज पद लह्युं,
शुद्ध आत्मिक आनंद पद संग्रह्युं;
जहवि परभावथी हुं भवोदधि वस्यो,
पर तणो संग संसारताए ग्रस्यो. ॥६॥

तहवि सत्ता गुणे जीव ए निरमलो,
अन्य संश्लेष जिम फिटक नवि सामलो;
जे परोपाधिथी दुष्ट परिणति ग्रही,
भाव तादात्म्यमां माहरुं ते नहीं. ॥७॥
तिणे परमात्म प्रभुभक्ति रंगी थई,
शुद्ध कारण रसे तत्व परिणतिमयी;
आत्म ग्राहक थये तजे परग्रहणता,
तत्त्वभोगी थये टळे परभोग्यता. ॥८॥
शुद्ध निःप्रयास निजभाव भोगी यदा,
आत्मक्षेत्रे नहि अन्य रक्षण तदा;
एक असहाय निस्संग निर्द्वन्द्वता,
शक्ति उत्सर्गनी होय सहु व्यक्तता. ॥९॥
तिणे मुज आतमा तुज थकी निपजे,
माहरी संपदा सकळ मुज संपजे;
तिणे मनमंदिरे धर्म प्रभु ध्याइए,
परम **'देवचंद्र'** निज सिद्धि सुख पाइए. ॥१०॥

(3) धर्म जिनेश्वर गाउं रंगशुं...

(राग : तारे द्वारे आवीने.../मैत्री भावनुं.../वैष्णवजन...)

धर्म जिनेश्वर गाउं रंगशुं,
भंग म पडशो हो प्रीत; जिने०
बीजो मनमंदिर आणुं नहीं,
ए अम कुलवट रीत. जिने० धर्म०॥१॥
धरम धरम करतो जग सहु फिरे,
धर्म न जाणे हो मर्म; जिने०

धर्म जिनेश्वर चरण ग्रह्या पछी,
कोई न बांधे हो कर्म. जिने० धर्म०॥२॥
प्रवचन अंजन जो सद्गुरु करे,
देखे परमनिधान; जिने०
हृदय नयण निहाळे जगधणी,
महिमा मेरु समान. जिने० धर्म०॥३॥
दोडत दोडत दोडत दोडीओ,
जेती मननी रे दोड; जिने०
प्रेम प्रतीत विचारो ढूंकडी,
गुरु-गम लेजो रे जोड. जिने० धर्म०॥४॥
एक पखी केम प्रीति परवडे?
उभय मिल्या होय संघ; जिने०
हुं रागी हुं मोहे फंदियो,
तुं निरागी निरबंध. जिने० धर्म०॥५॥
परम निधान प्रगट मुख आगळे,
जगत उल्लंघी हो जाय; जिने०
ज्योति विना जुओ जगदीशनी,
अंधोअंध पुलाय. जिने० धर्म०॥६॥
निर्मल गुणमणि रोहण भूधरा,
मुनिजन मानस हंस; जिने०
धन्य ते नगरी धन्य वेला घडी,
मातपिता कुल वंश. जिने० धर्म०॥७॥
मन मधुकर वर करजोडी कहे,
पदकज निकट निवास; जिने०
घननामी '**आनंदघन**' सांभळो,
ए सेवक अरदास. जिने० धर्म०॥८॥

(४) धर्म जिनेश्वर धर्मधुरंधर...

(राग : ऊंचा (२) शत्रुंजयनां.../आज मनोरथ.../
केना रे सगपण.../अमी भरेली.../स्वामी तुमे...)

धर्म जिनेश्वर धर्मधुरंधर, पूरण पुण्ये मळियो;
मन मरुथल में सुरतरु फळियो, आज थकी दिन वळियो.
प्रभुजी! महेर करी महाराज, काज हवे मुज सारो;
साहिब! गुणनिधि गरीब निवाज, भवजल पार उतारो. ॥१॥
बहु गुणवंता जेह तें तार्या, ते नहि पाड तुमारो;
मुज सरीखो पत्थर जो तारो, तो तुमची बलिहारो. प्रभुजी०॥२॥
हुं निर्गुण पण ताहरी संगे, गुण लहुं तेह घटमान;
निंबादिक पण चंदन संगे, चंदन सम लहे तान. प्रभुजी०॥३॥
निर्गुण जाणी छेह म देशो, जुओ आप विचारी;
चंद्र कलंकित पण निज शिरथी, न तजे गंगाधारी. प्रभुजी०॥४॥
सुव्रतानंदन सुव्रतदायक, धारक जिनपदवीनो;
पायक जास सुरासुर किन्नर, घायक मोह रिपुनो. प्रभुजी०॥५॥
तारक तुम सम अवर न दीठो, लायक नाथ हमारो;
श्रीगुरु '**क्षमाविजय**' पयसेवी, कहे '**जिन**' भवजल तारो. प्रभुजी०॥६॥

(५) धर्म जिनेसर सुण परमेसर...

(राग : वैष्णवजन.../जयदेव जयदेव.../
समय समय सों वार.../फुल तुम्हें भेजा.../आज मारा प्रभुजी...)

धर्म जिनेसर सुण परमेसर, तुज गुण केम कहायजी;
तुज वचने तुज रूप जणाये, अवर न कोई उपायजी. ॥१॥
ताहरे मित्र अने शत्रु सम, अरिहंत तुं ही गवायजी;
रूप स्वरूप अनुपम तुं जिन, तो ही अरूपी कहायजी. ॥२॥

लोभ नहि तुजमांहि तो पण, सघळा गुण तें लीधजी;
तुं निरागी पण तें रागी, भक्त तणा मन कीधजी. ॥३॥
नहि माया तुजमां जिनराया, पण तुज वश जग थायजी;
तुं ही सकल तुज अकल कले कुण? ज्ञान विना जिनरायजी. ॥४॥
सुगुण सनेही महेर करो मुज, सुप्रसन्न होई जिणंदजी;
पभणे '**केसर**' धर्म जिनेसर, तुज नामे आणंदजी. ॥५॥

(६) लागी रे मुने!... धर्म जिणंदशुं प्रीत...

(राग : सखी रे आज आनंद की घडी.../
पायोजी मैंने राम रतन.../जिन! तेरे चरण की...)

लागी रे मुने!... धर्म जिणंदशुं प्रीत (२) लागी रे मुने!
प्रीत पुरानी न तोडो जिनजी (२) ए सज्जन की न रीत. ॥१॥
दान शियळ तप भावना चउविध (२) धर्म की थापना कीध. ॥२॥
दश द्वादश विध साधु श्राद्ध के (२) देशना धर्म की दीध. ॥३॥
जगजंतु उद्धारण कारण (२) मारग कीयो रे प्रसिद्ध. ॥४॥
धर्मनाथ जिन धर्म प्रकाशी (२) जग में बहु जश लीध. ॥५॥
'**वीरविजय**' आतमपद लेवा (२) धर्म सुण्यानी रे प्रीत. ॥६॥

थोय

धरम धरम धोरी, कर्मना पास तोरी,
केवल श्री जोरी, जेह चोरे न चोरी;
दर्शन मद छोरी, जाय भाग्या सटोरी,
नमे सुरनर कोरी, ते वरे सिद्धि गोरी.



श्री शांतिनाथ भगवान

चैत्यवंदन

(१) शान्ति जिनेश्वर सोलमा...

शान्ति जिनेश्वर सोलमा, अचिरासुत वंदो;
विश्वसेन कुल नभोमणि, भविजन सुख कंदो. ॥१॥
मृगलंछन जिन आउखुं, लाख वरस प्रमाण;
हत्थिणाउर नयरी धणी, प्रभुजी गुणमणि खाण. ॥२॥
चालीश धनुषनी देहडी, समचउरस संठाण;
वदन '**पद्म**' ज्युं चंदलो, दीठे परम कल्याण. ॥३॥

(२) शांति जिनेश्वर साहिबा...

शांति जिनेश्वर साहिबा, सुखकारी सुखकंद;
भेट्या भवभीती भागी, आज भर्यो आनंद. ॥१॥
मूर्ति मोहन वेलडी, कामकुंभ सहकार;
रत्न चिंतामणी सारिखो, दीठो तुम देदार. ॥२॥
अचिरासुत त्रिभुवन तिलो, जयनायक जिनराज;
'**धर्मविजय**' मोहे दीजीये, शिवरमणी महाराज. ॥३॥

(3) विश्वातिशायी महिमा...

विश्वातिशायी महिमा, ज्वलत्-तेजो विराजितं;
शांतिं शांतिकरं स्तौमि, दुरित-व्रात-शान्तये. ॥१॥
षोडश-विद्या-देव्योऽपि, चतुःषष्टि सुरेश्वराः;
ब्रह्मादयश्च सर्वेऽपि, यं सेवन्ते कृतादराः. ॥२॥
ॐ ह्रीं श्रीं जये विजये, ॐ जये परैरपि;
तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु शांतिं महाजये. ॥३॥
न क्वापि व्याधयो देहे, न ज्वरा न भगंदरा;
क्वास-श्वासादयो नैव, विद्यन्ते शांति-सेवनात्. ॥४॥
यक्ष-भूत-पिशाचाद्या, व्यंतरा दुष्ट-मुद्गराः;
सर्वे शाम्यन्तु ते शांतिनाथ! सेवांकरे मयि. ॥५॥

स्तवन

(९) सोळमां शांति जिनेश्वर देव के...

(राग : गरबो कोणे कोराव्यो के नंदजीना लाल रे...)

सोळमां शांति जिनेश्वर देव के, अचिराना नंद रे;
जेहनी सारे सुरपति सेव के, अचिराना नंद रे...!!
तिरि नर सुर समुदाय के अ०,
एक योजन मांहे समाय के. अ० ॥१॥
तेहने प्रभुजीनी वाणी के अ०,
परिणमे समजे भवि प्राणी के अ०;
सहु जीवना संशय भांजे के अ०,
प्रभु मेघध्वनि एम गाजे के अ० ॥२॥
जेहने जोयण सवासो मान के अ०,
जे पूर्वना रोग तेणे थान के अ०;

सवि नाश थाये नवा नावे के अ०,
षड्मास प्रभु परभावे के अ० ॥३॥
जिहां जिनजी विचरे रंग के अ०,
नवि मूषक शलभ पतंग के अ०,
नवि कोईने वयर विरोध के अ०,
अतिवृष्टि अनावृष्टि रोध के अ० ॥४॥
निज-परचक्रनो भय नासे के अ०,
वळी मरकी नावे पासे के अ०;
प्रभु विचरे तिहां न दुकाल के अ०,
जाये उपद्रव सवि तत्काल के अ० ॥५॥
जस मस्तक पूंठे राजे के अ०,
भामंडल रवि परे छाजे के अ०;
कर्मक्षयथी अतिशय अगियार के अ०,
मानुं योग साम्राज्य परिवार के अ० ॥६॥
कब देखुं भाव ए भावे के अ०,
एम होंश घणी चित्त आवे के अ०;
श्री जिन उत्तम परभावे के अ०,
कहे '**पद्मविजय**' बनी आवे के अ० ॥७॥

(२) क्षण क्षण सांभरो शांति सलूणा...

(राग : जिम जिम ए गिरि भेटिए.../जय जय आरती.../
शांति जिनेश्वर साचो.../वीर मने तारो.../आंख मारी उघडे...)

क्षण क्षण सांभरो शांति सलूणा! ध्यान भुवन जिनराज परुणा;
शांति जिणंदको नाम अमीसें, उल्लसित होत हम रोम वपुना.
भवचोगानमें फिरते पाये, छोरत में नहि चरण प्रभुनां. ॥१॥

छिल्लरमें रति कबहु न पावे, जे झीले जल गंग-यमुना;
तुम सम हम शिर नाथ न थाशे, कर्म अधुना दूना धुना. ॥२॥
मोह लडाईमें तेरी सहाई, तो क्षणमें छिन्न छिन्न कटुना;
नहि घटे प्रभु आना कूना, अचिरासुत पति मोक्ष वधूना. ॥३॥
ओरकी पास में आश न करते, चार अनंत पसाय करुना;
क्युं कर मांगत पास धत्तूरे, युगलिक याचक कल्पतरुना. ॥४॥
ध्यान खड्गवर तेरे आसंगे, मोह डरे सारी भीक भरुना;
ध्यान अरूपी तो सांई अरूपी, भक्तें ध्यावत ताना तुना. ॥५॥
अनुभव रंग वध्यो उपयोगे, ध्यान सुपनमें काथा चुना;
चिदानंद झकझोल घटासें, श्री '**शुभवीर**' विजय पडिपुन्ना. ॥६॥



(3) जग जनमन रंजे रे...

(राग : एक प्यार का.../हे शंखेश्वर स्वामी.../
मने ज्यां जवानुं मन.../वैष्णवजन.../ए मेरे वतन...)

जग जनमन रंजे रे, मन्मथ बल भंजे रे;
नवि राग नवि दोष, तुं अंजे चित्तश्युं रे. जग०॥१॥
शिर छत्र बिराजे रे, देवदुंदुभि बाजे रे;
ठकुराई ईम छाजे रे, तो भी अकिंचनो रे. जग०॥२॥
थिरता धृति सारी रे, वरी समता नारी रे;
ब्रह्मचारी शिरोमणि रे, तो पण तुं सुण्यो रे. जग०॥३॥
न धरे भव रंगो रे, नवि दोष आसंगो रे;
मृगलंछन चंगो रे, तो पण तुं सही रे. जग०॥४॥
तुज गुण कुण आखे रे, जग केवली पाखे रे;
सेवक '**जश**' भाखे रे, अचिरासुत तुं जयो रे. जग०॥५॥



(४) जगत दिवाकर जगत कृपानिधि...

(राग : अंतरजामी सुण.../माईन माईन.../वैष्णवजन...)

जगत दिवाकर जगत कृपानिधि, वाहला मारा! समवसरणमां बेठां रे;
चौमुख चउविह धर्म प्रकाशे, ते में नयणे दीठा रे.
भविक जन हरखो रे, निरखी शांति जिणंद;
उपशम रसनो कंद, नहि ईण सरखो रे. ॥१॥
प्रातिहार्य अतिशय शोभा, वा०मा० ते तो कहिय न जावे रे;
घूक बालकथी रवि कर भरनुं, वर्णन किणु पर थावे रे. भ०॥२॥
वाणी गुण पांत्रीश अनोपम, वा०मा० अविसंवाद सरूपे रे;
भवदुःख वारण शिवसुख कारण, शुद्ध धर्म प्ररूपे रे. भ०॥३॥
दक्षिण पश्चिम उत्तर दिशिमुख, वा०मा० ठवणा जिन उपगारी रे;
तसु आलंबन लहिय अनेके, तिहां थया समकित धारी रे. भ०॥४॥
षट् नय कारज रूपे ठवणा, वा०मा० सग नय कारण ठाणी रे;
निमित्त समान थापना जिनजी, ए आगमनी वाणी रे. भ०॥५॥
साधक तीन निक्षेपा मुख्य, वा०मा० जे विणु भाव न लहिये रे;
उपगारी दुग भाष्ये भाख्या, भाव वंदकनो ग्रहीये रे. भ०॥६॥
ठवणा समवसरणे जिन सेंती, वा०मा० जो अभेदता वाधी रे;
ए आत्माना स्व स्वभाव गुण, व्यक्त योग्यता साधी रे. भ०॥७॥
भलुं थयुं में प्रभु गुण गाया, वा०मा० रसनानो रस लीधो रे;
'**देवचंद्र**' कहे माहरा मननो, सकळ मनोरथ सिधो रे. भ०॥८॥



(५) तार मुज तार मुज तार...

(रागः ऋषभ जिनराज मुज.../जय गणेश(२) देवा...)

तार मुज तार मुज तार जिनराज तुं,
आज में तोहि देदार पायो;
सकल संपत्ति मळ्यो आज शुभदिन वळ्यो,
सुरमणि आज अणचिंत पायो. ॥१॥
ताहरी आण हुं शेष परे शिर वहुं,
निरवहुं भवभवे चित्त शुद्धे;
भमतां भवकानने सुरतरुनी परे,
तुं प्रभु! ओळख्यो देव बुद्धे. ॥२॥
अथिर संसारमां सार तुज सेवना,
देवना देव! तुज सेव सारे;
शत्रु ने मित्र सम भावे बेहु गणे,
भक्तवत्सल सदा बिरुद धारे. ॥३॥
ताहरा चित्तमां दास बुद्धे सदा,
हुं वसुं एहवी वात दूरे;
पण मुज चित्तमां तुंहि जो नित वसे,
तो किशुं कीजिये मोह शूरे? ॥४॥
तुं कृपाकुंभ गतदंभ भगवंत! तुं,
सकल भविलोकने सिद्धिदाता;
त्राण मुज प्राण मुज शरण आधार तुं,
तुं सखा मात ने तात भ्राता. ॥५॥
आतमराम अभिराम अभिधान तुज,
समरतां दासना दुरित जावे;
तुज वदन चंद्रमा निशदिन पेखतां,
नयन चकोर आनंद पावे. ॥६॥

श्री विश्वसेनकुल कमल दिनकर जिश्यो,
मन वस्यो मात अचिरा मल्हायो;
शान्ति जिनराज! शिरताज दातारमां,
अभयदानी शिरे जग सवायो. ॥७॥
लाज जिनराज! अब दासनी तो शिरे,
अवसरे मोहश्युं लाज पावे;
पंडितराय कवि धीरविमल तणो,
शिष्य गुण '**ज्ञानविमलादि**' गावे. ॥८॥

(९) तुं पारंगत तुं परमेश्वर...

(राग : अंतरजामी सुण अलवेसर.../
तारी मूरतिए मन.../ सावन बरसे.../मेरे नयणां...)

तुं पारंगत तुं परमेश्वर, वाला मारा तुं परमारथ वेदी रे;
तुं परमातम तुं पुरुषोत्तम, तुंहि अछेदी अवेदी रे,मनना मोहनिया;
ताहरी कीकी कामणगारी रे, जगना सोहनिया. ॥१॥
योगी अयोगी भोगी अभोगी, वा० तुंहि ज कामी अकामी रे;
तुंहि अनाथ नाथ सहु जगनो, आतम संपद रामी रे. ॥२॥
एक असंख्य अनंत अनुचर, वा० अकल सकल अविनाशी रे;
अरस अवर्ण अगंध अफरसी, तुं हि अपाशी अनाशी रे. ॥३॥
मुख पंकज भ्रमरी परे अमरी, वा० तुं हि सदा ब्रह्मचारी रे;
समवसरण लीला अधिकारी, तुं हि ज संयमधारी रे. ॥४॥
अचिरानंदन अचरिज एही, वा० कहणीमांहि न आवे रे;
'**क्षमाविजय**' जिन वयण सुधारस, पीवे तेहि ज पावे रे. ॥५॥



(७) धन दिन वेळा धन घडी तेह...

(राग : धन्य धन्य बनावीश.../आशावरी...)

धन दिन वेळा, धन घडी तेह, अचिरारो नंदन, जिन जदि भेटशुं जी;
लहीशुं रे सुख, देखी मुखचंद,विरह व्यथानां, दुःख सवि मेटशुं जी. ॥१॥
जाण्यो रे जेणे, तुज गुण लेश, बीजा रे रस, तेहने मन नवि गमेजी;
चाख्यो रे जेणे, अमी लवलेश,बाकस बुकस, तस न रुचे किमेजी. ॥२॥
तुज समकित, रस स्वादनो जाण, पाप कुभक्ते, बहु दिन सेवियुंजी;
सेवे जो, कर्मने योगे तोहि, वांछे ते समकित, अमृत धुरे लिख्युंजी. ॥३॥
ताहरुं ध्यान, ते समकित रूप, तेही ज ज्ञान, ने चारित्र तेह छे जी;
तेहथी रे जाये, सघळां हो पाप, ध्याता रे ध्येय, स्वरूप होये पछेजी. ॥४॥
देखी रे अद्भुत, ताहरुं रूप, अचरिज भविक, अरूपी पद वरेजी;
ताहरी गत, तुं जाणे हो देव, समरण भजन, ते '**वाचक यश**' करेजी. ॥५॥



(८) मारो मुजरो ल्योने राज...

(राग : राजुलने नेम.../मेरे नैना सावन भादो.../गरबा...)

मारो मुजरो ल्योने राज! साहिब! शांति! सलूणा!
अचिराजीना नंदन तोरे, दरिशण हेते आव्यो;
समकित रीझ करोने स्वामी, भक्ति भेटणुं लाव्यो. ॥१॥
दुःखभंजन छे बिरुद तमारुं, अमने आशा तुमारी;
तुमे निरागी थईने छूटो, शी गति होशे अमारी? ॥२॥
कहेशे लोक न ताणी कहेवुं, एवडुं स्वामी आगे;
पण बाळक जो बोली न जाणे, तो किम व्हालो लागे? ॥३॥
मारे तो तुं समरथ साहिब, तो किम ओछुं मानुं?
चिंतामणि जेणे गांठे बांध्युं, तेहने काम किश्यानुं? ॥४॥
अध्यातम रवि ऊग्यो मुज घट, मोह तिमिर हर्युं जुगते;
विमलविजय वाचकनो सेवक, '**राम**' कहे शुभ भगते. ॥५॥

(९) शांति जिन एक मुज विनती...



(राग : चेतन ज्ञान अजवाळीए.../काफी.../
ऊंचा-ऊंचा.../वैष्णवजन.../होंशवालो को...)

शांति जिन एक मुज विनती, सुणो त्रिभुवनराय रे;
शांति सरूप किम जाणीये, कहो मन किम परखाय रे. ॥१॥
धन्य तुं आतम जेहने, एहवो प्रश्न अवकाश रे;
धीरज मन धरी सांभळो, कहुं शांति प्रतिभास रे. ॥२॥
भाव अविशुद्ध सविशुद्ध जे, कह्या जिनवर देव रे;
ते तिम अवितथ सद्दहे, प्रथम ए शांति पद सेव रे. ॥३॥
आगमधर गुरु समकिती, क्रिया संवर सार रे;
संप्रदायी अवंचक सदा, सूचि अनुभव धार रे. ॥४॥
शुद्ध अवलंबन आदरे, तजी अवर जंजाळ रे;
तामसी वृत्ति सवि परिहरी, भजे सात्त्विकी साल रे. ॥५॥
फळ विसंवाद जेहमां नहीं, शब्द ते अर्थ संबंधि रे;
सकळ नयवाद व्यापी रह्यो, ते शिव साधन संधि रे. ॥६॥
विधि प्रतिषेध करी आतमा, पदारथ अविरोध रे;
ग्रहणविधि महाजने परिग्रह्यो, इश्यो आगम बोध रे. ॥७॥
दुष्ट जन संगति परिहरी, भजे सुगुरु संतान रे;
जोग सामर्थ्य चित्त भाव जे, धरे मुगति निदान रे. ॥८॥
मान अपमान चित्त सम गणे, सम गणे कनक पाषाण रे;
वंदक निंदक सम गणे, इसो होय तुं जाण रे. ॥९॥
सर्व जग जंतुने सम गणे, सम गणे तृणमणि भाव रे;
मुगति संसार बिहु सम गणे, मुणे भव जलनिधि नाव रे. ॥१०॥
आपणो आतम भाव जे, एक चेतनाधार रे;
अवर सवि साथ संयोगथी, एह निज परिकर सार रे. ॥११॥

प्रभु मुखथी इम सांभळी, कहे आतमराम रे;
ताहरे दरिशणे निस्तर्यो, मुज सिध्यां सवि काम रे. ॥१२॥
अहो अहो हुं मुजने कहुं,नमो मुज नमो मुज रे;
अमितफळ दान दातारनी, जेहने भेट थई तुज रे. ॥१३॥
शांति सरूप संक्षेपथी, कह्यो निज पर रूप रे;
आगममांहि विस्तर घणो, कह्यो शांति जिन भूप रे. ॥१४॥
शांति सरूप इम भावशे, धरी शुद्ध प्रणिधान रे;
'**आनंदघन**' पद पामशे, ते लहिशे बहुमान रे. ॥१५॥

(९०) शांति जिनेश्वर साचो साहिब...

(राग : आज मारा प्रभुजी.../कोयल टहुंकी.../
तुं प्रभु मारो.../आंख मारी उघडे...)

शांति जिनेश्वर साचो साहिब, शांतिकरण ईण कलि में हो जिनजी!
तुं मेरा मन में तुं मेरा दिल में, ध्यान धरुं पलपल में. ॥१ ॥
भवमां भमतां में दरिशन पायो, आशा पूरो एक पल में. ॥२॥
निर्मल ज्योत वदन पर सोहे, निकस्यो ज्युं चंद बादल में. ॥३॥
मेरो मन तुम साथे लीनो, मीन वसे ज्युं जल में. ॥४॥
'**जिनरंग**' कहे प्रभु शांति जिनेश्वर,दीठोजी देव सकल में. ॥५॥

(९१) शांति जिनेश्वर साहिबा रे...

(राग : मेरा जीवन.../ऊंचा ऊंचा.../चांदी की दिवार.../
आंख मारी उघडे.../राधा जेवा...)

शांति जिनेश्वर साहिबा रे, शांति तणा दातार;
अंतरजामी छो माहरा रे, आतमना आधार. शांति०॥१॥
चित्त चाहे प्रभु चाकरी रे, मन चाहे मळवाने काज;
नयन चाहे प्रभु निरखवा रे, द्यो दरिशन महाराज. शांति०॥२॥

पलक न विसरो मन थकी रे, जिम मोरा मन मेह;
एक पखो केम राखीये रे, राज कपटनो नेह. शांति०॥३॥
नेह नजर निहाळतां रे, वाधे बमणो वान;
अखूट खजानो प्रभु ताहरो रे, दीजीए वांछित दान. शांति०॥४॥
आश करे जे कोई आपणी रे, नवि मूकीए निराश;
सेवक जाणीने आपणो रे, दीजीए तास दिलास. शांति०॥५॥
दायकने देतां थकां रे, क्षण नवि लागे वार;
काज सरे निज दासनां रे, ए मोटो उपकार. शांति०॥६॥
एवुं जाणीने जगधणी रे, दिलमां हि धरजो प्यार;
'**रूपविजय**' कविरायनो रे, मोहन जयजयकार. शांति०॥७॥

(१२) शांति! तेरे लोचन है अणियारे...

(राग : पायोजी मैंने.../
अब हम अमर भये.../अखियां दरिशन की है...)

शांति! तेरे लोचन है अणियारे...शांति! तेरे लोचन..
कमल ज्युं सुंदर मीन ज्युं चंचल, मधुकर से अतिकारे. ॥१॥
जाकी मनोहरता जित वन में, फिरते हरिण बिचारे. ॥२॥
चतुर चकोर पराभव निरखत, बहुरे चुगत अंगारे. ॥३॥
उपशम रस के अजब कटोरे, मानुं विरंचि संभारे. ॥४॥
कीर्तिविजय वाचक '**विनयी**', कहे मुजको अति प्यारे. ॥५॥

(१३) श्री शांति जिनेश्वर दीठो रे...

(राग : ए मेरे वतन के.../एक प्यार का.../प्रभु पार्श्वनुं...)

श्री शांति जिनेश्वर दीठो रे, मारा मनमां लाग्यो मीठो रे;
आज मुखडुं एनुं जोतां रे, मारा नयन थयां पनोता रे. ॥१॥
जे नजर मांडी एने जोशे रे, ते तो भवनी भावठ खोशे रे;
एनुं रूप जोई जे जाणे रे, तेहने सुरनर सहु वखाणे रे. ॥२॥

ए तो साहिब छे सयाणो रे, मने लागे एहशुं तानो रे;
ए तो शिवसुंदरीनो रसीयो रे, मारा नयणा मांहे वसीयो रे. ॥३॥
में तो सगपण एहशुं कीधुं रे, हवे सघळुं कारज सिध्युं रे;
ए तो जीवन अंतरजामी रे, निरंजन ए बहु नामी रे. ॥४॥
घणुं शुं एहने वखाणुं रे, हुं तो जीवना जीवन जाणुं रे;
घणुं जे एहने मलशे रे, ते तो माणसमांथी टळशे रे. ॥५॥
मनडां जेणे एहशुं मांड्यां रे, तेणे ऋद्धिवंत घर छांड्या रे;
आगे जेणे एह उपास्या रे, तेणे शिवसुख करतल वास्या रे. ॥६॥
आशिक जे एहना थाये रे, तेणे संसारमां न रहेवाशे रे;
गुण एहना जे घणा गाशे रे, ते तो आखर निर्मळ थाशे रे. ॥७॥
में तो मांडी एहशुं माया रे, मने न गमे बीजानी छाया रे;
वाचक '**उदयरत्न**' एम बोले रे, कोई न आवे एहने तोले रे. ॥८॥

(१४) सुणो शांति जिणंद! सोभागी...

(राग : यह है पावन भूमि.../नित्य समरुं साहिब.../
ए मेरे वतन के.../रुडा राजमहेलने...)

सुणो शांति जिणंद! सोभागी, हुं तो थयो छुं तुम गुणरागी;
तुमे निरागी भगवंत, जोतां किम मळशे तंत. सुणो०॥१॥
हुं तो क्रोध कषायनो भरियो, तुं तो उपशम रसनो दरियो;
हुं तो अज्ञाने आवरियो, तुं तो केवळ-कमला वरियो. सुणो०॥२॥
हुं तो विषया रसनो आशी, तें तो विषया कीधी निराशी;
हुं तो कर्मना भारे भरीयो, तें तो प्रभुजी भार उतार्यो. सुणो०॥३॥
हुं तो मोह तणे वश पडियो, तें तो सबळा मोहने हणियो;
हुं तो भवसमुद्रमां खूंच्यो, तुं तो शिवमंदिरमां पहोंच्यो. सुणो०॥४॥
मारे जन्ममरणनो जोरो, तें तो तोड्यो तेहनो दोरो;
मारो पासो न मेले राग, तमे प्रभुजी थया वीतराग. सुणो०॥५॥

मने माया ए मूक्यो पाशी, तुं तो निर्बंधन अविनाशी;
हुं तो समकितथी अधूरो, तुं तो सकल पदारथे पूरो. सुणो०॥६॥
मारे तो छे प्रभु तुं ही एक, तारे मुज सरीखा अनेक;
हुं तो मनथी न मुकूं मान, तुं तो मानरहित भगवान. सुणो०॥७॥
मारुं कीधुं कशुं नवि थाय, तुं तो रंकने करे छे राय;
एक करो मुज महेरबानी, मारो मुजरो लेजो मानी. सुणो०॥८॥
एक वार जो नजरे नीरखो, तो करो मुजने तुम सरीखो;
जो सेवक तुम सरीखो थाशे, तो गुण तमारा गाशे. सुणो०॥९॥
भवोभव तुम चरणोनी सेवा, हुं तो मांगु छुं देवाधिदेवा;
सामुं जुओने सेवक जाणी, एवी '**उदयरत्न**'नी वाणी. सुणो०॥१०॥

(९५) सुणो शांति जिनेश्वर साहिबा...

(राग : विनंति कैसे.../दोषथी हर्योभर्यो.../
सोनाना पारणीये.../वैष्णवजन...)

सुणो शांति जिनेश्वर साहिबा, सुखकार करुणासिंधु रे;
प्रभु तुम सम को दाता नहि, निष्कारण त्रिभुवन बंधु रे. ॥१॥
जस नामे अक्षय संपद होवे, वळी आधि तणी होये शांति;
दुःख दुरित उपद्रव सवि मीटे, भांजे मिथ्यामति भ्रांति रे. ॥२॥
तुं राग रहित पण रीझवे, सवि सज्जन केरा चित्त रे;
निर्द्रव्य अने परमेश्वर, विण नेहे तुं जगमित रे. ॥३॥
तुं चक्री भवचक्रनो रे, संबंध न कोई कीध रे;
तुं तो भोगी योगी दाखीयो, सहेजे समतारस सिद्ध रे. ॥४॥
विण तेड्यो नित्य सहाय छे, तुज लोकोत्तर आचार रे;
कहे '**ज्ञानविमल**' गुण ताहरा, लहिये गणवे किम पार रे. ॥५॥



(१६) हम मगन भये प्रभु ध्यान में....

(राग : मालकौंश.../ मन तडपत हरि.../ मैली चादर...)

हम मगन भये प्रभु ध्यान में...
बिसर गई दुविधा तन मन की, अचिरासुत गुणगान में; ॥१॥
हरि हर ब्रह्मा पुरंदर की ऋद्धि, आवत नहि कोउ मान में;
चिदानंद की मोज मची है, समतारस के पान में. ॥२॥
ईतने दिन तुम नाहि पिछान्यो, मेरो जन्म गयो अजान में;
अब तो अधिकारी होई बेठे, प्रभु गुण अखय खजान में. ॥३॥
गई दीनता सबही हमारी, प्रभु तुज समकित दान में;
प्रभु गुण अनुभव रस के आगे, आवत नहि कोउ मान में. ॥४॥
जिनहि पाया तिनहि छिपाया, न कहे कोउ के कान में;
तारी लागी जब अनुभव की, तब समजे सहुं सान में. ॥५॥
प्रभु गुण अनुभव चंद्रहास ज्युं, सो तो न रहे म्यान में;
'वाचक यश' कहे मोह महा अरि, जीत लीयो है मैदान में. ॥६॥



थोय

(१)

वंदो जिन शांति, जास सोवन कांति,
टाळे भवभ्रांति, मोह मिथ्यात्व शांति;
द्रव्य भाव अरि पांति,तास करतां निकांति,
धरता मन खांति, शोक संताप वांति. ॥१॥
दोय जिनवर नीला, दोय धोळा सुशीला,
दोय रक्त रंगीला, काढतां कर्म कीला;
न करे कोई हीला, दोय श्याम सलीला,
सोळ स्वामीजी पीला, आपजो मोक्षलीला. ॥२॥

जिनवरनी वाणी, मोहवल्ली कृपाणी,
सूत्रे देवाणी, साधुने योग्य जाणी;
अर्थे गूंथाणी, देव मनुष्य प्राणी,
प्रणमो हित आणी, मोक्षनी ए निशाणी. ॥३॥
वाघेश्वरी देवी, हर्ष हियडे धरेवी,
जिनवर पय सेवी, सार श्रद्धा वरेवी;
जे नित्य समरेवी, दुःख तेहना हरेवी,
'**पद्मविजय**' कहेवी, भव्य संताप खेवी. ॥४॥

(२)

सकल-कुशल-वल्ली पुष्करावर्त-मेघो,
मदन-सदृश-रूपः पूर्णरा-केन्दु-वक्त्रः ।
प्रथयतु मृग लक्ष्मा शान्तिनाथो जनानां,
प्रसुत-भुवन-कीर्तिः-कामितं क्रम-कान्तिः ॥ ॥१॥
जिन-पति-समुदायो दायको-भीप्सि-तानां
दुरित-तिमिर-भानुः कल्प-वृक्षो-पमानः ।
रचयतु शिव-शान्तिं प्राति-हार्य-श्रियं यो,
विकट-विषम-भूमी-जात-दर्त्तिं बिभर्त्ति ॥ ॥२॥
प्रथयतु भविकानां ज्ञान-सम्पत्-समूहं,
समय ईह जगत्या-माप्त-वक्त्र-प्रसूतः ।
भव-जल-निधि-पोतः सर्व सम्पत्ति-हेतुः,
प्रथित-घन-घटायां सूर्य-कान्त-प्रकाशः ॥ ॥३॥
जय-विजय-मनीषा-मन्दिरं ब्रह्म-शान्तिः,
सुर-गिरि-सम-धीरः पूजितो न्यक्ष-यक्षैः ।
हरतु-सकल-विध्नं यो जनैश्चिन्त्य-मानः,
स भवतु सततं वः श्रेयसे शान्तिनाथः ॥ ॥४॥

श्री कुंथुनाथ भगवान

चैत्यवंदन

(१) कुंथुनाथ कामित दीये...

कुंथुनाथ कामित दीये, गजपुरनो राय;
सिरि माता उरे अवतर्यो, सुर नरपति ताय. ॥१॥
काया पांत्रीस धनुष्यनी, लंछन जस छाग;
केवलज्ञानादिक गुणो, प्रणमो धरी राग. ॥२॥
सहस पंचाणुं वरसनुं ए, पाली उत्तम आय;
'**पद्मविजय**' कहे प्रणमीये, भावे श्री जिनराय. ॥३॥

स्तवन

(१) कुंथु जिनेश्वर जाणजो रे लाल...

(राग : एक दिन पुंडरीक गणधरुं.../शांति जिनेश्वर साचो...)

कुंथु जिनेश्वर जाणजो रे लाल, मुज मननो अभिप्राय रे; जिनेश्वर मोरा
तुं आतम अलवेसरु रे लाल, रखे तुज विरहो थाय रे; जि०
तुज विरहो केम वेठीये रे,
तुज विरहो दुःखदाय रे जि०, तुज विरहो न खमाय रे;
खिण वरसा सो थाय रे जि०, विरहो ते मोटी बलाय रे. जि०॥१॥
ताहरी पासे आववुं रे लाल, पहेला न आवे तुं दाय; जि०
आव्या पछी तो जायवुं रे लाल, तुज गुण वशे न सुहाय रे. जि०॥२॥
न मळ्यानो धोखो नहीं रे लाल, जस गुणनुं नहिं नाण रे; जि०
मिलिया गुण कलीया पछी रे लाल, बिछुरत जाये प्राण रे. जि०॥३॥

जाति अंधने दुःख नहीं रे लाल, न लहे नयननो स्वाद रे; जि०
नयन स्वाद लही करी रे लाल, हार्याने विखवाद रे. जि० ॥४॥
बीजे पण कीहां नवि गमे रे लाल, जिणे तुम विरहे बचाय रे; जि०
मालती कुसुमे मालीयो रे लाल, मधुप करीरे न जाय रे. जि० ॥५॥
वन दव दाधां रुखडां रे लाल, पल्लवे वळी वरसाद रे; जि०
तुज विरहानलनो बळ्यां रे लाल, काल अनंत गमात रे. जि० ॥६॥
टाढक रहे तुज संगमें रे लाल, आकुळता मीटी जाय रे; जि०
तुज संगे सुखीयो सदा रे लाल, '**मानविजय**' उवज्झाय रे जि०॥७॥

(२) कुंथु जिनेश्वर साचो देव...

(राग : आज मारा प्रभुजी.../शांति जिनेश्वर साचो.../
रघुपति राघव.../आणी शुद्ध मन...)

कुंथु जिनेश्वर साचो देव, चोसठ इन्द्र करे जस सेव;
तुं साहिब जगनो आधार, भव भमतां मुज नाव्यो पार;
साहिब सांभळो! (२) कहुं छुं मुज मननी वात. ॥१॥
प्रशंसा उपर मुज रीझ, निंदा करे ते उपर खीज;
ए बे तुमने छे समभाव, ते मांगु छुं पामी दाव. ॥२॥
पुद्गल पामी राचु रे हुं, ते नवि इच्छे प्रभुजी तुं;
ए गुण मोटो छे तुम पास, ते देतां सुखीयो होय दास. ॥३॥
विषय वयरी संतापे जोर, कामे वाह्यो फरुं जिम ढोर;
वळी वळी दुःख दीये चार चोर, तुम विना कुण आगे करुं शोर. ॥४॥
तुमथी भाग्या लाग्या मुज केड, चिहुंगतिनी करावे खेड;
जाणी तुमारो दे मुज ने मार, तो किम न करो प्रभुजी सार. ॥५॥
सेवक सन्मुख जुओ एकवार, तो ते ऊभा न रहे लगार;
मोटानी मीटे काम थाय, तरणि तेजे तिमिर पलाय. ॥६॥

करुणावंत अनंतबळ धणी, वार न लागे तने तारवा भणी;
श्री गुरु खीमाविजयनो सीस, '**जश**' प्रेमे प्रणमे निशदिश. ॥७॥



(3) कुंथु जिनेश्वर साहिब विनंती रे...

(राग : फूल तुम्हे भेजा.../ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम.../
वैष्णवजन.../होंशवालों को...)

कुंथु जिनेश्वर साहिब विनंती रे, अवधारो अरिहंत;
प्रभुशुं प्रीति अछे मुजने घणी रे, ते निरवहीये संत. ॥१॥
महीमंडलमां देव अछे घणां रे, हुं न करुं तस सेव;
तुज विण अवर न कदीये ओलगुं रे, तुं मुज एक ज देव. ॥२॥
अवर न सेवुं कंईये देवता रे, तुम विण दीनदयाळ;
जलधर जल विण अवर न आदरे रे, जिम जगे चातक बाल. ॥३॥
अंगीकृत जो निरवाहो प्रभु रे, तो पूरो मननी आश;
दास तणी ए आशा पूरतां रे, साहिबने शाबाश. ॥४॥
निशदिन भावे साहिब सेवतां रे, जो नहि पूरो आश;
तो ए जगमां प्रभुजी तुम तणो रे, कुण करशे विश्वास. ॥५॥
मोटा निश्चय आशा पूरवे रे, जो सेवे धरी नेह;
जुओ ए जगमां चातक बालनी रे, पूरे आशा मेह. ॥६॥
ईम जाणी साहिब पूरवी रे, निज सेवकनी आश;
'**नयविजय**' कहे तुम चरणांबुजे रे, देजो अविचल वास. ॥७॥

(४) ज्ञानी विण किण आगळ कहीए...

(राग : सोरठ.../ ए मेरे प्यारे वतन.../संयम जीवननो...)

ज्ञानी विण किण आगळ कहीए, मन की मन में जाणी रहीए. ॥१॥
भूंडी लागे जण-जण आगे, कहेतां कांई न वेदन भागे हो. ॥२॥
अपनो भरम गमावे साजन, परजन काम न आवे हो. ॥३॥

दुर्जन होई सुपरे करे हासा, जाणी पड्या मुंह-मांग्या पासा हो. ॥४॥
ताथे मौन भलुं मन आणी, धरी मन धीर रहे निज पाणी हो. ॥५॥
कहे '**जिनहर्ष**' कहेजो प्राणी, कुंथु जिणंद आगे कहेवाणी हो. ॥६॥

(५) मनडुं किमहि न बाजे हो कुंथुजिन...

(राग : जिन तेरे.../पार्श्व चिंतामणी मेरो.../
अब मोहे ऐसी.../ऋषभ जिनेश्वर.../केसरीयो रंग तने...)

मनडुं किमहि न बाजे हो कुंथुजिन! मनडुं किमहि न बाजे;
जिम जिम जतन करीने राखुं, तिम तिम अळगुं भांजे. हो०॥१॥
रजनी वासर वसति उज्जड, गयण पायाले जाय;
साप खाय ने मुखडुं थोथुं, एह उखाणो न्याय. हो०॥२॥
मुगति तणा अभिलाषी तपिया, ज्ञान ने ध्यान अभ्यासे;
वैरिडुं कांई एहवुं चिंते, नांखे अवळे पासे. हो०॥३॥
आगम आगमधरने हाथे, नावे किणविध आंकु;
किहां कने जो हठ करी अटकुं, तो व्यालतणी परे वांकुं. हो०॥४॥
जो ठग कहुं तो ठगतो न देखुं, शाहुकार पण नाहि;
सर्वमांहे ने सहुथी अळगुं, ए अचरिज मनमांहि. हो०॥५॥
जे जे कहुं ते कान न धारे, आप मते रहे कालो;
सुर नर पंडित जन समजावे, समजे न माहरो सालो. हो०॥६॥
में जाण्युं ए लिंग नपुंसक, सकळ मरदने ठेले;
बीजी वाते समरथ छे नर, एहने कोई न झेले. हो०॥७॥
मन साध्युं तेणे सघळुं साध्युं, एह वात नहि खोटी;
एम कहे साध्युं ते नवि मानुं, एक ही वात छे मोटी. हो०॥८॥
मनडुं दुराराध्य ते वश आण्युं, ते आगमथी मति आणुं;
'**आनंदघन**' प्रभु माहरुं आणुं, तो साचुं करी जाणुं. हो०॥९॥

(६) समवसरण बेसी करी रे...

(राग : ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम.../वैष्णवजन...)

समवसरण बेसी करी रे, बारह परषदामांहि,
वस्तु स्वरूप प्रकाशता रे, करुणाकर जगनाहो रे;
निर्मल तुज मुखवाणी रे, जे श्रवणे सुणे,
तेहि ज गुणमणि खाणी रे, कुंथुं जिनेसरु रे. कुंथु०॥१॥
गुणपर्याय अनंतता रे, वळी स्वभाव अगाह;
नय गम भंग निक्षेपना रे, हेय आदेय प्रवाहो रे. कुंथु०॥२॥
कुंथुनाथ प्रभु देशना रे, साधन साधक सिद्ध;
गौण मुख्यता वचनमां रे, ज्ञान ते सकल समृद्धो रे. कुंथु०॥३॥
वस्तु अनंत स्वभाव छे रे, अनंत कथक तसु नाम;
ग्राहक अवसर बोधथी रे, कहवे अर्पित कामो रे. कुंथु०॥४॥
शेष अनर्पित धर्मने रे, सापेक्ष श्रद्धा बोध;
उभय रहित भासन होवे रे, प्रगटे केवल बोधो रे. कुंथु०॥५॥
छती परिणति गुण वर्तना रे, भासन भोग आनंद;
सम काळे प्रभु ताहरे रे, रम्य रमण गुणवृंदो रे. कुंथु०॥६॥
निज भावे सिय अस्तिता रे, पर नास्तित्व स्वभाव;
अस्तिपणे ते नास्तिता रे, सिय ते उभय स्वभावो रे. कुंथु०॥७॥
अस्ति स्वभाव जे आपणो रे, रुचि वैराग्य समेत;
प्रभु सन्मुख वंदन करी रे, मांगीश आतम हेतो रे. कुंथु०॥८॥
अस्ति स्वभाव जे रुचि थई रे, ध्यातो अस्ति स्वभाव;
'**देवचंद्र**' पद ते लहे रे, परमानंद जमावो रे. कुंथु०॥९॥



(७) साहेलां हे कुंथु जिनेश्वर देव!

(रागः तारी प्रीतिनी केवी असर../ साहेलां रे../जी रे म्हारे../अपूर्व अवसर..)

साहेलां हे कुंथु जिनेश्वर! देव,
रत्नदीपक अति दीपतो हो लाल;
साहेलां हे मुज मनमांहे,
आवे जो अरिबल जीपतो हो लाल. सा०॥१॥

साहेलां हे मीटे तो मोह अंधकार,
अनुभव तेजे झळहळे हो लाल;
साहेलां हे धूम कषाय न रखे,
चरण चित्रामण नवि चले हो लाल. सा०॥२॥

साहेलां हे पात्र करे नहि हेठ,
सूरज तेजे नवि छीपे हो लाल;
साहेलां हे सर्व तेजनुं तेज,
पहेलांथी वाधे पछे हो लाल. सा०॥३॥

साहेलां हे जेह न समीरने गम्य,
चंचलता जे नवि लहे हो लाल;
साहेलां हे जे सदा छे रम्य,
पुष्ट गुणे नवि कृश रहे हो लाल. सा०॥४॥

साहेलां हे पुद्गल तेल न खेप,
जेह न शुद्ध दशा दहे रे लाल;
साहेलां हे श्री नयविजय सुशिष्य,
'**वाचक यश**' एणी पेरे कहे रे लाल. सा०॥५॥

थोय

कुंथुजिन नाथ, जे करे छे सनाथ, तारे भवपाथ, जे ग्रही भव्य हाथ;
एहनो तजे साथ, बावळ दीए बाथ, तरे सुरनर साथ, जे सुणे एक गाथ.

श्री अरनाथ भगवान

चैत्यवंदन

(१) नागपुरे अर जिनवरुं...

नागपुरे अर जिनवरुं, सुदर्शन नृप नंद;
देवी माता जनमीयो, भविजन सुखकंद. ॥१॥
लंछन नंदावर्त्तनुं, काया धनुष त्रीश;
सहस चोराशी वरसनुं, आयु जास जगीश. ॥२॥
अरुज अजर अर जिनवरुं ए, पाम्यो उत्तम ठाण;
तस पद '**पद्म**' आलंबतां, लहीये पद निरवाण. ॥३॥

स्तवन

(१) अरनाथकुं सदा मोरी वंदना...

(राग : वंदना वंदना वंदना रे.../सिद्धाचल शिखरे...)

वंदना वंदना वंदना रे, अरनाथकुं सदा मोरी वंदना रे..!
वंदना ते पापनिकंदना रे, जगनाथकुं सदा मोरी वंदना रे. ॥१॥
जग उपकारी घन ज्यों वरसे, वाणी शीतल चंदना रे. ॥२॥
रूपे रंभा राणी श्रीदेवी, भूप सुदर्शन नंदना रे. ॥३॥
भावभगतिशुं अहनिश सेवे, दुरित हरे भवफंदना रे. ॥४॥
छ खंड साधी भीती द्विधा कीधी, दुर्जय शत्रु निकंदना रे. ॥५॥
'**न्यायसागर**' प्रभु सेवा मेवा, मागे परमानंदना रे. ॥६॥

(२) अर जिनवर दीये देशना...

(रागः संभव जिनवर विनती.../गिरूआ रे गुण तुम तणा...)

अर जिनवर दीये देशना, सांभळजो भवि प्राणी रे;
मीठी सुधारस सारिखी, सुणीये अनुभव आणी रे. अर०॥१॥
आळस मोह अज्ञानता, विषय प्रमादने छंडी रे;
तन्मय त्रिकरण जोगशुं, धरम सुणो चित्त मंडी रे. अर०॥२॥
दश दृष्टांते दोहिलो, नरभवनो अवतार रे;
सुरमणि सुरघट सुरतरू, तेहथी अधिको धार रे. अर०॥३॥
एक असार संसारमां, भमीयो चेतन एह रे;
धर्मे वरजीत दिन गया, हजीय न आव्यो छेह रे. अर०॥४॥
ज्ञान दर्शनमय आतमा, कर्म पंके अवराणो रे;
शुद्ध दशा निज हारीने, अतिशय दोष भराणो रे. अर०॥५॥
दोष अनादिथी उद्धरे, जैन धर्म जग सार रे;
सकल नये जो आदरे, तो होय भवोदधि पार रे. अर०॥६॥
जिन आणा जे आराधता, विधिपूर्वक उजमाळ रे;
साधे ते संवर निर्जरा, पामे मंगळ माळ रे. अर०॥७॥
चक्री भरते सातमो, अढारमो जिनराय रे;
उत्तमविजय कविराजनो, '**रतनविजय**' गुण गाय रे. अर०॥८॥

(3) धरम परम अरनाथनो...

(राग : फूल तुम्हें भेजा.../ऊंचा-ऊंचा.../
वीर मारो आधार हतो...)

धरम परम अरनाथनो, किम जाणुं भगवंत रे;
स्व-पर समय समजावीयें, महिमावंत महंत रे. धरम०॥१॥
शुद्धातम अनुभव सदा, स्वसमय एह विलास रे;
परतणी छांयडी जिहां पडे, ते पर समय निवास रे. धरम०॥२॥

तारा नक्षत्र ग्रह चंद्रनी, ज्योति दिनेश मोझार रे;
दर्शन ज्ञान चरण थकी, शक्ति निजातम धार रे. धरम०॥३॥
भारी पीळो चीकणो, कनक अनेक तरंग रे;
पर्याय दृष्टि न दीजीये, एक ज कनक अभंग रे. धरम०॥४॥
दर्शन ज्ञान चरण थकी, अलख सरूप अनेक रे;
निर्विकल्प रस पीजीये, शुद्ध निरंजन एक रे. धरम०॥५॥
परमारथ पंथ जे कहे, ते रंजे एक तंत रे;
व्यवहारे लख जे रहे, तेहना भेद अनंत रे. धरम०॥६॥
व्यवहारे लखवो दोहीलो, कांई न आवे हाथ रे;
शुद्ध नय थापना सेवतां, नवि रहे दुविधा साथ रे. धरम०॥७॥
एक पखी लख प्रीतनी, तुम साथे जगनाथ रे;
कृपा करीने राखजो, चरण तले ग्रही हाथ रे. धरम०॥८॥
चक्री धरम तीरथ तणो, तीरथफळ ततसार रे;
तीरथ सेवे ते लहें, '**आनंदघन**' निरधार रे. धरम०॥९॥

(४) प्रणमो श्री अरनाथ...

(राग : ए मेरे वतन.../कडवां फळ छे.../निरख्यो नेमि...)

प्रणमो श्री अरनाथ, शिवपुर साथ खरोरी;
त्रिभुवन जन आधार, भवनिस्तार करोरी. ॥१॥
कर्ता कारण योग, कार्यसिद्धि लहेरी;
कारण चार अनूप, कार्यथी तेह ग्रहेरी. ॥२॥
जे कारण ते कार्य, थाये पूर्ण पदेरी;
उपादान ते हेतु, माटी घट ते वदेरी. ॥३॥
उपादानथी भिन्न, जे विणु कार्य न थाये;
न हुवे कार्य रूप, कर्ताने व्यवसाये. ॥४॥

कारण तेह निमित्त, चक्रादिक घट भावे;
कारज तथा समवाय, कारण नियतने दावे. ॥५॥
वस्तु अभेद सरूप, कार्यपणुं न ग्रहेरी;
ते असाधारण हेतु, कुंभेथास लहेरी. ॥६॥
जेहनो नवि व्यापार, भिन्न नियत बहु भावी;
भूमि काळ आकाश, घट कारण सद्भावी. ॥७॥
एह अपेक्षा हेतु, आगममांही कह्योरी;
कारण पद उत्पन्न, कार्य थये न लह्योरी. ॥८॥
कर्ता आतम द्रव्य, कार्य सिद्धि पणोरी;
निज सत्तागत धर्म, ते उपादान गणोरी. ॥९॥
योग समाधि विधान, असाधारण तेह वदेरी;
विधि आचरणा भक्ति, जिणे निज कार्य सधेरी. ॥१०॥
नरगति पढम संघयण, तेह अपेक्षा जाणो;
निमित्ताश्रित उपादान, तेहनी लेखे आणो. ॥११॥
निमित्त हेतु जिनराज, समता अमृत खाणी;
प्रभु अवलंबन सिद्धि, नियमा एह वखाणी. ॥१२॥
पुष्ट हेतु अरनाथ, तेहना गुणथी हलीये;
रीझ भक्ति बहुमान, भोग ध्यानथी मीलीये. ॥१३॥
मोटा ने उत्संग, बेठा ने शी चिंता;
तिम प्रभु चरण पसाय, सेवक थया निचिंता. ॥१४॥
अर प्रभु प्रभुता रंग, अंतर शक्ति विकासी;
'**देवचंद्र**'ने आणंद, अक्षयभोग विलासी. ॥१५॥



(५) प्रभु! ताहरो ताग न पामीए...

(राग : होंशवालों को.../एक पंखी... /
परमातम पूरण.../वैष्णवजन...)

प्रभु! ताहरो ताग न पामीए, गुण-दरियो ऊंडो अगाध हो;
क्यांये दिलनो दिलासो ना मळे, कोई बक्षे नहि अपराध हो. ॥१॥
मुज मननो मानीतो तुं प्रभु, निःसनेही घणुं निरलेप हो;
प्रीति तो किम ही न पालटे, जो कीजे क्रोड आक्षेप हो. प्रभु०॥२॥
जे भजतां भाव धरे नहि, किम भजीए तेह उल्लास हो;
न्याराशुं प्यार कीजे किश्यो, पण मेले नहि मन आश हो. प्रभु०॥३॥
जाण आगे जणावीए, अम विनतडी वीतराग हो;
शुं घणुं आप वखाणीए, एक तुजशुं मुज मन राग हो. प्रभु०॥४॥
तारी महेर नजर विना, मुज सेवा सफळ न होय हो;
जो सहेजे तमे सामुं जुओ तो, मुजने गंजे न कोय हो. प्रभु०॥५॥
त्रिभुवनमां तुज विण सही, शिर केहने न नमुं स्वामी हो;
ओलगडी श्री अरनाथनी, अवसरे आवशे काम हो. प्रभु०॥६॥
जाणुं छुं वीशवावीश सही, मुज आशा फळशे नेट हो;
नित्य चाहुं '**उदयरत्न**' वदे, तुज चरणनी भवोभव भेट हो. प्रभु०॥७॥

(६) मारा साहिब! श्री अरनाथ...

(राग : मारो मुजरो.../चार दिवसना.../
जिन! तेरे.../इतनी शक्ति...)

मारा साहिब! श्री अरनाथ!, अरज सुणो एक मोरी रे;
मारा प्रभुजी परम कृपाल, चाकरी चाहुं तोरी रे,
चाकरी चाहुं प्रभु गुण गाउं, सुख अनंता पाउं रे. ॥१॥
जिन भगते जे होवे राता, पामे परभव ते सुखशाता रे;
प्रभु पूजाए आळसु थाता, ते दुःखिया परभव जाता रे. ॥२॥

प्रभु सहायथी पातिक धूजे, सारी शुभमति सूझे रे;
ते देखी भवियण प्रतिबूझे, वळी कर्मरोग सवि रुझे रे. ॥३॥
सामान्य नरनी सेवा करतां, तो पण प्राप्ति थाय रे;
तो त्रिभुवन नायकनी सेवा, निश्चे निष्फळ न जाय रे. ॥४॥
साची सेवा जाणी प्राणी, जे जिनवर आराधे रे;
'**खिमाविजय**' पय पामी पुण्ये, जश सुख लहे निराबाधे रे. ॥५॥

(७) श्री अरजिन भवजलनो तारु...

(राग : महेंदी तें वावी.../मिले मन भीतर.../सोनामां सुगंध...)

श्री अरजिन भवजलनो तारु, मुज मन लागे वारु रे...
मनमोहन स्वामी!
बाह्य ग्रही जे भविजन तारे, आणे शिवपुर आरे रे. ॥१॥
तप जप मोह महा तोफाने, नाव न चाले माने रे;
पण नवि भय मुज हाथोहाथे, तारे ते छे साथे रे. ॥२॥
भगतने स्वर्ग स्वर्गथी अधिकुं, ज्ञानीने फळ देई रे;
काया कष्ट विना फळ लहीए, मनमां ध्यान धरेई रे. ॥३॥
जे उपाय बहुविधनी रचना, योगमाया ते जाणो रे;
शुद्ध द्रव्य गुण पर्यायने ध्याने, शिव दिये प्रभु सपराणो रे. ॥४॥
प्रभु पद वळग्या ते रह्या ताजा, अळगा अंग न साजा रे;
वाचक '**जस**' कहे अवर न ध्याउं, ए प्रभुना गुण गाउं रे. ॥५॥

थोय

अर जिनवर राया, जेहनी देवी माया,
सुदर्शन नृप ताया, जास सुवर्ण काया;
नंदावर्त पाया, देशना शुद्ध दाया,
समवसरण विरचाया, इन्द्र-इन्द्राणी गाया.

श्री मल्लिनाथ भगवान

चैत्यवंदन

(१) मल्लिनाथ ओगणीशमा...

मल्लिनाथ ओगणीशमा, जस मिथिला नयरी;
प्रभावती जस मावडी, टाले कर्म वयरी. ॥१॥
तात श्री कुंभ नरेसरुं, धनुष पचवीसनी काय;
लंछन कळश मंगलकरुं, निर्मम निर्माय. ॥२॥
वरस पंचावन सहसनुं ए, जिनवर उत्तम आय;
'**पद्मविजय**' कहे तेहने, नमतां शिवसुख थाय. ॥३॥

स्तवन

(१) पंचम सुरलोकना वासी रे...

(राग : भवि तुमे अष्टमी...)

पंचम सुरलोकना वासी रे, नव लोकांतिक सुविलासी रे;
करे विनंती गुणनी राशि.
मल्लिजिन! नाथजी व्रत लीजे रे, भविजीवने शिवसुख दीजे. ॥१॥
तुमे करुणारस भंडार रे, पाम्या छो भवजल पार रे;
सेवकनो करो रे उद्धार. मल्लिजिन०॥२॥
प्रभु दान संवत्सरी आपे रे, जगनां दारिद्र दुःख कापे रे;
भव्यत्वपणे तस थापे. मल्लिजिन०॥३॥
सुरपति सघळा मळी आवे रे, मणि रयण सोवन वरसावे रे;
प्रभु चरणे शीश नमावे. मल्लिजिन०॥४॥
तीर्थोदक कुंभा लावे रे, प्रभुने सिंहासन ठावे रे;
सुरपति भक्ते नवरावे. मल्लिजिन०॥५॥

वस्त्राभरणे शणगारे रे, फूल माला हृदय पर धारे रे;
दुःखडां इन्द्राणी उवारे. मल्लिजिन०॥६॥
मळ्या सुर नर कोडाकोडी रे, प्रभु आगे रह्या कर जोडी रे;
करे भक्ति युक्ति मदमोडी. मल्लिजिन०॥७॥
मृगशिर सुदिनी अजुआली रे, एकादशी गुणनी आली रे;
वर्या संयम वधु लटकाली. मल्लिजिन०॥८॥
दीक्षा कल्याणक एह रे, गातां दुःख न रहे रेह रे;
लहे '**रूपविजय**' जश नेह. मल्लिजिन०॥९॥

(२) प्रभु मल्लिजिणंद शांति आपजो...

(राग : द्वारापुरीनो नेम राजीयो.../कर्मो लाग्या छे मारे...)

प्रभु मल्लि जिणंद शांति आपजो, कापजो मारा भवोदधिना पाप रे;
दयाळु देवा! मल्लि जिणंद शांति आपजो... ॥१॥
वीतराग देवने वंदुं सदा, बाळ ब्रह्मचारी जग विख्यात रे. ॥२॥
अचल अमल ने अकल तुं, कषाय मोह नथी लव लेश रे. ॥३॥
सर्प डस्यो छे मने क्रोधनो, रगे रगे व्याप्युं तेनुं विष रे. ॥४॥
मान पत्थर स्तंभ सारीखो, मने कीधो तेणे जडवान रे. ॥५॥
माया डाकण वळगी मने, आप विना कोण छोडावनहार रे. ॥६॥
लोभ सागरमां हुं पड्यो, ऊभग्यो छुं भवदुःख अपार रे. ॥७॥
आप शरणे हवे आवीयो, रक्षण करो मुज जगनाथ रे. ॥८॥
अरज स्वीकारी आ दासनी, '**ज्ञानविमल**' लेजो बाळ हाथ रे. ॥९॥

(3) मल्लि जिणंद सदा नमीये...

(राग : बोलो बोलो रे शालिभद्र.../
क्युं न भये हम मोर.../मारा नाथनी वधाई...)

मल्लि जिणंद... सदा नमीये, मल्लिजिणंद... सदा भजीये.!!
प्रभु के चरण कमल रस लीने, मधुकर ज्युं हुई के रमीये. ॥१॥

निरखी वदन शशी श्री जिनवरको, निशी वासर सुखमें गमीये. ॥२॥
उज्जवल गुण समरण चित्त धरीए, कबहुं न भवसायर भमीये. ॥३॥
समता रस में ज्यों झीलीजे, त्यों राग द्वेष को उपशमीये. ॥४॥
कहे '**जिनहर्ष**' मुगति सुख लहीये, कठिन कर्म निज अपक्रमीये. ॥५॥



(४) मल्लि जिणेसर मुजने तुम मिल्या...

(राग : संभव जिनवर../ऋषभ जिनेश्वर../वैष्णवजन तो..)

मल्लि जिणेसर मुजने तुम मिल्या, जेह मांहि सुखकंद वहालेसर;
ते कळियुग अमे गिरुओ लेखवुं, नवि बीजा युग वृंद. व०॥१॥
आरो सारो रे मुज पांचमो, जिहां तुम दरिशण दीठ; व०
मरुभूमि पण थिति सुरतरु तणी, मेरु थकी हुइ इठ. व०॥२॥
पंचम आरे रे तुम मेलावडे, रुडो राख्यो रे रंग; व०
चोथो आरे रे फिरी आव्यो गणुं, '**वाचक जस**' कहे चंग. व०॥३॥



(५) मल्लिनाथ जगनाथ चरणयुग ध्याईये रे...

(राग : अपूर्व अवसर.../प्रीतलडी बंधाणी.../निरख्यो नेमि...)

मल्लिनाथ जगनाथ चरणयुग ध्याईये रे,
शुद्धातम प्रागभाव परमपद पाईये रे;
साधक कारक षट्क करे गुण साधना रे,
तेहि ज शुद्ध सरूप थाये निराबाधना रे. ॥१॥
कर्ता आतमद्रव्य कार्य निज सिद्धता रे,
उपादान परिणाम प्रयुक्त ते कारणता रे;
आतम संपद दान तेह संप्रदानता रे,
दाता पात्रने देय त्रिभाव अभेदता रे. ॥२॥
स्व पर विवेचन करण तेह अपादानथी रे,
सकळ पर्याय आधार संबंध आस्थानथी रे;

बाधक कारक भाव अनादि निवारवो रे,
साधकता अवलंबी तेह समारवो रे. ॥३॥
शुद्ध पणे पर्याय प्रवर्तन कार्यमें रे,
कर्तादिक परिणाम ते आतम धर्ममें रे;
चेतन चैतन्य भाव करे सम वेतमें रे,
सादि अनंतो काळ रहे निज खेतमें रे. ॥४॥
पर कतृत्व स्वभाव करे त्यां लगी रे,
शुद्ध कार्य रुचि भास थये नवि आदरे रे;
शुद्धातम निज कार्य रुचि कारक फिरे रे,
तेहि ज मूळ स्वभाव ग्रहे निज पद वरे रे. ॥५॥
कारण कारज रूप अछे कारकदशा रे,
वस्तु प्रगट पर्याय एह मनमें वस्या रे;
पण शुद्ध सरूप ध्यान चेतनता ग्रहे रे,
तब निज साधक भाव सकळ कारक लहे रे. ॥६॥
माहरुं पूर्णानंद प्रगट करवा भणी रे,
पुष्टालंबन रूप सेव प्रभुजी तणी रे;
'**देवचंद्र**' जिनचंद्र भगति मनमें धरो रे,
अव्याबाध अनंत अक्षयपद आदरो रे. ॥७॥

(६) सेवक किम अवगणीए हो...

(राग : मेरु शिखर.../अब मोहे.../मुज अवगुण मत देखो...)

सेवक किम अवगणीए? हो, मल्लि जिन! एह अब शोभा सारी;
अवर जेहने आदर अति दिये, तेहने मूलथी निवारी. हो मल्लि० ॥१॥
ज्ञान स्वरूप अनादि तमारुं, ते लीधुं तमे ताणी;
जुओ अज्ञान दशा रिसाणी, जाता काण न आणी? हो मल्लि० ॥२॥

निद्रा सुपन जागर उजागरता, तुरिय अवस्था आवी;
निद्रा सुपन दशा रिसाणी, जाणी न नाथ मनावी. हो मल्लि०॥३॥
समकित साथे सगाई कीधी, सपरिवार शुं गाढी;
मिथ्यामति अपराधण जाणी, घरथी बाहिर काढी. हो मल्लि०॥४॥
हास्य अरति रति शोक दुर्गंछा, भय पामर करसाली;
नो कषाय श्रेणी गज चडतां, श्वान तणी गति झाली. हो मल्लि०॥५॥
राग द्वेष अविरतिनी परिणति, ए चरण मोहना योधा;
वीतराग परिणति परिणमतां, ऊठी नाठा बोधा. हो मल्लि०॥६॥
वेदोदय कामा परिणामा, काम्य करम सहु त्यागी;
निःकामी करुणारस सागर, अनंत चतुष्क पद पागी. हो मल्लि०॥७॥
दान विघन वारी सहु जनने, अभय दानपद दाता;
लाभ विघन जग विघन निवारी, परम लाभ रस माता. हो मल्लि०॥८॥
वीर्य विघन पंडितवीर्ये हणी, पूरण पदवी योगी;
भोगोपभोग दोय विघन निवारी, पूरण भोग सुभोगी. हो मल्लि०॥९॥
अढार दूषण वर्जित तनु, मुनिजन वृंदे गाया;
अविरति रूपक दोष निरूपण, निर्दूषण मन भाया. हो मल्लि०॥१०॥
ईणविध परखी मन विसरामी, जिनवर गुण जे गावे;
दीनबंधुनी महेर नजरथी, '**आनंदघन**' पद पावे. हो मल्लि०॥११॥

थोय

मल्लिजिन नमीये, पुरवलां पाप गमीये,
इन्द्रियना गण दमीये, आण जिननी न क्रमीये;
भवमां नवि भमीये, सर्व परभाव वमीये,
निज गुणमां रमीये, कर्म मल सर्व दमीये.



श्री मुनिसुव्रतस्वामी भगवान

चैत्यवंदन

(१) मुनिसुव्रत जिन वीशमा...

मुनिसुव्रत जिन वीशमा, कच्छपनुं लंछन;
पद्मा माता जेहनी, सुमित्र नृप नंदन. ॥१॥
राजगृही नगरी धणी, वीश धनुष शरीर;
कर्म निकाचित रेणुं, वज्र उद्दाम समीर. ॥२॥
त्रीश हजार वरस तणुं ए, पाळी आयु उदार;
'**पद्मविजय**' कहे शिव लह्यां, शाश्वत सुख निरधार. ॥३॥

स्तवन

(१) आज सफल दिन मुज तणो...

(राग : होशवालों को.../तेरे सूर और मेरे गीत.../
आजनो चांदलियो.../आंख मारी ऊघडे त्यां...)

आज सफल दिन मुज तणो, मुनिसुव्रत दीठां;
भांगी ते भावठ भवतणी , दिवस दूरितना नीठां. ॥१॥
आंगणे कल्पवेली फळी, घन अमीयना वूठां;
आप मांग्या पासा ढल्या, सुर समकिती तुठां. ॥२॥
नियति हित दान सनमुख हुई, स्व पुण्योदय साथे;
'**जस**' कहे साहिबे मुगतिनुं, कर्युं तिलक निज हाथे. ॥३॥



(२) ओलगडी तो कीजे...

(राग : वैष्णवजन...)

ओलगडी (२) तो कीजे श्रीमुनिसुव्रतस्वामीनी रे,
जेहथी निजपद सिद्ध;
केवलज्ञानादिक गुण उल्लसे रे, लहीये सहज समृद्धि. ॥१॥
उपादान (२) निज परिणति वस्तुनी रे, पण कारण निमित्त आधीन;
पुष्ट अपुष्ट दुविध ते उपदिश्यो रे, ग्राहक विधि आधीन. ॥२॥
साध्य साध्य धर्म जे मांहे हुवे रे, ते निमित्त अति पुष्ट;
पुष्पमांहि तिल वासक वासना रे, ते नहि प्रध्वंसक दुष्ट. ॥३॥
दंड (२) निमित्त अपुष्ट घडा तणो रे, नवि घटता तसु मांहि;
साधक साधक प्रध्वंसकता अछे रे, तिणे नहि नियत प्रवाह. ॥४॥
षट्कारक षट्कारक ते कारण कार्यनो रे, जे कारण स्वाधीन;
ते कर्ता ते कर्ता सहु कारक ते वसु रे, कर्म ते कारण पीन. ॥५॥
कार्य कार्य संकल्पे कारणदशा रे, छती सत्ता सद्भाव;
अथवा तुल्य धर्मने जोईये रे, साध्यारोपण दाव. ॥६॥
अतिशय अतिशय कारण कारक करणते रे, निमित्त अने उपादान;
संप्रदान (२) कारण पद भवनथी रे, कारण व्यय अपादान. ॥७॥
भवन (२) व्यय विण कारज नवि हुवे रे, जिम दृषदे न घटत्व;
शुद्धाधार (२) स्वगुणनो द्रव्य छे रे, सत्ताधार सुतत्व. ॥८॥
आतम (२) कर्ता कार्य सिद्धता रे, तसु साधन जिनराज;
प्रभु दीठे (२) कारज रुचि उपजे रे, प्रगटे आत्म समाज. ॥९॥
वंदन (२) नमन सेवन वळी पूजना रे, स्मरण स्तवन वळी ध्यान;
'**देवचंद्र**' (२) कीजे जगदीशनुं रे, प्रगटे पूर्ण निधान. ॥१०॥

(3) दिल भरी दरिशन पाउं के...

(राग : वीर तारुं नाम व्हालुं लागे.../
पार्श्व चिंतामणी मेरो.../जिन तेरे...)

दिल भरी दरिशन पाउं के, प्रभुको रूप बन्यो छे;
पद्मानंदन हरिकृत वंदन, चरण कमल बलि जाउं. ॥१॥
नीलकमल दल कोमल वाने, सेवन में चित्त लाउं. ॥२॥
चूनी चूनी कलिया चंपक की रे, हाथ से माल बनावुं. ॥३॥
श्री मुनिसुव्रत सुव्रत सेवी, नाथ समान कहाउं. ॥४॥
'**न्यायसागर**' प्रभु सुव्रत सेवा, नियत फले दिल भाउं. ॥५॥

(४) मुनिसुव्रत जिनराय...

(राग : आज मारा... /ऐसा चिद्रस.../दरिशन द्यो...)

मुनिसुव्रत जिनराय, एक मुज विनंती निसुणो;
आतमतत्त्व क्युं जाणुं जगतगुरु, एह विचार मुज कहियो;
आतमतत्त्व जाण्या विण निरमल, चित्तसमाधि नवि लहियो. ॥१॥
केई अबंध आतमतत्त्व माने, किरिया करतो दिसे;
क्रियातणुं फळ कहो कुण भोगवे? ईम पूछ्युं चित्त रीसे. मु०॥२॥
जड चेतन ए आतम एक ज, स्थावर जंगम सरीखो;
सुख दुःख संकर दूषण आवे, चित्त विचारी जो परीखो. मु०॥३॥
एक कहे नित्य ज आतमतत्त्व, आतम दरिसण लीणो;
कृत विनाश अकृतागम दूषण, नवि देखे मति हीणो. मु०॥४॥
सौगत मतरागी कहे वादी, क्षणिक ए आतम जाणो;
बंध मोक्ष सुख दुःख नवि घटे, एह विचार मन आणो. मु०॥५॥
भूत चतुष्कवर्जित आतमतत्त्व, सत्ता अळगी न घटे;
अंध शकट जो नजरे न देखे, तो श्युं कीजे शकटे. मु०॥६॥

ईम अनेक वादी मति विभ्रम, संकट पडियो न लहे;
चित्त समाधि ते माटे पूछुं, तुम विण तत्त्व कोई न कहे. मु०॥७॥
वलतुं जगगुरु ईणि परे भाखे, पक्षपात सब छंडी;
रागद्वेष मोह पख वर्जित, आतमशुं रढ मंडी. मु०॥८॥
आतम ध्यान करे जो कोउ, सो फिर ईण में नावे;
वागजाळ बीजुं सहु जाणे, एह तत्त्व चित्त चावे. मु०॥९॥
जिणे विवेक धरी ए पख ग्रहियो, ते तत्त्वज्ञानी कहीए;
श्री मुनिसुव्रत कृपा करो तो, '**आनंदघन**' पद लहीए. मु०॥१०॥



(५) मुनिसुव्रत जिन वंदतां...

(राग : पहेले भवे एक गामनो...)

मुनिसुव्रत जिन वंदतां, अति उल्लसित तन मन थाय रे;
वदन अनुपम नीरखतां, मारा भवभवनां दुःख जाय रे;
जगतगुरु! जागतो सुखकंद रे...
सुखकंद अमंद आनंद, परमगुरु! दीपतो सुखकंद रे. ॥१॥
निशदिन सूता जागता, हियडाथी न रहे दूर रे;
जब उपकार संभारीए, तब ऊपजे आनंद पूर रे. ॥२॥
प्रभु उपकार गुणे भर्या, मन अवगुण एक न माय रे;
गुण गण अनुबंधी हुआ, ते तो अक्षय भाव कहाय रे. ॥३॥
अक्षय पद दिये प्रेमथी जे, प्रभुनुं ते अनुभव रूप रे;
अक्षर स्वर गोचर नहि, ए तो अकल अमाप अरूप रे. ॥४॥
अक्षर थोडा गुण घणा, सज्जनना ते न लखाय रे;
'**वाचकजश**' कहे प्रेमथी, पण मनमांहे परखाय रे. ॥५॥

(६) मुनिसुव्रत मन मोह्युं मारुं...



(राग : जिनवर तारुं शासन.../चार दिवसना चांदरडा.../
कर्मनी गत कोने रे जाणी.../सोनामां सुगंध.../
मुज अवगुण मत.../प्रभु तमारा...)

मुनिसुव्रत मन मोह्युं मारुं, शरण ग्रह्युं छे तमारुं;
प्रातः समय ज्यारे हुं जागुं, स्मरण करुं छुं तमारुं;
हो जिनजी! तुज मूरति मनहरणी,
भव सायर जल तरणी. हो०॥१॥
आप भरोसो आ जगमां छे, तारो तो घणुं सारुं;
जन्म जरा मरणो करी थाक्यो, आशरो लीधो में तारो. ॥२॥
चुं चुं चुं चुं चिडीयां बोले, भजन करे छे तमारुं;
मूर्ख मनुष्य प्रमादे पड्यो रहे, नाम जपे नहि तारुं. ॥३॥
भोर थतां बहु शोर सुणुं हुं, कोई हसे कोई रुवे न्यारुं;
सुखियो सूवे ने दुखियो रुवे, अकल गतिए विचारुं. ॥४॥
खेल खलकनो बंध नाटकनो, कुटुंब कबीलो हुं धारुं;
ज्यां सुधी स्वार्थ त्यां सुधी सर्वे, अंत समये सहु न्यारुं. ॥५॥
माया जाळ तणी जोई जाणी, जगत लागे छे खारुं;
'**उदयरत्न**' एम जाणी प्रभु तारुं, शरण ग्रह्युं छे में सारुं. ॥६॥

(७) श्री मुनिसुव्रत साहिबा रे...

(राग : तुं प्यार का सागर है.../वीर मने तारो.../
मुज अवगुण मत.../पहेले भवे...)

श्री मुनिसुव्रत साहिबा रे, तुज विना अवर हो देव;
नजरे दीठा नवि गमे रे, किम करीए तस सेव;
जिनेश्वर! मुजने तुज आधार, मुजने पार उतार जिनेश्वर!
नाम तमारुं सांभरे रे, श्वासमांहे सो वार. ॥१॥

नीरख्या सुर नजरे घणा रे, तेहशुं न मिले तार;
तारो तार मिल्यां पखे रे, कहो किम वाधे प्यार. ॥२॥
अंतर मन मिल्या विना रे, न चढे प्रेम प्रमाण;
पाया विना केम स्थिर रहे रे, मोटा घर मंडाण. ॥३॥
जोता मूरति जेहनी रे, उल्लसे नजर न आप;
तेहवा शुं जे प्रीतडी रे, ते सामो संताप. ॥४॥
तेणे हरिहरादि सुर परिहरी रे, मन धरी ताहरी सेव;
'**दानविजय**' तुम दरिशने रे, हरख होय नित्यमेव. ॥५॥

थोय

मुनिसुव्रत नामे, जे भवि चित्त कामे,
सवि संपत्ति पामे, स्वर्गना सुख जामे;
दुर्गति दुःख वामे, नवि पडे मोह भामे,
सवि कर्म विरामे, जई वसे सिद्धि धामे.



श्री नमिनाथ भगवान

चैत्यवंदन

(१) मिथिला नयरी राजीयो...

मिथिला नयरी राजीयो, वप्रा सुत साचो;
विजयराय सुत छोडीने, अवर मत माचो. ॥१॥
नीलकमल लंछन भलुं, पन्नर धनुषनी देह;
नमि जिनवरनुं सोहतुं, गुण गण मणिगेह. ॥२॥
दश हजार वरस तणुं ए, पाळ्युं परगट आय;
'**पद्मविजय**' कहे पुण्यथी, नमीये ते जिनराय. ॥३॥

स्तवन

(१) एकवीसमा जिन आगलेजी...

(राग : दीन दुखियानो.../आज मारा प्रभुजी.../ऊंचा ऊंचा...)

एकवीसमा जिन आगलेजी, अरज करुं करजोड;
आठ अरिए मुज बांधियोजी, ते भव बंधन तोड;
प्रभुजी! प्रेम धरीने आज, अवधारो अरदास. ॥१॥
ए अरिथी अळगा रह्याजी, अवर न दीसे देव;
तो किम तेहने याचीएजी, किम करुं तेहनी सेव. ॥२॥
हास्य विलास विनोदमांजी, लीन रहे सुर जेह;
आपे अरिगण वश पड्याजी, अवर उगारे किम तेह. ॥३॥
छत होय तिहां याचीएजी, अछते किम सरे काज?
योग्यता विण जांचतांजी, पोते गुमावे लाज. ॥४॥
निश्चय छे मन माहरेजी, तुजथी पामीश पार;
पण भूख्यो भोजन समेजी, भाणे न टके लगार. ॥५॥

ते माटे कहुं तुम भणीजी, वेगे कीजे सार;
आखर तुमहि ज आपशोजी, तो शी करो हवे वार. ॥६॥
मोटाना मनमां नहींजी, अर्थी उतावळो थाय;
श्री खिमाविजय गुरुनामथीजी, जग '**जश**' वांछित थाय. ॥७॥

(२) दिलभर दरशन पाउं रे...

(राग : ऐसा चिद्रस.../ पार्श्व चिंतामणी.../ आई बसो...)

दिलभर दरशन पाउं रे...
प्रभुजी की ज्योत बनी है अनुपम, निरखत हर्षित थाउं. प्र०॥१॥
श्री नमिनाथ वदनकी शोभा, आभा किण में न पाउं. प्र०॥२॥
शीतलवाणी अंग शीतल है, शीतल दरिशण चाहुं. प्र०॥३॥
प्रभु मुख निरखत रोहिणी वल्लभ, शीतल चंद ठराउं. प्र०॥४॥
चरण धरंते शीतल पंकज, द्रव्य से भाव बनाउं रे. प्र०॥५॥
समकित सुंदर मंदिर घट में, प्रभु गुण घंट बजाउं रे. प्र०॥६॥
श्री '**शुभवीर**' कहे सुणसुंदरी! केवल भाव जगाउं रे. प्र०॥७॥

(3) मुज मन पंकज भमरलो...

(राग : मेरे नैना.../आज मारा प्रभुजी...)

मुज मन पंकज भमरलो, श्री नमिजिन जगदीशो रे;
ध्यान धरुं नित्य तुम तणुं, नाम जपुं निशदिशो रे. ॥१॥
चित्त थकी कदीये न वीसरे, देखिये आगळ ध्याने रे;
अंतर तापथी जाणीए, दूर रह्या अनुमाने रे. ॥२॥
तुं गति तुं मति आशरो, तुंहि ज बांधव मोटो रे;
वाचक '**जस**' कहे तुज विना, अवर प्रपंच ते खोटो रे. ॥३॥

(४) श्री नमिजिननी सेवा करतां...

(राग : वीर मने तारो.../ मेरा जीवन कोरा.../वैष्णवजन...)

श्री नमिजिननी सेवा करतां, अलिय विघन सवि दूर नासेजी;
अष्टमहासिद्धि नवनिधि लीला, आवे बहु महमुर पासेजी. ॥१॥
मयमत्ता गय अंगण गाजे, राजे तेजी तुखार ते चंगाजी;
बेटा बेटी बंधव जोडी, लहीए बहु अधिकार रंगाजी. ॥२॥
वल्लभ संगम रंग लहीजे, अणवाहला होय दूर सहेजेजी;
वांछा तणो विलंब न दूजो, कारज सीझे भूरी लहेजेजी. ॥३॥
चंद्रकिरण उज्ज्वल यश उलसे, सूरज तूल्य प्रतापी दीपेजी;
जे प्रभुभक्ति करे नित्य विनये, अरियण बहु प्रतापे झीपेजी. ॥४॥
मंगलमाला लच्छी विशाला, बाला बहुले प्रेमरंगेजी;
श्री '**नयविजय**' विबुध पय सेवक, कहे लहीए सुख प्रेम अंगेजी. ॥५॥

(५) श्री नमि जिनवर सेव घनाघन...

(रागः प्रीतलडी बंधाणी.../
दीठो सुविधि.../अपूर्व अवसर...)

श्री नमि जिनवर सेव घनाघन उनम्यो रे,
दीठा मिथ्यारोरवे रे, भविक चित्तथी गम्यो रे;
शुचि आचरणा रीति ते अभ्र वधे वडा रे,
आतम परिणति शुद्ध ते विज झबुकडा रे. ॥१॥
वाजे वायु सुवायु ते पावन भावना रे,
इंद्र धनुष त्रिक योग ते भक्ति ईक मना रे;
निर्मळ प्रभु स्तव घोष ध्वनि घनगर्जना रे.
तृष्णा ग्रीष्म काळ तापनी तर्जना रे. ॥२॥
शुभ लेश्यानी आलि ते बग पंक्ति बनी रे,
श्रेणी सरोवर हंस वसे शुचि गुण मुनि रे;

चउगति मारग बंध भविक निज घर रह्या रे,
चेतन समता संग रंगमें उमह्यां रे. ॥३॥
सम्यग्दृष्टि मोर तिहां हरखे घणुं रे,
देखी अद्भुत रूप परम जिनवर तणुं रे;
प्रभु गुणनो उपदेश ते जलधारा वही रे,
धर्म रुचि चित्त भूमि मांहि निश्चय रही रे. ॥४॥
चातक श्रमण समूह करे तव पारणो रे,
अनुभव रस आस्वाद सकळ दुःख वारणो रे;
अशुभाचार निवारण तृण अंकुरता रे,
विरति तणो परिणाम ते बीजनी पूरतां रे. ॥५॥
पंच महाव्रत धान्य तणा करसण वध्या रे,
साय भाव निज थापी साधनताए साध्य रे;
क्षायिक दर्शन ज्ञान चरण गुण उपना रे,
आदिक बहु गुण शस्य आतम घर नीपना रे. ॥६॥
प्रभु दरिसण महा मेह तणे प्रवेशमें रे,
परमानंद सुभिक्ष, थयो मुझ देशमें रे;
देवचंद्र जिनचंद्र तणो, अनुभव करो रे,
आादि अनंतो काल, आतम सुख अनुसरो रे. ॥७॥

(६) श्री नमिनाथने चरणे नमतां...

(राग : विरतिधरनो वेष.../ सोनाना पारणिये.../
एवुं लागे छे.../चार दिवसनां...)

श्री नमिनाथने चरणे नमतां, मनगमतां सुख लहिये रे;
भव जंगलमां भमतां भमतां, कर्म निकाचित दहिये रे. ॥१॥
समकित शिवपुर मांही पहोंचाडे, समकित धरम आधार रे;
श्री जिनवरनी पूजा करीए, ए समकितनो सार रे. ॥२॥

जे समकितथी होय उपरांठा, तेहना सुख जाये नाठां रे;
जे कहे जिनपूजा नवि कीजे, तेहनुं नाम न लीजे रे. ॥३॥
वप्रा राणीनो सुत पूजो, जिम संसारे न ध्रूजो रे;
भवजल तारक कष्ट निवारक, नहि कोई एहवो दूजो रे. ॥४॥
श्री कीर्तिविजय उवज्झायनो सेवक, '**विनय**' कहे प्रभु सेवो रे;
त्रण तत्त्व मनमांही अवधारी, वंदो अरिहंत देवो रे. ॥५॥

(७) षट्दरशण जिन अंग भणीजे...

(राग : आज मनोरथ.../ आशाभरी.../वैष्णवजन...)

षट्दरशण जिन अंग भणीजे, न्यास षडंग जो साधे रे;
नमि जिनवरना चरण उपासक, षट्दरशण आराधे रे. ॥१॥
जिन सुर पादप पाय वखाणुं, सांख्य योग दोय भेदे रे;
आतम सत्ता विवरण करतां, लहो दुग अंग अखेदे रे. ॥२॥
भेद अभेद सुगत मीमांसक, जिनवर दोय कर भारी रे;
लोकालोक अवलंबन भजीए, गुरुगमथी अवधारी रे. ॥३॥
लोकायतिक कूख जिनवरनी, अंश विचार जो कीजे रे;
तत्त्वविचार सुधारस धारा, गुरुगम विण किम पीजे रे. ॥४॥
जैन जिनेश्वर वर उत्तम अंग, अंतरंग बहिरंगे रे;
अक्षर न्यास धरा आराधक, आराधे धरी संगे रे. ॥५॥
जिनवरमां सघळा दरिशण छे, दर्शन जिनवर भजना रे;
सागरमां सघळी तटीनी सही, तटीनी सागर भजना रे. ॥६॥
जिन सरूप थई जिन आराधे, ते सहि जिनवर होवे रे;
भृंगी ईलिकाने अटकावे, ते भृंगी जग जुवे रे. ॥७॥
चूर्णी भाष्य सूत्र निर्युक्ति, वृत्ति परंपर अनुभव रे;
समय पुरुषना अंग कह्या ए, जे छेदे ते दूर भवी रे. ॥८॥

मुद्रा बीज धारणा अक्षर, न्यास अरथ विनियोगे रे;
जे ध्यावे ते नवि वंचीजे, क्रिया अवंचक भोगे रे. ॥९॥
श्रुत अनुसार विचारी बोलुं, सुगुरु तथाविध न मिले रे;
क्रिया करी नवि साधी शकीए, विखवाद चित्त सघळे रे. ॥१०॥
ते माटे ऊभा कर जोडी, जिनवर आगळ कहीऐ रे;
समय चरण सेवा शुचि देजो, जिम '**आनंदघन**' लहीए रे ॥११॥

थोय

नमीए नमि नेह, पुण्य थाये ज्युं देह,
अघ समुदय जेह, ते रहे नाहीं रेह;
लहे केवल तेह, सेवना काम एह,
लहे शिवपुर गेह, कर्मनो आणी छेह.



तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय ॥

श्री नेमिनाथ भगवान

चैत्यवंदन

(१) नेमिनाथ बावीशमां...

नेमिनाथ बावीशमां, शिवादेवी माय;
समुद्रविजय पृथ्वीपति, जे प्रभुना ताय. ॥१॥
दश धनुषनी देहडी,आयु वरस हजार;
शंख लंछनधर स्वामीजी, तजी राजुल नार. ॥२॥
शौरीपुरी नयरी भलीए, ब्रह्मचारी भगवान;
जिन उत्तम पद '**पद्म**'ने, नमतां अविचल ठाण. ॥३॥

(२) अपराजितथी आविया...

अपराजितथी आविया, कार्तिक वदि बारस;
श्रावण सुदि पंचमी जण्या, यादव अवसंत. ॥१॥
श्रावण सुदि छट्ठे संजमी, आसो अमावस नाण;
सुदि अषाढनी आठमे, शिवसुख लहे रसाल. ॥२॥
अरिष्ट नेमि अण परणिया ए, राजीमतीना कंत;
'**ज्ञानविमल**' गुण एहना, लोकोत्तर वृत्तांत. ॥३॥

(3) नेमि जिनेसर नियमथी...

नेमि जिनेसर नियमथी, नमता नव निधि;
सकल पदारथ पूरवे, सेव्यो दीए सिद्धि. ॥१॥
निरागीमां लीह दीह, रयणी दिल मोरे;
रसिया मन अली माहरो, पद कमले तोरे. ॥२॥

तुं माता त्रिभुवन धणीए, निज सेवक संभाळ;
'**रामविजय**' जिन नामथी, लहीये सुख रसाळ. ॥३॥

स्तवन



(१) निरख्यो नेमि जिणंदने...

(राग : दादा आदीश्वरजी.../
तुं मने भगवान.../आंखडी मारी...)

निरख्यो नेमि जिणंदने, अरि०, राजीमती कर्यो त्याग, भग०,
ब्रह्मचारी संयम ग्रह्यो, अरि०, अनुक्रमे थया वीतराग. भग० ॥१॥
चामर चक्र सिंहासन, अरि०, पाद पीठ संयुत, भग०,
छत्र चाले आकाशमां, अरि०, देवदुंदुभि वर युत्त. भग० ॥२॥
सहस जोयण ध्वज सोहतो, अरि०, प्रभु आगळ चालंत, भग०,
कनक कमल नव उपरे, अरि०, विचरे पाय ठवंत. भग० ॥३॥
चार मुखे दिये देशना, अरि०, त्रण गढ झाकझमाळ, भग०,
केश रोम श्मश्रु नखा, अरि०, वाधे नहि कोई काल. भग० ॥४॥
कांटा पण ऊंधा होये, अरि०, पंच विषय अनुकूल, भग०,
षट् ऋतु समकाळे फळे, अरि०, वायु नहि प्रतिकूळ. भग० ॥५॥
पाणी सुगंध सुर कुसुमनी, अरि०, वृष्टि होय सुरसाल, भग०,
पंखी दिये सुप्रदक्षिणा, अरि०, वृक्ष नमे असराल. भग० ॥६॥
जिन उत्तम पद '**पद्म**'नी, अरि०, सेवा करे सुरकोडी, भग०,
चार निकायना जघन्यथी, अरि०, चैत्यवृक्ष तेम जोडी. भग० ॥७॥



(२) अरज सुणो हो नेम नगीना...

(राग : चांदी जैसा रंग.../रीझो रीझो.../
ऊंचा-ऊंचा...)

अरज सुणो हो नेम नगीना, राजुलना भरथार;
भज लो भज लो हो जगना प्राणी, भजो सदा किरतार. ॥१॥

जान लईने आव्या त्यारे, हर्ष तणो नहि पार;
पशु तणो पोकार सुणीने, पाछा वळ्या तत्काल. ॥२॥
राजुल गोखे राह नीरखती, रडती आंसु धार;
पियुजी मारा केम रिसाया, मुज हैयाना हार. ॥३॥
नेम बन्या तीर्थंकर स्वामी, बावीसमा जिनराज;
माया छोडी मनडुं साध्युं, नमो नमो शिरताज. ॥४॥
नेमि निरंजन नाथ हमारा, अम नयनोना तारा;
बाळक तुम भक्तिने माटे, रडतो आंसु धारा. ॥५॥
परदुःखभंजन नाथ निरंजन, जगपालक किरतार;
'**ज्ञानविमल**' कहे भव सिन्धुथी, मुजने पार उतार. ॥६॥

(3) अष्ट भवांतर वालहो रे...

(राग : मुश्किल डगर छे.../आ धारा तो पुण्यनी धारा छे.../ ए मेरे वतन.../पहेले भवे...)

अष्ट भवांतर वालहो रे, तुं मुज आतमराम, मनरावहाला;
मुगति नारीशुं आपणे रे, सगपण कोई न काम.
घर आवो हो वालम घर आवो, मारी आशाना विसराम;
रथ फेरो हो साजन रथ फेरो, साजन माहरा मनोरथ साथ. ॥१॥
नारी पखे शो नेहलो रे, साच कहे जगनाथ;
ईश्वर अरधांगे धरी रे, तुं मुज झाले न हाथ. ॥२॥
पशुजननी करुणा करी रे, आणी हृदय मोझार;
माणसनी करुणा नहि रे, ए कुण घर आचार. ॥३॥
प्रेम कल्पतरु छेदियो रे, धरीयो योग धतूर;
चतुराइरो कुण कहे रे, गुरु मिलिओ जगशूर. ॥४॥
माहरुं तो एमां कशुं नहि रे, आप विचारो राज;
राजसभामां बेसतां रे, कीसकी वधसे लाज. ॥५॥

प्रेम करे जग जन सहु रे, निरवाहे ते ओर;
प्रीत करीने छांडी दे रे, तेहशुं चाले न जोर. ॥६॥
जो मनमां एहवुं हतुं रे, निसपति करत न जाण;
निसपति करीने छांडता रे, माणस हुवे नुकसान. ॥७॥
देतां दान संवत्सरी रे, सहु लहे वांछित पोष;
सेवक वांछित नवि लहे रे, ते सेवकनो दोष. ॥८॥
सखी कहे ए 'शामळो' रे, हुं कहुं लक्षण श्वेत;
इणी लक्षण साची सखी रे, आप विचारो हेत. ॥९॥
रागीशुं राग सहु करे, वैरागीथी शो राग;
राग विना किम दाखवो रे, मुगति सुंदरी माग. ॥१०॥
एक गुह्य घटतुं नहि रे, सघलोय जाणे लोग;
अनेकांतिक भोगवो रे, ब्रह्मचारी गत शोग. ॥११॥
जिण जोणे तुजने जोउं रे, तिण जोणे जुवो राज;
एक वार मुजने जुवो रे, तो सीझे मुज काज. ॥१२॥
मोह दशा धरी भावतां रे, चित लहे तत्त्व विचार;
वीतरागता आदरी रे, प्राणनाथ निरधार. ॥१३॥
सेवक पण ते आदरे रे, तो रहे सेवक माम;
आशय साथे चालीये रे, एह ज रुडुं काम. ॥१४॥
त्रिविध योग धरी आदर्यो रे, नेमनाथ भरथार;
धारण पोषण तारणो रे, नवसर मुगताहार. ॥१५॥
कारणरूपी प्रभु भज्यो रे, गण्यो न काज अकाज;
कृपा करी प्रभु दीजीये रे, '**आनंदघन**' पद राज. ॥१६॥

(४) एकवार बोलो मारां नाथ...

(राग : तुं प्रभु मारो.../मथुरामां खेल...)

एकवार बोलो मारां नाथ, अबोलडां शानां लीधां छे राज...
शाना लीधां छे (२) हैयामां रही गई हाम. ॥१॥
समुद्रविजय कुलदीपक, प्रभुजी शिवादेवी केरा नंद. ॥२॥
आठ भवोनी प्रीत गया चूकी, नवमें विसार्या का नेम. ॥३॥
जान जोडीने प्रभु जगते आव्या, साथे मोरारि ने लाव्या. ॥४॥
राजुल त्यागी गया गिरनार, पशुडांनां सुणी पोकार. ॥५॥
संयम लई प्रभु मोक्षे सिधाव्यां, आवागमन निवार. ॥६॥
राजुल राणी प्रीत पुरानी, मळ्या जई मोक्षने द्वार. ॥७॥
'**मानविजय**' कहे वंदना हमारी, आ भव पार उतार. ॥८॥

(५) गढ गिरनारे जई रह्या रे...

(राग : विरतिधरनो.../चांदी जैसा रंग है तेरा...)

गढ गिरनारे जई रह्या रे, यादव नेमकुमार;
विरह वचन बोले ईश्या, राजीमती तव नार;
सुणजो सैयरो रे वहाला... मुज हैयाना हार. ॥१॥
पगला पियुना पंखी जडी जडी, लागी रे नयणा;
माहरे तीखा तीर जट पट, लागी रे महाणा. ॥२॥
तोरण आव्या नेमजी रे, पाछा वळ्या केम;
कपट कर्युं परण्यातणुं रे, बाजीगर परे जेम. ॥३॥
करुणा कीधी पंखिया तणी रे, नव कीधी मुज सार;
तो पण साची पतिव्रता रे, तेहीज तारी नार. ॥४॥
अष्ट भवांतर नेहलो रे, नवमे भवे दीधो छेह;
केड न छोडुं ताहरो रे, जेम छायाने देह. ॥५॥

एम कहेती पहोति पिया रे, पियुं पासे लिये दीक्षा;
रहनेमी पण बुझव्या रे, देई हितनी शिक्षा. ॥६॥
यादव कुल चूडामणि रे, धन धन राजुल नेम;
'**ज्ञानविमल**' कहे एहनो रे, साचो पूरण प्रेम. ॥७॥

(६) जईने रहेजो मारा वालाजी रे...

(राग : आवो तो रमवाने.../रीझो रीझो.../
तमे आंखे.../तेरे अहेसान...)

जईने रहेजो मारा वालाजी रे, श्री गिरनारनी गोखमां; जईने०
अमे पण तिहां आवशुं मारा वालाजी रे, जिहां रे पामीशुं जोग. ॥१॥
जान लई जूनागढे, मारा० आव्या तोरण आप; जईने०
पशुडा पेखी पाछा वळ्या, मारा० जाता न दीधो जवाब. ॥२॥
सुंदर आपणे साहिबा, मारा० जोता नहि मले जोड; जईने०
बोल्या अणबोल्या करे, मारा० शी वाते तमने खोड. ॥३॥
हुं रागी तुं वैरागी, मारा० जगमां जाणे सहु कोई; जईने०
रागी तो लागी रहे, मारा० वैरागी रागी न होय. ॥४॥
वर बीजो हुं नवि वरुं, मारा० सघळा मेली संवाद; जईने०
मोहनियाने जई मलुं, मारा० मोटा साथे शो वाद. ॥५॥
गढ तो एक गिरनार छे, मारा० नाथ एक श्री नेम; जईने०
रमणी एक राजीमती, मारा० पूरो पाड्यो जेणे प्रेम. ॥६॥
वाचक '**उदय**'ने वंदना, मारा० मानी लेजो महाराज; जईने०
नेम राजुल मुक्ति वर्या, मारा० सार्या आतम काज. ॥७॥



(७) तोरण आवी रथ फेरी गया रे हां...



(राग : एक दिन पुंडरीक.../जननीनी जोड.../
मारा व्हाला प्रभु.../सूरजमंडन.../वैष्णवजन...)

तोरण आवी रथ फेरी गया रे हां, पशुआं देई शिर दोष मेरे वालमा;
नव भव नेह निवारियो रे हां, शो जोई आव्या जोष. मेरे०॥१॥
चंद्र कलंकी जेहथी रे हां, रामने सीता वियोग; मेरे०
तेह कुरंगने वयणडे रे हां, पति आवे कुण लोग. मेरे०॥२॥
उतारी हुं चित्तथी रे हां, मुक्ति धुतारी हेत; मेरे०
सिद्ध अनंते भोगवी रे हां, तेहशुं कवण संकेत. मेरे०॥३॥
प्रीत करंता सोहिली रे हां, निर्वहंता जंजाल; मेरे०
जेहवो व्याल खेलाववो रे हां, जेहवी अगननी झाल. मेरे०॥४॥
जो विवाह अवसर दियो रे हां, हाथ उपर नवि हाथ; मेरे०
दीक्षा अवसर दिजीये रे हां, शिर उपर जगनाथ. मेरे०॥५॥
ईम वलवलती राजुल गई रे हां, नेमि कने व्रत लीध; मेरे०
वाचक **'यश'** कहे प्रणमीए रे हां, ए दंपती दोय सिद्ध. मेरे०॥६॥

(८) देखत ही चित्त चोर लियो हे...



(राग : अब मोहे ऐसी.../मालकोंश.../ज्योतशुं ज्योत.../
दरिशन द्यो.../पार्श्व चिंतामणि...)

देखत ही चित्त चोर लियो हे, देखत ही चित्त चोर लियो;
शामको नाम रुचत मोहि अहनिशी, शाम बिना कहां काज जियो. ॥१॥
सिद्धि वधूके लिये मुज छोडी, पशुअनको शिर दोष दियो;
परकी पीड जो जानत तासो, वैर वसायो न नेह कियो. ॥२॥
प्राण धरत में प्राणप्रिय बिन, वज्रसे भी मोहि कठिन हियो;
'जस' प्रभु नेमि मिले दुःख डार्यो, राजुल शिव सुख रस पियो. ॥३॥

(९) देखो माई! अजब रूप जिनजी को...

(राग : जिन! तेरे चरण की... / मैया मोरी मैं नहीं माखण...)

देखो माई! अजबरूप जिनजी को,देखो माई! अजब०!
उनके आगे अउर सबहुं को, रूप लागे मोहे फीको... ॥१॥
लोचन करुणा अमृत कचोले, मुख सोहे अति नीको... ॥२॥
कवि '**जशविजय**' कहे यों साहिब, नेमजी त्रिभुवन टीको... ॥३॥



(१०) द्वारापुरीनो नेम राजियो...

(राग : कर्मो लाग्या छे...)

द्वारापुरीनो नेम राजियो, तजी छे जेणे राजुल जेवी नार रे;
गिरनारी नेम! संयम लीधो छे बालावेशमां... ॥१॥
मंडप रच्यो छे मध्य चोकमां, जोवा मळ्युं छे द्वारापुरीनुं लोक रे. गि०॥२॥
भाभीए मेणां मारियां, परणे व्हालो श्रीकृष्णनो वीर रे. गि०॥३॥
गोखे बेसीने राजुल जोई रह्यां, क्यारे आवे जादवकुलनो दीप रे. गि०॥४॥
नेमजी ते तोरण आविया, सुणी कांई पशुनो पोकार रे. गि०॥५॥
सासुए नेमजीने पोंखियां, व्हालो मारो तोरण चढवा जाय रे. गि०॥६॥
नेमजीए साळाने बोलावीया, शाने करे छे पशुडां पोकार रे. गि०॥७॥
राते राजुल बेनी परणशे, सवारे देशुं गोरवना भोजन रे. गि०॥८॥
नेमजीए रथ पाछो वाळीयो, जई चढ्या गढ गिरनार रे. गि०॥९॥
राजुल बेनी रुवे धुसके, रुवे रुवे कांई द्वारापुरीनां लोक रे. गि०॥१०॥
वीराए बेनीने समजाविया, अवर देशुं नेम सरीखो भरथार रे. गि०॥११॥
पियु ते नेम एक धारिया, अवर देखुं भाई ने बीजा बाप रे. गि०॥१२॥
जमणी आंखे श्रावण सरवरे, डाबी आंखे भादरवो भरपूर रे. गि०॥१३॥
चीर भींजाय राजुल नारनां, वागे छे कांई कंटक अपार रे. गि०॥१४॥
हीरविजय गुरु हीरलो, '**लब्धिविजय**' कहे करजोड रे. गि०॥१५॥
नेमि तीर्थंकर बावीसमां, सखीओ कहे ना मळे एनी जोड रे. गि०॥१६॥

(११) नेमजी रे... तोरणे आवी...



(राग : बेना रे.../आज मनोरथ.../चार दिवसना...)

नेमजी रे... तोरणे आवी आम पाछा न जवाय;
कुंवारी कन्या राणी राजुल कहेवाय (२)
प्रभु गुण गाय, सामे ज जवाय... ॥१॥
आठ भवोनी प्रीतलडी, नवमे भवे ना छोडाय (२);
बाळब्रह्मचारी राजुल बाळा, वीनवे नेमजीने पाय (२);
नेमजी रे... पाछा वळीने आज ग्रहो मारो हाथ. ॥२॥
पशुओनो पोकार सुणीने, रथने पाछो वाळ्यो (२);
धुसके रुवे राजुल राणी, धरती पटे ढळाणी (२);
नेमजी रे... पाछा वळीने तिहां दीधुं वरसीदान. ॥३॥
पंचावन में दिन प्रभुजी, पाम्या केवळज्ञान (२);
सुणी वधामणी राजुलबाळा, नेमजीने शरणे जाय (२);
नेमजी रे... दीक्षा आपी कर्म खपावी भवोभव तारी कहेवाय. ॥४॥
केवळ कल्याणक जे कोई गाशे, लेशे मुक्तिना राज (२);
नेमजी पहेलां, पहोंच्या राजुल, मुक्तिना मार्गे जाय (२);
नेमजी रे हीरविजय गुरु हीरलो ने '**वीरविजय**' गुणगाय. ॥५॥

(१२) नेमि जिनेश्वर निज कारज कर्यो...



(राग : चरणोमें तेरे रहेकर.../वैष्णवजन.../
मैत्री भावनुं.../सूरज मंडण...)

नेमि जिनेश्वर निज कारज कर्यो, छांड्यो सर्व विभावोजी;
आतम शक्ति सकल प्रगट करी, आस्वाद्यो निज भावोजी. ॥१॥
राजुल नारी रे सारी मति धरी, अवलंब्या अरिहंतोजी;
उत्तम संगे रे उत्तमता वधे, सधे आनंद अनंतोजी. ॥२॥

धर्म अधर्म आकाश अचेतना, ते विजाती अग्राह्योजी;
पुद्गल ग्रहवे रे कर्म कलंकता, वाधे बाधक बाह्योजी. ॥३॥
रागी संगे रे राग दशा वधे, थाए तिणे संसारोजी;
निरागीथी रे रागनुं जोडवुं, लहीए भवनो पारोजी. ॥४॥
अप्रशस्तता रे टाळी प्रशस्तता, करतां आश्रव नासेजी;
संवर वाधे रे साधे निर्जरा, आतम भाव प्रकाशेजी. ॥५॥
नेमि प्रभु ध्याने एकत्वता, निज तत्वे इकतानोजी;
शुकल ध्याने रे साधी सुसिद्धता, लहिए मुक्ति निदानोजी. ॥६॥
अगम अरूपी रे अलख अगोचरु, परमातम परमीशोजी;
'**देवचंद्र**' जिनवरनी सेवना, करतां वाधे जगीशोजी. ॥७॥



(९३) नेमि निरंजन नाथ हमारो...

(राग : व्हाला मारा हैयामां.../अंतरजामी सुण.../
चार दिवसना.../मेरा जीवन)

नेमि निरंजन नाथ हमारो, अंजन वर्ण शरीर,
पण अज्ञान तिमिरने टाळे, जीत्यो मन्मथ वीर;
प्रणमो! प्रेम धरीने पाय, पामो परमानंदा,
यदुकुल चंदाराय, माता शिवादेवी नंदा. ॥१॥
राजीमती शुं पूरव भवनी, प्रीत भली परे पाळी;
पाणिग्रहण संकेते आवी, तोरणथी रथ वाळी. प्रणमो० ॥२॥
अबला साथे नेह न जोड्यो, ते पण धन्य कहाणी;
एक रसे बेउ प्रीत थई तो, कीर्ति क्रोड गवाणी. प्रणमो० ॥३॥
चंदन परिमल जिम खीर घृत, एक रूप नवि अळगा;
ईम जे प्रीत निवारे अहोनिश, ते धन गुणशुं वळगा. प्रणमो० ॥४॥
ईम एकांगी जे नर करशे, ते भवसागर तरशे;
'**ज्ञानविमल**' लीला ते लहेशे, शिवसुंदरी तस वरसे. प्रणमो० ॥५॥

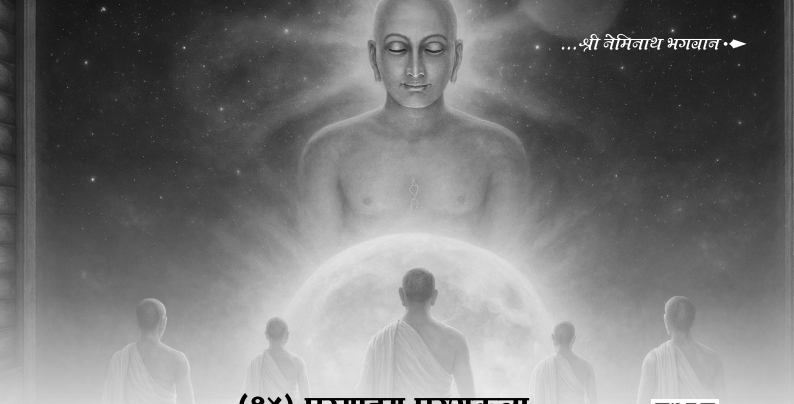

(१४) परमातम पूरणकला...

(राग : ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम.../वैष्णवजन.../
अजित जिणंदशुं.../प्रेम भरेलुं...)

परमातम पूरणकला, पूरण गुण हो पूरण जन आश;
पूरण दृष्टि निहाळीए, चित्त धरीए हो अमची अरदास. ॥१॥
सर्व देशघाती सहुं, अघाती हो करी घात दयाळ;
वास कियो शिवमंदिरे, मोहे वीसरी हो भमतो जगजाळ. ॥२॥
जगतारक पदवी लही, तार्या सही हो अपराधी अपार;
तात कहो मोहे तारतां, किम किनी हो ईण अवसर वार. ॥३॥
मोह महामद छाकथी, हुं छकीओ हो नहि शुद्धि लगार;
उचित सहि ईणे अवसरे, सेवकनी हो करवी संभाळ. ॥४॥
मोह गये जो तारशो, तिण वेळा हो किहां तुम उपगार;
सुख वेळा सज्जन घणा, दुःख वेळा हो विरला संसार. ॥५॥
पण तुम दरिशन जोगथी, थयो हृदये हो अनुभव प्रकाश;
अनुभव अभ्यासी करे, दुःखदायी हो सहु कर्म विनाश. ॥६॥
कर्म कलंक निवारीने, निज रूपे हो रमे रमताराम;
लहत अपूरव भावथी, ईण रीते हो तुम पद विशराम. ॥७॥
त्रिकरण जोगे विनवुं, सुखदायी हो शिवादेवीना नंद;
'चिदानंद' मनमें सदा, तुमे आवो हो प्रभु नाणदिणंद. ॥८॥

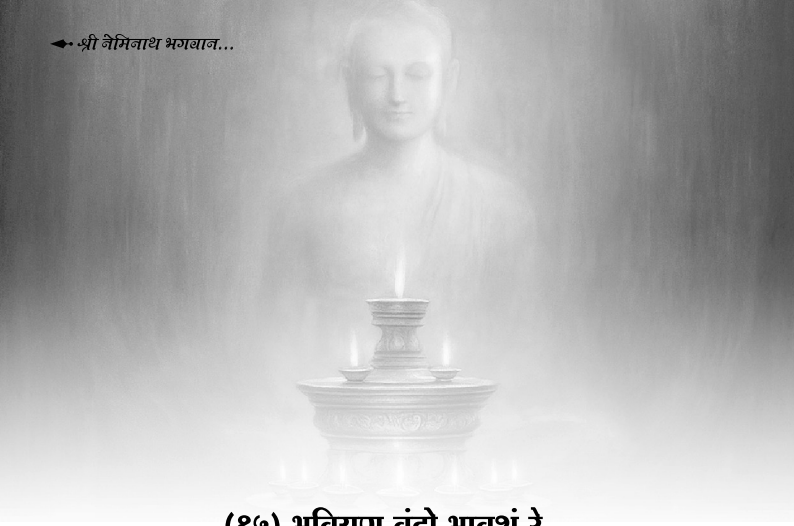

(१५) भवियण वंदो भावशुं रे...

(रागः मुक्ति मळे के ना मळे.../अबोलडा शाना...)

भवियण वंदो भावशुं रे, साहिब नेमिजिणंद रे;
भावशुं नित्य वंदता रे, लहीये परमानंद रे. ॥१॥
ब्रह्मचारी चुडामणि रे, साचो ए वडवीर रे;
मदन मतंगज केसरी रे, मेरु महीधर धीर रे. ॥२॥
रूप अनंत जिनतणुं रे, सोहे सहज सत्तूर रे;
हरखे नयणे निरखतां रे, प्रसरे प्रेम पंडूर रे. ॥३॥
गुण अनंता प्रभु तणां रे, कहेता न आवे पार रे;
निरूपम गुणगण मणि तणो रे, मानुं ए भंडार रे. ॥४॥
वदन अनोपम जिन तणुं रे, ए मुज नयन चकोर रे;
ए निरखी हरखी चित्तमां रे, उमट्यो आनंद जोर रे. ॥५॥
अतुलित बल अरिहंतजी रे, भय भंजन भगवंत रे;
कामित पूरण सुरतरु रे, केवल कमलाकंत रे. ॥६॥
राजीमति मन वालहो रे, यादवकुल शणगार रे;
नयविजय प्रभु वंदता रे, नितु-नितु जय जयकार रे. ॥७॥

(१६) मैं आज दरिसण पाया...



(राग : रुडा राजमहेलने.../
होठों से छु लो तुम.../ए मेरे वतन के...)

मैं आज दरिसण पाया, श्री नेमिनाथ जिनराया,
प्रभु शिवादेवीना जाया, प्रभु समुद्रविजय कुळ आया;
कर्मों के फंद छोडाया, ब्रह्मचारी नाम धराया,
जिणे तोडी जगत की माया रे. मैं०॥१॥

रैवतगिरि मंडन राया, कल्याणक तीन सोहाया;
दीक्षा केवल शिव राया, जगतारक बिरुद धराया;
तुम बेठे ध्यान लगाया रे. मैं०॥२॥

अब सुणो त्रिभुवन राया, मैं कर्मो के वश आया;
मैं चतुर्गति भटकाया, मैं दुःख अनंता पाया;
ते गिनती नाही गिनाया रे. मैं०॥३॥

मैं गर्भावास में आया, ऊंधे मस्तक लटकाया;
आहार विरस भुक्ताया, एम अशुभ करम फल पाया;
ईण दुःख से नाहीं मुकाया रे. मैं०॥४॥

नरभव चिंतामणि पाया, तब चार चोर मिल आया;
मुजे चौटे में लूंट खाया, अब सार करो जिनराया;
किस कारण देर लगाया रे. मैं०॥५॥

जिणे अंतरगत में लाया, प्रभु नेमि निरंजन ध्याया;
दुःख संकट विघन हटाया, ते परमानंद पद पाया;
फिर संसारे नहीं आया रे. मैं०॥६॥

मैं दूर देश से आया, प्रभु चरणे शीश नमाया;
मैं अरज करी सुखदाया, तुमे अवधारो महाराया;
एम '**वीरविजय**' गुण गाया रे. मैं०॥७॥

थोय

(१)

राजुल वर नारी, रूपथी रति हारी;
तेहना परिहारी, बालथी ब्रह्मचारी;
पशुआ उगारी, हुआ चारित्रधारी,
केवलसिरि सारी, पामीया घाती वारी. ॥१॥
त्रण ज्ञान संयुता, मातनी कूखे हुंता,
जन्मे पुरुहुंता, आवी सेवा करंता;
अनुक्रमे व्रत करंता, पंच समिति धरंता,
महियल विचरंता, केवलश्री वरंता. ॥२॥
सवि सुरवर आवे, भावना चित्त लावे,
त्रिगडुं सोहावे, देवछंदो बनावे;
सिंहासन ठावे, स्वामीना गुण गावे,
तिहां जिनवर आवे, तत्त्ववाणी सुणावे. ॥३॥
शासनसुरी सारी, अंबिका नाम धारी,
जे समकिती नरनारी, पाप संतापवारी;
प्रभु सेवाकारी,जाप जपीए सवारी,
संघ दुरित निवारी, '**पद्म**'ने जेह प्यारी. ॥४॥

(२)

गिरनारे ते नेमनाथ गाजे रे, राणी राजुल ध्रुसके रुवे रे;
मारो शामलीओ गिरधारी रे, एणे हरणोने हरणी बचावी रे. ॥१॥
एक चढता चढती दीसे रे, अष्टापद जिन चोवीसे रे;
तमे शत्रुंजो जुहारो रे, आबुजी जई दुःख वारो रे. ॥२॥
ज्यां चोत्रीश अतिशय छाजे रे, त्यां बेठा धिंगडमल गाजे रे;
धिंगडमलनी वाणी मीठी रे, सहु सुणजो समकित प्राणी रे. ॥३॥

त्यां बेठा अंबिका भारी रे, एने नाके सोनानी वारी रे;
सहु संघना संकट चूरो रे, '**नयविमल**'ना वांछित पूरो रे. ॥४॥

(३)

नेमिनाथं वन्दे बाढम्... ॥१॥ सर्वे सर्वाः शं मे दद्यात्... ॥२॥
सार्वं वाक्यं कुर्यात् सिद्धिम्... ॥३॥ कल्याणं मे दद्यादम्बा...॥४॥

(४)

(राग : मंदिर छो... / तने रात दिवस... / हे मेरे प्यारे...)

सुर असुर वंदित पाय पंकज, मयण मल्लमक्षोभितं,
घन सुघन श्याम शरीर सुंदर, शंख लंछन शोभितं;
शिवादेवी नंदन त्रिजगवंदन, भविक कमल दिनेश्वरं,
गिरनार गिरिवर शिखर वंदु, श्री नेमिनाथ जिनेश्वरं. ॥१॥
अष्टापदे श्री आदि जिनवर, वीर पावापुरीवरं,
वासुपूज्य चंपा नयरे सिध्या, नेम रैवत गिरिवरं;
सम्मेतशिखरे वीश जिनवर, मुक्ति पहोंता मुनिवरं,
चोवीश जिनवर नित्य वंदु, सयल संघ सुहंकरं. ॥२॥
अग्यार अंग उपांग बार, दश पयन्ना जाणीये,
छ छेद ग्रंथ पसत्थ सत्था, चार मूळ वखाणीये;
अनुयोगद्वार उदार नंदीसूत्र, जिनमत गाईए,
निर्युक्ति चूर्णि भाष्य टीका, पिस्तालीश आगम ध्याईए. ॥३॥
दोय दिशी बाळक दोय जेहने, सदा भवियण सुखकरुं,
दुःखहरी अंबा लुंब सुंदर, दुरित दोहग अपहरुं;
गिरनार मंडन नेमि जिनवर, चरण पंकज सेवीए,
चउविह संघ सुप्रसन्न मंगल, करो ते अंबादेवीए. ॥४॥



श्री पार्श्वनाथ भगवान

चैत्यवंदन

(१) आश पूरे प्रभु पासजी...

आश पूरे प्रभु पासजी, त्रोडे भवपास;
वामा माता जनमीया, अहि लंछन जास. ॥१॥
अश्वसेन सुत सुखकरुं, नव हाथनी काय;
काशी देश वाराणसी, पुण्ये प्रभु आय. ॥२॥
एकसो वरसनुं आउखुं ए, पाळी पार्श्वकुमार;
'**पद्म**' कहे मुगते गया, नमतां सुख निरधार. ॥३॥

(२) ॐ नमः पार्श्वनाथाय...

ॐ नमः पार्श्वनाथाय, विश्व-चिंतामणीयते;
ह्रीँ धरणेन्द्र-वैरोट्या-पद्मादेवी-युताय ते. ॥१॥
शान्ति-तुष्टि-महापुष्टि-धृति-कीर्ति-विधायिने;
ॐ ह्रीँ द्विड्-व्याल-वैताल-सर्वाधि-व्याधि-नाशिने. ॥२॥
जयाऽजिताख्या-विजयाख्या-ऽपराजितयान्वितः;
दिशां पालै-र्ग्रहै-र्यक्षै-र्विद्यादेवीभिरन्वितः. ॥३॥
ॐ असिआउसाय नमस्तत्र त्रैलोक्य-नाथताम्;
चतुःषष्टि-सुरेन्द्रास्ते भासन्ते छत्र-चामरैः. ॥४॥
श्री शंखेश्वरमंडन! पार्श्वजिन! प्रणत कल्पतरुकल्प!;
चूरय दुष्टव्रातं, पूरय मे वांछितं नाथ!. ॥५॥

(3) जय चिंतामणी पार्श्वनाथ...

जय चिंतामणी पार्श्वनाथ! जय त्रिभुवन स्वामी;
अष्टकर्म रिपु जीतीने, पंचमी गति पामी. ॥१॥
प्रभु नामे आनंद कंद, सुख संपत्ति लहीए;
प्रभु नामे भवभव तणां, पातिक सवि दहीए. ॥२॥
ॐ ह्रीँ वर्ण जोडी करी, जपीए पारस नाम;
विष '**अमृत**' थई परिणमे,पामे अविचल ठाम. ॥३॥

स्तवन

(१) जिनजी त्रेवीशमो जिन पास...

(राग : पासजी वामाजीना नंद के सुणज्यो विनंति रे लो...)

जिनजी त्रेवीशमो जिन पास के,
आश मुज पूरवे रे लो, माहरा नाथजी रे लो०
जिनजी इहभव परभव दुःख, दोहग सवि चूरवे रे लो; मा०
जि० आठ प्रातिहार्यशुं, जगमां तुं जयो रे लो, मा०
जि० ताहरा वृक्ष अशोकथी, शोक दूरे गयो रे लो, मा०. ॥१॥
जि० जानु प्रमाण गीर्वाण, कुसुम वृष्टि करे रे लो, मा०
जि० दिव्यध्वनि सुर पुरे के, वांसलीये स्वरे रे लो; मा०
जि० चामर केरी हार चलंती, एम कहे रे लो, मा०
जि० जे नमे अम परे ते भवी, उर्ध्वगति लहे रे लो, मा०. ॥२॥
जि० पादपीठ सिंहासन, व्यंतर विरचीये रे लो, मा०
जि० तिहां बेसी जिनराज, भविक देशना दीये रे लो, मा०
जि० भामंडल शिर पूंठे, सूर्य परे तपे रे लो, मा०
जि० निरखी हरखे जेह, तेहना पातक खपे रे लो, मा०. ॥३॥
जि० देवदुंदिभिनो नाद, गंभीर गाजे घणो रे लो, मा०
जि० त्रण छत्र कहे तुज के, त्रिभुवन पतिपणो रे लो; मा०

जि० ए ठकुराई तुज के, बीजे नवि घटे रे लो, मा०
जि० रागी द्वेषी देव के, ते भवमां अटे रे लो, मा०. ॥४॥
जि० पूजक निंदक दोय के, ताहरे समपणे रे लो, मा०
जि० कमठ धरणपति उपर, समचित्त तुं गणे रे लो; मा०
जि० पण उत्तम तुज पाद, '**पद्म**' सेवा करे रे लो, मा०
जि० तेह स्वभावे भव्य के, भवसागर तरे रे लो, मा०. ॥५॥

(२) अंतरजामी सुण अलवेसर...

(राग : मैत्री भावनुं पवित्र झरणुं.../तुं प्रभु माहरो.../
होशवालों को.../होंठो से छू लो.../वैष्णवजन...)

अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो रे,
सांभळीने आव्यो हुं तीरे, जन्म मरण दुःख वारो;
सेवक अरज करे छे राज, अमने शिवसुख आपो,
आपो आपोने महाराज, अमने मोक्ष सुख आपो ॥१॥
सहुकोनां मनवांछित पूरो, चिंता सहुनी चूरो रे;
एहवुं बिरुद छे राज तुमारुं, केम राखो छो दूरे. सेवक०॥२॥
सेवकने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो रे;
करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपकार न करशो. सेवक०॥३॥
लटपटनुं हवे काम नहीं छे, प्रत्यक्ष दरिसण दीजे रे;
धुमाडे धीजुं नहीं साहिब, पेट पड्यां पतीजे. सेवक०॥४॥
श्री शंखेश्वर मंडन साहिब, विनतडी अवधारो रे;
कहे '**जिनहर्ष**' मया करी मुजने, भवसागरथी तारो. सेवक०॥५॥

(3) अखियां दरिशन की है प्यासी....



(रागः मेरे नैना सावन.../
आई बसो भगवान.../दरिशन द्यो...)

अखियां दरिशन की है प्यासी...
पुरिषादानी पार्श्व तुमारी, सुरनर जनता दासी;
आशा पूरण तुं अवनितल, सुरतरुने संकासी. ॥१॥
निरागी शुं राग करंता, होवत जगमां हांसी;
एक पखो जे नेह चलावे, दियो तेहने शाबाशी. ॥२॥
अजर अमर अकलंक अनंत गुण, आप भये अविनाशी;
कारज सकल करी सुख पायो, अब क्युं होत उदासी. ॥३॥
तुं पुरुषोत्तम परमपुरुष है, तुं जग में जितकासी;
जगथी दूर रह्यो पण मुज चित्त, अंतर क्युं कर जासी? ॥४॥
वामानंदन वंदन तुमचा, करत है शुभ मति वासी;
'**ज्ञानविमल**' प्रभु चरण पसाये, समकित लील विलासी. ॥५॥

(४) अखियां हरखण लागी...



(राग : मैत्री भावनुं.../कोयल टहुंकी.../
मेरे नैना सावन भादो.../जिन तेरे...)

अखियां हरखण लागी, हमारी अखियां हरखण लागी...
दरिशण देखत पार्श्व जिणंद को, भाग्य दशा अब जागी. ॥१॥
अकल अरूपी और अविनाशी, जगमें तुं ही निरागी. ॥२॥
सूरत सुंदर अचरिज एही, जग जनने करे रागी. ॥३॥
शरणागत प्रभु! तुज पद पंकज, सेवना मुज मति जागी. ॥४॥
लीला लहेरे दे निज पदवी, तुम सम को नहीं त्यागी. ॥५॥
वामानंदन चंदननी परे, शीतल तुं ही सौभागी. ॥६॥
'**ज्ञानविमल**' प्रभु ध्यान धरंता, भव भय भावठ भांगी. ॥७॥



(५) अब मोहे! ऐसी आय बनी...

(राग : जिन! तेरे.../पार्श्व चिंतामणी.../
आई बसो भगवान...)

अब मोहे! ऐसी आय बनी, (२)
श्री शंखेश्वर पार्श्व जिनेश्वर, मेरो तुं एक धणी. अब०॥१॥
तुम बिन कोउ चित्त न सुहावे, आवे कोडी गुणी;
मेरो मन तुज उपर रसियो, अलि जिम कमल भणी. अब०॥२॥
तुम नामे सवि संकट चूरे, नागराज धरणी;
नाम जपुं निशि वासर तेरो, ए मुज शुभ करणी. अब०॥३॥
कोपानल उपजावत दुर्जन, मथन वचन अरणी;
नाम जपुं जलधार तिहां तुज, धारुं दुःख हरणी. अब०॥४॥
मिथ्यामति बहु जन है जग में, पद न धरत धरणी;
उनसे अब तुज भक्ति प्रभावे, भय नहि एक कणी. अब०॥५॥
सज्जन नयन सुधारस अंजन, दुर्जन रवि भरणी;
तुज मूरति नीरखे सो पावे, सुख '**जस**' लील घणी. अब०॥६॥



(६) अहो! अहो! पासजी! मुज मळिया रे...

(राग : पंचम सुरलोकना वासी.../ मारी आँखोमां...)

अहो! अहो! पासजी! मुज मळिया रे,
मारा मनना मनोरथ फळिया...
तारी मूरति मोहनगारी रे, सहु संघने लागे छे प्यारी रे;
तमने मोही रह्यां सुर नर नारी. अहो०॥१॥
अलबेली मूरत प्रभु तारी रे, तारा मुखडा उपर जाउं वारी रे;
नाग-नागणीनी जोड उगारी. अहो०॥२॥
धन्य धन्य देवाधिदेवा रे, सुरलोक करे तारी सेवा रे;
अमने आपो ने शिवपुर मेवा. अहो०॥३॥

तमे शिवरमणीना रसिया रे, जई मुक्तिपुरीमां वसिया रे;
मारा हृदयकमलमां वसिया. अहो०॥४॥
जे कोई पार्श्वतणा गुण गाशे रे, भवोभवनां पातिक जाशे रे;
तेना समकित निर्मल थाशे. अहो०॥५॥
प्रभु त्रेवीसमां जिनराया रे, माता वामादेवीना जाया रे;
अमने दरिशण द्योने दयाला. अहो०॥६॥
हुं तो लळी लळी लागुं छुं पाय रे, मारा उरमां ते हरख न माय रे;
एम '**माणेकविजय**' गुण गाय. अहो०॥७॥

(७) आई बसो भगवान...

(राग : मेरे नैना सावन भादो.../सोनामां सुगंध भळे.../
अब मोहे.../दरिशन द्यो...)

आई बसो भगवान, मेरे मन! आई बसो भगवान;
मैं निर्गुणी ईतना मांगत हुं, थाये मेरा कल्याण. ॥१॥
मेरे मनकी तुम सब जानो, क्या करुं आपसे ब्यान;
विश्व हितैषी दीनदयालु, रखीये मुज पर ध्यान. ॥२॥
भोगाधीन होवत मन मेलुं, बिसरी तुम गुण गान;
वहां से छुडावो हृदये आई, अरिभंजक भगवान. ॥३॥
आप कृपा से तर गये केई, रह गया में दर्दवान;
निगाह रखके निर्मल किजीये, धनवंतरी भगवान. ॥४॥
श्री शंखेश्वर पार्श्व जिनेश्वर, दीजिये तुम गुण गान;
ईनही सहारे '**चिद्घन**' देवा, बनुंगा आप समान. ॥५॥





(८) आज मनोरथ माहरो फळियो...

(राग : विरतिधरनो वेष.../
अमी भरेली.../एक पंखी आवीने...)

आज मनोरथ माहरो फळियो, पास जिनेसर मळियो रे;
दुर्गतिनो भय दूरे टळियो, पायो पुण्य पोटलियो रे. ॥१॥
मोह महाभट जे छे बळियो, सयल लोक जेणे छळियो रे;
माया मांहे जग सहुं डुळियो, ते तुज तेजे गळियो रे. ॥२॥
तुज दरिशण विण भव बहुं रुलियो, कुगुरु कुदेवे छळियो रे;
झाझा दुःखमांही हांफळियो, गति चारे आफळियो रे. ॥३॥
कुमति कदाग्रह हेजे दळियो, जब जिनवर सांभळीयो रे;
प्रभु दीठे आनंद उछळियो, मगमांहे घी ढळियो रे. ॥४॥
अवर देवशुं नेह विचलियो, जिनजीशुं चित्त भळियो रे;
पामी सरस सुधारस फळियो, कुण ले जल भांभळियो रे. ॥५॥
जन मन वांछित पूरण फळियो, चिंतामणि झळहळियो रे;
'**मेघ**' कहे गुणमणि मादलियो, द्यो दोलत दादलियो रे. ॥६॥

(९) ओलगडी अवधारो...

(राग : साथिया पुरावो द्वारे.../हे त्रिशलाना जाया.../
एक जन्म्यो राज दुल्हारो...)

ओलगडी अवधारो, आश धरी हुं आव्यो;
श्री शंखेश्वर अलवेसर तारी, आश धरी हुं आव्यो;
सेवक पार करोने साहिब! चिंतामणि में पायो. ॥१॥
देव घणा में सेव्या पहेलां, जिहां लगे तुं नवि मळियो;
हवे भवांतरमां पण तेहथी, किम हि न जाउं छळियो. ॥२॥
अतिशय ज्ञानादिक गुण तारा, दीसे छे प्रभु जेहवा;
सूरज आगळ ग्रहगण दीपे, हरिहर दीपे तेहवा. ॥३॥

कलिकाले प्रगट तुम परचो, देखुं विश्व मोझार;
पुरिषादाणी पार्श्व जिनेश्वर, बाह्य ग्रहीने तारो. ॥४॥
पुष्करावर्त घनाघन पामी, और छिल्लर नवि याचुं;
कामकुंभ साचो पामीने, चित्त करे कोण काचुं? ॥५॥
जरा निवारी जादव केरी, सुरनरवर सहु पूज्यां;
पासजी प्रत्यक्ष देखत दरिशन, पाप मेवासी धूज्यां. ॥६॥
सो वाते एक वातडी जाणो, भवजल पार उतारो;
पंडित उत्तमविजयनो सेवक, '**रत्नविजय**' जयकारो. ॥७॥

(९०) कोयल टहुंकी रही मधुवन में...

(राग : यशोमति मैया से.../तुं प्रभु माहरो.../टीलडी रे...)

कोयल टहुंकी रही मधुवन में,
पार्श्व शामळिया बसो मेरे मन में...
काशी देश वाराणसी नगरी,
जन्म लियो प्रभु क्षत्रिय कुल में. ॥१॥
बाळपणामां प्रभु अद्भुत ज्ञानी,
कमठ को मान हर्यो एक पल में. ॥२॥
नाग निकाला काष्ठ चिराकर,
नाग को सुरपति कियो एक छीन में. ॥३॥
संयम लई प्रभु विचरवा लाग्या,
संयमे भींज गयो एक रंग में. ॥४॥
सम्मेतशिखर प्रभु मोक्षे सिधाव्या,
पार्श्वजी को महिमा तीन भुवन में. ॥५॥
'**उदयरत्न**' की एही अरज है,
दिल अटको तोरा चरणकमल में. ॥६॥

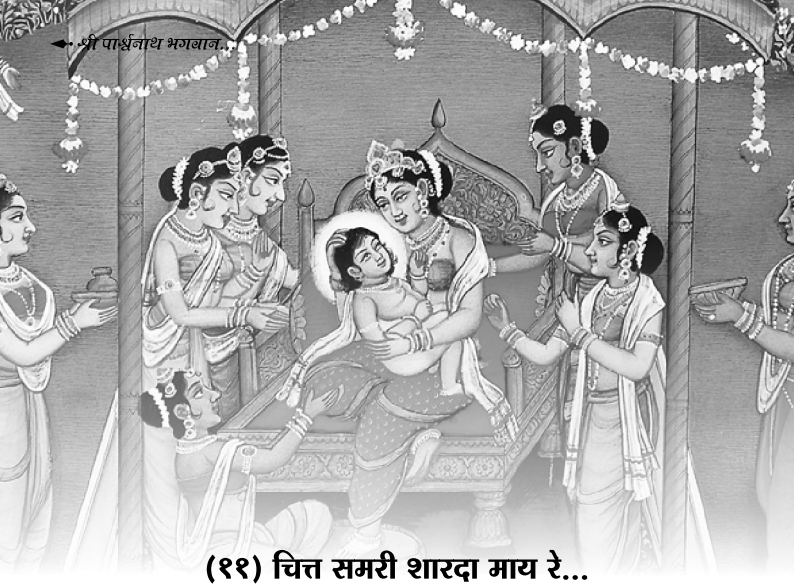

(११) चित्त समरी शारदा माय रे...

(राग : भवि तुमे अष्टमीतिथि.../मारी आँखोमां...)

चित्त समरी शारदा माय रे, वळी प्रणमुं निज गुरु पाय रे,
गाउं त्रेवीसमां जिनराय, व्हालाजीनुं जन्मकल्याणक गाउं रे,
सोनारूपाने फूलडे वधावुं रे, थाळ भरी भरी मोतीडे वधावुं. व्हाला०॥१॥
काशी देश वाराणसी राजे रे, अश्वसेन छत्रपति छाजे रे,
राणी वामा गृहिणी सुराजे. व्हाला०॥२॥
चैत्र वदि चोथे ते चविया रे, माता वामा कूखे अवतरिया रे,
अजुवाळ्या एहनां परियां. व्हाला०॥३॥
पोष वदि दसमी जगभाण रे, होवे प्रभुजीनुं जन्मकल्याण रे,
वीशस्थानक सुकृत प्रमाण. व्हाला०॥४॥
नारकी नरके सुख पावे रे, अंतर्मुहूर्त दुःख जावे रे,
ए तो जन्मकल्याणक कहावे. व्हाला०॥५॥
प्रभु त्रण भुवन शिरताज रे, तुमे तारण तरण जहाज रे,
कहे '**दीपविजय**' कविराज. व्हाला०॥६॥

(१२) जय! जय! जय! जय! पास जिणंदा...



(राग : दीवो रे दीवो प्रभु.../जय जय आरती.../
वैरागीने वंदन../मालकौंश../दरिशन द्यो.../आज मनोरथ../कोयल टहुंकी..)

जय! जय! जय! जय! पास जिणंदा...
अंतरीक्ष प्रभु! त्रिभुवन तारक, भविक कमल-उल्लास दिणंदा. ॥१॥
तेरे चरण शरण में कीनो, तुम बिन कुन तोडे भवफंदा;
परम पुरुष परमारथदर्शी, तुं दिये भविककुं परमानंदा. ॥२॥
तुं नायक तुं शिवसुखदायक, तुं हितचिंतक, तुं सुखकंदा;
तुं जनरंजन, तुं भवभंजन, तुं केवल कमला-गोविंदा. ॥३॥
कोडी देव मिलके कर न शके, एक अंगूठ रूप प्रतिछंदा;
ऐसो अद्भुत रूप तिहारो, वरसत मानुं अमृत के बुंदा. ॥४॥
मेरे मन मधुकर के मोहन, तुम हो विमल सदल अरविंदा;
नयन चकोर विलास करत है, देखत तुम मुख पूनमचंदा. ॥५॥
दूर जावे प्रभु! तुम दरिशन से, दुःख दोहग दारिद्र अघदंदा;
वाचक **'यश'** कहे सहज फलत है, जे बोले तुम गुण के वृंदा. ॥६॥

(१३) तार मुज तार मुज...



(राग : पास शंखेश्वरा सार.../ऋषभ जिनराज मुज...)

तार मुज तार मुज तार त्रिभुवन धणी,
पार उतार संसार स्वामी;
प्राण तुं त्राण तुं शरण आधार तुं,
आतमाराम मुज तुंही स्वामी. ॥१॥
तुंही चिंतामणि, तुंही मुज सुरतरु,
कामघट कामधेनु विधाता;
सकल संपत्ति करुं, विकट संकट हरुं,
पास शंखेश्वरो मुक्तिदाता. ॥२॥

पुण्य भरपूर अंकुर मुज जागियो,
भाग्य-सौभाग्य मुख नूर वाध्यो;
सकल वांछित फळ्यो, माहरो दिन वळ्यो,
पार्श्व शंखेश्वरो देव लाध्यो. ॥३॥
मूर्ति मनोहारिणी, भवजलधि तारिणी,
निरखत नयन आनंद हुओ;
पार्श्व प्रभु भेटिया पातिक मेटिया,
लेटिया ताहरे चरणे जुओ. ॥४॥
पास तुं मुज धणी, प्रीति मुज बनी घणी,
विबुधवर नयविजय गुरु वखाणी;
मुक्तिपद आपजो आप पद थापजो,
'**जसविजय**' आपनो भक्त जाणी. ॥५॥

(१४) तारा नयना रे प्याला प्रेमना भर्या छे...

(राग : हेले चढ्यां रे.../झगमगता तारलानुं.../
दादा तारा पगला पडया ने...)

तारा नयना रे प्याला, प्रेमना भर्या छे,
दया रसना भर्या छे, अमी छांटना भर्या छे...
तारा नयना रे प्याला, प्रेमना भर्या छे. ॥१॥
जे कोई ताहरी नजरे चढी आवे,
कारज तेहना तें सफळ कर्या छे. ॥२॥
प्रगट थई पाताळथी प्रभु तें,
जादवना दुःखो दूर कर्या छे. ॥३॥
पन्नगपति पावकथी उगार्यो,
जन्म-मरण भय तेहनां हर्या छे. ॥४॥

पतित पावन शरणागत वत्सल,
दरिशन दीठे मारा चित्तडां ठर्या छे. ॥५॥
श्री शंखेश्वर पार्श्व जिनेश्वर,
तुज पद पंकज आजथी धर्या छे. ॥६॥
जे कोई तुजने ध्याने ध्यावे,
अमृत सुख तेने रंगथी वर्या छे. ॥७॥

(१५) तारी मूरतिनुं नहि मूल रे...

(राग : तारी मूरतिए.../सुणजो साजन संत.../
वैष्णवजन.../होशवालों को.../मारी आंखोमां...)

तारी मूरतिनुं नहि मूल रे, लागे मने प्यारी रे;
तारी आंखडीए मन मोह्युं रे, जाउं बलिहारी रे. ॥१॥
त्रण भुवननुं तत्त्व लहीने, निर्मळ तुंही निपायो रे;
जग सघळो निरखीने जोतां, तारी होडे को नहि आयो रे. ॥२॥
त्रिभुवन तिलक समोवड तारी, सुंदर सुरति दीसे रे;
कोडी कंदर्प सम रूप निहाळी, सुर नरना मन हींसे रे. ॥३॥
ज्योति स्वरूपी तुं जिन दीठो, तेने न गमे बीजुं कांई रे;
ज्यां जईए त्यां पूरण सघले, दीसे तुंही ज तुंही रे. ॥४॥
तुज मुख जोवाने रढ लागी, तेने न गमे घरनो धंधो रे;
आळपंपाळ सवि अळगी मूकी, तुजशुं मांड्यो प्रतिबंधो रे. ॥५॥
भवसागरमां भमतां भमतां, प्रभु पार्श्वनो पाम्यो आरो रे;
'**उदयरत्न**' कहे बांह्य ग्रहीने, सेवक पार उतारो रे. ॥६॥



(१६) तुं प्रभु मारो हुं प्रभु तारो...

(राग : सागर किनारे दिल ये पुकारे.../
तुम्ही मेरे.../पार्श्व चिंतामणि...)

तुं प्रभु मारो हुं प्रभु तारो, क्षण एक मुजने नाहि विसारो;
महेर करी मुज विनंती स्वीकारो, स्वामी सेवक जाणी निहाळो. ॥१॥
लाख चोराशी भटकी प्रभुजी, आव्यो हुं तारे शरणे हो जिनजी;
दुर्गति कापो शिवसुख आपो, भक्त सेवकने निजपद स्थापो. ॥२॥
अक्षय खजानो प्रभु तारो भर्यो छे, आपो कृपाळु में हाथ धर्यो छे;
वामानंदन जगवंदन प्यारो, देव अनेरा मांहे तुंही ज न्यारो. ॥३॥
पल पल समरुं नाथ शंखेश्वर, समरथ तारण तुंही जिनेश्वर;
प्राण थकी तुं अधिको वहालो, दया करी मुजने नेहे निहाळो. ॥४॥
भक्तवत्सल तारुं बिरुद जाणी, केड न छोडुं एम लेजो जाणी;
चरणोनी सेवा नित नित चाहुं, घडी घडी मनमांहे हुं उमाहुं. ॥५॥
'**ज्ञानविमल**' तुज भक्ति प्रभावे, भवोभवनां संताप शमावे;
अमीय भरेली तारी मूरति निहाळी, पाप अंतरना देजो पखाळी. ॥६॥



(१७) ध्रुवपद रामी! हो स्वामी! माहरा...

(राग : मेरे नैना सावन भादो.../दिल दिया है.../
युगोथी हुं.../वीर मने...)

ध्रुवपद रामी! हो स्वामी! माहरा,
निसकामी! गुणराय सुज्ञानी,
निजगुण कामी! हो पामी तुं धणी,
ध्रुव आरामी! हो थाय सुज्ञानी. ॥१॥
सर्वव्यापी कहे सर्व जाणगपणे,
पर परिणमन स्वरूप सुज्ञानी;

पर रूपे करी तत्त्वपणुं नहीं,
स्व-सत्ता चिद्रुप सुज्ञानी. ॥२॥
ज्ञेय अनेके हो ज्ञान अनेकता,
जल भाजन रवि जेम सुज्ञानी;
द्रव्य एकत्वपणे गुणएकता,
निजपद रमता हो खेम सुज्ञानी. ॥३॥
परक्षेत्रे गत ज्ञेयने जाणवे,
पर क्षेत्रे थयुं ज्ञान सुज्ञानी;
अस्तिपणुं निज क्षेत्रे तुमे कह्युं,
निर्मळता गुण मान सुज्ञानी. ॥४॥
ज्ञेय विनाशे हो ज्ञान विनश्वरुं,
काल प्रमाणे रे थाय सुज्ञानी;
स्वकाले करी स्वसत्ता सदा,
ते पर रीते न जाय सुज्ञानी. ॥५॥
परभावे करी परता पामतां,
स्वसत्ता थिर ठाण सुज्ञानी;
आत्म चतुष्कमयी परमां नहि,
तो किम सहुनो रे जाण सुज्ञानी. ॥६॥
अगुरुलघु निज गुणने देखतां,
द्रव्य सकल देखंत सुज्ञानी;
साधारण गुणनी साधर्म्यता,
दर्पण जलने दृष्टांत सुज्ञानी. ॥७॥
श्री पारस जिन पारस रस समो,
पण ईहां पारस नांहि सुज्ञानी;
पूरण रसियो हो निजगुण परसन्नो,
'**आनंदघन**' मुजमांहि सुज्ञानी. ॥८॥



(१८) नित्य समरुं साहिब सयणा...

(रागः मनमोहन सुंदर मेळा.../सनेही संत ए गिरि सेवो.../
जो शांति जिणंद.../इतनी शक्ति हमे देना.../
सूरज कब दूर गगन.../सिद्धाचलना वासी.../तेरे होठो के दो फूल....)

नित्य समरुं साहिब सयणा, नाम सुणतां शीतल श्रवणा,
जिन दरिसणे विकसे नयणा, गुण गातां उल्लसे वयणा रे;
शंखेश्वर साहिब साचो... बीजानो आशरो काचो रे. ॥१॥
द्रव्यथी देव दानव पूजे, गुण शांत रुचिपणुं लीजे;
अरिहा पद पज्जव छाजे, मुद्रा पद्मासन राजे रे. ॥२॥
संवेगे तजी घरवासो, प्रभु पार्श्वना गणधर थाशो;
तव मुक्तिपुरीमां जाशो, गुणीलोकमां वयणे गवाशो रे. ॥३॥
एम दामोदर जिनवाणी, अषाढी श्रावके जाणी;
जिन वंदी निज घर आवे, प्रभु पार्श्वनी प्रतिमा भरावे रे. ॥४॥
त्रण काल ते धूप उखेवे, उपकारी श्री जिन सेवे;
पछी तेह वैमानिक थावे, ते प्रतिमा पण तिहां लावे रे. ॥५॥
घणां काल पूजी बहुमाने, वळी सूरज चंद्र विमाने;
नागलोकना कष्ट निवार्या, ज्यारे पार्श्वप्रभुजी पधार्या रे. ॥६॥
यदुसैन्य रह्यो रण घेरी, जीत्या नवि जाये वेरी;
जरासंघे जरा तव मेली, हरि बल विना सघळे फेली रे. ॥७॥
नेमीश्वर चोकी विशाली, अट्ठम करे वनमाली;
तूठी पद्मावती बाली, आपे प्रतिमा झाकझमाली रे. ॥८॥
प्रभु पार्श्वनी प्रतिमा पूजी, बळवंत जरा तव धुजी;
छंटकाव न्हवण जल जोती, जादवनी जरा जाय रोती रे. ॥९॥
शंख पूरी सहुने जगावे, शंखेश्वर गाम वसावे;
मंदिरमां प्रभु पधरावे, शंखेश्वर नाम धरावे रे. ॥१०॥

रहे जे जिनराज हजुरे, सेवक मनवांछित पूरे;
ए प्रभुजीने भेटण काजे, शेठ मोतीभाईने राजे रे. ॥११॥
नाना माणेक केरा नंद, संघवी प्रेमचंद वीरचंद;
राजनगरथी संघ चलावे, गामे गामना संघ मिलावे रे. ॥१२॥
अढार अट्ठोत्तेर वरसे, फागण वदि तेरस दिवसे;
जिन वंदी आनंद पावे, **शुभवीर** वचन रस गावे रे. ॥१३॥

(१९) पारसनाथ आधार...

(राग : हे प्रभु! पार्श्व चिंतामणि.../
मैया मोरी.../अब मोहे.../जिन! तेरे...)

पारसनाथ आधार, मेरो प्रभु, पारसनाथ आधार... मेरो०॥१॥
ईहभव परभव वांछित पूरण, शिवपद को दातार... मेरो०॥२॥
वामाजी को नंदन निरख्यो, ते पाम्यो भव पार... मेरो०॥३॥
'**शामळ**' देव आशा पूरो मन की, सेवक की करो सहाय... मेरो०॥४॥

(२०) पार्श्व जिणंदा वामाजी के नंदा...

(राग : देखी श्री पार्श्वतणी मूर्ति...)

पार्श्व जिणंदा वामाजी के नंदा, तुम पर वारी जाउं बोल बोल रे,
हां रे! दरवाजा तेरा खोल खोल रे. ॥१॥
दूर दूर से लंबी सफर से, हम दरिशन आये दोड दोड रे. ॥२॥
पूजा करुंगा धूप धरुंगा, फूल चढाउंगा मोल मोल रे. ॥३॥
तुं मेरा ठाकर मैं तेरा चाकर, एक बार मुज से बोल बोल रे. ॥४॥
श्री शंखेश्वर मंडन सुंदर मूरत, मुखडुं ते झाकम झोल झोल रे. ॥५॥
रूप विबुधनो '**मोहन**' पभणे, रंग लाग्यो चित्त चोल चोल रे. ॥६॥

(२१) पार्श्व जिन! ताहरा रूपनुं मुज...

(राग : आशावरी.../आज मारा.../
वैष्णवजन.../मेली चादर.../पूर्याधनाश्री...)

पार्श्व जिन! ताहरा रूपनुं, मुज प्रतिभास केम होय रे;
तुज मुज सत्ता एकता, अचल विमल अकल जोय रे; ॥१॥
तुज प्रवचन प्रत्यक्ष, निश्चये भेद नहि कोय रे;
व्यवहारे लळी देखीए, भेद प्रतिभेद बहु जोय रे; ॥२॥
बंध नहि मोक्ष नहि निश्चये, व्यवहारे भज होय रे;
अखंडित अबाधित सोय कदा, नित्य अबाधित सोय रे. ॥३॥
अन्वय-हेतु व्यतिरेकथी, अंतरो तुज मुज रूप रे;
अंतरो मेटवा कारणे, आतमस्वरूप अनूप रे. ॥४॥
आतम परमात्मा, शुद्ध नय भेद नहि एक रे;
अवर आरोपित धर्म छे, तेहना भेद अनेक रे. ॥५॥
धरमी धरमथी एकता, ते मुज रूप अभेद रे;
एक सत्ता लख एकता, कहे ते गूढमति खेद रे. ॥६॥
आतम धरम अनुसरी, रमे जे आतमराम रे;
'**आनंदघन**' पदवी लहे, परम आतम तस नाम रे. ॥७॥



(२२) पास शंखेश्वरा सार कर सेवका...

(राग : तार मुज तार मुज.../जय गणेश (२).../
जाग रे जादवा...)

पास शंखेश्वरा सार कर सेवका, देव! कां एवडी वार लागे;
कोडी कर जोडी दरबार आगे खडा, ठाकुरा चाकुरा मान मांगे. ॥१॥
प्रगट था पासजी मेली पडदो परो, मोड असुराणने आप छोडो;
मुज महीराण मंजूषमां पेसीने, खलकना नाथजी बंध खोलो. ॥२॥

जगतमां देव! जगदीश तुं जागतो, एम शुं आज जिनराज! ऊंघे?
मोटा दानेश्वरी तेहने दाखीए, दान दे जेह जगकाल मोंघे. ॥३॥
भीड पडी जादवा जोर लागी जरा, तत्क्षण त्रिकमे तुज संभार्यो;
प्रगट पातालथी पलकमां ते प्रभु, भक्तजन तेहनो भय निवार्यो. ॥४॥
आदि अनादि अरिहंत तुं एक छे, दीनदयाळ छे कोण दूजो?
'**उदयरत्न**' कहे प्रगट प्रभु पासजी, पामी भयभंजनो एह पूजो. ॥५॥

(२३) प्रणमुं पद पंकज पासना...

(राग : गिरुआ रे गुण.../चेतन ज्ञान.../
फुल तुम्हें.../वीर जिणंद.../जननीनी जोड...)

प्रणमुं पद पंकज पासना, जस वासना अगम अनुप रे;
मोह्यो मन मधुकर जेहथी, पामे तस शुद्ध स्वरूप रे. ॥१॥
पंक कलंक शंका नहि, नहि खेदादिक दुःख दोष रे;
त्रिविध अवंचक योगथी लहे, अध्यातम रस पोष रे. ॥२॥
दुर्दशा दूरे करी, भजे मुदिता मैत्री भाव रे;
वर्ते निज चित्त मध्यस्थता, करुणामय शुद्ध स्वभाव रे. ॥३॥
निज स्वरूप थीर करी घटे, न करे पुद्गलनी खंच रे;
साखी थई वरते सदा, न कदा परभाव प्रपंच रे. ॥४॥
सहज दशा निश्चय जगे, ए उत्तम अनुभव रस संग रे;
राचे नहि परभावमां, निज भावमां रंग अभंग रे. ॥५॥
निज गुण सब ही निजमां लखे, न चखे परगुणनी रेख रे;
खीर नीर विवरो करे, ए अनुभव हंसशुं पेख रे. ॥६॥
निर्विकल्प ध्येय जे अनुभवे, अनुभवे अनुभवनी रीत रे;
ओर न कबहु लखी शके, '**आनंदघन**' प्रीत प्रतीत रे. ॥७॥

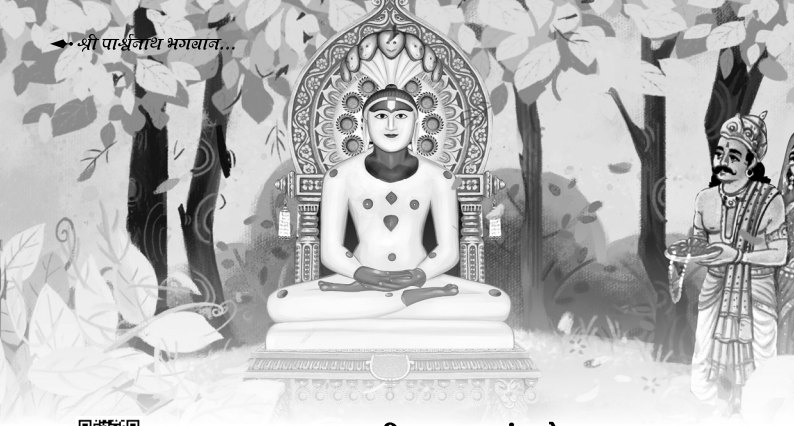

(२४) प्रभु जगजीवन जगबंधु रे...

(राग : तारी मूरतिनुं नहि मूल रे.../सुणजो साजन संत...)

प्रभु जगजीवन जगबंधु रे, सांई सयाणो रे...!
तारी मुद्राए मन मोह्युं रे, जूठ न जाणो...! रे..! ॥१॥
तुं परमातम! तुं पुरुषोत्तम! वाला मारा तुं परब्रह्म स्वरूपी रे;
सिद्धि साधक सिद्धांत सनातन, तुं त्रिहुं भाव प्ररूपी रे. ॥२॥
ताहरी प्रभुता त्रिहुं जग मांहे, पण मुज प्रभुता मोटी रे;
तुज सरीखो माहरे महाराजा, माहरे कांई नहीं खोट रे. ॥३॥
तुं निरद्रव्य परमपद वासी,वा० हुं तो द्रव्यनो भोगी रे;
तुं निर्गुण हुं तो गुणधारी, हुं कर्मी तुं अभोगी रे. ॥४॥
तुं तो अरूपी ने हुं रूपी, वा० हुं रागी तुं निरागी रे;
तुं निरविष हुं तो विषधारी, हुं संग्रही तुं त्यागी रे. ॥५॥
ताहरे राज नथी कोइ एके, वा० चौदराज छे माहरे रे;
माहरी लीला आगळ जोतां, अधिकुं शुं छे ताहरे? ॥६॥
पण तुं मोटो ने हुं छोटो, वा० फोगट फूल्ये शुं थाय रे;
खमजो ए अपराध अमारो, भक्ति वशे कहेवाय रे. ॥७॥
श्री शंखेश्वर वामानंदन, वा० उभां ओलग कीजे;
रूप विबुधनो '**मोहन**' पभणे, चरणोनी सेवा दीजे रे. ॥८॥

(२५) प्रभु पार्श्व जिणंद सदा...

(राग : जिन! तेरे.../पार्श्व चिंतामणी.../तुं प्रभु मारो...)

प्रभु पार्श्व जिणंद सदा नमीए (२),
प्रभु के चरण कमल रस लीने, मधुकर ज्युं हुई के रमीए. ॥१॥
निरखी वदन शशी जिनवर को, निशी वासर सुख में गमीए. ॥२॥
उज्जवळ गुणस्मरण चित्त लहीए, कबहुं न भवसागर भमीए. ॥३॥
समता रस में ज्यों झीलीजे, राग द्वेष को उपशमीए. ॥४॥
कहे '**जिनहर्ष**' मुगति सुख लहीए, कठीन करम निज अपक्रमीए. ॥५॥



(२६) भवजल पार उतार...

(राग : याद आवे मोरी मां.../दर्शन देजो नाथ.../सोनामां सुगंध...)

भवजल पार उतार (२), श्री शंखेश्वर पार्श्व जिनेश्वर;
मारो तुं एक आधार... मारो तुं एक आधार... श्री शं०॥१॥
काल अनंतो भवमां भमतां, क्यांय न आव्यो आरो;
धन्य घडी ते मारी आजे, दीठो तुम देदार, (३) श्री शं०॥२॥
तुं वीतरागी, तुं अविनाशी, तुं निर्बंधी देव;
हुं रागी छुं पापी जीवडो, भमतो भव अपार, (३) श्री शं०॥३॥
आ दुनियामां तारा जेवो, कोई न तारणहार;
वामानंदन चंदननी परे, शीतल जेनी छाय, (३) श्री शं०॥४॥
भवोभव तुम चरण सेवा, मांगु छुं दीनदयाला;
'**रंगविजय**' कहे प्रेमशुं रे, विनंती ए अवधार, (३) श्री शं०॥५॥

(२७) भेटीए भेटीए भेटीए रे...

(राग : मारा नाथनी वधाई.../चपटी भरी.../कोण भरे.../मानमां रे...)

भेटीए भेटीए भेटीए रे, मनमोहन जिनवर भेटीए रे,
मेटीए मेटीए मेटीए रे, भेटता भवदुःख मेटीए रे. मन०॥१॥
श्री शंखेश्वर पार्श्व जिनेश्वर, पूजी पातिक मेटीए रे. मन०॥२॥
जादवनी जरा जास न्हवणथी, नाठी एक चपेटीए रे. मन०॥३॥
आश धरीने हुं पण आव्यो, निज कर पीठ थपेटीए रे. मन०॥४॥
त्रण रतन आपो ज्युं राखुं, निज आतमनी पेटीए रे. मन०॥५॥
साहिब सुरतरु सरीखो पामी, और कुण आगे लेटीए रे. मन०॥६॥
'**पद्मविजय**' कहे तुमरे चरणसे, क्षण एक न रहुं छेटीए रे. मन०॥७॥

(२८) मनमोहन प्रभु पासजी...

(राग : कसमे वादे.../ आंख मारी.../ तेरे सूर.../
आ मारा महाराजजी.../ मुज घट आवजो.../ चरणों में तेरे...)

मनमोहन प्रभु पासजी, सुणो जगत आधारजी;
शरणे आव्यो रे प्रभु ताहरे, मुज दुरित निवारजी. मन०॥१॥
विषय कषायना पाशमां, भमीयो काळ अनंतजी;
राग द्वेष महा चोरटा, लूंट्यो धर्मनो पंथजी. मन०॥२॥
पण कांइ पूरव पुण्यथी, मळिया श्री जिनराजजी;
भवसमुद्रमां डूबतां, आलंबन जिम जहाजजी. मन०॥३॥
कमठे निज अज्ञानथी, उपसर्ग कीधां बहु जातजी;
ध्यानानल प्रगटावीने, कीधो कर्मनो घातजी. मन०॥४॥
केवळज्ञानथी देखियुं, लोकालोक स्वरूपजी;
विजय मुक्तिपद जई वर्युं, सादि अनंत चिद्रुपजी. मन०॥५॥
ते पद पामवा चाहतो, '**मोहन**' कमलनो दासजी;
मनमोहन प्रभु माहरी, पूरजो मननी आशजी. मन०॥६॥

(२९) मुख खोल जरा...

(राग : मारा व्हाला प्रभु...)

मुख खोल जरा, यह कह दे खरा, तुं और नहीं मैं और नहीं,
तुं है नाथ मेरा; मै हुं जान तेरी, मुझे क्युं विसराई जान तेरी,
जब करम कटे, और भरम फटे. तुं०॥१॥
तुं है ईश खरा, मै हूं दास तेरा, मुझे क्युं न करो, अब नाथ खरा;
जब कुमति टरे, और सुमति वरे. तुं०॥२॥
तुं है पास जरा, मै हुं पाश परा, मुझे क्युं न छोडावो पास टरा,
जब राग कटे, और द्वेष मीटे. तुं०॥३॥
तुं है अचलवरा, मै हुं चलनचरा, मुझे क्युं न बनावो आप सरा;
जब होंस जरे, और संग टरे. तुं०॥४॥
तुं है भूपवरा, शंखेश खरा, मै तो '**आतमराम**' आनंद भरा;
तुम दरस करी, सब भ्रांति हरी. तुं०॥५॥

(३०) मुज सरीखा मेवासी ने...

(राग : सुहानी चांदनी रातें.../मेरे साहिब तुम ही.../
युगोथी हुं.../मेरा जीवन कोरा कागज.../तारी पासे एवुं शुं...)

मुज सरीखा मेवासीने, प्रभु जो तुं तारे;
तारक तो जाणुं खरो, जूठुं बिरुद शुं धारे? मुज०॥१॥
सेवा सलामी नवि भरुं, सीधी आण न मानुं;
माहरी रीति प्रीछो तमे, शुं राखीऐ छानुं? मुज०॥२॥
मोह मिथ्यात्व मेवासमां, वळी वास में कीधो;
निर्गुणी गुन्ही अकह्यागरो, नवि चालुं सीधो. मुज०॥३॥
जे तें वरज्या वेगळा, ते में आघा लीधा;
तुजशुं बांधी बाकरी, अन्यायों में कीधा. मुज०॥४॥

द्वेष धरी तुज उपरे, बीजाशुं मळीयो;
तुज शासन उत्थापीने, पाखंडे वळीयो. मुज०॥५॥
छल करीने छ कायनी, तुज वाडी विणाशी;
हुं छुं अनाडी अनादिनो, हुं तो मोटो मेवासी. मुज०॥६॥
मेवासीपणुं मेलीने, आव्यो तुज चरणे;
जो तारे तो तारजे, एहवे आचरणे. मुज०॥७॥
वामानंदन वंदता, भवनुं दुःख भांगुं;
'**उदयरत्न**' कहे लळी लळी, प्रभु पाये लागुं. मुज०॥८॥

(३९) मेरे साहिब तुम हि हो...

(राग : तेरे सुर और मेरे.../
मुज सरीखा मेवासीने.../जनम (२) का साथ..)

मेरे साहिब तुम हि हो, प्रभु पास जिणंदा;
खिजमतगार गरीब हुं, मैं तेरा बंदा. मेरे०॥१॥
मैं चकोर करुं चाकरी, जब तुम हि चंदा;
चक्रवाक मैं हुई रहुं, जब तुम हि दिणंदा. मेरे०॥२॥
मधुकर परे मैं रणझणुं, जब तुम अरविंदा;
भक्ति करुं खगपति परे, जब तुम गोविंदा. मेरे०॥३॥
जब तुम गर्जित घन भये, तब मैं शिखिनंदा;
तुम सायर जब में तदा, सुरसरिता अमंदा. मेरे०॥४॥
दूर करो दादा पासजी! भव दुःखका फंदा;
वाचक '**जश**' कहे दासकुं, दियो परमानंदा. मेरे०॥५॥

(३२) मेरो प्रभु पारस अंतरयामी...

मेरो प्रभु पारस अंतरयामी...
और सुरासुर देखी न रीझुं, प्रभु सेवा मैं पाउं. ॥१॥
रंक की कुण आण धरे शिर, तजी त्रिभुवननो स्वामी. ॥२॥
दुःख भांजे छीन मांहि नवाजे, शिवसुख दो शिवगामी. ॥३॥
क्यां कहीये तुमसे किरपानिधि, खमजो मारी खामी. ॥४॥
कहे '**जिनहर्ष**' परम पद पावुं, अरज करुं शिरनामी. ॥५॥

(33) राधा जेवा फूलडां ने...

(राग : आँख मारी उघडे.../यह है पावनभूमि... / मेरा जीवन कोरा...)

राधा जेवा फूलडां ने, शामल जेवो रंग;
आज तारी आंगीनो कांई, रुडो बन्यो छे रंग;
प्यारा पासजी हो लाल! दीनदयाळ मुजने नयणे निहाळ. ॥१॥
जोगीवाडे जागतो ने, मातो धिंगडमल्ल;
शामलो सोहामणो कांई, जीत्या आठे मल्ल. प्यारा० ॥२॥
तुं छे मारो साहिबो ने, हुं छुं तारो दास;
आशा पूरो दासनी कांई, सांभळी अरदास. प्यारा० ॥३॥
देव सघळा दीठां तेमां, एक तुं अव्वल;
लाखेणुं छे लटकुं तारुं, देखी रीझे दिल. प्यारा० ॥४॥
कोई नमे पीरने ने, कोई नमे राम;
'**उदयरत्न**' कहे प्रभुजी! मारे तुमशुं काम. प्यारा० ॥५॥



(३४) वामानंदन जगदानंदन...

(राग : वैष्णवजन.../मैली चादर.../कोयल टहुंकी...)

वामानंदन जगदानंदन, सेवक जन आशा विसराम;
नेह नजर करी मोही पर नीरखो, तुम हो करुणा रसके धाम. ॥१॥
ईतनी भूमि प्रभु! तुम ही आण्यो, परि परि बहुत बढाई माम;
अब दो-चार गुणठाण बढावत, लागत है कहां तुमकुं दाम? ॥२॥
अहनिशि ध्यान धरुं हुं तेरो, मुखथी न विसारुं तुम नाम;
श्री नयविजय विबुध वर '**सेवक**', कहे तुम मेरे आतमराम. ॥३॥



(३५) वामानंदन वंदना...

(राग : मेरे प्यारे वतन.../गिरुआ रे.../
दिल दिया है जान भी.../हुं प्रभु तने ओळखुं...)

वामानंदन वंदना प्रभु, चरणोमां अवधारो रे;
करुणाकरी करुणानिधि, मने भवसागरथी तारो रे. वामा०॥१॥
एक समय संसारमां प्रभु, आपणे साथे रम्या;
तमे निर्मोही थई गया, अमे भव अटवीमां भम्या. वामा०॥२॥
दुःखडां नरक निगोदनां प्रभु, कहेतां न आवे पार रे;
छेदन भेदन बहु सह्या, वळी परमाधामीना मार रे. वामा०॥३॥
परिणति तीव्र कषायनी, भटकावे लाख चोराशी रे;
नाना जन्मो धरावीने, नांखे गळामां फांसी रे. वामा०॥४॥
अवर नहीं कोई विश्वमां प्रभु, तुम विण तारणहार रे;
ईम जाणीने हुं आवीयो, स्वामी तुम दरबार रे. वामा०॥५॥
प्रीत पुरातन दाखवो प्रभु, आपो निज गुण नाथ रे;
हुं भव कादवमां खूंप्यो, उगारो झाली हाथ रे. वामा०॥६॥
धन-दोलत मांगुं नहि, छे माहरी एक अरदास रे;
त्रिभुवन तारक बोलावजो, '**रूपविजय**' तुज पास रे वामा०॥७॥

(३६) शरण तुमारे आयो जिणंदराय...

(राग : जिन! तेरे.../ मुज अवगुण मत.../
अब मोहे.../ आई बसो भगवान.../
पधारो म्हारे देश.../ चरणों में तेरे.../ अबोलडा शाना लीधा...)

शरण तुमारे आयो जिणंदराय!, शरण तुमारे आयो ;
पकडी जकडी मोह महाराये, चिहुं गति चोक फिरायो. ॥१॥
नरक निगोदने बंदीखाने, काळ अनंत रझळायो;
पाया अति महामदना प्याला, बहु विपरीत भमायो. ॥२॥
मोहतणी राणी महामूढता, तेणे हुं धंधे लगायो;
छाई रह्यां मुज आंतर लोचन, आपकुं आप भूलायो. ॥३॥
महा मंत्रीश्वर मोहराय को, मिथ्यादर्श कहायो;
कुदेव कुगुरु कुधर्मनी संगे, सूध बुध सघली हरायो. ॥४॥
नाना वेश भेख पाखंडे, मर्कट नाच नचायो;
विपर्यास आसन पर मंडप, चित्त विक्षेप रचायो. ॥५॥
सुणो अरदास समर्थ पार्श्व प्रभु, पंचासर सुखदायो;
अंतरंग रिपु भय सवि नाठो, जो '**विनये**' प्रभु ध्यायो. ॥६॥

(३७) शा माटे साहिब सामुं न जुओ...

(राग : सुणो शांति जिणंद.../स्वामी तुमे कांई.../
तुं प्रभु मारो.../आज मनोरथ मारो.../प्रभु तमारा...)

शा माटे साहिब सामुं न जुओ, हुं थयो छुं तुम गुण रागी;
बोल बीजा साथे नवि बोलुं, न गमे वात अनेरी. प्रभुजी मारा. ॥१॥
जो रे पोतानो करीने जाणो, तो मुज समकित वासो; प्रभुजी०
भलो भुंडो पण भक्त तुमारो, देई दिलासो खासो. प्रभुजी०॥२॥
छेलछबीलो देव छोगाळो, अलवेसर अविनाशी; प्रभुजी०
हृदयनो वासी प्रभु मुजने मळीयो, नमुं हुं नित्य शिर नामी. प्रभुजी०॥३॥

हजुए हृदयमां होंश घणी छे, राखी छे तुम गुण रागी; प्रभुजी०
भीडभंजन प्रभु भक्तिना जोरे, जालीम वासना भागी. प्रभुजी०॥४॥
आप स्वरूप देखाडो आछो, पडदो खोलीने पाछो; प्रभुजी०
प्रेम '**उदय**' पद पगथिये चढतां, न रहे लाभनो लाछो. प्रभुजी०॥५॥

(३८) श्री चिंतामणी प्रभु पासजी रे...

(राग : सकल समता सुरलतानो.... अब सोंप दिया इस...)

श्री चिंतामणी प्रभु पासजी रे! वात सुणो एक मोरी रे;
माहरा मनना मनोरथ पूरजो, हुं तो भक्ति न छोडुं तोरी रे. श्री०॥१॥
माहरी खिजमतमां खामी नहि, ताहरे खोट न कांई खजाने रे;
हवे देवानी शी ढील छे? शुं कहेवुं ते कहीए थाने रे. श्री०॥२॥
तें उरण सवी पृथिवी करी, धन वरसी वरसीदाने रे;
माहरी वेळा शुं एहवा, दीओ वांछित वाळो वानो रे. श्री०॥३॥
हुं तो केड न छोडुं ताहरी, आप्या विण शिवसुख स्वामी रे;
मूरख ते ओछे मानशे, चिंतामणी करतल पामी रे. श्री०॥४॥
मत कहेशो तुज कर्मे नथी, कर्मे छे तो तुं पाम्यो रे;
मुज सरीखा कीधा मोटका, कहो तेणे कांई तुज थाम्यो रे. श्री०॥५॥
काल स्वभाव भवितव्यता, ते सघळा तारा दासो रे;
मुख्य हेतु तुं मोक्षनो, ए मुजने सबळ विश्वासो रे. श्री०॥६॥
अमे भक्ते मुक्तिने खेंचशुं, जिम लोहने चमक पाषाणो रे;
तुमे हेज हसीने देखशो, कहसो सेवक छे सपराणो रे. श्री०॥७॥
भक्ति आराध्या फळ दीए, चिंतामणी पण पाषाणो रे;
वळी अधिकुं कांई कहावशो, ए भद्रक भक्ति ते जाणो रे. श्री०॥८॥
बाळक ते जिम तिम बोलतो, करे लाड तातने आगे;
ते तेहशुं वांछित पूरवे, बनी आवे सघळुं रागे रे. श्री०॥९॥

माहरे बननारुं ते बन्युं ज छे, हुं तो लोकने वात शीखावुं रे;
वाचक '**जश**' कहे साहिबा, ए गीते तुम गुण गावुं रे. श्री०॥१०॥

(३९) श्री शंखेश्वर निज रंगी...

(राग : आज मनोरथ .../ऐसी आय बनी.../
वीर मधुरी वाणी तारी...)

श्री शंखेश्वर निज रंगी, प्राण जीवन प्रभु प्यारे रे;
अश्वसेन वामाजी के नंदन, चंदन सम हम सारे रे;
अणियारी तोरी अंबुज अंखिया, करुणारसभरी तारे रे. ॥१॥
नयन कचोले अमृत रोले, भवि जन काज सुधारे रे;
भवि चकोर चित्त हरखे निरखी, चंद्र किरण सम प्यारे रे. ॥२॥
तेरा ही नाम रटत हुं निशदिन, अन्य आलंबन छारे रे;
शरण पड्ये को पार उतारे, ऐसो है बिरुद तुमारे रे. ॥३॥
भ्रमत भ्रमत शंखेश्वर स्वामी!, पामी भ्रम सब वारे रे;
जन्म मरण की भीति निवारी, वेगे करो भव पारे रे. ॥४॥
'**आतमराम**' आनंदरस पूरण, तुं मुज काज सुधारे रे;
अनहद नाद बजे घट अंतर, तुं ही तान उच्चारे रे. ॥५॥

(४०) समय समय सो वार संभारुं...

(राग : मेरे नैना.../फूल तुम्हें.../
आज मारा प्रभुजी.../विरतिधरनो वेश...)

समय समय सो वार संभारुं, तुजशुं लगनी जोर रे;
मोहन मुजरो मानी लेजो, ज्युं जलधर प्रीति मोर रे. ॥१॥
माहरे तन धन जीवन तुं ही, एहमां जूठ न जाणो रे;
अंतरजामी जगजन नेता, तुं किहां नथी छानो रे. ॥२॥

जेणे तुजने हियडे नवि ध्यायो, तास जनम कुण लेखे रे?
काचे राचे ते नर मूरख, रतनने दूर उवेखे रे. ॥३॥
सुरतरु छाया मूकी गहरी, बावळ तळे कुण बेसे रे?
ताहरी ओलग लागे मीठी, किम छोडाय विशेषे रे. ॥४॥
वामानंदन पार्श्व प्रभुजी, अरजी चित्तमां आणो रे,;
रूप विबुधनो '**मोहन**' पभणे, निज सेवक करी जाणो रे. ॥५॥



(४९) सहज गुण आगरो...

(राग : आज जिनराज.../ जय गणेश (२) देवा...)

सहज गुण आगरो स्वामी सुख सागरो,
ज्ञान वयरागरो प्रभु सवायो;
शुद्धता एकता तीक्ष्णता भावथी,
मोहरिपु जीती जय पडह वायो. सहज०॥१॥
वस्तु निज भाव अविभास निःकलंकता,
परिणति वृत्तिता करी अभेदे;
भाव तादात्म्यता शक्ति उल्लासथी,
संतति योगने तुं उछेदे. सहज०॥२॥
दोष गुण वस्तुनी लखीय यथार्थता,
लही उदासीनता अपर भावे;
ध्वंसी तज्जन्यता भाव कर्तापणुं,
परम प्रभु तुं रम्यो निज स्वभावे. सहज०॥३॥
शुभ अशुभ भाव अविभास तहकीकता,
शुभ अशुभ भाव तिहां प्रभु न कीधो;
शुद्ध परिणामता वीर्य कर्ता थई,
परम अक्रियता अमृत पीधो. सहज०॥४॥
शुद्धता प्रभुतणी आत्मभावे रमे,

परम परमात्मता तास थाये;
मिश्र भावे अछे त्रिगुणनी भिन्नता,
त्रिगुण एकत्व तुज चरण आये. सहज०॥५॥
उपशम रसभरी सर्व जन शंकरी,
मूर्ति जिनराजनी आज भेटी;
कारणे कार्य निष्पत्ति श्रद्धान छे,
तिणे भव भ्रमणनी भीड मेटी. सहज०॥६॥
नयर खंभायते पार्श्व प्रभु दरशने,
विकसते हर्ष उत्साह वाध्यो;
हेतु एकत्वता रमण परिणामथी,
सिद्धि साधकपणो आज साध्यो. सहज०॥७॥
आज कृत पुण्य धन दीह माहरो थयो,
आज नर जन्म में सफल भाव्यो;
'**देवचंद्र**' स्वामी त्रेवीशमो वंदीयो,
भक्तिभर चित्त तुज गुण रमाव्यो. सहज०॥८॥

(४२) सार कर सार कर स्वामी शंखेश्वरा...

(रागः तार मुज तार मुज.../जय गणेश (२).../जाग रे जादवा...)

सार कर सार कर स्वामी शंखेश्वरा,
विश्व विख्यात एकांत आवो;
जगतना नाथ मुझ हाथ झाली करी,
आज किम काजमां वार लावो. सार०॥१॥
हृदय मुज रंजणो शत्रु दुःख भंजणो,
इष्ट परमिष्ट मोहे तुहिं साचो;
खलक खिजमत करे विपती समे खिण भरे,
नवि रहे तास अभिलाष काचो. सार०॥२॥

यादवा रणजणे राम केशव रणे,
जाम लागी जरा निंद सोती,
स्वामी शंखेश्वरा चरणजल पामीने;
यादवोनी जरा जाय रोती. सार०॥३॥
आज जिनराज! उंघे किस्युं? आ समे,
जाग महाराज! सेवक पनोता;
सुबुद्धि मधे? टळे घूते दोलत हरे,
वीर हांके रिपुवृंद रोता. सार०॥४॥
दास छुं जन्मना पुरीये कामना,
ध्यानथी मास दश दोय वीत्या;
विकट संकट हरो निकट नयणा करो,
तो अमे शत्रु नृपतिकुं जीत्या. सार०॥५॥
काल मुखे अशन शीतकाले वसन,
श्रम सुखासन रणे उदक दाई;
सुगुणनर सांभरे विसरे नहि कदा,
पासजी तुं सदा छे सखाई. सार०॥६॥
मात तुं तात तुं भ्रात तुं देव तुं,
देव दुनियामां दूजो न वहालो;
श्री '**शुभवीर**' जग जीत डंको करे,
नाथजी नेक नयणे निहालो. सार०॥७॥



(४३) सुखदाई रे सुखदाई...

(राग : हो! मैया मोरी मैं.../वैष्णवजन.../
आ भवना सागरमां.../भैरवी...)

सुखदाई रे सुखदाई, दादो पासजी! सुखदाई...
ऐसो साहिब नहि कोउ जगमें, सेवा कीजे दिल लाई. हो०॥१॥

सब सुखदायक एहि ज नायक, एहि सहायक सुसहाई;
किंकर कुं करे शंकर सरीखो, आपे अपनी ठकुराई. हो०॥२॥
मंगल रंग वधे प्रभु ध्याने, पाप वेली जाए करमाई;
शीतलता प्रगटे घट अंतर, मीटे मोह की गरमाई. हो०॥३॥
कहां करुं सुरतरु चिंतामणि कुं, जो में प्रभु सेवा पाई;
'**जसविजय**' कहे दर्शन देख्यो, घर आंगण नवनिधि आई. हो०॥४॥

(४४) सुणो पार्श्व जिनेश्वर स्वामी...

(राग : ए मेरे वतन... / हे करुणाना.../
रुडा राजमहेलने... / ये बंधन तो)

सुणो पार्श्व जिनेश्वर स्वामी, अलवेसर अंतरयामी;
हुं तो अरज करुं शिरनामी, प्रभु साथे अवसर पामी;
हो स्वामी मुजने तारो, हो प्रभुजी मुजने तारो. हो स्वामी०॥१॥
मुजने भवसागरथी तारो, चिहुं गतिना फेरा वारो;
करुणा करी पार उतारो, ए विनंती मनमां धारो. हो स्वामी०॥२॥
संसारे सार न कांई, साचो एक तुं ही सखाई;
ते माटे करी थिरताई, में तुज चरणे लय लाई. हो स्वामी०॥३॥
तारक तुं जगत प्रसिद्धो, पहेला पण तें जस लीधो;
तुज सेवकने शिवसुख दीधो, एक अंतर मुज शुं कीधो? हो स्वामी०॥४॥
इम अंतर ते न करेवो, सेवकने शिवसुख देवो;
अवगुण पण गुण करी लेवो, हेत आणी बांह्य ग्रहेवो. हो स्वामी०॥५॥
सेवक चूके कोई टाणे, पण साहिब मनमां न आणे;
निज अंगीकृत परमाणे, पोतानो करी जाणे. हो स्वामी०॥६॥
तुं त्रिभुवननाथ कहेवाय, इम जाणीने जिनराय;
द्यो चरण सेवा सुपसाय, जिम '**हंसरतन**' सुख थाय. हो स्वामी०॥७॥



(४५) सुरजमंडन पार्श्व जिणंदा...

(राग : आजनो चांदलियो.../वैष्णवजन.../तुं प्रभु मारो...)

सुरजमंडन पार्श्व जिणंदा, अरज सुणो टाळो दुःख दंदा;
तुं साहिब हुं छुं तुज बंदा, प्रीत बनी जैसे कैरव चंदा. ॥१॥
तुजशुं नेह नहि मुज काचो, घणहि न भांजे हीरो जाचो;
देतां दान ते कांई विमासो, लागे मुज मन एह तमासो. ॥२॥
केड लाग्यो ते केड न छोडे, दीयो वांछित सेवक कर जोडे;
अखय खजानो तुज नवि खूटे, हाथ थकी तो श्युं नवि छूटे. ॥३॥
जो खिजमतमां खामी दाखो, तो पण निज जाणी हित राखो;
जेणे दीधुं छे तेहि ज देशे, सेवा करशे ते फळ लहेशे. ॥४॥
धेनु-कूप-आराम स्वभावे, देतां देतां संपत्ति पावे;
तिम मुजने तुमे जो गुण देशो, तो जगमां यश अधिको वहेशो. ॥५॥
अधिकुं ओछुं किश्युं रे कहावो, जिम तिम सेवक चित्त मनावो;
मांग्या विण तो माय न पीरसे, एह उखाणो साचो दिसे. ॥६॥
ईम जाणीने विनंती कीजे, मोहनगारा मुजरो लीजे;
वाचक '**जश**' कहे खमिय आसंगो, दीयो शिवसुख धरी अविहड रंगो. ॥७॥



(४६) हे प्रभु! पार्श्व चिंतामणि मेरो...

(राग : मालकौंस.../ जिन! तेरे चरण की...)

हे प्रभु! पार्श्व चिंतामणि मेरो...
मिल गयो हीरो, मिट गयो फेरो, नाम जपुं नित्य तेरो... ॥१॥
प्रीत बनी अब प्रभुजी शुं प्यारी, जैसे चंद चकोरो... ॥२॥
आनंदघन प्रभु! चरण शरण है, दियो मोहे मुक्ति को डेरो. ॥३॥



(४७) हो अविनाशी! नाथ निरंजन!...

(राग : हमे और जिने की../
तुं प्रभु मारो.../ हे उपकारी कृपा वरसावो...)

हो अविनाशी! नाथ निरंजन! साहिब मारो साहिब साचो...
हो शिववासी! तत्त्वप्रकाशी! साहिब मारो साहिब साचो ॥१॥
भवसमुद्र रह्यो महाभारी, केम करी तरुं हो अविकारी,
बांह्य ग्रहीने करो भवपारी. साहिब०॥२॥
वामानंदन नयणे निरख्या, आनंदना पुर हैये उमट्या,
कामीत पुरण कल्पतरु फळिया. साहिब०॥३॥
महिमा तारो छे जगभारी, पार्श्व शंखेश्वर तुं जयकारी,
सेवकने द्यो केम विसारी. साहिब०॥४॥
मारे तो प्रभु तुं ही एक देवा, न गमे करवी बीजानी सेवा,
अरज सुणो प्रभु देवाधिदेवा. साहिब०॥५॥
सातराज अलगा जई बेठा, पण भक्ते अम मनमांहे पेठा,
वाचक '**यश**' कहे नयणे दीठा. साहिब०॥६॥

थोय

(१)

पास जिणंदा, मुख पूनम चंदा,
पद युग अरविंदा, सेवे चोसठ इंदा;
लंछन नागिंदा, जास पाये सोहंदा,
सेवे गुणी वृंदा, जेहथी सुख कंदा. ॥१॥
जनमथी वर चार, कर्म नाशे अग्यार,
ओगणीश निरधार, देवे कीधा उदार;
सवि चोत्रीश धार, पुण्यना ए प्रकार,
नमिये नर नार, जेम संसार पार. ॥२॥
एकादश अंगा, तेम बारे उवंगा,
षट्छेद सुचंगा, मूल चारे सुरंगा;
दश पईन्न सुसंगा, सांभळो थई एकंगा,
अनुयोग बहु भंगा, नंदीसूत्र प्रसंगा. ॥३॥
पास यक्ष पासो, नित्य करतो निवासो,
अडतालीश जासो, सहस परिवार खासो;
सहुए प्रभु दासो, मांगता मोक्ष वासो,
कहे '**पद्म**' निकासो विघ्नना वृंद पासो. ॥४॥

(२)

शंखेश्वर पासजी पूजीए, नरभवनो लाहो लीजीए;
मनवांछित पूरण सुरतरु, जय वामासुत! अलवेसरुं. ॥१॥
दोय राता जिनवर अतिभला, दोय धोळा जिनवर गुणनीला;
दोय नीला दोय शामळ कह्या. सोळे जिन कंचन वर्ण लह्या. ॥२॥
आगम ते जिनवर भाखीओ, गणधर ते हियडे राखीओ;
तेहनो रस जेणे चाखीओ, ते हुओ शिवसुख साखीओ. ॥३॥
धरणेन्द्र राय पद्मावती, प्रभु पार्श्व तणा गुण गावती;
सहु संघना संकट चूरती, '**नयविमल**'ना वांछित पूरती. ॥४॥

(३)

पास जिणंदा वामानंदा, जब गरभे फळी,
सुपना देखे अर्थ विशेषे,कहे मघवा मळी;
जिनवर जाया सुर हुलराया, हुआ रमणी प्रिये,
नेमि राजी चित्त विराजी, विलोकित व्रत लीये. ॥१॥
वीर एकाकी चार हजारे, दीक्षा धुरे जिनपति,
पासने मल्लि त्रय शत साथे, बीजा सहसे व्रती;
षट् शत साथे संयम धरतां, वासुपूज्य जग धणी,
अनुपम लीला ज्ञान रसीला, देजो मुजने घणी. ॥२॥
जिनमुख दीठी वाणी मीठी, सुरतरु वेलडी,
द्राक्ष विहासे गई वनवासे, पीले रस शेलडी;
साकर सेती तरणां लेती, मुखे पशु चावती,
अमृत मीठुं स्वर्गे दीठुं, सुरवधू गावती. ॥३।
गजमुख दक्षो वामन यक्षो, मस्तके फणावली,
चार ते बांही कच्छपवाही, काया जस शामली;
चउकर प्रौढा नागारुढा,देवी पद्मावती,
सोवन कांति प्रभु गुण गाती, '**वीर**' घरे आवती. ॥४॥

(४)

श्रेयः श्रियां मंगलकेलिसद्म!, श्रीयुक्तचिंतामणी पार्श्वनाथ!;
दुर्वारसंसारभयाच्च रक्ष, मोक्षस्य मार्गे वरसार्थवाह!. ॥१॥
जिनेश्वराणां निकर! क्षमायां, नरेन्द्रदेवेन्द्रनताङ्घ्रिपद्म!;
कुरुष्व निर्वाणसुखं क्षमाभृत्!, सत्केवलज्ञानरमां दधान!. ॥२॥
कैवल्यवामा हृदयैकहार!, क्षमासरस्वद्रजनीशतुल्य!;
सर्वज्ञ! सर्वातिशयप्रधान!, तनोतु ते वाग् जिनराज! सौख्यम्. ॥३॥
श्री पार्श्वनाथ! क्रमणाम्बुजात-सारंगतुल्यः कलधौतकान्तिः
श्री यक्षराजो गरुडाभिधानः, चिरं जय ज्ञानकलानिधान!. ॥४॥



श्री महावीरस्वामी भगवान

चैत्यवंदन

(१) सिद्धारथ सुत वंदीए...

सिद्धारथ सुत वंदीए, त्रिशलानो जायो;
क्षत्रियकुंडमां अवतर्यो, सुरनरपति गायो. ॥१॥
मृगपति लंछन पाउले, सात हाथनी काय;
बहोंतेर वरसनुं आउखुं, श्री वीर जिनेश्वर राय. ॥२॥
खीमाविजय जिनराजना ए, उत्तम गुण अवदात;
सात बोलथी वर्णव्यो, '**पद्मविजय**' विख्यात. ॥३॥

(२) नमो दुर्वाररागादि...

नमो दुर्वाररागादि, वैरी वार निवारिणे;
अर्हते योगीनाथाय, महावीराय तायिने. ॥१॥
पन्नगे च सुरेन्द्रे च, कौशिके पाद संस्पृशे;
निर्विशेष मनस्काय, श्री वीरस्वामिने नमः. ॥२॥
कल्याणपादपारामं, श्रुतगंगा हिमाचलं;
विश्वांभोजरविं देवं, वंदे श्री ज्ञातनंदनं. ॥३॥

वीरप्रभुनुं तप गर्भित चैत्यवंदन

(3) नव चोमासी तप कर्या...

नव चोमासी तप कर्या, त्रण मासी दोय;
दोय-दोय अढीमासी, तिम दोढ मासी होय. ॥१॥
बहोंतेर पाखखमण कर्या, मासखमण कर्या बार;
षड् द्विमासी तप वळी, बार अट्ठम तप सार. ॥२॥
षड्मासी एक तप कर्यो, पंच दिन उण षड्मास;
बसो ओगणत्रीस छट्ठ भला, दीक्षा दिन एक खास. ॥३॥
भद्र प्रतिमा दोय भली, महाभद्रे दिन चार;
दश दिन सर्वतोभद्र वळी, लागट निरधार. ॥४॥
विण पाणी तप आदर्यो, पारणादिक जास;
द्रव्याहारे पारणां कर्या, त्रणसो ओगणपचास. ॥५॥
छद्मस्थ एणी पेरे रह्या, सह्या परिषह घोर;
शुक्लध्यान अनले करी, बाळ्यां कर्म कठोर. ॥६॥
शुक्लध्यान अंते रह्या, पाम्या केवळज्ञान;
'**पद्मविजय**' कहे प्रणमतां,लहीए नित कल्याण. ॥७॥

स्तवन

(९) शासन नायक शिवसुख दायक...

शासन नायक, शिवसुख दायक जिनपति, मारा लाल,
पायक जास सुरासुर, चरणे नरपति; मारा लाल,
क्षायक कंदर्प केरा, जेणे नवि चित्त धर्या, मारा लाल,
ढायक पातक वृंद, चरण अंगीकर्या. मारा लाल. ॥१॥
क्षायकभावे केवल, ज्ञानदर्शन धरे, मारा लाल,
ज्ञायक लोकालोकना, भावशुं विस्तरे; मारा लाल,
घायक घातिकर्म, मर्मनी आपदा, मारा लाल,
लायक अतिशय, प्रातिहार्यनी संपदा. मारा लाल. ॥२॥

कारक षट्क थयां तुज, आतम तत्त्वमां, मारा लाल,
धारक गुण समुदाय, सयल एकत्वमां; मारा लाल,
नारक नर तिरि देव, भ्रमणथी हुं थयो, मारा लाल,
कारक जेह विभाव, तेणे विपरीत भयो. मारा लाल. ॥३॥
तारक तुं भवि जीवने, समरथ में लह्यो, मारा लाल,
ठारक करुणारसथी, क्रोधानल दह्यो; मारा लाल,
वारक जेह उपाधि, अनादिनी सहचरी, मारा लाल,
कारक निज गुण ऋद्धि, सेवकने बराबरी. मारा लाल. ॥४॥
वाणी एहवी सांभळी, जिन आगम तणी, मारा लाल,
जाणी उत्तम आश, धरी मनमां धणी; मारा लाल,
खाणी गुणनी तुज पद, '**पद्म**'नी चाकरी, मारा लाल,
आणी हियडे हेज, करुं निज पद करी.मारा लाल. ॥५॥

(२) अहा! केवुं भाग्य जाग्युं...

(राग : तुज करुणाधारमां.../होंशवालों को.../विरतिधरनो...)

अहा केवुं भाग्य जाग्युं! वीरना चरणो मल्या!;
रोग शोक दारिद्र्य सघळां, जेहथी दूरे टळ्या. अहा०॥१॥
फेरो फर्यो छे दुर्गतिनो, शुभ गति तरफेणमां;
अल्पकाळे मोक्ष पामी, विचरशुं आनंदमां. अहा०॥२॥
जेमना तपनो न महिमा, करी शके शक्रेश भी;
तेमने हुं स्तवुं शुं बालक, शक्तिनो ज्यां लेश नहीं. अहा०॥३॥
कामधेनु कामकुंभ,चिंतामणि सवि तुं मळ्यो;
आज मारे आंगणे, श्री वीर कल्पतरु फळ्यो. अहा०॥४॥
'**लब्धि**'ना भंडार व्हाला, वीर वीर जपतां थया;
गौतमश्री मोक्षगामी,ए प्रभुनी खरी दया. अहा०॥५॥

(3) आज जिनराज! मुज काज...



(राग : जय गणेश जय गणेश.../तार मुज तार मुज.../
ऋषभ जिनराज...)

आज जिनराज! मुज काज सिध्यां सवे,
तुं कृपाकुंभ जो मुज तूठो;
कल्पतरु कामघट कामधेनु मळ्यो,
आंगणे अमीयरस मेह वूठो. ॥१॥
वीर तुं कुंडपुर नयर भूषण हुओ,
राय सिद्धार्थ त्रिशला तनुज जो;
सिंह लंछन कनक वर्ण कर सप्त तनु,
तुज समो जगतमां कोई न दूजो. ॥२॥
सिंह परे एकलो धीर संयम ग्रही,
आयु बहोंतेर वरस पूर्ण पाळी;
पुरी अपापाए निष्पाप शिववहू वर्यो,
तिहां थकी पर्व प्रगटी दिवाळी. ॥३॥
सहस तुज चउद मुनिवर महासंयमी,
साहुणी सहस छत्रीस राजे;
यक्ष मातंग सिद्धायिका वर सूरी,
सकल तुज भविकनी भीति भांजे. ॥४॥
तुज वचनराग सुखसागरे झीलतो,
पीलतो मोह मिथ्यात्व वेली;
आवियो भावियो धर्मपथ हुं हवे,
दीजिये परमपद होई बेली. ॥५॥
सिंह निशदीह जो हृदयगिरि मुज रमे,
तुं सुगुण लीह अविचल निरीहो;
तो कुमत रंग मातंगना जूथथी,
मुज नहि कोई लवलेश बीहो. ॥६॥

चरण तुज शरण में चरणगुणनिधि ग्रह्यां,
भव तरण करण दम शर्म दाखो;
हाथ जोडी कहे '**जशविजय**' बुध ईश्युं,
देव! निज भवनमां दास राखो. ॥७॥

(४) आव आव रे माहरा मनडा मांहे...

(राग : चार दिवसना चांदरणा.../एक पंखी...)

आव आव रे माहरा मनडा मांहे, तुं छे प्यारो रे;
हरीहरादिक देव अनेरा, तुं छे न्यारो रे. ॥१॥
अहो महावीर गंभीर तुं तो, नाथ माहरो रे;
हुं नमुं तुंने गमे मुने, साथ ताहरो रे. ॥२॥
ग्रही सांई रे मीठडा हाथ माहरा, वैरी वारो रे;
द्यो द्यो दर्शन देव मुने, द्यो ने लारो रे. ॥३॥
तुं विना त्रिलोकमें केहनो, नथी सहारो रे;
संसार पारावारनो स्वामी, आपने आरो रे. ॥४॥
'**उदयरत्न**' प्रभु जगमें जोता, तुं छे साचो तारो रे;
तार तार रे मुने तार तुं, संसार असारो रे. ॥५॥



(५) करुणासागर जीवजीवन प्रभु...



(राग : आंखडी मारी.../प्रीतलडी बंधाणी.../अपूर्व अवसर...)

करुणासागर जीवजीवन प्रभु वीरजी,
अनंतगुणना धारक प्राण आधार जो;
मुजने मूकी भव अटवीमां एकलो,
आप सिधाव्या मुक्तिपुरीमां नाथ जो. ॥१॥

सिद्ध बुद्ध अविनाशी पदना भोगी छो,
हुं छुं पामर मोहजाळमां मग्न जो;
नाथ निहाळी आव्यो शरणे आपना,
तार तार हो तारक देव दयाळ जो. ॥२॥

समवसरणमां बेसी अमीरस वाणीथी,
ज्यारे करतां प्रभुजी भवि उपकार जो;
ते वेळा हुं भाग्य विहुणो कई गति,
जेथी न पाम्यो भवसागरनो अंत जो. ॥३॥

ज्ञान अनंतुं सुख अनंतुं ताहरुं,
क्षायिक भावे वर्ते छे तुज गुण जो;
पण हुं पापी रमण करुं परभावमां,
तो केम पामुं स्वरूप रमणनुं सुख जो. ॥४॥

सिद्धारथ कुल चरम प्रभु महावीरजी,
त्रिशला नंदन त्रिजगवंदन नाथ जो;
मनमंदिरमां आवो प्यारा वीरजी,
तुम विण सूनो छे आ दरबार जो. ॥५॥

अनेक जीवने तार्या तें करुणानिधि,
तो शुं मुजने मूकी जशो भगवान जो;
मनोहर मुद्रा जोवा तलसे ताहरी,
'**उदयरत्न**' कहे द्यो दरिशण महाराज जो. ॥६॥

(६) गिरुआ रे गुण तुम तणा...

(राग : तमारा हृदय आकाश... / प्रभु तमारा पगले... / एक पंखी...)

गिरुआ रे गुण तुम तणा, श्री वर्धमान जिनराया रे;
सुणतां श्रवणे अमी झरे, मारी निर्मल थाये काया रे. ॥१॥
तुम गुणगण गंगाजळे, हुं झीलीने निर्मल थाउं रे;
अवर न धंधो आदरुं, निशदिन तोरा गुण गाउं रे. ॥२॥
झील्या जे गंगाजळे, ते छिल्लर जळ नवि पेसे रे;
जे मालती फूले मोहिया, ते बावळ जई नवि बेसे रे. ॥३॥
एम अमे तुम गुण गोठशुं, रंगे राच्या ने वळी माच्या रे;
ते केम परसुर आदरे? जे परनारी वश राच्या रे. ॥४॥
तुं गति तुं मति आशरो, तुं आलंबन मुज प्यारो रे;
'**वाचक यश**' कहे माहरे, तुं जीव जीवन आधारो रे. ॥५॥

(७) गोयम कहे सुणो वीरजी रे...

(राग : यह है पावन भूमि.../ऋषभ जिनेश्वर...)

गोयम कहे सुणो वीरजी रे, वालेश्वर गुणगेह;
विश्वास मुजने एटलो रे, ईम किम तोडशो नेह,
हो वीरजी! शुं कीधुं तेह, छटकीने दीधो छेह. ॥१॥
काम भळावी तें प्रभुजी, मुजने मूक्यो दूर;
अंत समय राख्यो नहीं, सेवक चरणे नूर. ॥२॥
केड लागीशुं तुम कने रे, मांगत केवळ भाग?
ईम बहाना देई गया रे, शुं न हती मुक्तिमां जग. ॥३॥
मोह तोडी मूकी जशो रे, पहेला जो जाणत एह;
तो तुम साथे एवडो रे, शाने करत हुं स्नेह. ॥४॥
गोयम गोयम कहीने रे, बोलावता केईवार;
ईणवेळा ते किहां गयो रे, तुम मन केरो प्यार. ॥५॥

तें पण छळ ज्यां एम कर्युं रे, तो शुं अवरनी वात;
ईम छळ करतां तुजने रे, न आवी शरम तिलमात्र. ॥६॥
ईम ओलंभा देई करी रे, जीत्यो मोह विकार;
गोयम केवळसिरि वर्या रे, '**कनकविजय**' जयकार. ॥७॥

(८) चउमासी पारणुं आवे...

(राग : शंखेश्वर साहिब साचो...)

चउमासी पारणुं आवे, करी विनंती निज घर जावे;
प्रिया पुत्रने वात जणावे, पटकूल जरी पथरावे रे;
महावीर प्रभु घेर आवे, जीरण शेठजी भावना भावे रे. महा०॥१॥
ऊभी शेरीए जळ छंटकावे, जाई केतकी फूल बिछावे;
निज घेर तोरण बंधावे, मेवा मीठाई थाळ भरावे रे. महा०॥२॥
अरिहाने दान ज दीजे, देतां जे देखीने रीझे;
षट्मासी रोग हरीजे, सिझे दायक भव त्रीजे रे. महा०॥३॥
जिनवरनी सन्मुख जाउं, मुज मंदिरीए पधरावुं;
पारणुं भली भाते करावुं, जुगते जिनपूजा रचावुं रे. महा०॥४॥
पछी प्रभुने वळावा जईशुं, करजोडीने सन्मुख रहीशुं;
नमी वंदीने पावन थईशुं, विरति अति रंगे वरशुं रे. महा०॥५॥
दया दान क्षमा शील धरशुं, उपदेश सज्जनने करशुं;
सत्य ज्ञानदशा अनुसरशुं, अनुकंपा लक्षण वरशुं रे. महा०॥६॥
एम जीरण शेठ वदंता, परिणामनी धारे चढंता;
श्रावकनी सीमे ठरंता, देव दुंदुभि नाद सुणंता रे. महा०॥७॥
करी आयु पूरण शुभ भावे, सुरलोक अच्युते जावे;
शातावेदनीय सुख ते पावे, '**शुभवीर**' वचन रस गावे रे. महा०॥८॥

(९) छेल्लो बोध आपी...

(राग : सिद्धाचलना वासी जिनजी प्यारा...)

छेल्लो बोध आपी, सहु कर्म कापी, वीर मारा, गया मोक्षतणी मोझार;
अढार देशना राजाओ आवे पौषध लईने भावना भावे;
सुणीने शास्त्रनुं ज्ञान, मूकीने अभिमान. वीर०॥१॥
विलाप करे छे गौतमस्वामी, क्यां गया मारा अंतरयामी;
मुजने मूकी गया, मने मेली गया. वीर०॥२॥
चोसठ इन्द्रो आवी नमे छे, महामहोत्सवने ऊजवे छे;
गुण वीरना गवाय, गुण महावीरना गवाय. वीर०॥३॥
आसो मासनी पर्व दिवाळी, रुडी रात दिसे रढियाळी;
वीर पाम्या निर्वाण, नामे श्री वर्धमान. वीर०॥४॥
वीर नामनी साची दिवाळी, जाप जपे शीयळ व्रतधारी;
'**विनयविजय**' गुण गाय, भवोभवनां दुःख जाय. वीर०॥५॥

(१०) जगपति तुं तो देवाधिदेव!...

जगपति तुं तो देवाधिदेव! दासनो दास हुं ताहरो;
जगपति तारक तुं किरतार, मनमोहन प्रभु! माहरो. ॥१॥
जगपति ताहरे भक्त अनेक, माहरे एक ज तुं घणी;
जगपति वीरमां तुं महावीर, मूरति ताहरी सोहामणी. ॥२॥
जगपति त्रिशलाराणीनो तुं तनु, गंधार बंदरे गाजीओ;
जगपति सिद्धारथ कुल शणगार, राजराजेश्वर राजियो. ॥३॥
जगपति भक्तोनी भांगे तुं भीड, पीड पराइ प्रभु पारखे;
जगपति तुंहि अगम अपार, समज्यो न जाए मुज सारिखे. ॥४॥
जगपति खंभात जंबुसर संघ, भगवंत चोवीसमो भेटिओ;
जगपति '**उदय**' नमे कर जोड, सत्तर नेवुं समे कीओ. ॥५॥

(११) तार हो तार प्रभु मुज सेवक भणी...

(राग : जय गणेश जय गणेश देवा... / मूढ मुह्यसि मुधा...)

तार हो तार प्रभु मुज सेवक भणी,
जगतमां एटलुं सुयश लिजे;
दास अवगुण भर्यो जाणी पोता तणो,
दयानिधि दीन पर दया कीजे. ॥१॥
राग द्वेषे भर्यो मोह वैरी नड्यो,
लोकनी रीतमां घणुं य रातो;
क्रोध वश धमधम्यो, शुद्ध गुण नवि रम्यो,
भम्यो भव मांही हुं विषय मातो. ॥२॥
आदर्युं आचरण लोक उपचारथी,
शास्त्र अभ्यास पण कांई कीधो;
शुद्ध श्रद्धान वळी आत्म अवलंबन विण,
तेहवो कार्य तिणे को न सीधो. ॥३॥
स्वामी दरिशण समो निमित्त लही निरमळो,
जो उपादान ए शुचि न थाशे;
दोष को वस्तुनो अहवा उद्यम तणो,
स्वामी सेवा सही निकट लाशे. ॥४॥
स्वामी गुण ओळखी स्वामीने जे भजे,
दरिशण शुद्धता तेह पामे;
ज्ञान चारित्र तप वीर्य उल्लासथी,
कर्म झीपी वसे मुक्ति धामे. ॥५॥
जगत वत्सल महावीर जिनवर सुणी,
चित्त प्रभु चरणने शरण वास्यो;
तारजो बापजी बिरुद निज राखवा,
दासनी सेवना रखे न जोशो. ॥६॥

विनंती मानजो शक्ति ए आपजो,
भाव स्याद्वादता शुद्ध भासे;
साधी साधक दशा सिद्धता अनुभवी,
'**देवचंद्र**' विमल प्रभुता प्रकाशे. ॥७॥

(१२) तारे वयणे मनडुं वींध्युं रे...

(राग : एक पंखी.../ यह है पावन.../युगोथी हुं.../
ए मेरे प्यारे.../ताहरी अजबशी...)

तारे वयणे मनडुं वींध्युं रे, गिरुआ गुण दरिया;
ताहरे चरणे चित्तडुं चोंट्युं रे, मीठडा ठाकुरिया. ॥१॥
साकर द्राक्ष थकी पण अधिकी, मीठी ताहरी वाणी;
सांभळता संतोष न थाये, अमृत रसनी खाणी रे. ॥२॥
वयण तमारुं सांभळवाने, प्रभु आशिक थईने रहिये;
मुखडानो मटको नीरखतां, फरी फरी भामणे जईए रे. ॥३॥
ऋद्धिवंता बहु राज्य तजीने, जे तुज वयणना रसिया;
सघळी वात तणो रस छोडी, आवी तुज चरणे वसिया. ॥४॥
सुरनर मुनिजन जग जन भावि, ग्रंथे जे वीरवाणी;
श्री वीरजिन तणी सुणी वाणी, बुझ्या बहु भवि प्राणी. ॥५॥
त्रण भुवनने पावन करवा, निर्मळ छे वीर वाणी;
'**उदयरतन**' कहे भवजल तरवा, सहि ते नाव समाणी. ॥६॥

(१३) तेरो दरश मन भायो चरम जिन...

(राग : मने वेश श्रमणनो... /
मुज अवगुण मत देखो.../जिन! तेरे...)

तेरो दरश मन भायो चरम जिन! तेरो दरश मन भायो...
तुं प्रभु करुणारसमय स्वामी, गर्भ में शोक मिटायो;
त्रिशला माता को आनंद दीनो, ज्ञातनंदन जग गायो. ॥१॥

वरसीदान दई रोरता वारी, संयम राज उपायो;
दीन हीनता कबहुं न तेरे, सच्चिदानंद रायो. ॥२॥
करुणा मंथर नयने निहाळी, चंडकौशिक सुखदायो;
आनंद रसभर स्वर्गे पहुंतो, ऐसो कौन करायो. ॥३॥
रत्नकंबल द्विजवर को दीनो, गोशालक उद्धरायो;
जमाली पन्नर भव अंते, महानंद पद पायो. ॥४॥
मत्सरी गौतम को गणधारी, शासन नायक ठायो;
तेरे अवदात गिनुं जग के ते, तुं करुणासिंधु सोहायो. ॥५॥
हुं बाळक शरणागत तेरो, मुजको क्युं वीसरायो;
तेरे विरह से हुं दुःख पामुं, कर मुज '**आतमरायो**'. ॥६॥

(९४) तो शुं प्रीत बंधाणी जगतगुरु...

(राग : शी कहुं कथनी मारी.../सोनामां सुगंध.../
ऋषभदेव हितकारी...)

तो शुं प्रीत बंधाणी जगतगुरु! तो शुं प्रीत बंधाणी;
वेद अरथ कही मों ब्राह्मणकुं, खिणमें कीधो गुण खाणी. ॥१॥
बालक परे में जे जे पूछ्युं, ते भाख्युं हित आणी;
मुज कालाने कुण समजावे, तो बिन मधुरी वाणी. ॥२॥
वयण सुधारस वरसी वसुधा, पावन खेत समाणी;
नर नारकी तिरि प्रमोदित बोधित, तोहि गुणमणी खाणी. ॥३॥
किसके पाउं परुं अब जाई, किनकी पकरुं पानी;
कुण मुज गोयम कही बोलावे, तो सम कुण वखाणी. ॥४॥
अईमुत्तो आयो मुज साथे, रमतो काचली पाणी;
केवल कमला उसकुं दिनी, याहि किरती नहि छानी. ॥५॥
चउद सहस अणगारमां, मोटो कीनो काहुं पिछानी;
अंतिम अवसर करुणा सागर, दूरे भेज्यो जाणी. ॥६॥

केवळ भाग न मांगत स्वामी, रहेत न छेडो ताणी;
बिचमें छोड गये शिवमंदिर, लोकमां होत कहाणी. ॥७॥
खामी कुछ खिजमत में कीनी, ताकी याहि कमाणी;
स्वामी भाव लहे सुसेवक, याहि वात निपानी. ॥८॥
वीतराग भावे चेतनता, अंतर मूरत ठराणी;
'**खिमाविजय**' जिन गौतम गणधर, ज्योतिशुं ज्योति मिलाणी. ॥९॥



(१५) दीन दुखियानो तुं छे बेली...

(राग : देख तेरे संसार.../ ऊंचा अंबरथी.../
तुं मने भगवान...)

दीन दुखियानो तुं छे बेली, तुं छे तारणहार, तारा महिमानो नहीं पार;
राजपाटने वैभव छोडी, छोडी दीधो संसार. तारा०॥१॥
चंडकौशियो डशियो ज्यारे, दूधनी धारा पगथी नीकळे;
विषने बदले दूध जोईने, चंडकौशियो आव्यो शरणे;
चंडकौशियाने तें तारी, कीधो घणो उपकार. तारा०॥२॥
कानमां खीला ठोक्या ज्यारे, थई वेदना प्रभुने भारे;
तोए प्रभुजी शांत विचारे, गोवाळनो नहीं वांक लगारे;
क्षमा आपीने ते जीवोनो, तारी दीधो संसार. तारा०॥३॥
महावीर महावीर गौतम पुकारे, आंखेथी आंसुनी धारा वहावे;
क्यां गया एकला छोडी मुजने, हवे नथी कोई जगमां मारे;
पश्चात्ताप करतां करतां, ऊपन्युं केवलज्ञान. तारा०॥४॥
'**ज्ञानविमल**' गुरु वयणे आजे, गुण तमारा भावे गावे;
थई सुकानी तुं प्रभु आवे, भवजल नैया पार उतारे;
अरज अमारी दिलमां धारी, करीए वंदन वारंवार. तारा०॥५॥

(१६) ना रे प्रभु नहि मानुं...



(राग : अब मोहे.../ मारुं आयखुं...)

ना रे प्रभु नहि मानुं, नहि मानुं अवरनी आण,
माहरे ताहरुं वचन प्रमाण...
हरिहरादिक देव अनेरा, ते दीठा जग मांय रे;
भामिनी भ्रमर भृकूटिए भूल्या, ते मुजने न सुहाय. ना रे०॥१॥
केईक रागी ने केईक द्वेषी, केईक लोभी देव रे;
केईक मद मायाना भरिया, केम करीए तस सेव? ना रे०॥२॥
मुद्रा पण तेहमां नवि दीसे, तुज मांहेली तिलमात्र रे;
जे देखी दिलडुं नवि रीझे, शी करवी तस वात रे. ना रे०॥३॥
तुं गति, तुं मति, तुं मुज प्रीतम, जीव जीवन आधार;
रात-दिवस स्वपनांतर मांही, तुंही मारे निरधार. ना रे०॥४॥
अवगुण सहु उवेखीने प्रभु, सेवक करीने निहाल रे;
जगबंधव ए विनंती मारी, मारां जन्ममरण दुःख टाळ. ना रे०॥५॥
चोवीसमां प्रभु त्रिभुवन स्वामी, सिद्धारथना नंद रे;
त्रिशलाजीना नानडिया प्रभु, तुम दीठे अति ही आनंद. ना रे०॥६॥
सुमतिविजय कविरायनो रे, '**रामविजय**' करजोड रे;
उपकारी अरिहंतजी माहरा, भवभवनां बंधन छोड. ना रे०॥७॥

(१७) मनमंदिर मोहन आवीये...

(राग : बोलो (२) रे शालीभद्र... / मुज घट आवजो.../
आज मनोरथ.../मनमोहन जिनवर...)

मनमंदिर मोहन आवीये...मनमंदिर मोहन आवीये...!
राग विना तुं रीझवे, रीझ विना अरिहंत हो;
भोग विना सुख भोगवे, नवि काम धरे भगवंत हो. ॥१॥
दाम नहि जिन ताहरे पण, ठकुराई नवि पार हो;
संबंध कोईशुं न ताहरे पण, बंधव परे अधिकार हो. ॥२॥

मान विना हित चिंतवे, विण कारण उपगार हो;
दान छे सुरतरु सारिखो, तिहां कंचननो नवि पार हो. ॥३॥
राग भर्यो दिल माहरो प्रभु, ते तिहां कीधो प्रकाश हो;
जगरंजन ते नवि आदर्यो,तिहां राग नहि लवलेश हो. ॥४॥
अकल पंथ एक ताहरो, तुं तारे सहुं संसार हो;
अळगो पण रहे संसारथी, पंकज परे जगदाधार हो. ॥५॥
हुं छुं सायर तुमे चन्द्रमां, प्रभु अम मोरा तुमे मेह हो;
तमे तरुवर अमे पंखीया, मुजने तुमशुं अविहड नेह हो. ॥६॥
बाळक परे जाणी करी, करो करुणाद्रष्टि रसाळ हो;
प्रभु राजनगरना राजीया, जिन वीर जिणंद दयाळ हो. ॥७॥
श्री विजयदेव गुरु पाटवी, श्री विजय सिंह सूरींद हो;
तस शिष्य '**उदय**' वाचक भणे, धरी हैडे आनंद ही आनंद हो. ॥८॥



(९८) महावीरस्वामी रे विनंती सांभळो...

(राग : चार दिवसना चांदरडा.../
सुरज मंडण.../आज मारा...)

महावीरस्वामी रे विनंती सांभळो, हुं छुं दुखियो अपार;
भवोभव भटक्यो रे वेदना बहु सही, चउगतिमां बहु वार. ॥१॥
जन्ममरणनुं रे दुःख निवारवा, आव्यो आप हजूर;
सम्यग्दर्शन जो मुजने दियो, तो लहु सुख भरपूर. ॥२॥
रखडी रझळी रे हुं अहीं आवियो, साचो जाणी तुं एक;
मुज पापीने रे प्रभुजी तारजो, तार्या जेम अनेक. ॥३॥
ना नहीं कहेजो रे मुजने साहिबा, हुं छुं पामर रांक;
आप कृपाळु रे खास दया करी, माफ करजो मुज वांक. ॥४॥
भूल अनंती रे वार आवी हशे, माफ करजो महाराज;
'**उदयरत्न**' रे लळी लळी वीनवे, बांह्य ग्रही राखोने लाज. ॥५॥

TRISHALA  NANDANA

(१९) माता त्रिशलानंद कुमार...

(राग : आंख मारी.../ तारी मूरतिए...)

माता त्रिशलानंद कुमार, जगतनो दीवो रे,
मारा प्राणतणो आधार, वीर घणुं जीवो रे;
आमलकी क्रीडाए रमतां, हार्यो सुर प्रभु पामी रे,
सुणजोने स्वामी अंतरजामी, वात कहुं शिर नामी रे. माता०॥१॥
सुधर्मा सुरलोके रहेतां, अमो मिथ्यात्वे भराणा रे;
नागदेवनी पूजा करतां, शिर न धरी प्रभु आणा रे. माता०॥२॥
एक दिन इन्द्र सभामां बेठा, सोहमपति एम बोले रे;
धीरज बळ त्रिभुवननुं नावे, त्रिशला बाळक तोले रे. माता०॥३॥
साचुं साचुं सहु सुर बोल्या, पण में वात न मानी रे;
फणिधरने लघु बाळक रूपे, रमत रमियो छानी रे. माता०॥४॥
वर्धमान तुम धीरज मोटुं, बालपणामां नहि काचुं रे;
गिरुआना गुण गिरुआ गावे, हवे में जाण्युं साचुं रे. माता०॥५॥
एक ज मुष्टि प्रहारे मारुं, मिथ्यात्व भाग्युं जाय रे;
केवल प्रगटे मोहरायने, रहेवानुं नहि थाय रे. माता०॥६॥
आज थकी तुं साहिब माहरो, हुं छुं सेवक ताहरो रे;
क्षण एक स्वामी गुण न विसारुं, प्राण थकी तुं प्यारो रे. माता०॥७॥
मोह हरावे समकित पावे, ते सुर स्वर्ग सिधावे रे;
महावीर प्रभुनुं नाम धरावे, इन्द्रसभा गुण गावे रे. माता०॥८॥
प्रभु मलकंता निज घर आवे, सरखा मित्र सोहावे रे;
श्री '**शुभवीर**'नुं मुखडुं जोतां, माताजी आनंद पावे रे. माता०॥९॥

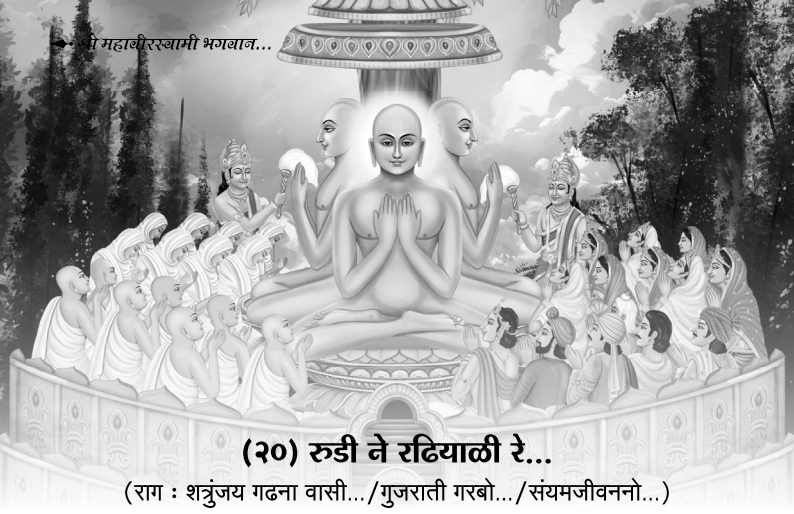

(२०) रुडी ने रढियाळी रे...

(राग : शत्रुंजय गढना वासी.../गुजराती गरबो.../संयमजीवननो...)

रुडी ने रढियाळी रे, वीर तारी देशना रे...
ए तो भली रे योजनमां संभळाय;
समकित बीज आरोपण थाय. रुडी०॥१॥
षट् महिनानी रे भूख तरस शमे रे,
साकर द्राक्ष ते हारी जाय;
कुमति जनना मद मोडाय. रुडी०॥२॥
चार निक्षेपे रे सात नये करी रे,
मांहे भली सप्तभंगी विख्यात;
निज निज भाषाए समजाय. रुडी०॥३॥
प्रभुजीने ध्यातां रे शिवपदवी लहे रे,
आतम ऋद्धिनो भोक्ता थाय;
ज्ञानमां लोकालोक समाय. रुडी०॥४॥
प्रभुजी सरीखा देशक को नहि रे,
एम सहु जिन उत्तम गुण गाय;
प्रभु पद '**पद्मने**' नित्य नित्य ध्याय. रुडी०॥५॥

(२१) वर्धमान जिनवरना ध्याने...

(राग : गिरुआ रे.../फूल तुम्हें भेजा है.../
वीरजिणंद जगत.../वैष्णवजन...)

वर्धमान जिनवरना ध्याने, वर्धमान सम थावेजी;
वर्धमान विद्या सुपसाये, वर्धमान सुख पावेजी. ॥१॥
तुं गति तुं मति साहिबो तुं, जीवन प्राण आधारजी;
जयवंतु जगमां जस शासन, करतुं बहु उपगारजी. ॥२॥
जे अज्ञानी तुम मत सरीखो, परमतने करी जाणेजी;
कहो कुण अमृतने विष सरीखुं, मंदमति विण जाणेजी. ॥३॥
जे तुम आगम सरस सुधारसे, सिंच्यो शीतल थायजी;
तास जनम सु-कृतारथ जाणो, सुरनर तस गुण गायजी. ॥४॥
साहिब तुम पदपंकज सेवा, नित नित एही ज याचुंजी;
श्री '**ज्ञानविमल**' सूरीसर भाखे, प्रभुध्याने हुं माचुंजी. ॥५॥

(२२) विरह से भयो रे उदासी हो वीरजिन...

(राग : ओ साथी रे.../ भैरवी.../तुम दरिसन भले.../जिन! तेरे...)

विरह से भयो रे उदासी हो वीरजिन!...विरह से भयो रे!
दुःषम कालमें दुःखियो छोडी, तुम भये शिवपुर वासी. हो०॥१॥
प्रभु दरिसण प्रत्यक्ष न दीठुं, ईणशुं भयो रे निराशी. हो०॥२॥
मोहराय सुभटे मुज घेर्यो, म्हारी करे सब हांसी. हो०॥३॥
तुम विना एकाकी मुज देखी, डारी गले मोह फांसी. हो०॥४॥
प्रभु विना कोन करे मुज करुणा, देखो दिलमें विमासी. हो०॥५॥
पण तुज आगमने तुज मूरति, एही शरण मुज थासी. हो०॥६॥
एह भरोसो मुज मन मोटो, भांगी भव की उदासी. हो०॥७॥
'**वीरविजय**' कहे वीरप्रभु की, मूरति शरण ज थासी. हो०॥८॥



(२३) वीर जिणंद जगत उपकारी...

(राग : फूल तुम्हें भेजा है.../आज मारा प्रभुजी.../
आजनो चांदलियो.../जय जय आरती.../वैष्णवजन...)

वीर जिणंद जगत उपकारी, मिथ्याधाम निवारीजी;
देशना अमृतधारा वरसी, परपरिणति सवि वारीजी. ॥१॥
पांचमे आरे जेहनुं शासन, दोय हजार ने चारजी;
युगप्रधान सूरीश्वर वहेशे, सुविहित मुनि आधारजी. ॥२॥
उत्तम आचारज मुनि अज्जा, श्रावक श्राविका अच्छजी;
लवण जलधिमांही मीठुं जल, पीवे शृंगी मच्छजी. ॥३॥
दश अच्छेरे दूषित भरते, बहु मतभेद करालजी;
जिन केवली पूरवधर विरहे, फणिसम पंचम कालजी. ॥४॥
तेहनुं झेर निवारण मणिसम, तुज आगम तुज बिंबजी;
निशि दीपक प्रवहण जिम दरिये, मरुमां सुरतरुं लुंबजी. ॥५॥
जैनागम वक्ता ने श्रोता, स्याद्वाद शुचि बोधजी;
कलिकाले पण प्रभु! तुज शासन, वर्ते छे अविरोधजी. ॥६॥
माहरे तो सुषमाथी दुःषमा, अवसर पुण्य निधानजी;
'**क्षमाविजय**' जिन वीर सदागम, पाम्यो सिद्धि निदानजी. ॥७॥



(२४) वीर जिनेश्वर चरणे लागुं...

(राग : वीर जिणंद जगत.../ ऐसा चिद्रस.../
मेरा जीवन.../वैष्णवजन...)

वीर जिनेश्वर चरणे लागुं, वीरपणुं ते मांगुं रे;
मिथ्या मोह तिमिर भय भाग्युं, जीत नगारुं वाग्युं रे. ॥१॥
छउमत्थ वीर्य लेश्या संगे, अभिसंधिज मति अंगे रे;
सूक्ष्म स्थूल क्रियाने रंगे, योगी थयो उमंगे रे. ॥२॥

असंख्य प्रदेशे वीर्य असंखे, योग असंखित कंखे रे;
पुद्गलगण तिणे लेश्या विशेषे, यथाशक्ति मति लेखे रे. ॥३॥
उत्कृष्टे वीर्य निवेशे, योगक्रिया नवि पेसे रे;
योगतणी ध्रुवताने लेशे, आतम शक्ति न खेसे रे. ॥४॥
कामवीर्य वशे जिम भोगी, तिम आतम थयो भोगी रे;
शूरपणे आतम उपयोगी, थाये तेह अयोगी रे. ॥५॥
वीरपणुं ते आतमठाणे, जाण्युं तुमची वाणे रे;
ध्यान विन्नाणे शक्ति प्रमाणे, निज ध्रुवपद पहिचाणे रे. ॥६॥
आलंबन साधन जे त्यागे, पर परिणतिने भागे रे;
अक्षय दर्शन ज्ञान वैरागे, '**आनंदघन**' प्रभु जागे रे. ॥७॥

(२५) वीर वड धीर महावीर मोटो प्रभु...

(रागः तार मुज (२)../
जय गणेश (२) देवा../खूल्ला मूक्या..)

वीर वड धीर महावीर मोटो प्रभु,
पेखतां पाप संताप नासे;
जेहना नाम गुणधाम बहुमानथी,
अविचल लील हैये उल्लासे. ॥१॥
कर्म अरि जीपतो दीपतो वीर! तुं,
धीर परिषह सहे मेरु तोले;
सुरे बल परखीयो रमत करी निरखीयो,
हरखीयो नाम महावीर बोले. ॥२॥
साप चंडकोशीयो जे महारोषीयो,
पोषीयो ते सुधा नयन पूरे;
एवडां अवगुण शा प्रभु में कर्या?,
ताहरा चरणथी राखे दूरे. ॥३॥

शूलपाणि सुरने प्रतिबोधीयो,
चंदना चित्त चिंता निवारी;
महेर धरी घेर पहोता प्रभु जेहने
तेह पाम्या भव दुःख पारी. ॥४॥
गौतमादिकने जई प्रभु तारवा,
वारवा यज्ञ मिथ्यात्व खोटो;
तेह अगियार परिवारशुं बुझवी,
रुझवी रोग अज्ञान मोटो. ॥५॥
हवे प्रभु! मुज भणी तुं त्रिभुवन धणी,
दास अरदास सुणी सामुं जोवे;
आप पद आपतां आपदा कापतां,
ताहरे अंश ओछुं न होवे. ॥६॥
गुणगणे राजता अधिक दिवाजता,
छाजता जेह कलिकाल मांहे;
श्री खिमाविजय पय सेव नित्यमेव लही,
पामीये शमरस '**सुजश**' त्यांहे. ॥७॥

(२६) वीर वहेला आवो रे...

(राग : माँ बनीने आव.../मधुवन खुश्बु देता...)

वीर वहेला आवो रे, गौतम कही बोलावो रे,
दरिशण वहेला दीजिये हो जी...
प्रभु तुं निःस्नेही हुं ससनेही अजाण रे. हो वीर०॥१॥
गौतम भणे भो! नाथ तें, विश्वास आपी छेतर्यो;
परगाम मुजने मोकली, तुं मुक्ति रमणीने वर्यो;
हे जिनजी तारा, गुप्त भेदोथी अजाण रे. हो वीर०॥२॥
शिवनगर हतुं शुं सांकडुं, के हती नहीं मुज योग्यता;

जो कह्युं होत मुजने, तो कोण कोईने रोकता;
हे जिनजी! हुं शुं, मांगत भाग सुजाण रे. हो वीर०॥३॥
मम प्रश्नना उत्तर देई, गौतम कही कोण बोलावशे;
कोण करशे सार संघनी ने, शंका बिचारी क्यां जशे?
हे पुण्य कथा कही, पावन करो मम कान रे. हो वीर०॥४॥
जिन भाण अस्त थतां, तिमिर मिथ्यात्व सघळे व्यापशे;
कुमति कुशील जागशे ने, चोर चुंगल वधी जशे;
हे त्रिगडे बेसी, देशना द्यो जगभाण रे. हो वीर०॥५॥
मुनि चौद सहस छे ताहरे ने, माहरे वीर तुं एक छे;
टळवळतो मूकी गया मने, प्रभु क्यां तमारी टेक छे;
प्रभु स्वप्नांतरमां, अंतर न धर्यो सुजाण रे. हो वीर०॥६॥
पण हुं आज्ञावाटे चाल्यो, न मळ्यो ईण अवसरे;
हुं रागवश रखडुं निरागी, वीर शिवपुर संचरे;
हुं वीर वीर कहुं, वीर न धरे कांई कान रे. हो वीर०॥७॥
कोण वीर ने कोण गौतम, नहीं कोई कोईनुं कदा;
ए राग ग्रंथि तूटतां, वरज्ञान गौतमने थतां;
हे सुरतरु सुरमणि, गौतम नामे निधान रे. हो वीर०॥८॥
कार्तिक मास अमास रात्रे, अस्त भावदीपक तणो;
द्रव्य दीपक ज्योत प्रगटे, लोक दिवाळी भणे;
हे '**वीरविजय**'ना, नर नारी करे गुणगान रे. हो वीर०॥९॥

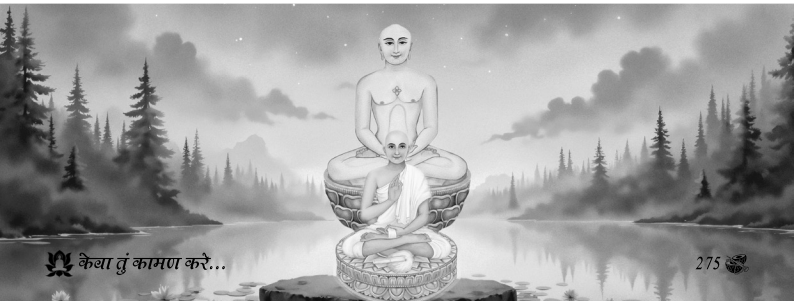

(२७) वीर विण वाणी कोण सुणावे...

(राग : तुं प्रभु मारो.../ जिन! तेरे.../ मालकौंश...)

वीर विण वाणी कोण सुणावे, प्रभु विण वाणी कोण सुणावे,
जब ये वीर गये शिवमंदिर, अब मेरी शंका कोण मिटावे. वीर०॥१॥
तुम विण चउविह संघ कमलदल, विकसित कोण करावे. वीर०॥२॥
कहे गौतम गणधर तुम विरहे, जिनवर दिनकर जावे. वीर०॥३॥
मोकुं साथ लई क्युं न चले, चित्त अपराध धरावे. वीर०॥४॥
ईम परभाव विचारी अपना, भावशुं भाव मिलावे. वीर०॥५॥
समवसरण में बेठे सिंहासन पर, हुकम कोण फरमावे. वीर०॥६॥
वीर वीर लवते वीर अक्षर, अंतर तिमिर हटावे. वीर०॥७॥
सकल सुरासुर हर्षित होवे, जुहार कारणकुं आवे. वीर०॥८॥
इन्द्रभूति अनुभव की लीला, '**ज्ञानविमल**' गुण गावे. वीर०॥९॥

(२८) वीरजी सुणो एक विनंती मोरी...

(राग : भरतनी पाटे भूपति रे.../वीरजिणंद जगत उपकारी...)

वीरजी सुणो एक विनंती मोरी, वात विचारो तुमे धणी रे;
वीर! मने तारो महावीर! मने तारो, भवजल पार उतारो रे! ॥१॥
परिभ्रमण में अनंता रे कीधां, हजुए न आव्यो छेडलो रे;
तुमे तो थया प्रभु सिद्ध निरंजन, अमे तो अनंता भव भम्यां रे. ॥२॥
तमे अमे वार अनंती वेळा, रमिया संसारीपणे रे;
तेह प्रीत जो पूरण पाळो, तो अमने तुम सम करो रे. ॥३॥
तुम सम अमने योग्य न जाणो, तो कांई थोडुं दीजिए रे;
भवोभव तुम चरणोनी सेवा, पामी अमे घणुं रीझीए रे. ॥४॥
इन्द्रजाळीयो कहेतो रे आव्यो, गणधर पद तेहने दियो रे;
अर्जुनमाळी जे घोर पापी, तेहने जिन! तमे उद्धर्यो रे. ॥५॥

चंदनबाळाए अडदना बाकुळा, पडिलाभ्या तमने प्रभु रे;
तेहने साहुणी साची रे कीधी, शिववधू साथे भेळवी रे. ॥६॥
चरणे चंडकोशियो डसियो, कल्प आठमे ते गयो रे;
गुण तो तमारा प्रभु मुखथी सुणीने, आवी तुम सन्मुख रह्यो रे. ॥७॥
निरंजन प्रभु नाम धरावो, तो सहुने सरीखा गणो रे;
भेदभाव प्रभु! दूर करीने, मुजशुं रमो एकमेकशुं रे. ॥८॥
मोडा वहेला तुम ही ज तारक, हवे विलंब शा कारणे रे;
ज्ञान तणा भवना पाप मिटावो, वारी जाउं वीर तोरा वारणे रे. ॥९॥



(२९) सरस्वती स्वामीने पाये लागुं...

(राग : सिद्धगिरिमंडण पाय नमीजे.../
वैष्णवजन.../प्रभु तमारा पगले (२)...)

सरस्वती स्वामीने पाये लागुं, प्रणमी सद्गुरु पाया रे;
गाईशुं हैडे हर्ष धरीने, श्री वर्धमान जिनराया रे...
मोरा स्वामी! हो तोरा चरण ग्रहीजे, नरभव लाहो लीजे रे;
सौभागी जिनना चरण ग्रहीजे, वैरागी जिनना चरण ग्रहीजे,
चरण ग्रहीजे शरणे रहीजे, नरभव ल्हावो लीजे रे. ॥१॥
भारे कर्मी पण तें तार्या, पातिकथी उगार्या रे;
मुज सरीखा शें नवि संभार्या?, शुं चित्तथी उतार्या रे. मोरा० ॥२॥

पत्थर पण कोई तीर्थ प्रभावे, जलमां दीसे तरता रे;
ते अमे तरशुं तुम पाय वळग्या, केम राखो छो अळगा रे. मोरा०॥३॥
मुज करणी सामुं मत जोजो, नाम सामुं तुमे जोजो रे;
साहिब सेवकना दुःख हरजो, तुमने मंगल होजो रे. मोरा०॥४॥
तरणतारण तुमे नाम धरावो, हुं छुं खिजमतगारो रे;
बीजा कोण आगळ जई याचुं?, मोटो नाम तुमारो रे. मोरा०॥५॥
एह विनंतीए साहिब तूठ्या, श्री वर्धमान जिनराया रे;
आप खजाना मांहेथी आपो, समकित रत्न सवाया रे. मोरा०॥६॥
श्रीनयविजय विबुध पय सेवक, '**वाचक यश**' एम बोले रे;
शासननायक शिवसुख दायक, नहीं कोई वीरजीनी तोले रे. मोरा०॥७॥

(30) सिद्धारथना रे नंदन...

(राग : मेरा जीवन कोरा कागज.../
एक पंखी.../सूरजमंडण...)

सिद्धारथना रे नंदन विनवुं, विनतडी अवधार;
भवमंडपमां रे नाटक नाचियो, हवे मुज दान देवराव...
हवे मुज पार उतार... ॥१॥
त्रण रतन मुज आपो तातजी, जेम नावे रे संताप;
दान दियंता रे प्रभु कोसर कीसी, आपो पदवी रे आप. ॥२॥
चरण अंगूठे रे मेरु कंपावियो, मोड्या सुरना रे मान;
अष्ट करमना रे झघडा जीतवा, दीधां वरसी रे दान. ॥३॥
शासननायक शिवसुखदायक, त्रिशला कूखे रतन;
सिद्धारथनो वंश दीपावियो, प्रभुजी तुमे धन्य धन्य. ॥४॥
वाचकशेखर कीर्तिविजय गुरु, पामी तास पसाय;
धर्म तणा ए जिन चोवीसमां, '**विनयविजय**' गुण गाय. ॥५॥

(३९) सुण सुगुण सनेही साहिबा...

(राग : लेजो समजीने संयमभार.../दरिसन द्यो घनश्याम...)

सुण सुगुण सनेही साहिबा!, त्रिशलानंदन महावीर! रे;
शासननायक! जगधणी!, शिवदायक! गुण गंभीर रे. ॥१॥
तुम सरीखा मुज शिर छते, हवे मोह तणुं नहीं जोर रे;
रवि उदये कहो किम रहे, अंधकार अति घनघोर रे. ॥२॥
वेष रची बहु नव नवा, हुं नाच्यो विषम संसार रे;
हवे चरण शरण तुज आवियो, मुज भवनी भावठ वार रे. ॥३॥
हुं निर्गुणो तो पण ताहरो, सेवक छुं करुणानिधान रे;
मुज मनमंदिर आवी वसो, जिम नासे कर्म निदान रे. ॥४॥
मनमां विमासो छो किश्युं, मुज महेर करो जिनराज रे;
सेवकना कष्ट नवि टळे, ए साहिबने शिर लाज रे. ॥५॥
तुं अक्षयसुख अनुभवे, तस अंश दीजे मुज एक रे;
तो भांजे दुःख भवोभव तणां, वळी पामुं परम विवेक रे. ॥६॥
शी कहुं मुज मन वातडी, तुमे सर्व विचारना जाण रे;
'**वाचक जश**' एम वीनवे, प्रभु! देजो क्रोड कल्याण रे. ॥७॥

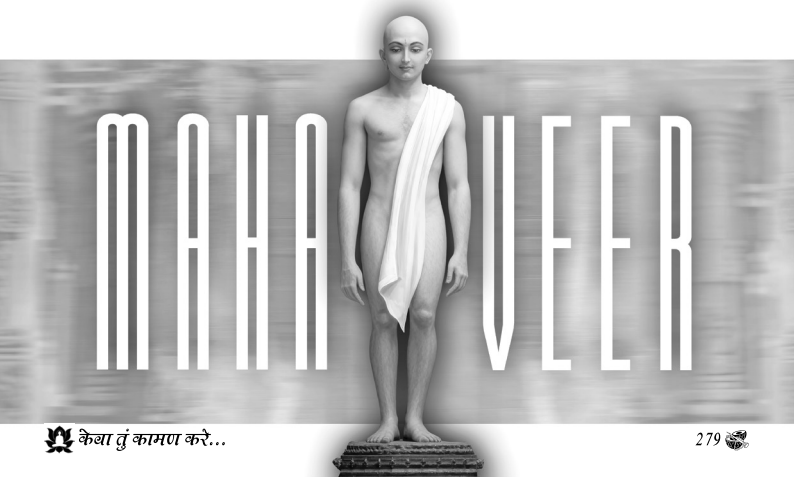

थोय

(१)

महावीर जिणंदा, राय सिद्धार्थ नंदा,
लंछन मृग इंदा, जास पाये सोहंदा;
सुरनर वर इंदा, नित्य सेवा करंदा,
टाले भव फंदा, सुख आपे अमंदा. ॥१॥
अड जिनवर माता, मोक्षमां सुख शाता,
अड जिननी ख्याता, स्वर्ग त्रीजे आख्याता;
अड जिनप जनेता, नाक माहेंद्र याता,
सवि जिनवर नेता, शाश्वता सुख देता. ॥२॥
मल्लि नेमि पास, आदि अट्ठम खास,
करी एक उपवास, वासुपूज्य सुवास;
शेष छट्ठ सुविलास, केवलज्ञान जास,
करे वाणी प्रकाश, जेम अज्ञान नाश. ॥३॥
जिनवर जगदीश,जास मोटी जगीश,
नहि रागने रीस, नमीये तास शीश;
मातंग सुर ईश, सेवतो रात दीस,
गुरु उत्तम अधीश, **'पद्म'** भाखे सुशीश. ॥४॥

(२)

जय जय भवि हितकर, वीर जिनेश्वर देव,
सुर नरना नायक, जेहनी सारे सेव;
करुणारस कंदो, वंदो आणंद आणी,
त्रिशला सुत सुंदर, गुणमणि केरो खाणी. ॥१॥
जस पंच कल्याणक, दिवस विशेष सुहावे,
पण थावर नारक, तेहने पण सुख थावे;

ते च्यवन जन्म व्रत, नाण अने निरवाण,
सविजिनवर केरा, ए पांचे अहिठाण. ॥२॥
जिहां पंच समिति युत, पंच महाव्रत सार
जेहमां प्रकाश्या, वळी पांचे व्यवहार;
परमेष्ठी अरिहंत, नाथ सर्वज्ञने पार,
एह पंच पदे लह्यो, आगम अर्थ उदार. ॥३॥
मातंग सिद्धायी,देवी जिनपद सेवी,
दुःख दुरित उपद्रव,जे टाळे नितमेवी;
शासन सुखदायी, आई सुणो अरदास,
श्री '**ज्ञानविमल**' गुण, पूरो वांछित आश. ॥४॥

(३)

(राग : संसार दावानल)

नम्रेन्द्रः मौलि-प्रपतत्-पराग-पुञ्ज-स्फुरत्-कर्बुरित-क्रमाब्जम्;
वीरं भजे निर्जित-मोह-वीरं, संसार-दावा-नल-दाह-नीरम्.॥१॥
पुष्पौघ-पद्म-दल-सौरभ-गुण्ठितानि,
स्वर्णा-म्बुजैः सुर-कृतैः परि-मण्डितानि;
वन्दे-ऽर्हतां वर-पदानि नता-न्यजेन,
भावा-वनाम-सुर-दानव-मानवेन. ॥२॥
नाना-रत्नैः सुभग-मतुल-प्रौढ-सादृश्य-पाठै-,
र्विज्ञ-ज्ञातै-र्बहु-नय-भरैः सत्त-रङ्गै-रूपेतम्;
युक्त्या जैनं समय-मुदधिं कीर्त्त-याम्यस्मि कामं,
बोधा-गाधं सुपद-पदवी-नीर-पूरा-भिरामम्. ॥३॥
श्रीमद्-वीर-क्रमाम्भो-रुह-रसिक-मना राजहंसीव रम्या,
सिद्धा सिद्धा-विरुद्धा विशद-गुण-लसद्-भक्त-हृत्-पद्म-रुद्धा;
या धत्ते स्वीय-कण्ठे घन-सुरभि-रसां पुष्प-मालां विशालां,
आमूला लोलधूली बहुल-परिमला-लीढ-लोलालि-माला. ॥४॥



(४)

(राग : संसार दावानल)

सर हरर खल खल ध्रसंग छब् छब् न्हवण जल क्रोडो मणो,
खन खनन खन खन टनाक् टन् टन् घोष कलशाओ तणो;
सुर संघ नाचे छनन छुम् छुम् झनन झुम झुम जय करो,
श्री वीर प्रभुनो जन्म महोत्सव जगतनुं मंगल करो. ॥१॥
पी पीव पुं पुं त्रीणीत त्रीं त्रीं भनन भुं भुं वागतां,
धप खनन खन खन तडाक ट्रीं ट्रीं धडाक ध्रुं ध्रुं गाजतां;
जय जयउ नंदा जयउ भद्दा जयउ खत्तीय बलधरो,
चोवीश जिननो दीक्षा महोत्सव, शांति सद्गुण पाथरो. ॥२॥
गम सारी धपनी तुं तीणी तुं वीणा वागे सुस्वरे,
ध्रां ध्रां ध्रतक ध्रीं ध्रीं धधक ध्रों ध्रों देववाजा अनुसरे;
स्याद्वाद नय निक्षेप भंगी, द्रव्य गुणनो सागरो,
श्री वीरवाणी धोध सहुनो, कर्म मळ दूरे करो. ॥३॥
कड कडड भूस कडडाट करी, भडभीर भैरव चूरतो,
धम् धर्म अवाजे चालतो, जिन भक्त परचा पूरतो;
चारित्र दर्शन विघ्न भंजन, धर्म रक्षा तत्परो,
माणिभद्रजी कल्याण माळा, संघने कंठे ठवो. ॥४॥

श्री सीमंधरस्वामी भगवान

चैत्यवंदन

(१) श्री सीमंधर! जगधणी...

श्री सीमंधर! जगधणी!, आ भरते आवो;
करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो. ॥१॥
सकल भक्त तुमे धणी, जो होवे अम नाथ;
भवोभव हुं छुं ताहरो, नहि मेलुं हवे साथ. ॥२॥
सयल संग छंडी करी,चारित्र लईशुं;
पाय तुमारा सेवीने, शिवरमणी वरीशुं. ॥३॥
ए अळजो मुजने घणो ए, पूरो सीमंधर देव;
ईहां थकी हुं विनवुं, अवधारो मुज सेव. ॥४॥
कर जोडीने विनवुं, सामो रही ईशान;
भाव जिनेश्वर '**भाणने**', देजो समकित दान. ॥५॥

(२) श्री सीमंधर! वीतराग!...

श्री सीमंधर! वीतराग!, त्रिभुवन तुमे उपगारी;
श्री श्रेयांस पिता कुले, बहु शोभा तुम्हारी. ॥१॥
धन्य धन्य माता सत्यकी, जेणे जायो जयकारी;
वृषभ लंछने विराजमान, वंदे नर नारी. ॥२॥
धनुष पांचसे देहडी ए, सोहीए सोवनवान;
कीर्तिविजय उवज्झायनो, '**विनय**' धरे तुम ध्यान. ॥३॥

(3) वाणी पांत्रीस गुणभरी...

वाणी पांत्रीस गुणभरी, द्राक्ष थकी पण मीठी;
सांभळता गुण उपजे, नाशे दशा अनीठी. ॥१॥
नमीये प्रातःकालमां, सदा सीमंधरस्वामी;
रुक्ष्मणी राणीनो नाहलो, तात श्रेयांस छे नाम. ॥२॥
माता सत्यकी जनमीयो, पुकखलवई मोझार;
संयम लई केवल वर्या, तीर्थपति पद धार. ॥३॥
समवसरणमां बेसीने, देशना दे जलधार;
कर्मकलंक निवारीने, आपे लब्धि अपार. ॥४॥

स्तवन

(१) आज जिनराज मुज...

(राग : तार मुज तार मुज.../
जय गणेश (२).../ऋषभ जिनराज...)

आज जिनराज! मुज काज सिध्यां सवे,
विनंति माहरी चित्त धारी;
मार्ग जे में लह्यो तुज कृपारस थकी,
तो हुई सम्पदा प्रगट सारी. ॥१॥
वेगलो मत हुजे देव! मुज मन थकी,
कमलना वन थकी जिम परागो;
चमक पाषाण जिम लोहने खेंचशे,
मुक्तिने सहज तुज भक्ति रागो. ॥२॥
तुं वसे जो प्रभु! हर्षभर हियडले,
तो सकल पापना बंध तूटे;
उगते गगन सूर्य तणे मण्डले,
दश दिशि जिम तिमिर पडल फूटे. ॥३॥

सींचजे तुं सदा विपुल करुणारसे,
मुज मने शुद्ध मति कल्पवेली;
नाण दंसण कुसुम चरण वर मंजरी,
मुक्ति फल आपशे ते अकेली. ॥४॥
लोकसंज्ञा थकी लोक बहु वाउलो,
राउलो दास ते सवि उवेखे;
एक तुज आणसुं जेह राता रहे,
तेहने एह निज मित्र देखे. ॥५॥
आण जिनभाण! तुज एक हुं शिर धरुं,
अवरनी वाणी नवि काने सुणीए;
सर्व दर्शन तणुं मूल तुज शासन,
तेणे ते एक सुविवेक थुणीए. ॥६॥
तुज वचन राग सुखसागरे हुं गणुं,
सकल सुर मनुज सुख एक बिंदु;
सार करजो सदा देव! सेवक तणी,
तुं सुमति कमलिनी वन दिणिंदु. ॥७॥
ज्ञानयोगे धरी तृप्ति नवि लाजिये,
गाजिये एक तुज वचनरागे;
शक्ति उल्लास अधिको होशे तुज थकी,
तुं सदा सयल सुख हेत जागे. ॥८॥

(यह स्तवन पू. उपा. यशो वि.म.सा.के ३५० गाथा स्तवन की १७वीं ढाळ है।)

(२) तमे महाविदेह जईने...

(राग : प्रीतमजी आणा मोकलजो...)

तमे महाविदेह जईने कहेजो चांदलिया, सीमंधर तेडा मोकले;
तमे भरत क्षेत्रनां दुःख मारा, कहेजो चांदलिया. सीमं०॥१॥

अज्ञानता अहीं छवाई गई छे, तत्त्वनी वातो भुलाई गई छे;
हा रे एवां, आत्मानां दुःख मारा, कहेजो चांदलिया. सीमं०॥२॥
पुद्गलना मोहमां फसाई गयो छुं, कर्मोनी जाळमां जकडाई गयो छुं;
हा रे एवां, कर्मोनां दुःख मारा, कहेजो चांदलिया. सीमं०॥३॥
मारुं न हतुं तेने मारुं करी मान्युं, मारुं हतुं तेने नाहि रे पिछाण्युं;
हा रे एवां, मूर्खताना दुःख मारां, कहेजो चांदलिया. सीमं०॥४॥
सीमंधर सीमंधर हृदयमां धरतो, प्रत्यक्ष दर्शननी आशा हुं करतो;
हा रे एवां, वियोगनां दुःख मारां, कहेजो चांदलिया. सीमं०॥५॥
संसारनुं सुख मने कारमुं ज लागे, प्रभु तुम विण वात कहुं कोनी रे आगे;
हा रे एवां '**वीरविजय**'नां दुःख मारां, कहेजो चांदलिया. सीमं०॥६॥



(3) तारी मूरतिए मन मोह्युं रे...

(राग : तारी अजबशी योगनी.../आंखडीये में आज...)

तारी मूरतिए मन मोह्युं रे, मनना मोहनीया!
तारी सूरतिए जग सोह्युं रे, जगना जीवनीया!
तुम जोतां सवि दूरमति वीसरी, दिन रातडी नवी जाणी;
प्रभु गुणगण सांकळशुं बांध्युं, चंचळ चित्तडुं ताणी रे. मनना०॥१॥
पहेलां तो ऐक केवल हरखे, हेजाळु थई हळियो;
गुण जाणीने रूपे मिलियो, अभ्यंतर जई भळियो. मनना०॥२॥
वीतराग ईम जस निसुणीने, रागी राग करेह;
आप अरूपी राग निमित्ते, दास अरूप धरेह रे. मनना०॥३॥
श्री सीमंधर! तुं जगबंधु, सुंदर ताहरी वाणी;
मंदर भूधर अधिक धीरज धर, वंदे ते धन्य प्राणी रे. मनना०॥४॥
श्री श्रेयांस नरेसर नंदन, चंदन शीतल वाणी;
सत्यकी माता वृषभ लंछन, '**ज्ञानविमल**' गुणखाणी रे. मनना०॥५॥

(४) धन्य धन्य क्षेत्र महाविदेहजी...

(राग : धन्य बनावीश.../मिले मन भीतर...)

धन्य धन्य क्षेत्र महाविदेहजी, धन्य पुंडरीगिणी गाम,
धन्य तिहांना मानवीजी, नित्य उठी करे रे प्रणाम;
सीमंधरस्वामी! कहीए रे हुं महाविदेह आवीश?
जयवंता जिनवर! कहीए रे हुं तमने वांदीश.? सीमंधर०॥१॥
चांदलीया! संदेशडोजी, कहेजो सीमंधरस्वामी;
भरतक्षेत्रनां मानवीजी, नित्य उठी करे रे प्रणाम. सीमंधर०॥२॥
समवसरण देवे रच्युं तिहां, चोसठ इंद्र नरेश;
सोनातणे सिंहासन बेठा, चामर छत्र धरेश. सीमंधर०॥३॥
ईंद्राणी काढे गहुंलीजी, मोतीना चोक पूरेश;
लळी लळी लिये लूंछणाजी, जिनवर दिये उपदेश सीमंधर०॥४॥
एहवे समे में सांभळ्युंजी, हवे करवा पच्चक्खाण;
पोथी ठवणी तिहां कणेजी, अमृत वाणी वखाण. सीमंधर०॥५॥
रायने वहाला घोडलाजी, वेपारीने वहालां छे दाम;
अमने वहाला सीमंधर स्वामी, जेम सीताने श्रीराम. सीमंधर०॥६॥
नहि मांगु प्रभु राजऋद्धिजी, नही मांगु अरथ भंडार;
हुं मांगु प्रभु एटलुं जी, तुम पासे अवतार. सीमंधर०॥७॥
दैवे न दीधी पांखडीजी, केम करी आवुं हजुर?
मुजरो मारो मानजोजी, प्रह उगमते सूर. सीमंधर०॥८॥
'**समयसुंदर**'नी विनतिजी, मानजो वारंवार;
बे कर जोडी विनवुंजी, विनतडी अवधार. सीमंधर०॥९॥





(५) पुक्खलवई विजये जयो रे...

(राग : पहेल भवे एक गामनो.../ एक पंखी...)

पुक्खलवई विजये जयो रे, नयरी पुंडरीगिणी सार;
श्री सीमंधर साहिबा रे, राय श्रेयांसकुमार;
जिणंदराय! धरजो धर्म सनेह... ॥१॥
मोटा नानानुं आंतरुं रे, गिरुआ नवि दाखंत;
शशी-दरिसण सायर वधे रे, कैरव वन विकसंत. जिणंद०॥२॥
ठाम कुठाम नवि लेखवे रे, जग वरसंत जलधार;
कर दोय कुसुमे वासिये रे, छाया सवि आधार. जिणंद०॥३॥
राय ने रंक सरीखा गणे रे, उद्योते शशी सूर;
गंगाजळ ते बिहुं तणां रे, ताप करे सवि दूर. जिणंद०॥४॥
सरीखा सहुने तारवा रे, तिम तुमे छो महाराज!
मुजशुं अंतर केम करो रे, बांह्य ग्रह्यानी लाज. जिणंद०॥५॥
मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण;
मुजरो माने सवि तणो रे, साहिब तेह सुजाण. जिणंद०॥६॥
वृषभ लंछन माता सत्यकी रे, नंदन रुक्मणी कंत;
'**वाचक यश**' ईम विनवे रे, भयभंजन भगवंत. जिणंद०॥७॥



(६) प्यारा सीमंधर स्वामी...

(राग : सिद्धाचलना वासी...)

प्यारा सीमंधर स्वामी, तमे मुक्तिना गामी,
विदेहवासी विहरमानने वंदना हमारी;
तने मलवा तलशुं, मने प्रीति तुमशुं,
विदेहवासी विहरमानने वंदना हमारी. ॥१॥
चाले मनमां तारो एक जाप, तोये पजवे छे त्रिविध ताप;
आधि व्याधि वारो, उपाधिथी तारो. विदेहवासी०॥२॥

मने समवसरणमां बोलावो, मीठी मधुरी वाणी सुणावो;
मोह तिमिर टाळो, मिथ्यात्वने बाळो. विदेहवासी०॥३॥
थाये दर्शन तमारा पवित्र, तमे जगना गुरु जगमित्र;
तमे जगना बंधु, तने भावे वंदुं. विदेहवासी०॥४॥
तमे श्रेयांसराय कुलचंदा, सती सत्यकी माताना नंदा;
तमे जन मनरंजन, आंजो ज्ञान अंजन. विदेहवासी०॥५॥
महाविदेहना वासी व्हाला, हुं तो अंतरथी करुं कालावाला;
'**ज्ञानविमल**' गुणगाय, भवजल पार कराय. विदेहवासी०॥६॥

(७) प्रभाते ऊठी करुं वंदना रे...

(राग : जननीनी जोड.../फूल तुम्हें भेजा है...)

प्रभाते ऊठी करुं वंदना रे, प्रभाते ऊठी करुं वंदना रे;
बे कर जोडीने विनवुं रे, मारी विनतडी अवधार रे;
तमे महाविदेहमां वस्या रे, अमने छे तुम आधार रे. ॥१॥
भरतक्षेत्रमां अवतर्यो रे, केम करी आवुं हजूर रे;
तुम दर्शन नवि पामियो रे, रह्यो मजूरनो मजूर रे. ॥२॥
तुम पासे देव घणा वसे रे, एक मोकलजो महाराज रे;
मननो संदेह प्रभु! पूछीने रे, करुं सफळ दिन आज रे. ॥३॥
केवलज्ञानीना विरहथी रे, मनुष्य जन्म एळे जाय रे;
शुभभाव आवे नहीं रे, शी गति माहरी थाय रे. ॥४॥
कर्मने मोहे खूब कश्यो रे, हजु न थयो खुलाश रे;
जेम तेम करी प्रभु तारजो रे, हुं तो धरुं तमारी आश रे. ॥५॥
सीमंधरस्वामीना नामथी रे, थाय सफल अवतार रे;
'**उदयरतन**' एम विनवे रे, प्रभु नामे जय जयकार रे. ॥६



(८) श्री सीमंधर जिनवर स्वामी...

(राग : वैष्णवजन.../ऐसा चिद्रस.../
मिले मन भीतर.../पहले भवे एक गामनो...)

श्री सीमंधर जिनवर स्वामी, विनतडी अवधारो;
शुद्ध धर्म प्रगट्यो जे तुमचो, प्रगटे तेह अमारो रे,
स्वामी विनवीये मनरंगे... ॥१॥
जे पारिणामिक धर्म तमारो, तेहवो हमचो धर्म;
श्रद्धा भासन रमण वियोगे, वळग्यो विभाव अधर्म. ॥२॥
वस्तु स्वभाव स्वजाति तेहनो, मूल अभाव न थाय;
पर विभाव अनुगत परिणतिथी, कर्मे ते अवराय रे. ॥३॥
जे विभाव ते पण नैमितिक, संतति भाव अनादि;
परनिमित्त ते विषय संगादिक, ते संयोगे सादि रे. ॥४॥
अशुद्ध निमित्ते ए संसरता, अत्ता कत्ता परनो;
शुद्ध निमित्त रमे जब चिद्घन, कर्ता भोक्ता घरनो रे. ॥५॥
जेहना धर्म अनंता प्रगट्या, जे निज परिणित वरियो;
परमातम जिनदेव अमोही, ज्ञानादिक गुण दरीयो. ॥६॥
अवलंबन उपदेशक रीते, श्री सीमंधर देव;
भजीये शुद्ध निमित्त अनोपम, तजीये भवभय टेव. ॥७॥
शुद्ध देव अवलंबन करता, परिहरिये परभाव;
आतम धर्म रमण अनुभवता, प्रगटे आतम भाव. ॥८॥
आतम गुण निर्मळ निपजता, ध्यान समाधि स्वभावे;
पूर्णानंद सिद्धता साधी, '**देवचन्द्र**' पद पावे रे. ॥९॥

(९) श्री सीमंधर विनंती...

(राग : तेरे सुर और.../जनम जनम का साथ है.../मेरे साहिब तुमही...)

श्री सीमंधर विनंती, सुण साहिब मेरा;
अहनिश तुम ध्याने रहुं, मैं फरजन तेरा. श्री०॥१॥

भाव भक्तिशुं वंदना, करुं ऊठी सवेरा;
भवदुःख सागर तरीये,जिम होय तुम मेरा. श्री०॥२॥
अंतर रवि जब प्रगटीआ, प्रभु तुम गुण केरा;
तव हम मन निर्मल भया, मिट्या मोह अंधेरा. श्री०॥३॥
तारक तुम विण अवर को, कहो कवण भलेरा;
ते प्रभु हमकुं दाखवो, करुं तास निहोरा. श्री०॥४॥
'**नय**' नितु नेहे निरखीये, प्रभु अबकी वेरा;
बोधिबीज मोहे दीजीए, कहा कहुं बहु तेरा. श्री०॥५॥

(१०) श्री सीमंधर साहिबा विनतडी हो...

(राग : परमातम पूरण कला.../ अजित जिणंदशुं प्रीतडी.../वैष्णवजन...)

श्री सीमंधर साहिबा, विनतडी हो सुणीए किरतार के;
ते दिन लेखे लागशे, जिण दिवसे हो लहीशुं देदार के. श्री०॥१॥
हेजाळुं हैयुं उल्लसे, पण नयणे हो निरखे सुख थाय के;
जे जलपान पिपासियो, तस दीठे हो कदी तृप्ति न थाय के. श्री०॥२॥
जाणो छो प्रभु बहु परे, माहरा मननी हो वीतकनी वात के;
तो शुं ताणो छो घणुं, आवी मिलो हो मुज थई साक्षात् के. श्री०॥३॥
हुं उच्छुक बहु परे कहुं, पण न गणुं हो कांई रीझ अरीझ के;
ए लक्षण रागी तणुं, तिणे भाख्युं हो सघळुं मन गुंज के. श्री०॥४॥
'**ज्ञानविमल**' प्रभु आपणो, जाणीने हो कीजे उच्छाह के;
उत्तम आप अधिक करे, आवी मळ्या हो ग्रह्या जे बांह्य के. श्री०॥५॥

(११) श्री सीमंधर साहिबा...

(राग : एक दिन आप हमको.../तेरे सूर और मेरे गीत.../
एक पंखी.../ऋषभ जिनेश्वर...)

श्री सीमंधर साहिबा, सुणो संप्रति हो भरतक्षेत्रनी वात के;
अरिहा केवली को नहि, केहने कहीए मनना अवदात के. ॥१॥

झाझुं कहेतां जुगतुं नहि, तुम सोहे हो जग केवलनाण के;
भूख्या भोजन मांगता, आपे ऊलट हो अवसर ना जाणे के. ॥२॥
कहेशो तुमे जुगता नथी, जुगताने हो वळी तारे सांई के;
योग्य जननुं कहेवुं किश्युं, भावहिनने हो तारे ग्रही बाह्य के. ॥३॥
थोडुं ही अवसरे आपीए, घणानी हो प्रभु छे पछी वात के;
पगले पगले पार पामीए, पछी लहिये हो सघळा अवदात के. ॥४॥
मोडुं वहेलुं तुमे आपशो, बीजानो हुं न करु संग के;
श्री '**धीरविमल**' गुरु शिष्यनो, राखीजे हो प्रभु अविचल रंग के. ॥५॥



(१२) श्री सीमंधर साहिबा, हुं केम आवुं...

(राग : आवो आवो वीर मारा.../
मिले मन भीतर.../संभव जिन विनंती...)

श्री सीमंधर साहिबा, हुं केम आवुं तुम पास;
तुम वच्चे अंतर घणुं, मने मलवानी घणी होंश.
हुं तो भरतने छेडे... हारे. हुं०॥१॥
हुं तो भरतने छेडले कांई, प्रभुजी विदेह मोझार;
डुंगर वच्चे दरिया घणा कांई, कोशमां कोश हजार. हुं०॥२॥
प्रभु देतां हशे देशना, कांई सांभळे तिहांना लोक;
धन्य ते गाम-नगर पुरी, जिहां वसे छे पुण्यवंत लोक. हुं०॥३॥
धन्य ते श्रावक श्राविका, जे नीरखे तुम मुखचंद;
पण ए मनोरथ अम तणां, क्यारे फळशे भाग्य अमंद. हुं०॥४॥
वर्तारो वर्ती जुओ कांई, जोषीए मांड्या लगन;
क्यारे सीमंधर भेटशुं, मने लागी एह लगन. हुं०॥५॥
पण कोई जोषी नहि एहवो, जे भांजे मननी भ्रांत;
पण अनुभव मित्र कृपा करो, तुम मळवो तिण एकांत. हुं०॥६॥
वीतराग भावे सही तुमे, वर्तो छो जगनाथ;
में जाण्युं तुम कहेणथी, हुं थयो स्वामी सनाथ; हुं०॥७॥

पुष्कलावती विजये वसो कांई, नयरी पुंडरीगिणी नाम;
सत्यकी नंदन वंदना, अवधारो गुणना धाम. हुं०॥८॥
श्री श्रेयांस नृप कुलचंद ने, रुक्मिणी राणीनो कंत;
वाचक '**रामविजय**' कहे, तुम ध्याने मुज मन चित्त. हुं०॥९॥

(९३) श्री सीमंधरस्वामी मुक्तिना धामी...

(राग : वासुपूज्य विलासी.../आंधळी मां नो कागळ...)

श्री सीमंधरस्वामी, मुक्तिना धामी, दीठे परमानंद,
सुमति आपो, कुमति कापो, टाळो भवभय फंद;
कर्म अरिगण दूर करीने, तोडो भवतरुं कंद. श्री सीमंधर०॥१॥
चोत्रीस अतिशय शोभतां रे, पांत्रीश वाणी रसाळ;
अष्ट प्रतिहार्य दीपता रे, बेठी छे पर्षदा बार रे. श्री सीमंधर०॥२॥
महागोप महामाहण कहीए, निर्यामक सार्थवाह;
दोष अढारने दूरे करीने, भवजल तारण नाव रे. श्री सीमंधर०॥३॥
अगणित शंका ए हुं भर्यो रे, कोण करे तस दूर;
ज्ञानी तुमे दूरे वस्या रे, हुं पड्यो भवकूप रे. श्री सीमंधर०॥४॥
एकवार दर्शन दीजीए रे, दासनी सुणी अरदास;
गुण अवगुण नवि लेखिये रे, गिरुआनो आधार रे. श्री सीमंधर०॥५॥
जो होवत मुज पांखडी रे, तो आवत आप हजूर;
ए लब्धि मुज सांपडे तो, न रहुं तुमथी दूर रे. श्री सीमंधर०॥६॥
धन्य महाविदेहना जीवने रे, सदा रहे तुम पास;
हुं निर्भागी भरते वस्यो रे, शा कीधा में पाप रे. श्री सीमंधर०॥७॥
शासन भक्त जे सुरवरा रे, विनवुं शिश नमाय;
श्री सीमंधर स्वामीना रे, चरण कमळ भेटाड रे. श्री सीमंधर०॥८॥
अरिहंत पद सेवा थकी रे, देवपालादिक सिद्ध;
हुं मांगु प्रभु एटलुं रे, 'सौभाग्य' पद समृद्ध. श्री सीमंधर०॥९॥

(१४) सीमंधर जिन वंदीए...

(राग : एक प्यार का.../दोषथी हर्योभर्यो.../
मननो मोरलीयो.../चेतन ज्ञान अजवाळीए...)

सीमंधर जिन वंदीए, समतारस भंडार रे;
दोष सघळा क्षय थया, उपन्या गुण सुखकार रे. ॥१॥
सुरघट सुरतरु उपमा, प्रभुने कहो केम छाजे रे;
आत्मिक सुखनी आगळे, चिंतामणी पण लाजे रे. ॥२॥
लोकालोक प्रकाशतां, महिमा अपरंपार रे;
तारक वारक चउगति, सत्य स्वरूपाधार रे. ॥३॥
शुद्ध-बुद्ध अविनाशी तुं, अविचल नयनानंद रे;
पामी सुरतरु पुण्यथी, सेवे बाउल कुण मंद रे. ॥४॥
अनुपम प्रभु गुण ध्यानथी, भास्युं स्वरूप शुद्ध साचुं रे;
चरण कमल '**जिन**' सेवतां, निशदिन मनमां राचुं रे. ॥५॥



(१५) सुणो चंदाजी! सीमंधर...

(राग : सुण गोयमजी...)

सुणो चंदाजी! सीमंधर परमातम पासे जाजो,
मुज विनतडी, प्रेम धरीने, एणी पेरे तुमे संभळावजो;
जे त्रण भुवननो नायक छे, जस चोसठ इन्द्र पायक छे,
ज्ञान दरिशण जेहने क्षायक छे. सुणो०॥१॥
जेनी कंचनवरणी काया छे, जस धोरी लंछन पाया छे;
पुंडरीगिणी नगरीनो राया छे. सुणो०॥२॥
बार पर्षदा मांही बिराजे छे, जस चोत्रीस अतिशय छाजे छे;
गुण पांत्रीस वाणीए गाजे छे. सुणो०॥३॥
भविजनने जे पडिबोहे छे, तुम अधिक शीतल गुण सोहे छे;
रूप देखी भविजन मोहे छे. सुणो०॥४॥

तुम सेवा करवा रसियो छुं, पण भरतमां दूरे वसियो छुं;
महा मोहराय कर फसियो छुं. सुणो०॥५॥
पण साहिब चित्तमां धरियो छे, तुम आणा खडग कर ग्रहियो छे;
तो कांईक मुजथी डरियो छे. सुणो०॥६॥
जिन उत्तम पूंठ हवे पूरो, कहे '**पद्मविजय**' थाउं शूरो;
तो वाधे मुज मन अति नूरो. सुणो०॥७॥

थोय

(१)

सो क्रोड साधु, सो क्रोड साध्वी जाण,
ऐसे परिवारे सीमंधर भगवान;
दश लाख कह्या केवली, प्रभुजीनो परिवार,
'**वाचकयश**' वंदे नित-नित वारंवार.

(२)

श्री सीमंधर जिनवर, सुखकर साहिब देव,
अरिहंत सकलनी, भाव धरी करुं सेव;
सकलागम पारग, गणधर भाषित वाणी,
जयवंती आणा, '**ज्ञानविमल**' गुणखाणी.

(३)

श्री सीमंधर सत्यकीनंदन, चंद्रकिरण जिम सोहेजी,
समवसरण बेठा जग स्वामी, सुरनरना मनमोहेजी;
वाणी अमीय समाणी प्रभुनी सांभळता अघ गोळेजी,
समकितदृष्टि शासनदेवी, दुःख दोहग सवि टाळेजी.

(ऊपर की ये तीन स्तुतियाँ थोय के जोड़े के रूप में बोली जा सकती हैं।)

श्री सामान्य जिन

चैत्यवंदन

(१) श्री शाश्वता अशाश्वता जिन चैत्यवंदन...

कोडी सातने लाख... बहोंतेर वखाणुं,
भुवनपति चैत्य... संख्या प्रमाणुं;
एंसी सो जिनबिंब... एक चैत्य ठामे,
नमो सासय... जिनवरा मोक्ष कामे... ॥१॥
कोडी तेरशे ने... नेव्यासी वखाणे,
साठ लाख उपर... सवि बिंब जाणे;
असंख्यात व्यंतरतणा... नगर नामे... नमो०॥२॥
असंख्यात तिहां चैत्य... तेम ज्योतिषीये,
बिंब एकशत एंशी... भाख्यां ऋषिए;
नमे ते महासिद्धि... नवनिधि पामे... नमो०॥३॥
वळी बार देवलोकमां... चैत्य सार,
ग्रैवेयक नव मांहि... देहरा उदार;
तिम अनुत्तरे देखीने... म पडो भामे... नमो०॥४॥
चोराशी लाख तेम... सत्ताणुं सहस्सा,
उपर त्रेवीश चैत्य... शोभाये सरसा;
हवे बिंब संख्या... कहुं तेह धामे... नमो०॥५॥
सो कोडीने बावन... कोडी जाणो,
चोराणुं लख सहस... चौआल आणो;
सय सात ने आठ... उपर प्रकामे... नमो०॥६॥
मेरु राजधानी... गजदंत सार,
जमक चित्र विचित्र... कांचन वखार;
इक्खुकारने वर्षधर... नाम ठामे... नमो०॥७॥

वळी दीर्घ वैताढ्यने.. वृत जेह,
जंबू आदि वृक्षे... दिशा गज छे तेह;
कुंड महानदी द्रह... प्रमुख चैत्य ग्रामे... नमो०॥८॥
मानुषोत्तर नगवरे... जेह चैत्य,
नंदिसर रुचक... कुंडले छे पवित्त;
तिर्च्छालोकमां चैत्य... नमिये सुठामे... नमो०॥९॥
प्रभु ऋषभ चंद्रानन... वारिषेण,
वळी वर्धमानाभिधे... चार श्रेण;
एह शाश्वता बिंब... सवि चार नामे... नमो०॥१०॥
सवि कोडि सय पनर... बायाल धार,
अट्ठावन लख सहस... छत्रीश सार;
एंशी जोईष वण विना... सिद्धि धामे... नमो०॥११॥
अशाश्वता जिनवर... नमो प्रेम आणी,
केम भाखीये तेह... जाणी अजाणी;
बहु तीर्थने ठामे... बहु गाम गामे... नमो०॥१२॥
एम जिन प्रणमीजे... मोह नृपने दमीजे,
भव भव न भमीजे... पाप सर्वे गमीजे;
परभाव वमीजे... जो प्रभु अट्ठमीजे,
'**पद्मविजय**' '' नमीजे... आत्मतत्त्वे रमीजे... नमो०॥१३॥

(२) अलख अगोचर अकलरूप...

अलख अगोचर अकलरूप, अविनाशी अनादि;
एक अनेक अनंत अंत, अविकल अविवादि... ॥१॥
सिद्ध बुद्ध अविरुद्ध शुद्ध, अजर अमर अभय;
अव्याबाध अमुरतिक, निरूपाधिक निरामय... ॥२॥
परमपुरुष परमेश्वरु, प्रथमनाथ परधान;
भव भव भावठ भंजणो, तारक तुं भगवान... ॥३॥

रसमां तुज गुण संस्तवे, द्रष्टि तुज दरशन;
नव अंगे पूजा समे, काया तुज फरसन... ॥४॥
तुज गुण श्रवणे दोश्रवण, मस्तक प्रणिपाते;
शुद्ध निमित्तथी सवि हुआ, शुभ परिणति थाते... ॥५॥
विविध निमित्त विलासथी, विलसे प्रभु एकांत;
अवरियो अभ्यंतरे, निश्चय ध्येय महंत... ॥६॥
भावद्रष्टिमां भावतां, व्यापक सवि भासे;
उदासीनता अवरशुं, लीनो निजगुण वासे... ॥७॥
दीठा विण जे देखीये, सुता पण जगवे;
अवर विषयथी छोडावे, इन्द्रिय बुद्धि त्यजवे... ॥८॥
पराधीनता मीट गई, भेद बुद्धि गई दूरे;
अध्यात्म प्रभु परिणम्यो, चिदानंद भरपूरे... ॥९॥
ज्योतिशुं ज्योत मिल गई, प्रगट्यो वचनातीत;
अंतरंग सुख अनुभव्यो, निज आतम परतीत... ॥१०॥
निर्विकल्प उपयोग रूप, पूजा परमारथ्थ;
कारक ग्राहक एक (ए) प्रभु, चेतन समरथ्थ... ॥११॥
वीतराग एम पूजतां ए लहि, ए अविहड सुख;
'**मानविजय**' उवज्झायनां, नाठां सघळा दुःख... ॥१२॥

(२) आज देव अरिहंत नमुं...

आज देव अरिहंत नमुं, समरुं तारुं नाम;
ज्यां ज्यां प्रतिमा जिन तणी, त्यां त्यां करुं प्रणाम. ॥१॥
शत्रुंजय श्री आदिदेव, नेम नमुं गिरनार;
तारंगे श्री अजितनाथ, आबु ऋषभ जुहार. ॥२॥
अष्टापद गिरि उपरे, जिन चोवीशे जोय;
मणीमय मूरति मानशुं, भरते भरावी सोय. ॥३॥

सम्मेतशिखर तीरथ वडुं ए, जिहां वीशे जिनपाय;
वैभार गिरिवर उपरे, श्री वीर जिनेसर राय. ॥४॥
मांडवगढनो राजियो, नामे देव सुपास;
'**ऋषभ**' कहे जिन समरतां, पहोंचे मननी आश. ॥५॥

(3) जय जय तुं जिनराज आज...

जय जय तुं जिनराज आज, मळीयो मुज स्वामी;
अविनाशी अकलंक रूप, जग अंतरजामी. ॥१॥
रूपारूपी धर्म देव, आतम आरामी;
चिदानंद चेतन अचिंत्य, शिव लीला पामी. ॥२॥
सिद्ध बुद्ध तुज वंदता ए, सकल सिद्ध वर बुद्ध;
रमो प्रभु ध्याने करी, प्रगटे आतम ऋद्ध. ॥३॥
काल बहु स्थावर गयो, भमियो भव मांहीं;
विकलेन्द्रिय एळे गयो, स्थिरता नहि क्यांही. ॥४॥
तिर्यंच पंचेन्द्रिय मांही देव!, कर्मे हुं आव्यो;
करी कुकर्म नरके गयो, तुम दरिशन नहीं पायो. ॥५॥
एम अनंत काले करी ए, पाम्यो नर अवतार;
हवे जगतारक तुं ही मळ्यो, भवजल पार उतार. ॥६॥

(४) तुज मुरतिने निरखवा...

तुज मूरतिने निरखवा, मुज नयणा तरसे;
तुज गुण गणने बोलवा, रसना मुज हरखे. ॥१॥
काया अति आनंद मुज, तुम युगपद फरशे;
तो सेवक तार्या विना कहो किम हवे सरशे. ॥२॥
एम जाणीने साहिबा ए, नेक नजर मोहे जोय;
'**ज्ञानविमल**' प्रभु नजरथी, तेह शुं जे नवि होय. ॥३॥

(५) पद्मप्रभु ने वासुपूज्य...

पद्मप्रभु ने वासुपूज्य,दोय राता कहीए;
चंद्रप्रभ ने सुविधिनाथ,दो उज्ज्वल लहीए. ॥१॥
मल्लिनाथ ने पार्श्वनाथ, दो नीला निरख्या;
मुनिसुव्रत ने नेमिनाथ, दो अंजन सरीखा. ॥२॥
सोळे जिन कंचन समा ए, एवा जिन चोवीश;
धीरविमल पंडिततणो, '**ज्ञानविमल**' कहे शीश. ॥३॥

(६) परमेश्वर परमातमा...

परमेश्वर परमातमा, पावन परमिट्ठ;
जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणे में दिट्ठ. ॥१॥
अचल अकल अविकार सार, करुणारस सिंधु;
जगति जन आधार एक, निष्कारण बंधु. ॥२॥
गुण अनंत प्रभु ताहरा ए, किमहि कह्यां न जाय;
'**राम**' प्रभु जिन ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय. ॥३॥

स्तवन

(१) अनंतविरज अरिहंत!...

(राग : अपूर्व अवसर.../आंखडी मारी प्रभु.../प्रीतलडी बंधाणी रे...)

अनंतविरज अरिहंत! सुणो मुज विनति,
अवसर पामी आज कहुं जे दिल छती;
आतमसत्ता हारी संसारे हुं भम्यो,
मिथ्या अविरति रंग कषाये बहु दम्यो. ॥१॥
क्रोध दावानल दग्ध मानविषधर डस्यो,
मायाजाले बद्ध लोभ अजगर ग्रस्यो;

MURATI  SURATI

मन वचन कायाना योग चपळ थया परवशा,
पुद्गल परिचय पापतणी अहनिशि दशा. ॥२॥
कामरागे अणनाथ्या सांढ परे धस्यो,
स्नेहरागनी राचे भवपिंजर वस्यो;
दृष्टिराग रुचि काचपाच समकित गणुं,
आगम रीते नाथ! न निरखुं निजपणुं. ॥३॥
धर्म देखाडुं मांड, भांड परे अति लवुं,
'अचरे अचरे राम' शुक परे जपुं;
कपटपटुं नटुवा परे मुनिमुद्रा धरुं,
पंचविषय सुखपोष सदोषवृत्ति भरुं. ॥४॥
एक दिनमां नव वार 'करेमि भंते' करुं,
त्रिविध त्रिविध पच्चक्खाण क्षण एक नवि थरुं;
मा-साहस खग रीति नीति घणी कहुं,
उत्तम कुलवट वाट न ते पण निरवहुं. ॥५॥
दीनदयाळ! कृपाळ! प्रभु! महाराज! छो,
जाण आगळ शुं कहेवुं? गरीबनिवाज छो;
पूरव धातकी खंड नलिनी विजयावती,
नयरी अयोध्या नायक, लायक यतिपति. ॥६॥
मेघमहीप मंगलावती सुत विजयावती,
आ नंदन गजलंछन जग जन तारति;
'**क्षमाविजय**' जिनराज! अपाय निवारजो,
विहरमान भगवान! सुनजरे तारजो. ॥७॥

(२) अब में साचो साहिब पायो...

(राग : अब मोहे.../मैया मोरी.../अब हम अमर भये न मरेंगे.../
वैष्णवजन.../दरिशन द्यो घनश्याम...)

अब में साचो साहिब पायो, अब में साचो साहिब पायो;
याकि सेव करत हुं याकुं, मुज मन प्रेम सुहायो. ॥१॥
ठाकुर और न होवे अपनो, जो दीजे घर मायो;
संपत्ति अपनी खिनु में देवे, वें तो दिल में ध्यायो. ॥२॥
औरनकी जन करत चाकरी, दूर देश पाय घासे;
अंतरयामी ध्याने दीसे, वें तो अपने पासे. ॥३॥
और कबहुं कोउं कारन कोप्यो, बहोत उपाय न तूसे;
चिदानंद में मगन रहतुं है, वें तो कबहुं न रुसे. ॥४॥
औरनकी चिंता चिति न मिटे, सब दिन धंधे जावे;
थिरता गुन पूरन सुख खेले, वें तो अपने भावे. ॥५॥
पराधीन है भोग औरको, ता तें होत वियोगी;
सदा सिद्ध सम शुद्ध विलासी, वें तो निज गुन भोगी. ॥६॥
ज्यौं जानो त्यौं जग जन जानो, मैं तो सेवक उनको;
पक्षपात तो परसूं होवे, राग धरत हुं गुनको. ॥७॥
भाव एक है सब ज्ञानी को, मूरख भेद न भावे;
अपनो साहिब जो पहिचाने, सो '**जस**' लीला पावे. ॥८॥

(3) अबोलडां शाना लीधां छे राज...

(राग : वैष्णवजन तो.../तारा विना श्याम मने...)

अबोलडां शाना लीधां छे राज, जीवजीवन प्रभु माहरा;
तमे अमारा अमे तमारा, वास निगोदमां रहेतां. ॥१॥
काल अनंतना स्नेही प्यारा, कदीय न अंतर करता;
बादर स्थावरमां बेहु आपण, काल असंख्य निगमतां. ॥२॥

विकलेन्द्रियमां काल संख्याता, विसर्या नवि विसरता;
नरकस्थाने रह्या बेहु साथे, तिहां पण बहु दुःख सहता. ॥३॥
परमाधामी सन्मुख आपण, टग मग नजरे जोतां;
देवना भवमां एक विमाने, देवनां सुख अनुभवता. ॥४॥
एकण पासे देवशय्यामां, थेई थेई नाटक सुणतां;
तिहां पण तमे अने अमे बेउ साथे, जिन जन्म महोत्सव करता. ॥५॥
तिर्यंचगतिमां सुखदुःख अनुभवता, तिहां पण संग चलंता;
एक दिन समवसरणमां आपण, जिनगुण अमृत पीता. ॥६॥
एक दिन तमे अने अमे बेउं साथे, वेलडी वळगीने फरता;
एक दिन बाळपणामां आपणे, गेडी दडे नित्य रमतां. ॥७॥
तमे अने अमे बेउ सिद्ध स्वरूपी, एवी कथा नित्य करता;
एक कुल एक गोत्र एक ठेकाणे, एक ज थाळीमां जमता. ॥८॥
एक दिन हुं ठाकोर तमे चाकर, सेवा माहरी करता;
आज तो आप थया जग ठाकोर, सिद्धिवधूना पनोता. ॥९॥
काल अनंतनो स्नेह विसारी, काम कीधां मनगमतां;
हवे अंतर केम कीधुं प्रभुजी, चौद राज जई पहोंता. ॥१०॥
'**दीपविजय**' कविराज प्रभुजी, जगतारण जगनेता;
निज सेवकने यशपद दीजे, अनंत गुणे गुणवंता. ॥११॥

(४) आज मारा प्रभुजी सामुं जुओने...

(राग : वैष्णवजन.../मैली चादर.../
सुरजमंडण.../श्री श्रेयांसजिन अंतरजामी.../आंख मारी...)

आज मारा प्रभुजी सामुं जुओने, सेवक कहीने बोलावो रे;
एटले हुं मनगमतुं पाम्यो, रुठडां बाळ मनावो, मोरा सांई रे. ॥१॥
पतित पावन शरणागत वत्सल, ए जश जगमां चावो रे;
मन रे मनाव्या विण नहि मुकूं, एहि ज मारो दावो. ॥२॥

कबजे आव्या ते नहि मुकूं, जिहां लगे तुम सम थावुं रे;
जो तुम ध्यान विना शिव लहीए, तो ते दाव बतावो. ॥३॥
महागोप ने महानिर्यामक, एवा-एवा बिरुद धरावो रे;
तो शुं आश्रितने उद्धरतां, बहु बहु शुं कहावो. ॥४॥
'**ज्ञानविमल**' गुरुनो निधि महिमा, मंगल एहि वधावो रे;
अचल अभेदपणे अवलंबी, अहोनिश एहि दिल ध्यावो. ॥५॥



(५) आनंद की घडी आई, सखीरी आज...

(राग : रात दिवस उपकारो... /चरणो में तेरे.../
दर्शन द्यो घनश्याम.../वीर जिणंद जगत...)

आनंद की घडी आई, सखीरी आज! आनंद की घडी आई...
करके कृपा प्रभु दरिशन दिनो, भव की पीड मिटाई;
मोह निद्रा से जाग्रत करके, सत्य की बात सुणाई,
तन मन हर्ष न माई. सखीरी०॥१॥
नित्यानित्य का भेद बताकर, मिथ्यादृष्टि हराई;
सम्यग्ज्ञान की दिव्य प्रभा को, अंतर में प्रगटाई,
साध्य साधन दिखलाई. सखीरी०॥२॥
त्याग वैराग्य संयम के योग से, निःस्पृह भाव जगाई;
सर्व संग परित्याग कराकर, अलख धून मचाई,
अपगत दुःख कहलाई. सखीरी०॥३॥
अपूर्वकरण गुणस्थानक सुखकर, श्रेणी क्षपक मंडवाई;
वेद तीनों का छेद कराकर, क्षीण मोही बनवाई,
जीवन मुक्ति दिलाई. सखीरी०॥४॥
भक्त वत्सल प्रभु करुणासागर, चरण शरण सुखदाई;
'**जश**' कहे ध्यान प्रभु का ध्यावत, अजर अमर पद पाई,
द्वंद्व सकल मिट जाई. सखीरी०॥५॥

(६) क्युं कर भक्ति करुं...

(राग : मारा नाथनी वधाई.../दर्शन द्यो घनश्याम.../
पार्श्व चिंतामणी...)

क्युं कर भक्ति करुं, प्रभु तेरी...
क्रोध लोभ मद मान विषयरस, छांडत गेल न मेरी. ॥१॥
कर्म नचावे तिमहि नाचत, माया वश नट चेरी. ॥२॥
दृष्टिराग दृढ बंधन बांध्यो, निकसन न लहुं शेरी. ॥३॥
करत प्रशंसा सब मिल अपनी, परनिंदा अधिकेरी. ॥४॥
कहत '**मान**' जिन भाव भगति बिन, शिवगति होत न मेरी. ॥५॥

(७) जिणंदा! वे दिन क्युं न संभारे....

(राग : प्रभुजी मुज अवगुण.../ओ साथी...)

जिणंदा! वे दिन क्युं न संभारे...
साहिब तुम अम समय अनंतो, ईकठा ईण संसारे. जिणंदा०॥१॥
आप अजर अमर होई बेठे, सेवक करीए किनारे;
मोटा जेह करे ते छाजे, तिहां कुण तुमने वारे?. जिणंदा०॥२॥
त्रिभुवन ठकुराई अब पाई, कहो तुम कुण सहारे;
आप उदासीन भाव में आये, दासकु क्युं न सुधारे?. जिणंदा०॥३॥
तुंहि तुंहि तुंहि तुंहि, तुंहि जे चित्त धारे;
याहि हेतु जे आप स्वभावे, भवजल पार उतारे. जिणंदा०॥४॥
'**ज्ञानविमल**' गुण परमानंदे, सकल समीहित सारे;
बाह्य अभ्यंतर इति उपद्रव, अरियण दूर निवारे. जिणंदा०॥५॥



(८) जिन! तेरे चरण की शरण ग्रहुं...

(राग : अब मोहे ऐसी.../मेरे नैना.../पार्श्व चिंतामणी...)

जिन! तेरे चरण की शरण ग्रहुं...
हृदयकमल में ध्यान धरत हुं, शिर तुज आण वहुं. जिन०॥१॥
तुम सम खोळ्यो देव खलक में, पेख्यो नहीं कबहुं. जिन०॥२॥
तेरे गुण की जपुं जपमाला, अहर्निश पाप दहुं. जिन०॥३॥
मेरे मन की तुम सब जानो, क्यां मुख बहोत कहुं. जिन०॥४॥
कहे '**जसविजय**' करो त्युं साहिब, ज्युं भवदुःख न लहुं. जिन०॥५॥

(९) तो बिन ओर न जाचुं...

(राग : ऐसी आय बनी अब मोहे.../ तुम दरिशन भले पायो...)

तो बिन और न जाचुं, जिणंदराय! तो बिन और न जाचुं; जि०!
में मेरो मन निश्चय कीनो, एहमां कछुं नहि काचुं. ॥१॥
तुम चरणकमल पर पंकज मन मेरो, अनुभव रसभर चाखुं;
अंतरंग अमृत रस चाखो, एह वचन मन साचुं. ॥२॥
'**जस**' प्रभु ध्यायो महारस पायो, अवर रसे नहि राचुं;
अंतरंग फरस्यो दरसन तेरो, तुज गुण रस संग माचुं. ॥३॥



(१०) निरंजन नाथ मोहे कैसे मिलेंगे...

(राग : अब मोहे ऐसी आय.../पार्श्व चिंतामणी...)

निरंजन नाथ मोहे कैसे मिलेंगे, (२)
दूर देखुं में दरिया डुंगर, उपर बादल नीचे जमियुं तले रे. ॥१॥
धरती में ढुंढुं तिहां न पिछानुं, अग्नि सहुं तो मेरी देही जले रे. ॥२॥
आनंदघन कहे जश सुनो बाता, वो ही मिले तो मेरो फेरो टले रे. ॥३॥



(११) परमानंद विलासी जिनेश्वर...

(राग : ऐसी आय बनी.../तुम दरिसन भले.../
आजनो चांदलीयो...)

परमानंद विलासी जिनेश्वर, परमानंद विलासी;
केवलज्ञान ने केवलदर्शन, अव्याबाध उदासी. ॥१॥
अजर अमर अकलंक अरूपी, अरस अगंध अफासी;
अगुरुलघु अनंत अनुपम, आतमलीला वासी. ॥२॥
अकोही अमानी अमायी अलोभी, अविरति रहित अलेशी;
अरागी अद्वेषी अयोगी अभोगी, अणाहारी अक्लेशी. ॥३॥
अतीन्द्रिय अनुपाधि अदेही, स्वक्षेत्र स्वभाव निवासी;
निज गुण सत्ता रंगी असंगी, अखंड असंख्य प्रदेशी. ॥४॥
अनंतज्ञान-दर्शन सुख वीरज, स्व-पर प्रकाशी न आशी;
खिमाविजय जिन पदकज नमतां, अनुभव वाडी विकासी. ॥५॥

(१२) पायोजी! मैंने तेरो दरिशन पायो...

(राग : अब मोहे ऐसी आय.../राम रतन धन पायो...)

पायोजी! मैंने तेरो दरिशन पायो... पायोजी! मैंने... ॥१॥
दरिशन करके दिलडुं हरख्युं, सुख सागर उलसायो. ॥२॥
भाग्य उदय हुओ आज से मेरो, रत्नचिंतामणि पायो. ॥३॥
हाथ जोडी करुं साहिब मेरो, लाख चोरासी मिटायो. ॥४॥
आप तरे औरन को तारो, '**आनंदघन**' पद पायो. ॥५॥

(१३) प्रभु मेरे ऐसी आय बनी...

(राग : मालकौंश.../अब मोहे ऐसी.../
मेरे नैना.../दरिशन द्यो घनश्याम...)

प्रभु मेरे ऐसी आय बनी;
मनकी व्यथा कुनपे कहिये, जानो आप धणी. प्रभु०॥१॥
जनम मरण जरा जीउ गई लहई, विलगी विपत्ति घणी;
तन मन नयन लहे दुःख देखत, सुख नवि एक कणी. प्रभु०॥२॥
चित्त दुभई दुरजनके बकना, जैसे अरि अगनी;
सज्जन है कोई नहि जाके आगे, बात कहुं अपनी. प्रभु०॥३॥
चउ गई गमन भ्रमण दुःख वारो, बिनती येही सुणी;
अविचल संपद '**जसकुं**' दीजे, अपनो दास भणी. प्रभु०॥४॥

(१४) प्रभुजी! तुम दीठे सब दीठो...

(राग : संत परम हितकारी.../ जिन! तेरे.../
चरणों में तेरे.../ मैया मोरी...)

प्रभुजी! तुम दीठे सब दीठो... प्रभुजी! तुम दीठे. ॥१॥
और कोई भावे नहि जग में, तुंही सब से मीठो. ॥२॥
सकल पदारथ सार है तुंही, तुंही अगम अदीठो. ॥३॥
दरिशन दीठो अमृत वूठो, नीठो सकल अनीठो. ॥४॥
सब देवन को देव है तुंही, तुंही जग में जेठो. ॥५॥
'**वाचक जश**' कहे साहिब मेरो, हसी हसी हियडे पेठो. ॥६॥



(१५) बेर बेर नहि आवे...

(राग : मालकौंस.../
अब मोहे.../दरिसन द्यो घनश्याम...)

बेर बेर नहि आवे, अवसर बेर बेर नहि आवे.
ज्युं जाणे त्युं करले भलाई, जनम जनम सुख पावे. अव०॥१॥
तन धन जोबन सबही जूठो, प्राण पलक में जावे. अव०॥२॥
तन छूटे धन कौन काम को, काहेकुं कृपण कहावे. अव०॥३॥
जाके दिल में साच बसत है, ताकुं जूठ न भावे. अव०॥४॥
'**आनंदघन**' प्रभु चलत पंथ में, समर समर गुण गावे. अव०॥५॥

(१६) भक्ति सदा सुखदाई...

(राग : आशावरी.../पार्श्व चिंतामणी.../
आई बसो भगवान.../आनंद की घडी आई...)

भक्ति सदा सुखदाई... प्रभुजी तोरी... भक्ति सदा सुखदाई;
अविधि आशातना दूर करीने, जे करे मन निरमाई. ॥१॥
घर आंगण पर स्वर्ग तणां सुख, नरसुख बहुत सवाई;
सौभाग्यादिक सहज सुभगता, सहचरी परे चतुराई. ॥२॥
दूस्तर भवजलनिधि सुखे तरवा, दूरे अरति पलाई;
मन-वच-तनु करी भवोभव चाहुं, एहि ज सुकृत कमाई. ॥३॥
'**ज्ञानविमल**' गुण प्रभुता पामी, शिवसुंदरी मिली आई;
समकितगुण जिन गुणपद संभव, ए गुण करण वडाई. ॥४॥





(१७) मन मोह्युं प्रभु गुण गानमां...

(राग : मनमोहन जिनवर.../मालकौंश.../
मेरे नैना.../जिन! तेरे...)

मन मोह्युं प्रभु गुण गानमां...
काल अनंत न जाण्यो जोतां, मोह सुराके पानमां. ॥१॥
एकेन्द्रि-बि-ति-चउरिन्द्रियमां, काळ गयो अज्ञानमां;
हवे कोईक पुण्योदय प्रगट्यो, आवी मल्यो प्रभु ध्यानमां. ॥२॥
अंतर भरम गयो सवि दूरे, तत्त्व सुधारस पानमां;
प्रभु तुम दृष्टि भई मोहे उपर, अंतर आतम शानमां. ॥३॥
दरस सरस देख्यो जिनजी को, लगन लागी तोरा ज्ञानमां;
केवल कमला कंत कृपानिधि, और न देख्यो जहानमां. ॥४॥
अशरण शरण जगत उपकारी, परमातम शुचि वानमां;
'**राम**' कहे तुज आण भवोभव, धारी नय परमाणमां. ॥५॥



(१८) मारी नावलडी मझधार...

(राग : तारी प्रीतिनी केवी.../मेली चादर.../
स्वामी तुमे काई.../वैष्णवजन.../सूरजमंडण.../पहेले भवे...)

मारी नावलडी मझधार तारो प्रभु एक ज छे आधार...
शासन पामी ताहरुं रे, नहि चिंता पलभार;
पूरवना कोई अढळक पुण्ये, दीठो तुम देदार. ॥१॥
अनादिकाळनी अंतरनी प्रभु, वात सुणावुं हुं आज;
कृपा करीने तुं सांभळजे, बीजो नथी सांभळनार. ॥२॥
देव नरकने मनुष्य तिर्यंचमां, दुःख सह्या बहुवार;
विषय कषायमां मस्त बनीने, फूल्यो फूलणहार. ॥३॥
अशुभ विलासो ने वाणी विलासो, काया कुंडूं करनार;
इन्द्रियोनी प्रभु! वासना भूंडी, लपटायो तारणहार. ॥४॥

क्रोध करीने मानी बनीने, कपट कीधा बहुवार;
सौथी भूंडो लोभ चंडाळ जे, पाप करावे अपार. ॥५॥
तुं वीतरागी हुं छुं रागी, भक्ति करुं भारोभार;
भ्रमर ईलिका न्याये प्रभुजी, थईशुं तुम सम नाथ. ॥६॥
शांत मुद्रा तारी मुखडानी सुंदर, अखियन में अविकार;
सविकारी अमे आव्या शरणे, तार तार मुजने तार. ॥७॥
मनमोहन प्रभु अरज अमारी, सुणजो ने आ वार;
'**सुयश**' मांगे सेवा तमारी, तरवा भवजल पार. ॥८॥

(१९) मेरे प्रभुशुं प्रगट्यो पूरण राग...

(राग : वे दिन कयुं न संभारे.../अब मोहे.../दरिसन द्यो घनश्याम...)

मेरे प्रभुशुं प्रगट्यो पूरण राग, मेरे प्रभुशुं प्रगट्यो पूरण राग...!
जिन गुण चंद किरण शुं ऊमट्यो, सहज समुद्र अथाग. ॥१॥
ध्याता ध्येय भये दोउं एकहुं, मिट्यो भेद को भाग;
कुल विदारी चले जब सरिता, तब नहि रहत तडाग. ॥२॥
पूरण मन सब पूरण दीसे, नहि दुविधा को लाग;
पाउ चलत पनही जो पहिरे, तस नहि कंटक लाग. ॥३॥
भयो प्रेम लोकोत्तर जूठो, लोक बंध को ताग;
कहो कोउं कछुं हम नवि रुचे, छूटी एक वीतराग. ॥४॥
वासत है जिनगुण मुज दिलकुं, जैसो सुरतरु बाग;
और वासना लगे न ताकुं, '**जश**' कहे तुं बडभाग. ॥५॥



(२०) मेरो मन! हरखे प्रभु पेखी...

(राग : हो भविका! सिद्धचक्र पद वंदो.../
ओ साथी रे.../दरिसन द्यो घनश्याम.../जिन! तेरे...)

मेरो मन! हरखे प्रभु पेखी... (२)!
तुं ही विना हुं और न ध्यावत, रसना तुम गुण फरसेजी. ॥१॥
तोरो हि चरणशरण करी जानत, किम ताहरा विण सरसेजी. ॥२॥
पतितपावन प्रभु! जगत उद्धारण, बिरुद कहो केम वरशेजी. ॥३॥
जे उपकार कारणकुं जाया, ते उपगारने करशेजी. ॥४॥
'**ज्ञानविमल**' प्रभु सहज कृपाथी, केवलकमला वरशेजी. ॥५॥

(२१) विनंती कैसे करुं...

(राग : जिन! तेरे.../ओ साथी रे.../मेरे नैना...)

विनंती कैसे करुं, सांई मोरा, विनंती कैसे करुं,
भक्तिनो मार्ग छे दोहीलडो, किम मन स्थिर करुं? विनंती०॥१॥
काल अनादि वह्यो मेरो तुम विण, भववन मांहे फीरुं. विनंती०॥२॥
अब तो त्रिभुवन नायक पेख्यो, हरखे पाय पडुं विनंती०॥३॥
क्युं करी मळशो तेह तो बतावो, अवरो नहि ज ठरुं. विनंती०॥४॥
दरिशन पीठ है चरण भुवन को, परिचय तास करुं. विनंती०॥५॥
'**ज्ञानविमल**' गुणगण मोतन को, कंठ से हार धरुं. विनंती०॥६॥
तेरे अनुभव चरण वहाण से, भवजल राशि तरुं. विनंती०॥७॥

(२२) सकल समता सुरलतानो...

(राग : मेरा जीवन कोरा कागज.../तुज करुणाधारामां...)

सकल समता सुरलतानो, तुंहि अनुपम कंद रे;
तुंहि कृपारस कनक कुंभो, तुंहि जिणंद मुणींद रे. प्रभु०॥१॥
प्रभु! तुंहि तुंहि तुंहि तुंहि, युंहि धरतां ध्यान रे;
तुज स्वरूपी जे थया तेणे, लह्युं ताहरुं तान रे. प्रभु०॥२॥
तुंहि अळगो भव थकी, पण भविक ताहरे नाम रे;
पार भवनो तेह पामे, एहि अचरिज ठाम रे. प्रभु०॥३॥
जन्म पावन आज मारो, निरखीयो तुज नूर रे;
भवोभव अनुमोदना जे, हुओ आप हजूर रे. प्रभु०॥४॥
एक माहरो अक्षय आतम, असंख्यात प्रदेश रे;
ताहरा गुण छे अनंता, किम करुं तास निवेश रे? प्रभु०॥५॥
एक एक प्रदेश ताहरे, गुण अनंतनो वास रे;
एम करी तुज सहज मिलत, हुओ ज्ञान प्रकाश रे. प्रभु०॥६॥
ध्यान ध्याता ध्येय एकी, भाव होय एम रे;
एम करतां सेव्य सेवक, भाव होये क्षेम रे. प्रभु०॥७॥
शुद्ध सेवा ताहरी जो, होय अचल स्वभाव रे;
'**ज्ञानविमल**' सूरींद प्रभुता, होय सुजस जमाव रे. प्रभु०॥८॥

(२३) हम लीने हे प्रभु...

(राग : हम मगन भये.../अब मोहे ऐसी...)

हम लीने हे प्रभु ध्यान में... हम लीने हे...!
करम भरम जंजीर से छूटे, होई रहे एक तान में. ॥१॥
रोम रोम परमानंद उलसत, होत मगनता ज्ञान में;
सवि सभाव में तुंही तुंही, और न आवत मान में. ॥२॥

ज्युं तरवारे अति दूर निकंदे, अलग रही है म्यान से;
आतमशक्ति भगति छ्युं तेसी, होवे पुद्गल ठान से. ॥३॥
अहनिश मैत्रीभाव उदासीन, त्रिभुवन अभयदान से;
अजब कला कोई ऐसी तुमची, निश्चित नय परधान से. ॥४॥
'**ज्ञानविमल**' प्रभुता गुण तेरो, पसर्यो आन प्रान से,
सहज सदागम बोध सुलभता, देई सफळ करो दान से. ॥५॥

थोय

(१)

ऋषभ चंद्रानन वंदन कीजे, वारिषेण दुःख वारेजी,
वर्धमान जिनवर वळी प्रणमो, शाश्वत नाम ए चारेजी;
भरतादिक क्षेत्रे मळी होवे, चार नाम चित्त धारेजी,
तेणे चारे ए शाश्वत जिनवर, नमिए नित्य सवारेजी. ॥१॥
ऊर्ध्व अधो तिर्च्छालोके थई, कोडी पन्नरसे जाणोजी,
उपर कोडी बेंतालीश प्रणमो, अडवन्न लख मन आणोजी;
छत्रीस सहस एंशी ते उपरे, बिंब तणो परिमाणोजी,
असंख्यात व्यंतर ज्योतिषीमां, प्रणमुं ते सुविहाणोजी. ॥२॥
रायपसेणी जीवाभिगमे, भगवतीसूत्रे भाखीजी,
जंबुद्वीप पन्नत्ति ठाणांगे, विवरीने घणुं दाखीजी;
वली अशाश्वती ज्ञाताकल्पमां, व्यवहार प्रमुखे आखीजी,
ते जिन प्रतिमा लोपे पापी, जीहां बहु सूत्र छे साखीजी. ॥३॥
ते जिनपूजाथी आराधक, इशान इन्द्र कहायाजी,
तेम सूर्याभ प्रमुख बहु सुरवर, देवीतणा समुदायाजी;
नंदीसर अट्ठाई महोत्सव, करे अति हर्ष भरायाजी,
जिन उत्तम कल्याणक दिवसे, '**पद्मविजय**' नमे पायाजी. ॥४॥

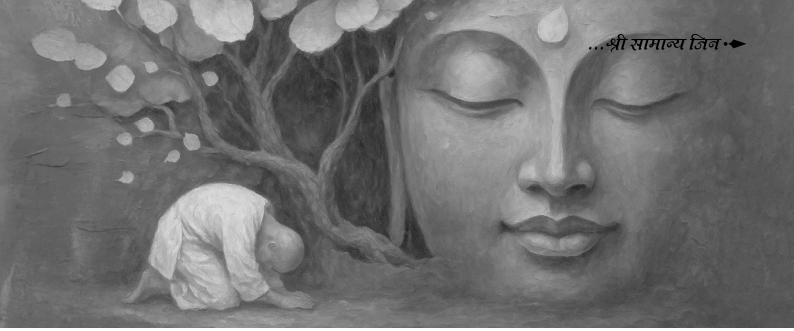

(२)

ऋषभानन चंद्रानन जाणो, वारिषेण शाश्वत वर्धमानजी;
पूरव पश्चिम उत्तर ठाणो, दक्षिण पडिमा भाग प्रमाणो. ॥१॥
उर्ध्वलोक जिनबिंब घणेरां, भवनपतिमां घर घर दहेरां;
व्यंतर ज्योतिषी तिच्छ अनेरां, चारे शाश्वता नाम भलेरां. ॥२॥
भरतादिक जे क्षेत्र सुहावे, कालत्रिके जे अरिहा आवे;
चार नाम ए निश्चय थावे, अंग उवांगे वात जणावे. ॥३॥
पंच कल्याणके हर्ष अधूरे, नंदीश्वरदीपे जइ पूरे;
हर्ष महोत्सव करत अट्ठाइ, देव देवी शुभवीर वधाइ. ॥४॥

(३)

(राग : संसारदावानल...)

नमस्ते समस्तेप्सितार्थप्रदाय, नमस्ते महार्हत्यलक्ष्मीप्रदाय;
नमस्ते चिदानन्दतेजोमयाय, नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥१॥
नमस्ते महात्मन् नमस्ते चिदात्मन्, नमस्ते शिवात्मन् नमस्ते परात्मन्;
नमस्ते स्थिरात्मन् नमस्ते परात्मन्, नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥२॥
नमस्ते शुचिज्ञानरत्नाकराय, नमस्ते सतां कल्पकारस्कराय;
नमस्ते जगज्जीवभद्रङ्कराय, नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥३॥
नमो जैनवाघेश्वरीदेवतायै, नमो वैनयिक्यासुधिसैवतायै;
नमो वाङ्मयामोघपीयूषवृष्ट्यै, नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥४॥

श्री चौबीस तीर्थंकर भगवान के थोय जोड़े

(राग : मालिनीछंद.)

ऋषभजिन सुहाया, श्रीमरुदेवीमाया,
कनकवर्ण काया, मंगला जास जाया;
वृषभ लंछन पाया, देव नर नारी गाया,
पणसय धनु छाया, ते प्रभु ध्यान ध्याया. ॥१॥

अजितजिनपतिनो, देह कंचन जरीनो,
भविकजन नगीनो, जेहथी मोह छीनो;
हुं तुज पद लीनो, जे जलमांहि मीनो,
नवि होये ते दीनो, ताहरे ध्यान पीनो. ॥२॥

जिन **संभव** वारु, लंछने अश्वधारु,
भवजलनिधि तारु, कामगदि तीव्र दारु;
सुरतरु परिचारु, दुसमाकालि मारु,
शिवसुख किरतारु, तेहनुं ध्यान सारुं. ॥३॥

अभिनंदनजिनचंदो, साम्य माकंदकंदो,
नृप संवर नंदो, ध्वंसिता-शेष कंदो;
तमतिमिर दिणंदो, लंछने वानरिंदो,
जस आगल मंदो, सौम्य गुणि सारदिंदो. ॥४॥

सुमति सुमति आपे, दुःखनी कोडि कापे,
सुमति सुयश व्यापे, बोधिनुं बीज वापे;
अविचल पद थापे, जास दीपे प्रतापे,
कुमति कंद हापे, जो प्रभु ध्यान छापे. ॥५॥



पद्मप्रभ सोहावे, चित्तमां नित्य आवे,
मुगतिवधू मनावे, रक्ततनुं कान्ति फावे;
दुःख निकट नावे, सन्तति सौख्य पावे,
प्रभु गुणगण ध्यावे, अष्ट महासिद्धि थावे. ॥६॥

फले कामित आस, नामथी दुष्ट नास,
मही महिम प्रकाश, सातमा **श्रीसुपास**;
सुर नर जस दास, संपदानो निवास,
गाये भवि गुणरास, जेह धारी उल्लास. ॥७॥

शुभ नरगति पामी, उद्यमी धर्मधामी,
जिन नमो सिरनामी, **चंद्रप्रभ** नामि स्वामी;
मुज अंतरयामी, जेहमां नहि य खामी,
शिवगति वरगामी, सेवता पुण्ये पामी. ॥८॥

सुविधिजिन भदंत, नाम वली पुष्पदंत,
सुमति तरुणी कंत, जेहथी तेह संत;
कीयो कर्म दुरंत, लच्छीलीला वरंत,
भवजलधि तरंत, ते नमीजे महंत. ॥९॥

सुणी **शीतलदेवा**, वालही तुज सेवा,
जिम गजनी रेवा, तुंही देवाधिदेवा;
पर आण वहेवा सुज्ञ छे नित्यमेवा,
सुख गति लहेवा, हेतु ए दुःख केवा. ॥१०॥

सवि जन अवतंस, जास इक्खाग वंश,
विजित मदन कंस, शुद्ध चारित्र हंस;
कृत भयविध्वंस, तीर्थनाथ **श्रेयांस**,
वृषभ कुकुद अंश, ते नमुं पुण्य अंश. ॥११॥

वसुपूज्यनृप तात, श्रीजयादेवी मात,
अरुण कमल गात, महिषलंछन विख्यात;
जस गुण अवदात, शीत जाणे निवात,
होइ नितु सुखसात, ध्यावता दिनरात. ॥१२॥

विमल विमल भावे, वंदतां दुःख जावे,
नवनिधि घरी आवे, विश्वमां मान पावे;
सुयर लंछन फावे, भूमि नरखेद घावे,
मनु विनति जणावे, स्वामीनुं ध्यान ध्यावे. ॥१३॥

अनंतजिन नमीजे, कर्मनी कोडी छीजे,
शिवसुख फल लीजे, सिद्धिलीला वरीजे;
बोधिबीज मोहि दीजे, एटलुं काज कीजे,
मुज मन अति रीझे, स्वामी तो कार्य सीझे. ॥१४॥

धर्मजिनपतिनो, ध्यान रसमांहि भीनो,
वर रमण शचीनो, जेहने चरण लीनो;
त्रिभुवन सुख कीनो, लंछने वज्र दीनो,
होइ तेह ज लीनो, जेहने तुं वसीनो. ॥१५॥

जिनपति जयकारी, पंचमो चक्रधारी,
त्रिभुवन सुखकारी, सप्त भयने निवारी;
सहस चोसठ नारी, चउद रत्नाधिकारी,
जिन **शान्ति** जितारी, मोह हस्ती मृगारी. ॥१६॥

जिन **कुन्थु** दयाला, छाग लंछन सुहाला,
जस गुण शुभमाला, कंठी पहेरो विशाला;
नमति भवि त्रिकाला, मंगला श्रेणि साला,
त्रिभुवनने उजाला, ताहरा तेज माला. ॥१७॥

अरजिनपति जुहारु, कर्मनो क्लेश वारुं,
अहनिश संभारुं, ताहरुं नाम धारुं;
कृत जय जयकारुं, प्राप्त संसारपारु,
नवि तेह विसारुं, आपणो आप तारुं. ॥१८॥

जिन **मल्लि** महेला, वाने छे जेह नीला,
ए अचरिज लीला, स्त्रीतणे नाम मीला;
दुश्मन सवि पीला, स्वामी जो छे वसीला,
अविचल सुखलीला, दीजे सुण रंगीला. ॥१९॥

मुनिसुव्रतस्वामी, हुं नमुं शीश नामी,
मुज अंतरयामी, कामदाता अकामी;
दुःख दोहग वामी, पुण्यथी सेव पामी,
शम्या सर्व हरामी, राज्यता पूर्ण जामी. ॥२०॥

नमि जिनवर मानो, जे नहि विश्व छानो,
सुत वप्रामानो, पुण्यकेरो खजानो;
कनक कलम वानो, कुंभ छे जे कृपानो,
सवि भुवन प्रधानो, जेहसुं एकतानो. ॥२१॥

गया शस्त्रागारे, शंख निज हाथ धारे,
कीयो शब्द प्रचारे, विश्व कंप्या तिवारे;
हरि संशय धारे, एहनी कोइ सारे,
जयो **नेम**कुमारे, बालथी ब्रह्मचारे. ॥२२॥

जलधर अनुकारे, पुण्यवक्षी वधारे,
कृत सुकृत संचारे, विघ्नने जे विदारे;
नवनिधि आगारे, कष्टनी कोडी वारे,
मुज प्राणाधारे, मात वामा मल्हारे. ॥२३॥



लह्यो भवजलतीर, धर्मकोटीर हीर,
दुरित रज समीर, मोह भूसार सीर;
भव दहन नीर, मेरु सम एक धीर,
चरम **श्रीजिनवीर**, चरण कल्पद्रु कीर. ॥२४॥

(नीचे की इन तीन गाथाओं को पूर्व की एक-एक गाथा के साथ जोड़ने पर चौबीस भगवान के थोय जोड़े बनते हैं।)

इम जिनवरमाला, पुण्य नीर प्रवाला,
जग जंतु दयाला, धर्मनी सत्रशाला;
कृत सुकृत सुगाला, ज्ञानलीला विशाला,
सुर नर महीपाला, वंदता ते त्रिकाला. ॥२५॥

श्रीजिनवर वाणी, द्वादशांगी रचाणी,
सुगुण रयणखाणी, पुण्य पीयूण पाणी;
नवम रस रंगाणी, सिद्धिसुखनी निशाणी,
दुह पीलण घाणी, सांभलो भाव आणी. ॥२६॥

जिनमत रखवाला, जे वली लोकपाला,
समकित गुणवाला, देव देवी कृपाला;
करो मंगलमाला, टालीने मोह हाला,
सहज सुख रसाला, बोधि दीजे विशाला. ॥२७॥

धर्मघोषसूरि विरचित

संस्कृत चोवीश भगवानना थोय जोडा

(मालिनीवृत्तम्)

जय **वृषभजिन**ाऽभिष्टूयसे निम्ननाभि-
र्जडिमरविसनाभिर्यः सुपर्वाङ्गनाभिः ।
तम इह किल नाभिक्षोणिभृत्सूनुनाऽभि-
द्रुतभुवनमनाभि, क्षान्तिसम्पत्कुनाभिः ॥ ॥१॥

प्रकटितवृषरूप!, त्यक्तनिःशेषरूप-
प्रभृतिविषयरूप!, ज्ञातविश्वस्वरूप! ।
जय चिरमसरूप!, पापपङ्काम्बुरूप!
त्व**मजित**! निजरूपप्रास्तसज्जातरूप! ॥ ॥२॥

जय मदगजवारिः, **संभव**ान्तर्भवारि-
व्रजभिदिह तवारिश्रीर्न केनाऽप्यवारि ।
यदधिकृतभवारिस्रंसनः श्रीभवारिः,
प्रशमशिखरिवारि, प्राणमद्दानवारिः ॥ ॥३॥

अकृत शुभनिवारं, योऽत्र रागादिवारं,
सुविनतमघवारं, **संवरोद्भू**ः सुवारम् ।
मदनदहनवारं, दोलितान्तर्भवारं,
नमत सपरिवारं, तं जिनं सर्ववारम् ॥ ॥४॥

तव जिन! **सुमते**! न, प्रत्यहं तन्यते न,
स्तुतिरिति सुमतेन!, कृत्तमोनिष्कृतेन! ।
यदिह जगति तेन, द्राग्मया संमतेन,
ध्रुवमितदुरितेन, श्रीश! भाव्यं हितेन ॥ ॥५॥



परिहृतनृपपद्म!, श्रीजिनाधीशपद्म-
प्रभ! सदरुणपद्मद्युत्तपोहंसपद्म! ।
त्वदखिलभविपद्मव्रातसम्बोधपद्म-,
स्वजन! गतविपद्मय्येतु शर्म्माङ्कपद्म! ॥ ॥६॥

दुरितनिभगमोऽहं पूर्विकार्च्यक्रमो हं-
त्यसमतमसमोऽहङ्कारजिद्यः समोहम् ।
कृतकरणदमो हंतास्तलोभं नुमोऽहं,
मतिहृतमसमोहं, तं **सुपार्श्वं** तमोहम् ॥ ॥७॥

समतृणमणिभाव! ज्ञातनिःशेषभाव!,
प्रहतसकलभावप्रत्यनीकप्रभाव!
कृतमदपरिभाव!, श्रीश! **चन्द्रप्रभा**ऽव,
द्विजपतितनुभाव! त्यक्तकामस्वभाव! ॥ ॥८॥

जिनपति**सुविधे** यः, स्यात्त्वदाज्ञाविधेय-
प्रवण इह विधेयः, प्रस्फुरद्भागधेयः ।
त्रिजगदनभिधेयश्लाघसन्नामधेय,
श्रयति शुभविधेयस्तं लसद्गुपधेय ॥ ॥९॥

य इह निहतकामं, मुक्तराज्यादिकामं,
प्रणतसुर! निकामं त्यक्तसद्भोग! कामम् ।
नमति स निजकामं, **शीतल**! त्वां प्रकामं,
श्रयितकि तमकामं सार्विका श्रीः स्वकामम् ॥ ॥१०॥

विषमविशिषदोषा- चारिचारप्रदोषा,
प्रतिविधति सदोषाऽप्यस्य किं कालदोषा? ।
य इह वदनदोषापार्चिषाऽक्षालि दोषाऽ-
तनुकमलमदोषा, **श्रेयसा** शस्तदोषा ॥ ॥११॥

कृतकुमतपिधानं, सत्त्वरक्षावधानं,
विहितदमविधानं, सर्वलोकप्रधानम् ।
असमशमनिधानं, शं जिनं सन्दधानं,
नमत सदुपधानं, **वासुपूज्य**ाभिधानम् ॥ ॥१२॥

भवदवजलवाहः, कर्मकुम्भाद्यवाहः,
शिवपुरपथवाहस्त्यक्तलोकप्रवाहः ।
विमल! जय सुवाहः, सिद्धिकान्ताविवाहः,
शमितकरणवाहः शान्ततृड्हव्यवाहः ॥ ॥१३॥

जिनवर! विनयेन, श्रीश! शुद्धाशयेन,
प्रवरतरनयेन!, त्वं नमोऽ**नन्त**! येन ।
भविकमलचयेन, स्फूर्जदुर्जस्व्ययेन,
द्विरदगतिनयेन, त्येन भाव्यं सयेन ॥ ॥१४॥

जडिमरविसधर्म्मन्नुक्तदानादिधर्म!,
त्रुटितमदनधर्म!, न्यत्कृताप्राज्ञधर्म! ।
जय जिनवर! **धर्म**!, त्यक्तसंसारिधर्म!,
प्रतिनिगदितधर्मद्रव्य-मुख्यार्थधर्म! ॥ ॥१५॥

यदि नियतमशान्तिं, नेतुमिच्छोपशान्तिं,
समभिलषत शान्तिं, तद् द्विधाप्याप्तशान्तिम् ।
प्रहतजगदशान्तिं, जन्मतोऽप्यात्तशान्तिं,
नमत विनतशान्तिं, हे जना! देव **शान्तिम्** ॥ ॥१६॥

ननु सुरवरनाथत्वं न नाथे नृनाथ-
त्वमपि विगतनाथः, किं त्वहं **कुन्थुनाथ**! ।
प्रकुरु जिन! सनाथः, स्यां यथाद्योपनाथ!,
प्रणतविबुधनाथ!, प्राज्यसच्छ्रीसनाथ! ॥ ॥१७॥

अवगमसवितारं, विश्वविश्वेशितारं,
तनुरुचिजिततारं, सद्दयासान्द्रतारम् ।
जिनमभिनमतारं, भव्यलोकावतारं,
यदि पुनरवतारं, संसृतौ नेच्छ**तारम्** ॥ ॥१८॥

अनिशमिह निशान्तं, प्राप्य यः सन्निशान्तं,
नमति शिवनिशांतं, **मल्लिनाथं** प्रशान्तम् ।
अधिपमिह विशान्तं, श्रीर्गता चावशान्तं,
श्रयति दुरितशान्तं, प्रोज्झ्य नित्यं वशान्तम् ॥ ॥१९॥

न्यदधत मघवा सत्प्रोल्लसत्शुद्धवासः,
परिहृतगृहवासस्यांशके यस्य वासः ।
विहितशिवनिवासः, प्रत्तमोहप्रवासः,
स मन इह भवासः **सुव्रतो** मेऽध्युवास ॥ ॥२०॥

समनमयत बालः, शात्रवान् योऽप्यबाल-
प्रकृतिरसितवालः श्रस्तरुक्चक्रवालः ।
जयतु **नमि**रबालः, सोऽधरास्तप्रवालः,
श्वसितविजितवालः पुण्यवल्ल्यालवालः ॥ ॥२१॥

जितमदन सुनेमे!, नानिशं नाथ **नेमे**!,
निरूपमशमिनेमे, येन तुभ्यं विनेमे।
निकृतिजलधिनेमे!, सीर मोहद्रुनेमे,
प्रणिदधति न नेमे, तं परा अप्यनेमे ॥ ॥२२॥

अहिपतिवृतपार्श्वं, छिन्नसम्मोहपार्श्वं,
दुरितहरणपार्श्वं, सन्नमद्यक्षपार्श्वम्।
अशुभतम उपार्श्वं, न्यत्कृतामं सुपार्श्वं,
वृजिनविपिनपार्श्वं, श्रीजिनं नौमि **पार्श्वम्** ॥ ॥२३॥



त्रिदशविहितमानं, सप्तहस्ताङ्गमानं,
दलितमदनमानं, सद्गुणैर्वर्द्धमानम् ।
अनवरतममानं, क्रोधमत्यस्यमानं,
जिनवरमसमानं, संस्तुवे **वर्द्धमानम्** ॥ ॥२४॥

(नीचे की इन तीन गाथाओं को पूर्व की एक-एक गाथा के साथ जोड़ने पर चौबीस भगवान के थोय जोड़े बनते हैं।)

विगलितवृजिनानां, नौमि राजीं जिनानां,
सरसिजनयनानां, पूर्णचन्द्राननानाम्।
गजवरगमनानां, वारिवाहस्वनानां,
हतमदमदनानां, मुक्तजीवासनानाम् ॥ ॥२५॥

अविकलकलतारा- प्राणनाथांशुतारा,
भवजलनिधितारा, सर्वदाऽविप्रतारा।
सुरनरविनता रात्वार्हती गीर्बताऽऽरा-
दनवरतमितारा, ज्ञानलक्ष्मीं सुतारा ॥ ॥२६॥

नयनजितकुरङ्गीमिन्दुसद्रोचिरङ्गी-
मिह किल मुहुरङ्गीकृत्य चित्तांतरङ्गी।
स्मरति हि सुचिरं गीर्देवतां यस्तरङ्गी,
कुरुत इममरं गीत्यादिकृद्वन्धुरङ्गीः ॥ ॥२७॥

(विशेषताः प्रत्येक गाथा में एक शब्द आठ बार आता है।)

विशिष्ट आराधना विभाग

पांचमनी आराधना

चैत्यवंदन

(९) श्री सौभाग्य पंचमी तणो...

श्री सौभाग्य पंचमी तणो, सयल दिवस शणगार;
पांचे ज्ञानने पूजीए, थाय सफल अवतार. ॥१॥
सामायिक पोसह विशे, निरवद्य पूजा विचार;
सुगंध चूर्णादिक थकी, ज्ञान ध्यान मनोहार. ॥२॥
पूर्व दिशे उत्तर दिशे, पीठ रची त्रण सार;
पंचवर्ण जिन बिंबने, थापीजे सुखकार. ॥३॥
पंच पंच वस्तु मेळवी, पूजा सामग्री जोग;
पंचवर्ण कळशा भरी, हरीए दुःख उपभोग. ॥४॥
यथाशक्ति पूजा करो, मतिज्ञानने काजे;
पंचज्ञानमां धुरे कह्युं, श्री जिनशासन राजे. ॥५॥
मति श्रुत विण होवे नहि ए, अवधि प्रमुख महाज्ञान;
ते माटे मति धुरे कह्युं, मतिश्रुतमां मतिमान. ॥६॥
क्षय उपशम आवरणो, लब्धि होय समकाळे;
स्वाम्यादिकथी अभेद छे, पण मुख्य उपयोग काळे. ॥७॥
लक्षण भेदाभेद छे, कारण कारज योग;
मतिसाधन श्रुत साध्य छे, कंचन कळश संयोग. ॥८॥
परमात्म परमेश्वरुं ए, सिद्ध सकल भगवान;
मतिज्ञान पामी करी, केवल '**लक्ष्मी**' निधान. ॥९॥

स्तवन

(१) श्री जिनवरने प्रगट थयुं रे...

(राग : पहेले भवे एक गामनो रे.../मेरे नैना.../अब मोहे...)

श्री जिनवरने प्रगट थयुं रे, क्षायिक भावे ज्ञान...
दोष अढार अभावथी रे, गुण उपन्या ते प्रमाण रे;
भविया! वंदो केवलज्ञान...! पंचमी दिन गुणखाण रे. ॥१॥
अनामीना नामनो रे, किश्यो विशेष कहेवाय;
ए तो मध्यमा वैखरी रे, वचन उल्लेख ठराय रे. ॥२॥
ध्यान टाणे प्रभु तुं होय रे, अलख अगोचर रूप;
परा पश्यंति पामीने रे, कांई प्रमाणे मुनि भूप रे. ॥३॥
छती पर्याय जे ज्ञानना रे,ते तो नवि बदलाय;
ज्ञेयनी नव नवी वर्तना रे, समयमां सर्व जणाय रे. ॥४॥
बीजा ज्ञान तणी प्रभा रे, एहमां सर्व समाय;
रवि प्रभाथी अधिक नहि रे, नक्षत्र गण समुदाय रे. ॥५॥
गुण अनंता ज्ञानना रे,जाणे धन्य नर तेह;
'**विजय लक्ष्मीसूरि**' ते लहे रे, ज्ञान महोदय गेह रे. ॥६॥

थोय

(राग : स्नातस्या...)

श्री नेमिः पंच-रूप-त्रिदशपति-कृत-प्राज्य-जन्माभिषेक-,
श्चंचत् पंचा-ऽक्षमत्त-द्विरद-मद-भिदा पंच-वकत्रो-पमानः;
निर्मुक्त-पंच-देहः परम-सुख-मयः प्रास्त-कर्म-प्रपंचः,
कल्याणं पंचमी-सत्-तपसि वितनुतां पंचम-ज्ञानवान् वः. ॥१॥
सम्प्रीणन्- सच्चकोरान् शिव-तिलक-समः कौशिका-ऽऽनंदमूर्तिः,
पुण्याब्धि-प्रीतिदायी सित-रुचि-रिव यः स्वीय-गोभिस्तमांसि;
सान्द्राणि ध्वंस-मानः सकल-कुवलयोल्लास-मुच्चैश्चकार,
ज्ञानं पुष्याज्जिनौघः स तपसि भविनां पंचमी-वासरस्य. ॥२॥

पीत्वा नाना-भिधार्था-ऽमृ-तरस-मसमं यान्ति यास्यन्ति जग्मु-,
जींवा यस्मा-दनेके विधि-वद-मरतां प्राज्य-निर्वाण-पूर्याम्;
यात्वा देवाधि-देवा-गम-दश-मसुधा-कुंड-माऽऽनंद-हेतु-,
स्तत्पंचम्यास्-तपस्युद्यत-विशदधियां भाविनामस्तु नित्यम्. ॥३॥
स्वर्णाऽलंकार-वल्गन्-मणि-किरण-गण-ध्वस्त-नित्यान्ध-कारा,
हुंका-राऽऽराव-दूरी-कृत-सुकृति-जन-व्रात-विघ्न-प्रचारा;
देवी-श्रीअंबिकाऽऽख्या जिनवर-चरणाऽम्भोज-भृंगी-समाना,
पंचम्यह्-नस्तपोर्थं वितरतु कुशलं धीमतां सा-ऽवधाना. ॥४॥

आठमनी आराधना

चैत्यवंदन

(१) महा सुदि आठम दिने...

महा सुदि आठम दिने, विजयासुत जायो;
तेम फागण सुदि आठमे, संभव चवी आयो. ॥१॥
चैतर वदीनी आठमे, जन्म्या ऋषभजिणंद;
दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद. ॥२॥
माघ सुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्या दूर;
अभिनंदन चोथा प्रभु, पाम्या सुख भरपूर. ॥३॥
एहिज आठम उजळी, जन्म्या सुमतिजिणंद;
आठ जाति कळशे करी, न्हवरावे सुर इंद्र. ॥४॥
जन्म्या जेठ वदी आठमे, मुनिसुव्रत स्वामी;
नेमि अषाढ सुदी आठमे, अष्टमी गति पामी. ॥५॥
श्रावण वदीनी आठमे, नमि जन्म्या जगभाण;
तेम श्रावण सुदि आठमे,पासजीनुं निर्वाण. ॥६॥
भादरवा वदी आठम दिने, चविया स्वामी सुपास;
जिन उत्तम '**पद्म**'ने, सेव्याथी शिववास. ॥७॥

स्तवन

(१) ढालः १

(रागः निरख्यो नेमि जिणंदने...)

श्री राजगृही शुभ ठाम, अधिक दीवाजे रे;
विचरंता वीर जिणंद, अतिशय छाजे रे. ॥१॥
तिहां चोत्रीश ने पांत्रीश, वाणी गुण लावे रे;
पधार्या वधामणी जाय, श्रेणिक आवे रे. ॥२॥
तिहां चोसठ सुरपति आवीने, त्रिगडुं बनावे रे;
तेमां बेसीने उपदेश, प्रभुजी सुणावे रे. ॥३॥
तिहां सुर नर ने तिर्यंच, निज निज भाषा रे;
तिहां समजीने भवतीर, पामे सुख खासा रे. ॥४॥
तिहां ईन्द्रभूति गणधर, श्री गुरु वीरने रे;
पूछे अष्टमीनो महिमा, कहो प्रभु अमने रे. ॥५॥
तव भाखे वीर जीणंद, सुणो सहु प्राणी रे;
आठम दिन जिनना कल्याण, धरो चित्त आणी रे. ॥६॥

(२) ढालः २

(राग : पंचम सुरलोकना वासी रे...)

श्री ऋषभनुं जन्म कल्याण रे, वली चारित्र लह्युं भले वान रे;
त्रीजा संभवनुं च्यवन कल्याण, भवि तुमे अष्टमी तिथि सेवो रे;
ए छे शिववधू वरवानो मेवो. भवि०॥१॥
श्री अजित सुमति नमि जनम्या रे, अभिनंदन शिवपद पाम्या रे;
जिन सातमा च्यवन दीपाव्या. भवि०॥२॥
वीसमा मुनिसुव्रत स्वामी रे, जेनो जन्म होय गुणधामी रे;
बावीसमां शिव विसरामी. भवि०॥३॥
पारस जिन मोक्ष महंता रे, इत्यादिक जिन गुणवंता रे;

कल्याणक मुख्य कहंता. भवि०॥४॥
आठ कर्म ते दूर पलाय रे, तेथी अडसिद्धि अडबुद्धि थाय रे;
ते कारण सेवो चित्त लाय. भवि०॥५॥
श्री वीर जिणंदनी वाणी रे, सुणी समज्या बहु भवि प्राणी रे;
आठम दिन अति गुणखाणी. भवि०॥६॥
श्री उदयसागरसूरि राया रे, गुरु शिष्य विवेके ध्याया रे;
तस '**न्यायसागर**' गुण गाया. भवि०॥७॥

एकादशीनी आराधना

चैत्यवंदन

(१) शासन नायक वीरजी...

शासन नायक वीरजी, प्रभु केवल पायो;
संघ चतुर्विध स्थापवा, महसेन वन आयो. ॥१॥
माघव सित एकादशी, सोमिल द्विज यज्ञ;
ईन्द्रभूति आदे मल्या, एकादश विज्ञ. ॥२॥
एकादशसें चउ गुणो, तेहनो परिवार;
वेद अर्थ अवळो करे, मन अभिमान अपार. ॥३॥
जीवादिक संशय हरीए, एकादश गणधार;
वीरे थाप्या वंदिये, जिनशासन जयकार. ॥४॥
मल्लि जन्म अर-मल्लि-पास, व्रत चरण विलासी;
ऋषभ-अजित-सुमति-नमि, मल्लि घनघाती विनाशी. ॥५॥
पद्मप्रभ शिववास पास, भवभवना तोडी;
एकादशी दिन आपणी, ऋद्धि सघळी जोडी. ॥६॥
दश क्षेत्रे त्रिहुं काळना, त्रणसें कल्याण;
वरस अग्यार एकादशी, आराधो वरनाण. ॥७॥

अगियार अंग लखावीए, एकादश पाठां;
पुंजणी ठवणी वींटणी, मशी कागळ ने काठां. ॥८॥
अगियार अव्रत छंडवाऐ, वहो पडिमा अगियार;
'**क्षमाविजय**' जिनशासने, सफळ करो अवतार. ॥९॥

स्तवन

(९) पंचम सुरलोकना वासी रे...

(सूचना : यह स्तवन १८६ नंबर के पेज पर से बोलिए।)

थोय

(रागः आमूला लोल...)

श्री भाग्-नेमि-र्बभाषे जल-शय-सविधे स्फूर्ति-मेकादशीयां,
माद्यन्-मोहा-वनीन्द्र-प्रशमन-विशिखः पंच-बाणार्चि-र्रणः;
मिथ्यात्व-ध्वान्त-वान्तौ रविकर-निकरस्तीव्र-लोभा-द्रिवज्रं,
श्रेयस्तत्पर्व-वस्ताच्छिव-सुखमिति वा सुव्रतश्रेष्ठिनोऽभूत्. ॥१॥
ईन्द्रै-रभ्र-भ्रमद्भि-र्मुनिप-गुण-रसा-स्वाद-नानन्द-पूर्णैः,
दिव्यद्भिः स्फार-हारै-र्ललित-वर-वपु-र्यष्टिभिः स्व-र्वधूभिः;
सार्धं कल्याण-कौघो जिन-पति-नवते-र्बिन्दु-भूतेन्दु-संख्यो,
घस्रे यस्मिन् जगे तद् भवतु सुभविनां पर्व सच्छर्म-हेतुः. ॥२॥
सिद्धान्ताब्धि-प्रवाहः कुमत-जन-पदान् प्लावयन् यः प्रवृत्तः,
सिद्धि-द्वीपं नयन् धी-धन-मुनि-वणिजः सत्य-पात्र-प्रतिष्ठान्;
एकादश्यादि-पर्वेन्दुमणि-मति-दिशन्-धीवराणां महार्घ्यं,
संन्यायाम्भश्च नित्यं प्रवितरतु स नः स्वप्रतीरे निवासम्. ॥३॥
तत्-पर्वो-द्यापनार्थं समुदित-सुधियां शंभु-संख्या-प्रमेया-,
मुत्कृष्टां वस्तु-वीथी-मभय-दसदने प्राभृती-कुर्वतां ताम्;
तेषां सव्याऽक्ष-पादैः प्रलपित-मतिभिः प्रेतःभूतादि-भिर्वा,
दुष्टैर्जन्यं त्वजन्यं हरतु हरितनु-र्न्यस्त-पादाऽम्बिकाऽऽख्या. ॥४॥

पर्युषण पर्व की आराधना

चैत्यवंदन

(१) पर्व पर्युषण गुण नीलो...

पर्व पर्युषण गुण नीलो, नव कल्पी विहार;
चार मासान्तर थिर रहे, ऐही ज अर्थ उदार. ॥१॥
अषाड सुदि चउदश थकी, संवत्सरी पच्चास;
मुनिवर दिन सित्तेरमें, पडिक्कमतां चौमास. ॥२॥
श्रावक पण समता धरी, करे गुरुना बहुमान;
कल्पसूत्र सुविहित मुखे, सांभळे थई एकतान. ॥३॥
जिनवर चैत्य जुहारीये, गुरुभक्ति विशाल;
प्राये अष्ट भवांतरे, वरीए शिव वरमाल. ॥४॥
दर्पणथी निज रूपनो, जुवे सुदृष्टि रूप;
दर्पण अनुभव अर्पणो, ज्ञान रमण मुनि भूप. ॥५॥
आतम स्वरूप विलोकता ए, प्रगट्यो मित्र स्वभाव;
राय उदायी खामणां, पर्व पर्युषण दाव. ॥६॥
नव वखाण पूजी सुणो, शुक्ल चतुर्थी सीमा;
पंचमी दिने वांचे सुणे, होय विराधक नियमा. ॥७॥
ए नहीं पर्वे पंचमी, सर्व समाणी चोथे;
भवभीरु मुनि मानशे, भाख्युं अरिहानाथे. ॥८॥
श्रुतकेवली वयणां सुणीए, लही मानव अवतार;
श्री '**शुभवीर**' ने शासने, पाम्या जयजयकार. ॥९॥

(२) कल्पतरुवर कल्पसूत्र...

कल्पतरुवर कल्पसूत्र, पूरे मनवंछित;
कल्पघरे धुरथी सुणो, श्री महावीर चरित. ॥१॥
क्षत्रियकुंडे नरपति, सिद्धारथ राय;
राणी त्रिशला तणी कूखे, कंचन समकाय. ॥२॥
पुष्पोत्तरवरथी चव्या ए, उपज्या पुण्य पवित्र;
चतुरा चौद सुपन लहे, उपजे '**विनय**' विनीत. ॥३॥

स्तवन

(१) सुणजो साजन संत...

(रागः निरख्यो नेमि जिणंद.../राजस्थानी घुमर...)

सुणजो साजन संत पजुसण आव्या रे...!
तमे पुण्य करो पुण्यवंत, भविक मन भाव्यां रे...!!
वीर जिणेसर अति अलवेसर, व्हाला मारा, परमेश्वर एम बोले रे;
पर्वमांहे पजुसण म्होटां, अवर न आवे तस तोले रे. ॥१॥
चउपदमां जेम केशरी मोटो, व्हाला० खगमां गरुड ते कहीए रे;
नदीमांही जेम गंगा म्होटी, नगमां मेरु लहीए रे. ॥२॥
भूपतिमां भरतेश्वर भाख्यो, व्हाला० देव मांहे सुर ईन्द्र रे;
तीरथमां शत्रुंजय दाख्यो, ग्रहगणमां जेम चंद्र रे. ॥३॥
दशेरा दिवाळी ने वळी होळी, व्हाला० अखात्रीज दिवासो रे;
बलेव प्रमुख बहुलां छे बीजां, पण नहि मुक्तिनो वासो रे. ॥४॥
ते माटे तमे अमर पलावो, व्हाला० अट्ठाई महोत्सव कीजे रे;
अट्ठमतप अधिकाई करीने, नरभव लाहो लीजे रे. ॥५॥
ढोल ददामा भेरी ने फेरी, व्हाला० कल्पसूत्रने जगावो रे;
झांझरना झमकार करीने, गौरीनी टोळी मळी आवो रे. ॥६॥

सोना रूपाना फूलडे वधावो, व्हाला० कल्पसूत्रने पूजो रे;
नव वखाण विधिए सांभलता, पाप मेवासी घ्रुज्या रे. ॥७॥
एम अट्ठाई महोत्सव करतां, व्हाला० बहुजीव जग उद्धरीया रे;
विबुध विमल वर सेवक '**नय**' कहे, नवनिधि रिद्धि सिद्धि वरीया रे. ॥८॥



(२) रीझो रीझो श्री वीर देखी....

(रागः अरज सुण लो...)

रीझो रीझो श्री वीर देखी, शासनना शिरताज;
हरखो हरखो आ मोसम आवी, पर्व पर्युषण आज. ॥१॥
प्रभुजी देवे पर्षदामांहे, उत्तम शिक्षा एम;
आळसमां बहु काल गुमाव्यो, पर्व न साधो केम? ॥२॥
सोनानी रजकण संभाळे, जेम सोनी एक चित्त;
तेथी पण आ अवसर अधिको, करो आतम पवित्त. ॥३॥
जेने माटे निशदिन रखडो, तजी धरमना नेम;
पाप करो तो शिर पर बोजो, तो व्याजबी केम? ॥४॥
कोई न लेशे भाग पापनो, धननो लेशे सर्व;
परभव जातां साथ धर्मनो, साधो आ शुभ पर्व. ॥५॥
संपीने समताए सुणजो, अट्ठाई व्याख्यान;
छट्ठ करजो श्री कल्पसूत्रनो, वार्षिक अट्ठम जाण. ॥६॥
निशीथसूत्रनी चूर्णिमांहे, आलोचना वखणाय;
खमीए होंशे सर्व जीवने, जीवन निर्मळ थाय. ॥७॥
उपकारी श्री प्रभुनी कीजे, पूजा अष्ट प्रकार;
चैत्य जुहारी गुरु वंदीजे, आवश्यक बे काळ. ॥८॥
पौषध चोसठ प्रहरी करतां, जाये कर्म जंजाळ;
'**पद्मविजय**' समता रस झीले, धर्मे मंगलमाळ. ॥९॥

थोय

(१) पुण्यनुं पोषण पापनुं शोषण...

पुण्यनुं पोषण पापनुं शोषण, पर्व पर्युषण पामीजी,
कल्प घरे पधरावो स्वामी, नारी कहे शिर नामीजी;
कुंवर गयवर खंधे चढावी, ढोल निशान वजडावोजी,
सद्गुरु संगे चढते रंगे, वीरचरित्र सुणावोजी. ॥१॥
प्रथम वखाणे धर्मसारथि पद, बीजे सुपना चारजी,
त्रीजे सुपन पाठक वली चोथे, वीर जनम अधिकारजी;
पांचमे दीक्षा छट्ठे शिवपद, सातमे जिन त्रेवीशजी,
आठमे स्थविरावली संभळावी, पियुडा पूरो जगीशजी. ॥२॥
छट्ठ अट्ठम अट्ठाई कीजे, जिनवर चैत्य नमीजेजी,
वरसी पडिक्कमणुं मुनिवंदन, संघ सयल खामीजेजी;
आठ दिवस लगे अमर पळावी, दान सुपात्रे दीजेजी,
भद्रबाहु गुरुवयण सुणीने, ज्ञान सुधारस पीजेजी. ॥३॥
तीरथमां विमलाचल गिरिमां, मेरु महीधर जेमजी,
मुनिवरमांहि जिनवर मोटा, पर्व पर्युषण तेमजी;
अवसर पामी साहम्मिवच्छल, बहु पकवान वडाईजी,
'**खिमाविजय**' जिन देवी सिद्धाई, दिन दिन अधिक वधाईजी. ॥४॥

(२)

(रागः श्री शत्रुंजय तीरथ सार...)

वरस दिवसमां अषाढ चोमासुं, तेमां वळी भादरवो मास,
आठ दिवस अति खास,
पर्व पर्युषण करो उल्लास, अट्ठाईधरनो करवो उपवास,
पोसह लीजे गुरु पास;
वडाकल्पनो छट्ठ करीजे, तेह तणो वखाण सुणीजे,
चौद सुपन वांचीजे,

पडवे ने दिन जन्म वंचाय, ओच्छव महोच्छव मंगल गवाय,
वीर जिनेश्वर राय. ॥१॥
बीजे दिने दीक्षा अधिकार, सांज समय निर्वाण विचार,
वीर तणो परिवार,
त्रीजे दिने श्री पार्श्व विख्यात, वळी नेमिसरनो अवदात,
वळी नव भवनी वात;
चोवीशे जिन अंतर तेवीश, आदि जिनेश्वर श्री जगदीश,
तास वखाण सुणीश,
धवल मंगल गीत गहुंली करीए, वळी प्रभावना नित अनुसरीए,
अट्ठमतप जय वरीए. ॥२॥
आठ दिवस लगे अमर पलावो, तेह तणो पडहो वजडावो,
ध्यान धरम मन भावो,
संवत्सरी दिन सार कहेवाय, संघ चतुर्विध भेलो थाय,
बारसा सूत्र सुणाय;
थिरावली ने समाचारी, पट्टावली प्रमाद निवारी,
सांभळजो नर नारी,
आगम सूत्रने प्रणमीश, कल्पसूत्रशुं प्रेम धरीश,
शास्त्र सर्वे सुणीश. ॥३॥
सत्तरभेदी जिन पूजा रचावो, नाटककेरा खेल मचावो,
विधिशुं स्नात्र भणावो,
आडंबरशुं देहरे जईए, संवत्सरी पडिक्कमणुं करीए,
संघ सर्वने खमीए;
पारणे साहम्मिवच्छल कीजे, यथाशक्तिए दान ज दीजे,
पुण्यभंडार भरीजे,
श्रीविजयक्षेमसूरि गणधार, जशवंतसागर गुरु उदार,
'**जिणंदसागर**' जयकार. ॥४॥

श्री सिद्धचक्रनी आराधना

चैत्यवंदन

(१) अरिहंत पद ध्यातो थको...

अरिहंत पद ध्यातो थको, दव्वह गुण पज्जाय रे;
भेद छेद करी आतमा, अरिहंत रूपी थाय रे. ॥१॥
रूपातीत स्वभाव जे, केवलदंसण नाणी रे;
ते ध्यातां निज आतमा, होये सिद्धगुण खाणी रे. ॥२॥
ध्यातां आचारज भला, महामंत्र शुभ ध्यानी रे;
पंच प्रस्थाने आतमा, आचारज होय प्राणी रे. ॥३॥
तप सज्झाये रत सदा, द्वादश अंगना ध्याता रे;
उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जगभ्राता रे. ॥४॥
अप्रमत्त जे नित्य रहे, नवि हरखे नवि शोचे रे;
साधु सुधा ते आतमा, शुं मुंडे शुं लोचे रे. ॥५॥
शम संवेगादिक गुणा, क्षय-उपशम जे आवे रे;
दर्शन तेहि ज आतमा, शुं होय नाम धरावे रे. ॥६॥
ज्ञानावरणीय जे कर्म छे, क्षय उपशम तस थाय रे;
तो हुए एहि ज आतमा, ज्ञान अबोधता जाय रे. ॥७॥
जाण चारित्र ते आतमा, निज स्वभावमां रमतो रे;
लेश्या शुद्ध अलंकर्यो, मोहवने नवि भमतो रे. ॥८॥
ईच्छारोधे संवरी, परिणति समता योगे रे;
तप ते एही ज आतमा, वर्ते निजगुण भोगे रे. ॥९॥

(नोंध : आ कृति श्रीपालरास अंतर्गत... महो.यशो वि.कृत छे.)

(२) सकल मंगल परम कमला...

सकल मंगल परम कमला, केलि मंजुल मंदिरं;
भवकोटि संचित पापनाशन, नमो नवपद जयकरं. ॥१॥
अरिहंत सिद्ध सूरीश वाचक, साधु दर्शन सुखकरं;
वर ज्ञान पद चारित्र तप ए, नमो नवपद जयकरं. ॥२॥
श्रीपालराजा शरीर साजा, सेवता नवपद वरं;
जगमांही गाजा कीर्तिभाजा, नमो नवपद जयकरं. ॥३॥
श्री सिद्धचक्र पसाय संकट, आपदा नासे सवि;
वळी विस्तरे सुख मनोवांछित, नमो नवपद जयकरं. ॥४॥
आंबिल नव दिन देववंदन, त्रण टंक निरंतरं;
बे वार पडिक्कमणा पडिलेहण, नमो नवपद जयकरं. ॥५॥
त्रिकाळ भावे पूजीए, भवतारकं तीर्थकरं;
तिम गणणुं दोय हजार गणीए, नमो नवपद जयकरं. ॥६॥
विधि सहित मन वचन काया, वश करी आराधीए;
तप वर्ष साडा चार नवपद, शुद्ध साधन साधीए. ॥७॥
गद कष्ट चूरे शर्म पूरे, पक्ष विमलेश्वर वरं;
श्री सिद्धचक्र प्रताप जाणी, '**विजय**' विलसे सुखभरं. ॥८॥

स्तवन

(१) अहो भवि प्राणी रे...

(रागः भवि तुमे वंदो रे जिनआगम सुखकारी...)

अहो भवि प्राणी रे! सेवो, सिद्धचक्र ध्यान समो नहि मेवो;
जे सिद्धचक्र आराधे, तेनी कीरति जगमां वाधे. ॥१॥
पहेले पदे रे अरिहंत, बीजे सिद्ध बुद्ध ध्यान महंत;
त्रीजे पदे रे सूरीश्वर, चोथे उवज्झायने पांचमे मुनीश्वर. ॥२॥
छट्ठे दरिशन कीजे, सातमे ज्ञानथी शिवसुख लीजे;
आठमे चारित्र पाळो, नवमे तपथी मुक्ति भाळो. ॥३॥

ओळी आंबिलनी कीजे, नवकारवाली वीश गणीजे;
त्रणे टंकना रे देववंदन, पडिलेहण पडिक्कमणां आंबेल. ॥४॥
गुरुमुख किरिया रे कीजे, देव-गुरुभक्ति चित्तमां धरीजे;
एम कहे '**रामनो शिष्य**', ओळी उजवजो जगदीश. ॥५॥

(२) नवपद धरजो ध्यान...

(रागः तुम दरिशन भले पायो.../जिन! तेरे.../ आई बसो...)

नवपद धरजो ध्यान, भवि! तुमे नवपद धरजो ध्यान;
ए नवपदनुं ध्यान करतां, पामे जीव विश्राम. ॥१॥
अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु सकल गुणखाण; भवि०
दर्शन ज्ञान चारित्र ए उत्तम, तप तपो धरी बहुमान. ॥२॥
आसो चैत्रनी सुदि सातमथी, पूनम लगी प्रमाण; भवि०
एम एक्यासी आंबिल कीजे, वरस साडाचारनुं मान. ॥३॥
पडिक्कमणां दोय टंकना कीजे, पडिलेहण बे वार; भवि०
देववंदन त्रण टंकना कीजे, देव पूजो त्रिकाल. ॥४॥
बार आठ छत्रीस पचवीश ने, सत्तावीश सडसठ सार; भवि०
एकावन सित्तेर पचासनो, काउस्सग्ग करो सावधान. ॥५॥
एक एक पदनु गणणुं गणीये, गणीये दोय हजार; भवि०
एणी विधे जे ए तप आराधे, ते पामे भव पार. ॥६॥
कर जोडी सेवक गुण गावे, मोहन गुण मणिमाळ; भवि०
तास शिष्य मुनि '**हेम**' कहे छे, जन्म मरण दुःख टाळ. ॥७॥



थोय

(१) प्रह ऊठी वंदु सिद्धचक्र सदाय...

प्रह ऊठी वंदु, सिद्धचक्र सदाय,
जपीये नवपदनो, जाप सदा सुखदाय;
विधिपूर्वक ए तप, जे करे थई उजमाळ,
ते सवि सुख पामे, जेम मयणा श्रीपाळ. ॥१॥
मालवपति पुत्री, मयणा अति गुणवंत,
तस कर्मसंयोगे, कोढि मळियो कंत;
गुरुवयणे तेणे, आराध्युं तप एह,
सुख संपद वरिया, तरिया भवजल तेह. ॥२॥
आंबिलने उपवास, छट्ठ वळी अट्ठम,
दस अट्ठाई पंदर, मास छ मास सुविशेष;
इत्यादिक तप बहु, सुखमांही शिरदार,
जे भवियण करशे, ते तरशे संसार. ॥३॥
तप सान्निध्य करशे, श्री विमलेसर यक्ष,
सहु संघना संकट,चूरे थई प्रत्यक्ष;
पुंडरिक गणधार, कनकविजय बुध शिष्य,
बुध '**दर्शनविजय**' कहे, पहोंचे सकल जगीश. ॥४॥

(२) वीर जिनेश्वर अति अलवेसर...

(रागः वैष्णवजन...)

वीर जिनेश्वर अति अलवेसर, गौतम गुणना दरियाजी,
एक दिन आणा वीरनी लईने, राजगृही संचरियाजी;
श्रेणिकराजा वंदन आव्या, उलट मनमां आणीजी,
पर्षदा आगळ बार बिराजे, हवे सुणो भवि प्राणीजी. ॥१॥

मानवभव तुमे पुण्ये पाम्यां, श्री सिद्धचक्र आराधोजी,
अरिहंत सिद्ध सूरि उवज्झाया, साधु देखी गुण वाधोजी;
दर्शन ज्ञान चारित्र तप कीजे, नवपद ध्यान धरीजेजी,
धुर आसोथी करवा आंबिल, सुख संपदा पामीजेजी. ॥२॥
श्रेणिकराय गौतमने पूछे, स्वामि ए तप कोणे कीधोजी,
नव आंबिल तप विधिशुं करतां, वांछित सुख कोणे लीधोजी;
मधुर ध्वनि बोल्या श्री गौतम, सांभळो श्रेणिकराय वयणाजी,
रोग गयो ने संपदा पाम्यां, श्री श्रीपालने मयणाजी. ॥३॥
रुमझुम करती पाये नेउर, दीसे देवी रूपाळीजी,
नाम चक्रेश्वरीने सिद्धाई, आदि वीर जिन रखवाळीजी;
विघ्न क्रोड हरे सहु संघना, जे सेवे एना पायजी,
भाणविजय कवि सेवक '**नय**' कहे, सांनिध्य करजो मायजी. ॥४॥

(3) श्री वर्धमानतप स्तुति

(रागः रघुपति राघव...)

वर्धमान आंबील तप आदरो, चोवीश जिननी पूजा करो;
अंतगड आगम सुणो वखाण, सिद्धाई देवी करे कल्याण. ॥१॥

(४) श्री सिद्धचक्रजी स्तुति

(रागः जय जय भवि हितकर...)

श्री सिद्धचक्र आराधो, साधो वांछित काज,
श्री अरिहंतादिक, सेव्याथी शिवराज;
जिन आगममांही, सिद्धचक्र शिरताज,
विमलेसर पूरो, भविजन वांछित आज.

(नोंध : उपरनी बे स्तुति चार वार बोली शकाय छे)



नूतन भक्तिगीत विभाग

(१) अंतरना अंतरिक्षमां मने मळजे...

(राग : मने मळजे...)

अंतरना अंतरिक्षमां मने मळजे,
भीतरना दरियामांथी मने मळजे,
आंखोमां पूर छे, हैयुं मजबूर छे,
भक्तिनो ए ज सूर छे... ॥१॥
कहेवुं घणुं छे, कानोमां तारा,
पण जाणे होठे, लाग्या छे ताळा,
रहेवुं घणुं छे, चरणोमां तारा,
पण मारा जेवां, ताहरे घणा, मांग्युं मैं,
ताराथी, तारा वगर बधुं, बस तने नहीं... ॥२॥
जावा दउं के रोकी लउं ए मनने नथी समजातुं के शुं करुं,
हो जावा दउं के रोकी लउं ए मनने नथी समजातुं के शुं करुं;
राखीने पासे खोया करुं के दूर तने हुं राखी पामी लउं,
रोशनी छे ताराथी, जो तुं नहि हशे अंधार घेरो छे... ॥३॥

(२) अत्तर अत्तर वरसो छो...



अत्तर अत्तर वरसो छो, सत्तर वरसोथी एकधारुं,
महावीर भगवान तमारुं, छत्तर लागे छे प्यारुं... ॥१॥
तमे ज मारी प्रसन्नता छो, तमे ज छो मुज सथवारो,
तमे हृदयनी हिम्मत छोजी, तमे ज छो मुज सधीयारो;
रूप तमारुं जोई जोईने, हुं मुज आंखो शणगारुं.. अत्तर०॥२॥
कोईने कांई कहेवाय नहीं, तमने बधुं कहेवाय,
कोईने कांई समजाय नहीं, तमने बधुं समजाय;
तमे नहोता मळ्या त्यां सुधी जीवन हतुं आ नोंधारुं.. अत्तर०॥३॥
तमे ज पर्वत तमे ज केडी, तमे ज वृक्षनी छाया,
तमे ज वहेती हवानी खुशबु, तमे अगोचर माया;
एक एक निशानी तमारी, हुं मारा मनमां धारुं... अत्तर०॥४॥
तमे धजा नभ फेलावो छो, तमे घंट रणकावो छो,
हुं केवळ बेठो छुं रथने, स्वयं तमे ज चलावो छो;
हे निर्मोही तव देवर्धि नंदप्रभामां विस्तारुं... अत्तर०॥५॥

(3) अमने देजो एक ज स्मित...



रोज तमारुं नाम जपीशुं, रोजे गाशुं गीत...
अमने देजो एक ज स्मित. ॥१॥
रूप तमारुं जोतां जोतां, आँखो नथी धराती,
मूरतने नीरखीने हैये, ममता बहु उभराती,
नंदप्रभाना भक्तजनोनी, तमे स्वीकारो प्रीत. ॥२॥
अमे तमारा आंगणियेथी, कदी न पाछा जाशुं,
रात दिवसना बे दरवाजे, अमे रंगोळी थाशुं,
हार खमीने थाक चड्यो छे, तमे अपावो जीत. ॥३॥



(४) अर्पण करुं शुं तने...

अर्पण करुं शुं तने... (२)
जे कंई छे मारुं तारुं दीधेलुं...
अर्पण करुं शुं तने... ॥१॥
मनना अजंपा, दीलडानी पीडा,चरणे धरुं छुं तने (२)
तन मन आ मारुं, रुदियानी साथे, अर्पु हवे हुं तने,
लई ले नाथ (३) अर्पण करुं शुं तने... ॥२॥
हे प्रभु मारा! दर्शन तारा, मुजने क्यारे थशे (२)
आपुं वचन हुं सेवामां तारी, जीवन आ पूरुं थशे,
मारा नाथ (३) अर्पण करुं शुं तने... ॥३॥



(५) आ मारा महाराजजी...

आ मारा महाराजजी, आ मारा महाराजजी (२);
सजी-धजीने बनी-ठनीने, खूब खूब मलकाय जी. ॥१॥
बाजुबंध मुगटने कलगी, सोनलवर्णी आंगी जी,
झगमग एना रूपने जोई, आ दुनिया शरमाती जी,
लाड लडावे भक्तो एने (२), करीए खूब वहाल जी. ॥२॥
कदीक फूलोना हार पहेरे, रमे फूलोना ढगले जी,
अबुध अमारो जीव भोळियो, दोडे तमारे पगले जी,
मलकंता सामे शुं बेठा(२), बोलो तो संभळाय जी. ॥३॥
व्हाला व्हाला नाथने मळवा, भीतर तालावेली जी,
उदयरतननी जेम अमारे, काज खोलने डेली जी,
तमे अमोने खूब गमो छो (२), वधु नहीं कहेवाय जी. ॥४॥

(६) आंखडी मींचाय छे...



(रागः पा पा पगली...)

आंखडी मींचाय छे ने... आंसुथी भींजाय छे;
श्वासने समजाय छे के, आखरी पळ जाय छे;
हुं आवजे कहुं छुं तने, तुं आववुं चूकतो नहीं;
दुनिया भले छूटी जाय पण, कदी साथ तुं मुकतो नहीं.
शाता पूछो, धीमेथी... आवीने मारा नाथ.
हैये पीडा घणी छे... सांभळ मारी वात.
हो... हो... मारा व्हालम... हो... हो... मारा व्हालम. ॥१॥

आ प्रेमने आ व्हेम सघळा, जूठनो संसार छे;
आ श्वास धूमाडो थशे ए, सत्यनो स्वीकार छे...
आ जींदगी खर्चाई गई पण, मेळव्युं ना में कशुं;
आ खोळियुं मानवनुं ने, भीतरे राख्यो पशु... शाता पूछो. ॥२॥

दर्दो वध्या छे देहनां, लाचार प्रीत-सगाई छे;
मारा जीवने समजावजो, आखुं जगत पितराई छे,
आ रात छे अंधार घेरी, आतमा तो झळहळे;
मारा भाग्यनो उदय थशे, जो तुं मने आवी मळे... शाता पूछो...
हो... हो... मारा व्हालम... हो... हो... मारा व्हालम... ॥३॥

(७) आंखमांथी शुं झरे छे...



आंखमांथी शुं झरे छे, शी खबर?
जे दिवस पडशे प्रभु तारी नजर. ॥१॥
एक पळ तारा विना ना रही शकुं;
तुं रहे आरामथी मारा वगर. ॥२॥
मोत तो छेल्लुं अगर जो होय तो;
थाय मारी पूर्ण आ भवनी सफर. ॥३॥

जीवथी एने वधु चाहीश हुं;
लावशे तारा मिलननी जे खबर. ॥४॥
लागणी मारी छे आयुर्वेद शील;
एटले मोडी तने थाशे खबर. ॥५॥
होत तुं पथ्थर तो सारु थात के;
हुं तने पूजी शकत पूछ्या वगर. ॥६॥

(८) आगमन तारुं आगमन...

भडभडती आ धरती उपर, छो छांयडो टाढो तमे;
सौरभ प्रसारे चउ दिशे, ते वायरो मघमघ तमे!
आ दीनने प्रभु आपवामां, बाकी राख्युं शुं तमे?
सद्धर्म चक्षु आपीने, शुभमार्ग वाळ्यो तमे मने!
रोमे रोमे हर्षनी वृद्धि करावे छे,
साधनाथी आत्मनी शुद्धि करावे छे,
आगमन तारुं आगमन... (४) ॥१॥
अंजावे आतमने कषायो चारनां आकर्षणो,
मेळवता जेथी आफतो ने दुःख मुज आमंत्रणो,
राग रोष ने रोगना संजोग टाळे छे,
सद्गुणोथी माहरी मैत्री करावे छे. आगमन०॥२॥
दोषो तणा ए वृंदने रहेवुं पडे दूरे हवे,
विषयो करे ईर्ष्या न कोई रही शके भीतर हवे,
दंभनी दुर्गंधने दूरे धपावे छे,
गुणना अत्तरथी अंतर मघमघावे छे. आगमन०॥३॥
लागे छे मारग माहरो झाझो नथी दूरे हवे,
चालुं भले धीमुं छतां थाशे सफर पूरी हवे,

कंटकोने मार्गना पुष्पो बनावे छे,
दई अडग साहस पथिक शूरो बनावे छे. आगमन०॥४॥
'स्व' थी करावे जे परिचित, एवो छो अरीसो तमे;
माग्या विना जे आपतुं, साक्षात कल्पतरु तमे!
संग सद्भावो तणी, धारा वहावे छे,
शाश्वता सहवासनी प्रतीति करावे छे. आगमन०॥५॥

(९) आज आनंद अंग...

आज आनंद अंग अंग जाग्यो जाग्यो.
आज आंगण गुलाल रंग लाग्यो लाग्यो. ॥१॥
ध्वजा ऊंचे खेले, हैयां चडे हेले, (२)
मारा महावीरथी मोक्ष, में तो मांग्यो मांग्यो. आज०॥२॥
नंदप्रभा सोहे, वीर मन मोहे, (२)
थाक भव-भवनी, यात्रानो भाग्यो भाग्यो. आज०॥३॥
प्रभु बोध आपे, प्रभु कर्म कापे, (२)
प्रभु वाणी सुणीने, भ्रम भांग्यो भांग्यो. आज०॥४॥
सरस संगेमरमर, मंदिरजी सुंदर, (२)
सात सूरना दरबारे, शंख वाग्यो वाग्यो. आज०॥५॥

(१०) आटलुं आपजे नाथ!...

(रागः आज जिनराज मुज)

आटलुं आपजे नाथ! मारा कने, माहरुं कोइ ना होय त्यारे;
कोईनी याद फरियाद आवे नहीं, होठ बस नाम तारुं पुकारे. ॥१॥
हाथ जोडी करुं प्रार्थना हुं प्रभु!, रोज भीनी थती आंख लूछो;
एटली छे पीडा हुं सही ना शकुं, नाथ! मारी समाधिनुं पूछो. ॥२॥

वेदना सांभळे जो प्रभु माहरी, तो खरेखर तने दुःख लागे;
साव भोळुं हतुं हृदय-मन माहरुं, तोय सहुने प्रभु जूठ लागे. ॥३॥
एक पछी एक वरसो वीते छे अने, माहरी जिंदगी थाय पूरी;
ते छतां आ हृदय आर्त्तध्याने करी, बांधतुं करम दिन-रात झूरी. ॥४॥
आज महाराज समजावजो जीवने, सहन करवा ज आ भव मळ्यो छे;
परभवे कोइ में पाप एवा कर्या, आ भवे एनो उदय थयो छे. ॥५॥



(११) आज टमटमाता दीवाओ पर...

(राग : ये जो हलका हलका सुरुर है)

आज टमटमाता दीवाओ पर, तारी झगमगाती प्रभाओ पर,
प्रभु दिल आ मारुं फनाह छे...
तारा स्नेहमां तारा वेणमां, तारा करुणा झरता नैनमां,
प्रभु दिल आ मारुं फनाह छे...
तमे अमारा, अमे तमारा, अमे छे कंकर तमे मिनारा,
ओ.. अमे तमस ने तमे सितारा, अमे तो सेवक तमे धणी,
तारा स्नेहमां... ॥१॥

आ श्वास तारा नामे .. (२)
आ श्वास तारा नामे, आ रुह तारा नामे...
आ राग तारा नामे, वीतराग तारा नामे...
जिनराज तारा नामे, शिरताज तारा नामे ...
तारी सुरतमां तारी मूरतमां..(३)
तारी सुरतमां प्रभु तारी मूरतमां..(२)
तारी सुरतमां तारी मूरतमां तारा हसता होठों नी मरकमां,
तारा स्नेहमां... ॥२॥

गान तमारुं गाता गाता, अमे समय नुं भान भुल्या,
खावुं भुल्या, पीवुं भुल्या, उंघ अने आराम भुल्या...

तमे ध्येय छो, तमे ध्यान छो.. (२)
मुज जीवननुं अभिमान छो.. (२)
मुक्ति तणी सोपान छो..(२)
तारी भक्तिना ए हर्ष पर, तारा नवे अंगनां ए स्पर्श पर,
प्रभु दिल आ मारुं फनाह छे... ॥३॥

(९२) आपत्तिओ आवे भले...

(राग : ये हौंसला कैसे तूटे...)

आपत्तिओ आवे भले, विघ्नो हजार सतावे भले,
एक ज छे झंखना, अनहद आराधना, साधुं हुं साधना हो...
जय जय श्री नेमिनाथ... नेमिनाथ...(२) ॥१॥
सुख सफलता जे जे मळे, एनो यश हुं तमने दउं,
दुःख मळे तेने मारा करम, मानीने हैये लगावी लउं,
चाहुं जनमो जनम, भक्ति तारी परम, साचो तारो धरम,
जय जय श्री नेमिनाथ... नेमिनाथ...(२) ॥२॥
मृत्यु पळे तुं संगे रहे, तारी कृपाथी समाधि मळे,
अंतिम श्वासे तारा थकी, तन मन केरी अज्ञानता टळे,
मांगु आनंदघन, पामु साधु जीवन, साचु तारुं शरण...
जय जय श्री नेमिनाथ... नेमिनाथ...(२) ॥३॥

(९३) आवजो मन मंदिरीये

सुंदर आ देहरामां सोही रह्या छो,
भविजनना मन मोही रह्या छो... (२)
अरजी हवे छे साजना, करवी हवे छे प्रार्थना;
आवजो मन मंदिरिये, आवजो मन मंदिरिये... आवजो० ॥१॥
हृदयना आंगणे आप पधारो,

पाप खपावी मननी शोभा वधारो;
हृदयाना आंगणे आप पधारो,
दुःखियाना बेली प्रभुवर आप सहारो;
टालवाने आवो यातना, आ ज हवे छे याचना... आवजो० ॥२॥
आवजो मन मंदिरिये, मन मंदिरिये आवजो;
आवजो मन मंदिरिये, मन मंदिरिये आवजो...
तारी प्रतिष्ठा मारा मनमां छे करवी,
कायानी माया तारा चरणोमां धरवी.. (२)
पालवी छे हवे छे आज्ञा, साधवी हवे छे साधना... आवजो०॥३॥

(१४) इतनी शक्ति हमे देना...

ईतनी शक्ति हमे देना दाता,
मन का विश्वास कमझोर हो ना;
हम चले नेक रस्ते पे हमसे,
भूल कर भी कोई भूल हो ना. ॥१॥
दूर अज्ञान के हो अंधेरे,
तुं हमे ज्ञान की रोशनी दे;
हर बुराई से बचके रहे हम,
जितनी भी दे भली जिंदगी दे;
वैर हो ना किसी का किसी से,
भावना मन में बदले की हो ना. ॥२॥
हम न सोचे हमे क्यां मिला है,
हम ये सोचे किया क्या है अर्पण;
फूल खुशियों के बाटें सभी को,
सबका जीवन भी बन जाये मधुबन;
अपनी करुणा का जल तुं बहा के,
कर दे पावन हरेक मन का कोना. ॥३॥

KARUNA  SINDHU

(९५) एकडे एकथी शरु करावे...

एकडे एकथी शरु करावे, ए मारा भगवान छे,
एकसो आठ सुधी लई आवे, ए मारा भगवान छे;
अनहद नाद गजवती, ओगणीस वरसोनी आ यात्रामां,
साथे रहीने सूर पुरावे, ए मारा भगवान छे... ॥१॥
माटीमांथी खुशबु जगावे, ए मारा भगवान छे,
बीजमांथी अंकुर प्रगटावे, ए मारा भगवान छे;
सिद्धशिलामां वसी रह्या छे, त्यांथी पण सौ आत्माने,
अभयदशानो बोध अपावे, ए मारा भगवान छे... ॥२॥
कादवमांथी कमळ बनावे, ए मारा भगवान छे,
कांटा वच्चे फूल रचावे, ए मारा भगवान छे;
सिद्धशिलानां आंगणथी पण, अगणित अगणित आत्माना,
सुवर्णने जे शुद्ध तपावे, ए मारा भगवान छे... ॥३॥
नदीओ बे कांठे छलकावे, ए मारा भगवान छे,
दरियाने भरपूर गजावे, ए मारा भगवान छे;
सिद्धशिलाना महामहेलथी, अगमनिगमनी वाणीमां,
संदेशाओ बहु मोकलावे, ए मारा भगवान छे... ॥४॥
सवार सांजे नभ रंगावे, ए मारा भगवान छे,
दीवामां बहु तेज पुरावे, ए मारा भगवान छे;
नंदप्रभाना एक एक, मंगल अवसरमां निज हाथे,
देवर्धिनी ज्योत जलावे, ए मारा भगवान छे... ॥५॥

(१६) एक तुं बस एक तुं...

एक तुं बस, एक तुं, चारे तरफ देखाय जी,
क्षण-क्षण तारी सुगंध वहे छे, तन-मन पुलकित थाय जी... ॥१॥
तुं जगाडे जीव ने, तुं ज भगाडे भय प्रभु,
तुं वगाडे वांसळी, तुं ज लगाडे लय प्रभु,
सुख वरसावे छे साहेबजी, संकटमां तुं सहाय जी... ॥२॥
मारी नैया तुं ज चलावे, हुं देह छुं तुं प्राण छे,
श्वास आ अविरत चले छे ते, तारी कृपानुं प्रमाण छे,
तारा ज रसमां रेलाइ आजे, रंगोत्सव उजवाय जी... ॥३॥
एक साचु सत्त्व तुं छे, तारुं अगोचर महत्त्व छे,
देवर्धिना दीवडा जगाडे, एवं परम तुं तत्त्व छे,
नंदप्रभामां तारा नामे, मेघ मल्हार गवाय जी... ॥४॥

(१७) एवुं लागे छे आजे मने...

(राग : जिंदगी प्यार का गीत है ...)

एवुं लागे छे आजे मने, प्रभु! आव्या छे मारा हृदयमां;
मित्र मानुं बधा जीवने, भाव जाग्या छे मारा हृदयमां. ॥१॥
वैरवृत्तिनी ज्वाळा उपर, धारा वरसी रही मेघनी;
कूणा कूणा क्षमाभावना, फूट्या अंकुर मारा हृदयमां. ॥२॥
ठंडो सूरमो अंजाई गयो, राता धगधगतां लोचन महीं;
क्रोध आव्यो तो जेना उपर, प्रेम प्रगट्यो छे मारा हृदयमां. ॥३॥
जेनी जागी'ती ईर्ष्या मने, एनी इच्छुं छुं प्रगति हवे;
सुख एनुं ए माणे भले, बळुं शाने हुं मारा हृदयमां. ॥४॥
करे नुकशान जेओ मने, ए तो केवल निमित्तो बधा;
भाग भजवे छे मारा करम, साचुं समजायुं मारा हृदयमां. ॥५॥

(१८) एवो मने प्रेम छे...



(राग : तेरे हवाले कर दिया...)

मळवा प्रभु हरपळ तने, मन मारूं बांवरु,
सपना माहीं देखाये छे, मने मुखडुं ताहरूं,
भुली शकुं ना तने, एवो मने प्रेम छे,
तारा विना जीवी शकुं ना, एवो मने प्रेम छे... ॥१॥
कोईक भावना, स्नेह जाने,
जागी गयो छे, जाने अजाने,
तारी ज यादोमां, जीवन वितावुं प्रभु,
दूरे जावुं पण, जई शकुं ना,
जोवा छे तुजने, जोई शकुं ना,
केवी रीते हुं तुजने, रिजावुं प्रभु,
रमतुं रहे स्मरणोमहीं, आ मनडु मारूं,
मळतुं रहे जन्मोजनम, मने शासन ताहरूं,
भुली शकुं ना तने, एवो मने प्रेम छे,
तारा विना जीवी शकुं ना, एवो मने प्रेम हे... ॥२॥

(१९) ओ पालनहारे...



ओ पालनहारे निर्गुण और न्यारे,
तुमरे बिन हमरा कोनुं नहि,
हमरी उलझन सुलझाओ भगवन्,
तुमरे बिन हमरा कोनुं नहि,
तुम्ही हमका हो सहारे, तुम्ही हमरे रखवाले,
तुमरे बिन हमरा कोनुं नहि... ॥१॥
चंदा में तुम्हे तो भरे हो चांदनी, सूरज में उजाला तुम्ही से,
ये गगन है मगन, तुम्ही तो दीये हो इसे तारे,
भगवंत ये जीवन, तुम्हे ना संवारोगे तो क्यां कोई संवारे... ॥२॥

जो सुनो तो कहे प्रभुजी हमरी हें बिनती,
दुःखी जन को, धीरज दो, हारे नहीं वो कभी दुःख से,
तुम निर्बल को रक्षा दो, रह पाये निर्बल सुख से,
भक्ति दो... शक्ति दो...
जग के जो स्वामी हो, इतनी तो अरज सुनो,
हे पथ में अंधीयारे, दे दो वरदान में उजीयारे. ॥३॥



(२०) ओ प्यारा नाथजी...

(रागः पार्वती बोली शंकर से)

महेलोथी पण वधु सुख छे, नाथ तमारी पासजी,
रहेवुं छे हर एक भवमां, नाथ तमारी साथजी,
वचन आपो नहीं छोडो, ओ नाथ अमारो हाथजी...
ओ प्यारा नाथजी, ओ प्यारा नाथजी,
बनो मारा सारथी, ओ प्यारा नाथजी... ॥१॥
झंखु छुं बस जीवनभर, मने एक तमारो साथ मळे,
आ मस्तक तारा चरणोमां, माथे सदा तारो हाथ रहे,
प्राण पूर्या छे आ निर्जीवमां, तमे कृपाळु सनाथजी. रहेवुं०॥२॥
प्रीतम तमारा चरणोमां, जीवनने जो कोई राह मळे,
हुं भुली जाऊं संसार बधो, मने तारो जो सथवार मळे...
तव आज्ञाने श्वास बनावुं, ए ज हवे मारुं लक्ष्य बने...
रागीथी वैरागीने वैरागीथी वीतरागी बने,
शुद्धि नथी ने शक्ति नथी, छतां स्वीकारो नाथजी... रहेवुं०॥३॥
मारा प्रभुवर मारी साथ-साथ, हुं झुमी-झुमीने नाचुं...
मारा गुरुवर मारी साथ-साथ, हुं झुमी-झुमीने नाचुं...
मारा पूरा थया अरमान, हुं झुमी-झुमीने नाचुं...
वर्षोथी सेवेला सपना साकार थया आजे...

(२१) करुणाना सिंधु...

(राग : तुं जहां जहां चलेगा...)

करुणाना सिंधु प्रभुजी! दुःख दूरे कर हमारा,
विनवीए तने विभुजी! पापो कर दूर अमारा. ॥१॥
तने याद करीने प्रभुजी, जे वहे छे मारा आंसु,
वसमा विरहनी वातो, तने कहे छे मारा आंसु;
श्रद्धा छे क्यारेक तुं मळशे, लूछवाने मारा आंसु,
विती गया छे प्रभुजी! ए आशामां जन्मो मारा. ॥२॥
दर्शनथी तारा अमने, जीववानुं जोम मळतुं,
हैयामां शांति थाती, जे रहे छे सदाय बळतुं;
तुं साथे छे अमारी, तेथी भक्तिमां मनडुं भळतुं,
कहेवी छे बधी हकीकत, सुख दुःखना साथी मारा. ॥३॥
दुखियाना ओ दिलासा, एक ज छे आशा तारी,
रीझववा प्रभुजी! तमने, वर्णवीए कथा अमारी;
हवे जीवन नावडीने, करो पार प्रभुजी प्यारा,
विनवीए तने विभुजी! पापो कर दूर अमारा. ॥४॥

(२२) केवा तुं कामण करे...

केवा तुं कामण करे, तुज बिन कशुं ना गमे,
ओ अलबेला! हृदये वसेला (२)
तुज चरणोमां मस्तक नमे... केवा तुं कामण करे. ॥१॥
तारुं स्मरण करुं ने, आंखेथी अश्रुनी धारा वहे,
नयनो ने गमता शमणांमां रमता. (२)
तुज दर्शनथी नयना ठरे... केवा तुं कामण करे. ॥२॥
तारुं चिंतन करतां, मारी चिंताओ सघळी टळे,

ओ वीतरागी! सुण सौभागी (२),
तुज सानिध्य आतम चहे... केवा तुं कामण करे. ॥३॥
ताहरुं रटण करुं ने मुजने दोषोथी मुक्ति मळे,
हृदये धबकतां, अंतरमां वसतां (२),
तुज सांनिध्ये शाता मळे... केवा तुं कामण करे. ॥४॥



(२३) केवा शोभे मारा जिनराया...

(राग : गूंजे संयमनो जयकारा...)

तारणहारा छो अमारा, सर्वज्ञता ने धारनारा,
मारा मनडाने मोहनारा, नाथजी...
तारा नामे, आखा जगने, हुं जीती जउ... ॥१॥
मूरत छो उज्जवलतानी, दिव्यता ने निर्मळतानी,
अविकारी ने अविनाशी, अनन्य गुणोना स्वामी,
आपनी छबी हैये वसी, हे प्राणनाथजी... ॥२॥
केवा शोभे मारा जिनराया जिनराया,
केवा शोभे मारा जिनराया...
बेठां मलके मारा जिनराया जिनराया,
केवा शोभे मारा जिनराया... ॥३॥
छे अवंत मारा जिनराया जिनराया,
छे अनंत मारा जिनराया....
अदम्य रम्य मारा जिनराया जिनराया,
छे अरिष्ट मारा जिनराया... ॥४॥
मारा छो आतमराया, लागी मुजने तारी माया,
चौदे राजे गुंजे तारा, जयकारा हे जिनराया,
तारी प्रीती तारक लागी, बनुं साचो ऋषभरागी,
आ दुर्लभ द्रश्य जुहारी, धन्यता भवोनी आवी... ॥५॥

जोया ज्यारे तमने नाथ, भाग्यो मारा भवनो थाक,
झाल्यो आजे तारो हाथ, दुजो ना हो कोई साथ,
संसारना रंगो त्यजी, माणुं तारा राजने....
केवा शोभे मारा जिनराया...
छे अरिष्ट मारा जिनराया... ॥६॥
देव-देवी सहु आवता, तारुं देवालय बंधावता,
क्षिरोदधिना जल लावता, तारा अभिषेक ए रचावता.
भविजन भावे भावता, तारो अंजनोत्सव करावता,
हृदयाना देरे पथरावता, अदकेरो आंनद पामता... ॥७॥

(२४) खबर क्यां छे...

(रागः मुजे तेरी महोब्बत का...)

खबर क्यां छे मने मारी सवारे शुं थवानुं छे?
भरोसो ना हवे मारो गमे त्यारे जवानुं छे.
तूटे जो श्वासनी दोरी, नहीं एनी करुं परवा,
रहे गुरुवर समीपे ने मळे आ वेषमां मरवा,
नहीं कल्पांत करवानो, थवानुं ते थवानुं छे... ॥१॥
समय अंतिम हो ज्यारे, फिकर आतम तणी होजो,
तमे छो व्हालनी वर्षा, मने एवुं रमण देजो,
नहीं मांगु बीजुं कांइ, घडीभरमां जवानुं छे... ॥२॥
वधे छे दर्द ने पीडा, अशाता पण रीबावे छे,
करेला कर्म जे मारा उदय एनो सतावे छे,
समाधि ना तूटे मारी, नवा घरमां जवानुं छे... ॥३॥



(२५) खुल्ला मूक्या छे में तो...

खुल्ला मूक्या छे में तो दिलडानां द्वार,
प्रभुजी! आवोने एक वार;
मारा जीवननी सूनी पगथार,
पगलां पाडोने एक वार. ॥१॥
वर्षोथी मीट मांडी वाटडी निहाळुं,
शमणानी सोडमां हुं तुजने पुकारुं,
तुजने वीसरी ना शकुं पळवार...
प्रभुजी! आवोने एक वार... ॥२॥
तारा विना उरना आसनीया खाली,
छलकावी द्यो ने नाथ करुणानी प्याली,
तुजने स्मर्या करुं वारंवार...
प्रभुजी! आवोने एक वार... ॥३॥
अंतरनी आरसीमां रहेजो छबीला,
मारा रे अंतरमां तारां ज पगलां,
तारो महिमा छे अपरंपार...
प्रभुजी! आवोने एक वार... ॥४॥
भक्तो तमारा केवा छे भोळा,
शाने लीधा छे नाथ अमथी अबोला,
अमने उतारो ने भवपार...
प्रभुजी! आवोने एक वार... ॥५॥

(२६) चरणों में तेरे रहकर...



चरणों में तेरे रहकर भगवन, प्यार ही प्यार मिला,
श्रद्धा से जब पूजा मैंने, ब्रह्म का ज्ञान मिला. चरणों०॥१॥
तुज संग कैसी प्रीत लगी कि, छूटा जग मुज से,
जादु तुने ऐसा किया कि, छूटा जग मुज से,
बंधन सारे तूट गये जब, तुने बांध लीया. चरणों०॥२॥
गुजर गया हर पल दुःख का, जब तेरा ध्यान कीया,
हर मुश्किल आसान हुई, जब तुने साथ दीया,
मोह माया में फसा हुआ में, अब आझाद हुआ. चरणों०॥३॥
जीना मरना शीखा भगवन, जग में जीकर के,
जीते जी मर जाना कैसे, सीखा अब तुज से,
तुं ही है अब माजी मारी, नैया पार लगा. चरणों०॥४॥
जहर भी पीना कह दे अगर तुं, वो भी पीलेंगे,
राजी जिसमें तुं है भगवन्!, ऐसे जी लेंगे,
बिन पीये मदहोंश हुआ मैं, कैसा जाम पीया. चरणों०॥५॥

(२७) चोक पुरावो...



(रागः उतरी है आज मेरे पिया की सवारी...)

चोक पुरावो मंगल गावो, आज मेरे प्रभु मन भाये हैं,
आंगी रचावो मुगुट चडावो, आज प्रभु मेरे घर आये हैं...
एरी सखी मंगल गावो री, धरती अंबर सजावो री,
उतरेगी आज मेरे प्रभु की सवारी...
हर कोई नाचो गावो रे, ढोल मंजीरा बजावो रे,
आज प्रभुजी मेरे मन पधारे...आज जिनजी मेरे मन पधारे...
खबर सुनावजो, खुशी रे जतावजो, आज०॥१॥
रीमझीम बादल बरसे, कली कली फूल खीले,

खुशीयां आज द्वार मेरे डाले हैं डेरा...
घन घन घंट बजे, प्रभु नाम शंख रटे,
आंगन आंगन है, खुशियों का मेला,
अनहद नाद बजावो रे सब मिल नाचो गावो रे... आज०॥२॥



(२८) छे मुजने तमन्ना तो...

(राग : जो उनकी तमन्ना है)

छे मुजने तमन्ना तो भगवंत थवानी,
परंतु मने मारा कर्मो नडे छे,
हसीने जे बांध्या करम भारे केवा,
उदयमां जो आवे तो आंखो रडे छे... छे मुजने...॥१॥
प्रभु तारो मारग छे एक शूरानो..(२)
ए मारगे जे आवे मळे एने मुक्ति,
ए मारग जवाने कदम हुं उपाडुं (२)
त्यारे मारुं सत्त्व तो ओछुं पडे छे... छे मुजने...॥२॥
सहनशक्ति मांगुं, समजशक्ति मांगुं (२)
हुं मागुं छुं सद्गुण ने साची भक्ति,
मने खातरी छे हुं मांगुं ए मळशे (२)
परंतु झोळी मारी नानी पडे छे... छे मुजने...॥३॥
प्रभु तुं छे शुद्ध, हुं दोषोथी युक्त(२)
हुं बंधनमां केद, तुं कर्मोथी मुक्त,
हुं जेवो छुं तेवो प्रभु तोये तारो (२)
स्वीकारीश मने तुं मने ए खबर छे... छे मुजने...॥४॥
घणी दूर छे मंजिल ने रस्तो अजाण्यो (२)
तुं साथी छे मारो ने तुं ज सहारो,
पहोंचवुं छे मारे ए मंजिल सुधी पण (२)
मने तारी कृपा ने हुंफनी जरुर छे... छे मुजने...॥५॥

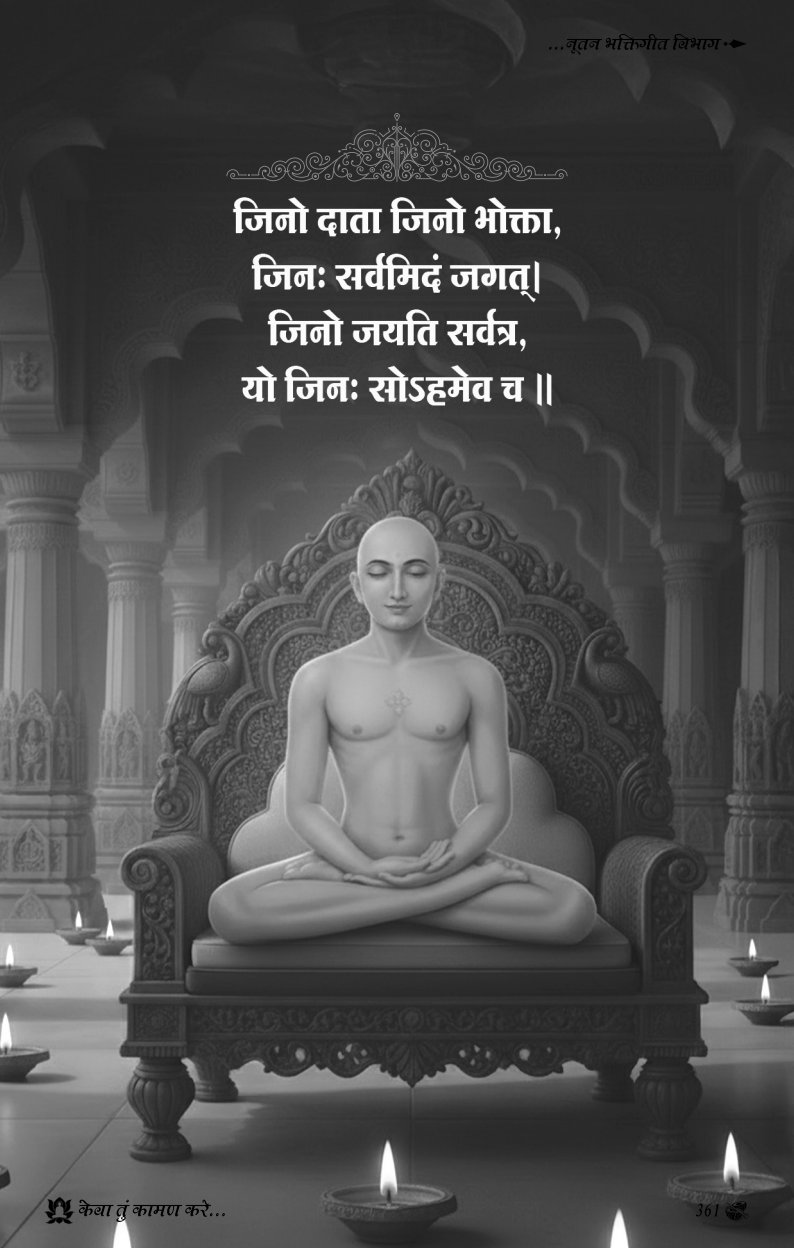
जिनो दाता जिनो भोक्ता,
जिनः सर्वमिदं जगत्।
जिनो जयति सर्वत्र,
यो जिनः सोऽहमेव च ॥



(२९) जनम जनमथी हुं तमारो छुं...

(राग : तुमको देखा तो...)

जनम जनमथी हुं तमारो छुं...
भीतरथी तमने नाथ! चाहुं छुं (२)... जनम०॥१॥
तमारा शरणे हुं सलामत छुं (२)
मने स्वीकारो...हुं तमारो छुं (२)... जनम०॥२॥
तमारा शीतल साथने झंखु (२)
आवो पधारो हुं तमारो छुं... जनम०॥३॥
जीवननी खुशीओ छे तमाराथी (२)
बस हवेथी तमे तो मारा छो... जनम०॥४॥
तमारा विरहे हुं पीडावुं छुं (२)
तमारा शरणे हुं सलामत छुं, तमे छो मारा हुं तमारो छुं. ॥५॥

(३०) जिनवर सदा तुज साथ हो...

जिनवर सदा तुज साथ हो, जनमोजनम तुं नाथ हो...
प्रभु तुं मळ्यो जीवन मळ्युं, जाणे के नंदनवन मळ्युं,
भवोभव आ पुण्य प्रभात हो... जिनवर०॥१॥
हर एक पळ तुज संग हो, हर एक कण तुज रंग हो,
तारुं शरण दिनरात हो... जिनवर०॥२॥
हर आंखना पलकारमां, दिलना दरेक धबकारमां,
हंमेश तारी याद हो... जिनवर०॥३॥
लई जाय तुं त्यां जाउं हुं, तुज साथ कदम बढावुं हुं,
मुज आंगळी तुज हाथ हो... जिनवर०॥४॥

(३१) तमारा हृदय आकाशमां...

तमारा हृदय आकाशमां पंखी बनी उड्या करुं (२),
आंखोनी पांपणोमां (२), अमी बनी झर्या करुं... ॥१॥
तमारी मुस्काने जीवन मारुं, एनी स्मृतिए जीव्या करुं,
हृदयना द्वारेथी तमने जोया करुं, निरख्या करुं... ॥२॥
तुं छे मारो जीवन सहारो, ने तुं छे मारो सागर किनारो,
ए सागरनी मीठी लहेरे लहेरे, संध्या बनी ढळ्या करुं... ॥३॥
कुदरत तारे इशारे चाले, ने तारूं कीधुं सघळुंए माने,
तो भय शानो हुं राखुं हवे, जो तुं मुजने मळे आ भवे... ॥४॥
पुष्पोमां तुं छे, ने नदीओमां तुं छे, कणे-कणमां वसीयो तुं ही ज तुं छे,
ज्यां ज्यां नजर हुं मांडुं छुं, त्यां बस तुजने भाळुं हुं... ॥५॥

(३२) तमारी लागी तरस...

रहेवुं तारा चरणोमां बस, अंतरने एकज एमां रस,
दूरे थवुं प्रभुजी हवे फावे जरी ना...
तमारी लागी तरस, प्रभुवर लागी तरस,
अमोने लागी तरस, तमारी लागी तरस... ॥१॥
हृदयनी आरपार स्पर्शे छे लागणी तारी,
भीतरनो थनगनाट टहुकी रह्यो तुज पर ओवारी,
मने हा नो ईशारो दे, वळी ए एकधारो दे,
हैयुं तमोने थई गयुं वश, तमारी लागी तरस... ॥२॥
तमे तो ज्यारथी झाली छे आ आंगळी मारी,
संसार आखानी त्यारथी छूटी गई यारी,
प्रीतनां प्रगटावे छे पूर, तमारा उरना मधुरा सूर,
तमे भर्यो छे मुजने ठसोठस, तमारी लागी तरस... ॥३॥

अमे तो ज्यारथी पीधा छे आशिषो तारा,
जीवनमां दुःख नहिं हर एक क्षण बस सुखना वारा,
आप तो वरस्या अनराधार, अमारा थई बेठा आधार,
जल्दी तमारो बनुं वारस, तमारी लागी तरस... ॥४॥

(33) तमारे ईशारे तमारी कृपाथी...

(राग : तुं प्रभु मारो.../
सागर किनारे.../हो! अविनाशी...)

तमारे ईशारे तमारी कृपाथी,
जगतमां बधु'ये बने छे बने छे...
तमारी झलक तो खलकना अणुए,
अणुमां गजबनी झगे छे झगे छे... ॥१॥
पेला चांद सूरज सितारा गगनमां,
तमारा ज तेजे चमकता गगनमां,
तडकती तडितने भभकता अगनमां,
बधे ज्योति तारी जले छे जले छे... ॥२॥
वसंती हवामां खीलेला चमनमां,
पहाडो खीणोने वृक्ष कुंज वनमां,
सरोवर कूवाओने नदी झरणामां,
बधे व्हाल तारुं झरे छे झरे छे... ॥३॥
प्रभु! तारी पाछळ बन्यो हुं दीवानो,
तने छोडीने हुं क्यांय ना जवानो,
मने मूकीने तुं क्यां भागवानो,
नजर तारी पाछळ फरे छे फरे छे... ॥४॥
जगतना अणुए अणुओनो राजा,
पुकारुं तने मारी भीतर आजा,

मने छोडीने नाथ तुं क्यांय ना जा,
मिलनमां विघन शुं नडे छे नडे छे... ॥५॥
बनी मात तुं गोदी मांही रमावे,
बनी तात तुं उन्नति पर चढावे,
बनी नाथ तुं प्रीत पथ पर चलावे,
तमारुं चलाव्युं चले छे चले छे... ॥६॥

(३४) तमे आंखे कर्युं अंजन...

(राग : युगोथी हुं पुकारुं छुं...)

तमे आंखे कर्युं अंजन, बधुं जीवंत लागे छे,
दादा तारी कृपा तणो, मने आ प्रभाव लागे छे... तमे...॥१॥
नथी हाजर तमे तोये, तमारो संग लागे छे;
तमारी साथे कंई जन्मो तणो संबंध लागे छे... तमे...॥२॥
ऋणानुबंध लागे छे, मने तो कंईक जनमोनो;
अकारण व्हाल वरसावी, सतत साथे तुं लागे छे... तमे...॥३॥
धबकता श्वासमां आवी, सतत साथे रहे छे तुं;
मारी भीतर अने बहार, सतत साथे तुं लागे छे... तमे...॥४॥
हजु ए दृश्य मारी आंखमां अकबंध लागे छे;
तने स्पर्श्या पछी मारुं, हृदय वाजिंत्र लागे छे... तमे...॥५॥

(३५) तमे आटलां वसी जाशो हैये...

तमे आटला वसी जाशो हैये, मने ए खबर न'ती
प्रीत थईने वसी जाशो हैये, मने ए खबर न'ती ॥१॥
रोज आंसुनी मंजरीओ म्होरती,
रोज एकलता जीवतरने कोरती,
आ अजंपो मुकी जाशो हैये... ॥२॥

हवे लागणीना दरिया उलेचवा,
वण पुछेला सवालो उकेलवा,
आग स्मरणोनी दई जाशो हैये... ॥३॥



(३६) तमे कल्पवृक्षनी छाया...

तमे कल्पवृक्षनी छाया... छायामां अमे समाया;
कल्पतरु तो मांग्यु आपे, दाता तमे सवाया.. तमे०॥१॥
छांये बेसी माग्युं त्यारे, खाली हाथ न मेल्यो,
लंबावेला हाथने मारा, कदी नहीं हडसेल्यो,
में तो खोबा जेटलुं मांग्युं, दरिया सात भराया... तमे०॥२॥
तमारा खोळे...तमारी डाळे, बांधवा देजो माळो;
नाना मारा पंखीडाने, देजो साथ हूंफाळो,
हता तमारा...तमारा रहीशुं... गणशो नहीं पराया. तमे०॥३॥
शंखेश्वरनुं नाम अनुपम, कल्पवेलडी जाणे,
स्मरण करुं बस बे अक्षरनुं, अढी अक्षर परमाणे,
प्रभुवरना चरणे उदयनां लोचन-जळ सिंचाया... तमे०॥४॥



(३७) तारजे डुबाडजे...

तारजे डुबाडजे, जीवाडजे के मारजे,
सघळुं तने सोंपी दीधुं, आदेश्वर भगवान रे,
उगारजे के तारजे, तरछोडजे स्वीकारजे... सघळुं०॥१॥
सेवा तारी आपजे के, दूर तुजथी राखजे;
स्मरण तारुं आपजे के, मायामां लपटावजे... सघळुं०॥२॥
सत्संग कोईनो आपजे के, कुसंगमां तुं राखजे;
दर्शन तारा आपजे के, रखडतो तुं राखजे... सघळुं०॥३॥
सघळुं तारुं राखजे पण, वात मारी मानजे,
प्रभु! तारा चरणोमां, आ बाळने तुं राखजे... सघळुं०॥४॥

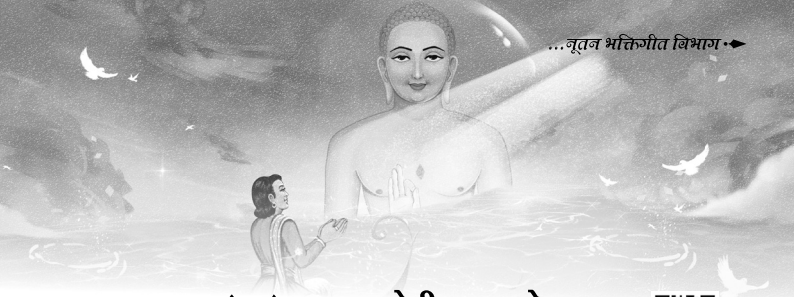

(३८) तारा गुणोनी पाट मने...

तारा गुणोनी पाट मने आप मारा स्वामी!
मने तारा मारग तणां ओरता,
तारा उजळा ते वेष मने आप मारा स्वामी!,
मने संयमनां रंग तणा ओरता... ॥१॥
वीजनो झबकार थाय एटली ज वारमां,
छोड्या ते मान अभिमान,
तुज गुण मेळववा हुं राजपथ छोडीने,
कांटाळी केडी चहुं आज,
बस! भवतारक पात्र मुजने आप मारा स्वामी!.. मने०॥२॥
फूल फूल भमती आ आंखोने एकवार,
ओळखाव तारुं पारिजात,
ठेर ठेर घूमतां आ चरणोने क्यांक जई,
पहोंचाड आज तारी वाट,
आ भवनां जाळाने हवे तोड मारा स्वामी!,
आ मृगजळनां मोहथी छोडाव मारा स्वामी!.. मने०॥३॥
तारुं सान्निध्य मळे, तारो साथ मने मळे,
तारा आशिष मुजने गमतां,
तारी आज्ञा मळे, मारी साधना फळे,
एवा अरमान हृदिये रमतां,
आ संसारसागर तराव मारा स्वामी!.. मने०॥४॥



(३९) तारा ज पंथे...

(राग : सागर किनारे)

तारा ज पंथे तारे ईशारे,
तारा सुधी हुं आवुं तारा सहारे... तारा ज पंथे... ॥१॥
रखडतो हतो ने ते हाथ झाल्यो,
तारा ज पंथे तुं लईने चाल्यो,
हो...मारगमां तुं साथे सांज सवारे... तारा ज पंथे... ॥२॥
दोषो भर्या छे मुजमां अनंता
गुणोनो स्वामी तुं भगवंता
हो... कहेजे गुणोने प्रभु मुजमां पधारे... तारा ज पंथे... ॥३॥
हुं जो पडुं तो लेजे संभाळी,
हुं जो ना चालुं लई लेजो झाली
हो... जो जे फरी पडुं ना भवना पनारे... तारा ज पंथे... ॥४॥



(४०) तारा नैनमां...

{तारा नैनमां..(४) आंखी दुनियानुं व्हाल रे समाये...}..(२)
{दरस दिखायो ऐसे नैनो ने तेरे जी..(२)
सूद बिसरायो मोहे जग ये भुलायो जी..(२) }..(२)
करुणानो सागर तमे छो, तमे छो करुणा निधान जी,
मुजपर कृपा करो हे! कृपालु, लेजो शरणमां श्री राज जी,
तारा नैनमां...॥१॥
वाणी विनानो वितरागी छे, आतममां आ विचार जी,
मुजथी मुजने आजे मळावे, पार कराव्यो हो राज जी,
तारा नैनमां...॥२॥

(४१) तारा मस्त गुलाबी गाल...



(रागः मैं रंग शरबतों का...)

तारा मस्त गुलाबी गाल, तारी आंखो छे अणीयाळी...
रूदियाना राजा मारा, तुं कृष्ण हुं राधा तारी... ॥१॥
दिलमां जागे स्पंदन, भीना भीना नयन,
जाणे आ पहेली मुलाकात,
वहाल करुं तने, चुमीओ भरुं तने,
भरी दउं प्रभु तुजने बाथ,
ओ नाथ छे मारो तुं, पण लागे छे दोस्तारी...
मन मोरली वगाडो तो, तुं कृष्ण हुं राधा तारी... ॥२॥
आंखोमां आंसु छे, जाणे चोमासुं छे,
आवे छे प्रभु मने तारी याद,
मिलननी तालावेली, हाथमां तारी हथेली,
झंखुं छुं एक प्रभु तारो साथ,
हुं राजीमती तारी, हे नेम! प्रभु गिरनारी...
मारो प्रेम स्वीकारो तो, तुं कृष्ण हुं राधा तारी... ॥३॥

(४२) तारा मिलननी लगन ...



तारा मिलननी लगन, मने पागल बनावे छे,
प्रभुजी तमारो प्रेम, मने कागळ लखावे छे...
प्रभुजी तमारो प्रेम, मने घायल बनावे छे... ॥१॥
लखुं छुं प्रेम कागळिया, ओ मारा व्हालम वीतरागी!
दूरे जई केम बेठो तुं, हुं तारो बाळ अनुरागी,
तारा स्मितनी झलक, जळने झाकळ बनावे छे,
प्रभुजी तमारो प्रेम, मने कागळ लखावे छे... ॥२॥

नथी गमतुं तारा विना, मने आवे तारी याद,
मिलननी झंखनाथी मन, मारूं तडपे छे दिन-रात,
तारा विरहनी व्यथा, नयनने वादळ बनावे छे,
प्रभुजी तमारो प्रेम, मने कागळ लखावे छे... ॥३॥
आंखोमां आंसुनो दरियो, ने मनमां वेदना छे नाथ!
तोडी संबंधो संसारी, चाहुं एकज तारो साथ,
तारा प्रीतनी तलप, मने राजुल बनावे छे,
प्रभुजी तमारो प्रेम, मने कागळ लखावे छे... ॥४॥



(४3) तारा विना तो केम जीववुं मारे नाथ...

(राग : पहेली नजरमें एसा जादू...)

तारा विना तो केम जीववुं मारे नाथ!,
नथी क्यांय गमतुं तारा विना,
क्यारे तुं मळशे तारी राह जोउं नाथ!,
नथी कोई मारुं तारा विना,
तने शोध्या करुं, रोज रोया करुं,
तारी यादोथी दिलने सजाव्या करुं,
तुं मारो नाथ!, तुं मारो साथ,
हाथ झाल हवे, स्वीकार मने... ॥१॥
मारी जिंदगीनो तुं आधार छे,
तारा विना जिंदगी आ बेकार छे,
तुं तो मारा दिलनो धबकार छे,
एक तुं शरण, रणमां झरण,
तने चाह्या करुं, तने नीरख्या करुं,
जे गमे तुजने ते बधुं हुं करुं... ॥२॥

आंख बंध थाय ने देखाय तुं,
आंख खोलुं तो पण सामे आवे तुं,
मारी आसपास बस तुं ही तुं,
दुनियानो सार, तुं छे मारो प्यार,
बधुं खोया करुं, तने जोया करुं,
न गमे जे तने ते कदी न करुं... ॥३॥
रातोना सपनामां तुं आवजे,
स्मरणोमां तारी याद आपजे,
आंखोमां आंसु बनी आवजे,
सुणजे तुं साद, आवे तारी याद,
राह जोया करुं, वाट नीरख्या करुं,
एक तारे भरोसे हुं श्वासो भरुं... ॥४॥

(४४) तारी कृपानो स्पर्श मने...

(राग : तारा गुणोनी पाट...)

तारी कृपानो स्पर्श मने आप मारा दादा
मने स्वानुभूतिना ओरता...
रूप छे तमारुं कामणगारु, भक्तने अरूपी बनावे,
नयनोथी वहेतो करुणानो दरियो, आतमने शीतल बनावे,
तारा स्वरूपनो स्पर्श मने आप मारा दादा. मने०॥१॥
अमृत झरणी मीठी तुज वाणी, अंतर तिमिर हरनारी,
कान मारग थई हियडे पेसी, आतम उजास करनारी,
तारा शब्दोनो स्पर्श मने आप मारा दादा. मने०॥२॥
जग कल्याणी आज्ञा तमारी, दोषोनो भार उतारे,
आज्ञानी नैया सद्गुरु खेवैया, संसार सागर तारे,
तारी साधनानो स्पर्श मने आप मारा दादा. मने०॥३॥

अनहद वरसे कृपा तमारी, तोय रह्यो हुं कोरो,
अहंकार मारो दूर करीने, हवे तो प्रभु मने तारो,
तारा प्रेमनो स्पर्श मने आप मारा दादा. मने०॥४॥

(४५) तारी पासे एवुं शुं...

तारी पासे एवुं शुं! दोडी दोडी आवुं हुं...
मुजने ए ना समजातुं, हैयुं शाने हरखातुं,
तारा दर्शन ज्यां पामुं, शाने मनडुं मलकातुं,
तारा रूपमां एवुं शुं? दोडी दोडी आवुं हुं... ॥१॥
निंदर मुजने आवे ना, भोजन मुजने भावे ना,
तुजने जो हुं ना भेटुं, शांति मुजने थाये ना,
तारा दिलमां एवुं शुं? दोडी दोडी आवुं हुं... ॥२॥
मारी सघळी चिंताओ, घेरा दुःखनी घटनाओ,
तारा वेणे विसराती, वळगेली सहु विपदाओ,
तारा स्वरमां एवुं शुं? दोडी दोडी आवुं हुं... ॥३॥

(४६) तारी प्रीतिनी केवी असर...

(रागः तेरा मेरा प्यार अमर...)

तारी प्रीतिनी केवी असर, मळती मुजने साची डगर;
करुणासागर करुणा तुं कर, थाक्यो करीने भवनी सफर. ॥१॥
कहो प्रभुजी! हुं शुं करुं?, सहेवाती ना आ वेदना,
कृपा नजर जो तारी मळे, तो दूर थाये आ यातना,
मुज पर करजे तुं अमी नजर, भूली शकुं ना जीवनभर. ॥२॥
प्रभु! तारी छबी, तारुं स्मरण, चित्तमां सदा रमतुं रहे,
तारी यादने, तारुं ज नाम, सघळुं सदा गमतुं रहे,
भव अटवीना विघ्नो तुं हर, थावुं छे तुम सम अजरअमर. ॥३॥

(४७) तारुं धार्युं बधुं थाय छे...

(राग : ये तो सच है कि...)

तारुं धार्युं बधुं थाय छे, मने आजे ए समजाय छे;
ना हुं कोईनो गर्व लहुं, तारा विश्वासे जीवाय छे... ॥१॥
हुं शाने कहुं के आ मुजथी थयुं,
तारी करुणा छे अनहद ने फळ में लह्युं;
मारा मनमां प्रभु! कोई शुभ भावना,
तें जगाडी छे त्यारे आ सघळुं थयुं...
तारा नामे बधुं थाय छे,
लोको मारा गुणो गाय छे. ना हुं...॥२॥
हुं सफळ थाउं तो, एमां तारी कृपा,
तारा आशिष प्रगट छे छतां ये छूपा;
हुं छकी ना जउं, ए खबर राखजे,
कोईपण रीते संभाळी ले शतरूपा...
तारी करुणा तो छलकाय छे;
आंखो मारी भीनी थाय छे. ना हुं...॥३॥
मारुं हैयु प्रभु करे चिंता घणी,
तमे समजावो एने हे चिंतामणी;
वीतेलो समय भले जेवो गयो,
हवे राखो उदयने तमारो गणी...
मारुं अणगमतुं कंई थाय छे,
एमां मारुं भलुं थाय छे. ना हुं...॥४॥



(४८) तारे द्वारे आवीने कोई...

तारे द्वारे आवीने कोई खाली हाथे जाय ना
करुणानिधान करुणानिधान...
आ दुनियामां कोई नथी रे, तुज सरीखो दातार,
अपरंपार दया छे तारी, तारा हाथ हजार,
तारी ज्योति पामीने कोई, अंधारे अटवाय ना... करुणा०॥१॥
शरणे आवेलानो साचो, तुं छे रक्षणहार,
डगमगती जीवन नैयानो, तुं छे तारणहार,
तारे पंथे जनारो कदीये, भवरणमां भटकाय ना... करुणा०॥२॥
खुटे नहीं कदापी एवो, तारो प्रेम खजानो,
मुक्तिनो मारग बतलावे, एवो पंथ मजानो,
तारे शरणे जे कोई आवे,रंक पण रही जाय ना... करुणा०॥३॥



(५९) तारो सथवारो...

(राग : ओ जीरावला...)

तारो ने मारो संबंध न्यारो,
मने याद आवशे, तारो सथवारो... ॥१॥
तारा रूप उपर हुं ओवारी जाउं,
तारा गुणोथी अंजाइ जाउं;
बस टगर मगर थई, हुं जोउं तुजने,
जाणे आखी दुनिया मळी गई छे मुजने;
डुबतो हतो ने मळ्यो किनारो(२) मने याद...॥२॥
तारा मिलननी जे क्षणो हती आ,
मुज जन्मारानी शुभ पळो हती आ;

ए क्षणो हृदयमां कंडारी लीधी में,
आतमनी शेरी शणगारी लीधी में;
वसमो घणो छे, वियोग तारो (२) मने याद...॥३॥

(५०) तुं एक ज छे मारो...

के मारा मनमां तारा विना नहीं कोई रे,
मारा दिलमां तारा विना नहीं कोई रे,
मीठो साद दईने ते तो मारा उघाड्या नयन,
साचो पंथडो बताड्यो नें त्यां वहाव्यां किरण (२)
तुज स्नेहनी आ रिमझिम धारे,
भींजाउं वारे वारे... हैयुं करे छे टहुकारो,
तुं एक ज छे मारो (३) सथवारो... ॥१॥
मुज तन मन खीले, भावोमां झीले,
तुं छवाय ज्यारे थईने वादळी,
मुज हैयुं नाचे, तुज शरणुं याचे,
वागे ज्यारे तुज वाणीनी वांसळी,
हैयुं विमल अने शीतल अंतर कोमल बने,
तारा संगे मारुं मनडुं स्वामी, वत्सल बने! तुज...॥२॥
वैराग्य ने समता अंतरमां रमता,
तुं वस्यो जिनेश्वर हैये ज्यारथी!
संसार किनारे झट जावुं मारे,
संयम विना मन क्यांये रमतुं नथी,
तुं जे जीव्यो एवुं जीवन मारे जीववुं हवे,
मारी झंखनामां शमणामां एक तुं हवे. तुज...॥३॥



(५१) तुं खूब मने गमे छे...

(रागः आँखों से बताना...)

तुं खूब मने गमे छे, मारा व्हाला प्रभु!
मारा दिलमां तुं रमे छे, कामणगारा प्रभु!
जोई तारा नयनो, मन घेलुं बन्युं,
चूपकेथी कहुं हुं तने, Love You प्रभु! तुं खूब०॥१॥
तमारा दर्शनथी, रोम मारा खीले,
तमारी शीतल छाया, भवोभव जो मिले,
जीवन करुं समर्पण, कहुं Thank You प्रभु! तुं खूब०॥२॥
नाथ! मारा पामवा तुजने, बुद्धिने थयो छे व्हेम,
कोईने नहीं कहेशो तमे, बस हुं जाणुं छुं केम,
चाहुं चित्तथी प्रभुजी तने, जेम राजुल चाहे नेम,
धबक्युं हृदय जोता तने, थयो पहेली नजरे प्रेम,
सपनांमां आवी जा, तुजने याद करुं,
उपकारो कर्या ते अनंता, पल पल समरुं,
भीनी आंखेथी कहुं छुं, तने Miss You प्रभु! तुं खूब०॥३॥



(५२) तुं छे मुजने सौथी प्यारो ...

तुं छे मुजने, सौथी प्यारो...
मारो तात, मात, बंधु, सखा, साथ, तारा विना हुं नोंधारो,
मारो तुं एकज साचो सहारो.. तुं छे मुजने, सौथी प्यारो...
सागरने तरवो, मेरुने चढवो, एहथी पण दुष्कर, तुं मुजने मळवो...
तारी पाछळ हुं पागल थयो, आ दुनियामां हुं आगळ थयो,
तुं छे मुजने सौथी प्यारो...॥१॥

मुज चेतनाने तारो, खूब रंग लाग्यो छे,
तुज आस्थानो मीठो, आस्वाद चाख्यो छे,
मैं मांग्युं लोभे-लोभे, ते आप्युं खोबे-खोबे,
देवामां तें बे हाथे, ना संकोच राख्यो छे...
तारी पाछळ हुं...॥२॥

सागरना उछळे तरंगो, एम माहरा अंगो,
छे तुज रंगे रंगाया, धरे नित-नित उमंगो,
लाग्युं छे मुजने आजे, गावुं छुं एक अवाजे,
हूं तुजमां ने तुं मुजमां, आ अभेद बांध्यो छे...
तारी पाछळ हुं...॥३॥

गुरु अजितनी भक्तिना, मेळववा आदर्शो,
तारा संगे जे गुरुवरना, वीत्या वर्षो-वर्षो,
मळजो एवा संस्कारो, खूब लब्धिना विस्तारो,
विश्व मंगलना भावे, तुजने आराध्यो छे...
तारी पाछळ हुं...॥४॥

(५३) तुं प्यार का सागर है...

तुं प्यार का सागर है (२) तेरी एक बुंद के प्यासे हम
लौटा जो दिया तुमने, चले जायेंगे जहां से हम... तुं०॥१॥
घायल मन का, पागल पंछी उडने को बेकरार
पंख है कोमल, आंख है धुंधली, जाना है सागर पार (२),
अब तुं हि इसे समजा, राह भूले थे कहाँ से हम... तुं०॥२॥
इधर झूमती गाये जिंदगी, उधर है मोत खडी,
कोई क्यां जाने कहां है सीमा, उलझन आन पडी,
कानों में जरा कह दे, कि आये कौन दिशा से हम... तुं०॥३॥



(५४) तुं प्रेम दरियो...

तुं प्रेम दरियो कृपसिंधु तुं, बंधनथी मुक्ति अपावे छे तुं,
तारी नजर मां नजराउं छुं, खुदने निहाळुं ए दर्पण छे तुं,
केटला जनम थी मांग्युं करगरी,त्यारे मळ्यो तुं करुणामूर्ति,
प्रभुमां जे जोडे, संग ना छोडे ,मोक्षे लई जाय जे होंशथी,
आतम जगाडे ए तत्त्व छे तुं,मारा दर्द नी दवा एक तुं,
तुं प्रेम दरियो... ॥१॥

अनंत धैर्य धरीने ,घडी रह्यो तुं मुजने,
आत्मशिल्पी तुं मारो, टांकी रह्यो तु प्रेमे,
अनंत अवगुण मुजमां छतांये ,हाथ ग्रह्यो ते स्नेहे ,
आव्यो ना होत तुं सामे चाली, कोण उगारत मुजने?
तुं जो नथी तो शून्यावकाश, अर्थ विनानुं मारुं जीवन,
तारा सिवाय आ आखी दुनियामां ,मारी फिकर करनारुं छे कोण?
अकंप करुणानिधान छे तुं,अनंती मातानुं हेत छे तुं,
तुं प्रेम दरियो... ॥२॥

तारा चैतन्यस्पर्शे, झळहळ अजवाळुं थाय,
कृपाना एक ज किरणथी, अंतर अंधारुं जाय
तारी अमीद्रष्टि खोई बेठुं हुं,एवी न कोई मति हो,
राजीपो तारो गुमावी बेसुं,एवी न कोई कृति हो,
पामु जो तुजने,पामीश परमने,जागी दिलमां परमेश्वरबुद्धि,
तारा अस्तित्वना पावन स्पंदन,सहेजे करावशे आत्मसिद्धि,
परमात्मानी प्रतिकृति तुं,परमकृपाळु परम प्रिय तुं...
तुं मारी तृषा ने तृप्तिए तुं,तुं मारी प्रेरणा प्राप्तिऐ तुं,
तुं प्रेम दरियो.. ॥३॥

तुं मारा आंसु ने स्मित पण तुं,तुं मारो तडको ने छांयडो पण तुं,
भावोमां भरतीनुं कारण छे तुं,मोहना झेरनुं मरण छे तुं,
बीजो श्री राम ने महावीर तुं,आ कलिकाले कल्पतरु!
आ कलिकाले कल्पतरु,आ कलिकाले कल्पतरु... ॥४॥

(५५) तुं मारो नाथ, तुं मारो साथ...

(राग : कैसे बताए क्यूं तुजको...)

तुं मारो नाथ, तुं मारो साथ, तुं मुज प्राण आधार!,
हुं छुं अनाथ, झालो मारो हाथ,
डूबी रह्यो मझधार!, हुं तारो छुं... ॥१॥
झंखुं छुं तारा मिलनने, मारा दिलमां मारा नाथ!,
चाहुं छुं तुजने ओ नाथ!, कर मुजने तुं सनाथ!,
स्वीकारो मारी विनंती, मने राखो तुम पास,
तारो छुं, तारो हतो, रहेवानो तारो छुं... ॥२॥
तुं छे मारुं जीवन, प्रभु! तुं छे मारी जिंदगी,
तुं छे प्रभु मारी बंदगी,
तुं छे मारी दृष्टि, प्रभु! तुं छे मारी सृष्टि,
तुं छे प्रभु मारी हस्ती,
तारा भरोसे छुं, तारा सहारे छुं,
शरणे हुं आव्यो तारा, चरणे हुं लाग्यो आजे,
अर्पण समर्पण मारुं जीवन तुजने नाथ!,
आवीने तारो ने नाथ!, तडपावो ना हवे... ॥३॥
तारा विना सूनुं सूनुं लागे छे मने,
तारा विना क्यांये ना गमे,
शोधी शोधी आंखो मारी थाकी गई हवे,
तारा विना दिलने ना गमे,

रोज बोलावुं छुं!, रोज पुकारुं छुं!,
दिलडाना देव तुजने , खूब खूब चाहुं आजे,
अर्पण आ जीवन मारी धडकन तुजने नाथ!,
आवीने तारो ने नाथ!, तडपावो ना हवे... ॥४॥



(५६) तुज करुणाधारमां...

(राग : तुम गगन के चंद्रमा...)

तुज करुणाधारमां हुं नित्य भींजातो रहुं ,
व्हाला नेमिनाथ प्रभुजी, शरण हुं तारुं लहुं... तुज...॥१॥
तुं ज छे मारुं जीवन, तारा विना चित्त ना ठरे,
नाम तारुं हरपळ मारा, उरमां धबक्यां करे,
वियोगनी वसमी अवस्था, केम हुं जीवित रहुं... तुज...॥२॥
तुं वसे छे केटले दूर, हुं अहीं सबड्या करुं,
तुं मजेथी महालतो, हुं अहीं तहीं भटक्या करुं,
प्राणप्यारा नही मळो तो, आयखुं पुरुं करुं... तुज...॥३॥
प्रीतडी तारी ने मारी, केटली उमदा हशे,
एक घडी तुजने ना भूलुं, केवा ऋणबंधन हशे,
मन मनावुं क्यां सुधी हुं, वियोगमां झूर्या करुं... तुज...॥४॥
आंसुओ एक दिवस मारा, तुजने पीगळावशे,
आश छे एवी हृदयमां, एक'दि तुं मळवा आवशे,
तुज भरोसे छे आ सेवक, एथी वधु हुं शुं कहुं ... तुज...॥५॥



(५७) तुजने जोया करुं...

तुजने जोया करुं, तारी सन्मुख रहुं ;
तारा होठ फडफडे, तारी आंखो पटपटे,
एनी राह जोउं छुं (२) ॥१॥

तने मनथी हुं निशदिन समरतो रहुं,
तारी आशामां जुग जुगथी वाट जोउं छुं,
तारी अमीदृष्टि माटे, हुं तो तरस्या करुं (२). तुजने०॥२॥
ज्यारे भावो भरीने तारी भक्ति करुं,
त्यारे उन्मादे हैयुं न साचवी शकुं,
तारी आंखो पटपटे, एनी राह जोउं छुं (२). तुजने०॥३॥
कोई परभवनी प्रीति मारी जागी गई,
तने मळतां ज भीति बधी भागी गई,
हवे दिव्यचक्षु दे, हुं तने ओळखी शकुं (२). तुजने०॥४॥
मारा आतमने मार्ग चींध ए ज मांगुं छुं,
तारुं हैयुं मने ओळखी ले ए ज झंखुं छुं,
तुं बांहो जो पसारे, एमां हुं समाई जाउं (२). तुजने०॥५॥
तारा विरहे अश्रु मारा नयणे वहे,
क्यारे आवीने दादा मारा आंसु लुंछशो,
तुं केम ना सुने, हुं तने रोज वीनवुं (२). तुजने०॥६॥

(५८) तुम से हे जोडी...

तुम से हे जोडी, अवर संग तोडी,
साची प्रीत मैंने, तुम से हे जोडी...
जो तुम दीवा प्रभु, तो हम बाती;
जो तुम तीरथ, तो हम जात्री... तुम से...॥१॥
जो तुम गिरिवर, तो हम मोरा;
जो तुम चांद तो भये हम चकोरा... तुम से...॥२॥
जहाँ जहाँ जाउं, वहाँ तेरी सेवा;
तुमसा हो ठाकुर, और न देवा... तुम से...॥३॥

आज्ञा का पालन, यहि मेरी पूजा,
तुम हि तुम हो, कोई न दूजा,
तुम से है सब कुछ रोशन,
कन कन में तुं है... साची प्रीत.. ॥४॥

(५९) तू है तो...

तुझसे मेरा जीना मरना, जान तेरे हाथ में,
सौ जन्म भी कम क्यों लागे, लागे तेरे साथ में,
मैं मुसाफिर तू मुसाफिर, इस मोहब्बत के सफर में,
दो अकेले रोएं मिलके, मिलके दोनों रब के घर में,
साथ तेरे ना सफर, वो सफर नहीं लगता... ॥१॥
तू है तो दिल धडकता है, तू है तो सांस आती है,
तू ना तो घर घर नहीं लगता, तू है तो डर नहीं लगता... ॥२॥
तू है तो गम ना आते हैं, तू है तो मुस्कुराते हैं,
के तेरे बिन सो नहीं सकते, किसी के हो नहीं सकते
तू है तो... ॥३॥
कोई नहीं मेरा, जरूरत तेरी,
लागे ना जिया, देखूं जो ना सूरत तेरी,
तू है तो.. ॥४॥

(६०) तेरे एहसान का बदला...

(राग : दयासिंधु दयासिंधु.../मुझे तेरी महोबत का...)

तेरे अहेसान का बदला, चूकाया जा नहीं शकता,
प्यार तुने दिया ऐसा (२), भूलाया जा नहीं शकता... ॥१॥
अगर मुज को तुं ना मिलता, बडा मुश्किल गुजारा था;
जो पहुंचा हुं बुलंदी पर (२), में एक तूटा सितारा था,
तुजे दुनिया की दोलत से, तुलाया जा नहीं शकता... ॥२॥

मेरी हर सांस पर दादा, सिर्फ अधिकार तेरा है;
मिला जो भी मिला तुजसे, मै क्या था और क्या मेरा है,
तुजे शब्दो के तरकश में, सजाया जा नहीं शकता... ॥३॥
बडी ऊंची तेरी रहमत, बडी छोटी जुबां मेरी;
तुजे दादा समज पाउं, वो हस्ती है कहां मेरी,
तेरी रहमत को शब्दो में, भुलाया जा नहीं शकता.. ॥४॥

(६१) तेरे द्वार पे आया हुं...

(रागः मने ज्यां जवानुं मन...)

तेरे द्वार पे आया हुं, एक बात सुनानी है,
वीतरागी! तेरी मेरी, ये प्रीत पुरानी है...
तेरे दर्श बिना मेरी, अंखिया ये प्यासी है,
सूना मेरा जीवन, मन में भी उदासी है,
भक्ति के सहारे ही, जिंदगानी बितानी है... ॥१॥
दुनिया में एक तुं ही, मुजको तो प्यारा है,
जीवन की नैया का, एक तुं ही किनारा है,
मझधार में है नैया, अब राह बतानी है... ॥२॥
तुं नाथ है त्रिभुवन का, और सबका स्वामी है,
में स्नेह का दीपक हुं, तुं उसकी बाती है,
कर्मों के बंधन से, मुजे मुक्ति दिलानी है... ॥३॥

(६२) दर्शन क्यारे देशो...



(राग : मौला मेरे लेले मेरी जान...)

मने तारी याद सतावे, पल-पल तारा गुणो संभारे,
झंखु छुं तुजने दिवस रात,दर्शन क्यारे देशो ओ प्रभुवर!... ॥१॥

तारी छबी छे प्यारी, करुणानी तुं तो छे क्यारी,
विनवुं हे उपकारी! लेजो अमने उगारी,
प्रभुवर! तारा हुं दर्शन चाहुं, मुज जीवन धन्य बनावुं... ॥२॥
दिव्य तमारी आ छाया भवोभव मुजने देजो,
आज्ञा तमारी पाळु आशिष एवा देजो,
हुं तो मस्तक चरणे झुकावुं, मुज आतमदर्शन हुं पामुं... ॥३॥
तारा विना मुज जीवन, फूलो विनानुं मधुवन,
तुजने पामी महेकावुं, गुणलां तारा हुं गावुं,
जे जे गमे तुजने ए ज हुं करुं, आ भवथी शीघ्र हुं तरुं... ॥४॥

(६३) दादा तारा पगला पड्या ने...

दादा तारा पगला पड्या ने आनंद छायो (२)
उत्सव अनेरो आज आंगणिये आव्यो
पगला पड्याने आनंद छायो ॥१॥
अणधार्या आवीने अमने मळ्या छे (२)
पूरव जनमना पुण्यो फळ्या छे (२)
भक्तिना रंगे आखो संघ रे रंगायो,
पगला पड्याने आनंद छायो. दादा तारा...॥२॥
मनना मंदिरीये आसन बिछाव्या (२)
मारग मारगमां मोतीडा वेराव्या (२)
रोमे रोमे राजीपो केवो रे समायो,
पगला पड्याने आनंद छायो. दादा तारा...॥३॥

(६४) दीयो दयामय तव दर्शननी भिक्षा...

दीयो दयामय तव दर्शननी भिक्षा दीयो भिक्षा,
पांपणने पलकारे प्रभुजी, मने तमारी प्रतीक्षा... ॥१॥

उंचे उंचे आभनी पेले, पार तमे जई बेठां,
अमे तो चडवानुं चूक्या ने, पडी गया बहुं हेठां,
क्यारे मळशो करुणासागर, खूटे अमारी तितिक्षा... ॥२॥
जुग जुगथी झंखु छुं तमने, जगनी माया भूली,
थईने रहेवुं अंतर्यामी, तारा चरणनी धूली,
हवे तो प्रगटो आ रुदियामां, क्यां लगी लेशो परीक्षा... ॥३॥
आंखोना दर्पण धुंधवाया, आंसुडां पाडी पाडी,
जो मुजने छेह देवो तो, माया शीद ने लगाडी,
झुरी झुरीने जीववानी, शाने करो छो शिक्षा... ॥४॥

(९५) दोषथी हर्योभर्यो छुं...

(राग : आँख है भरी भरी...)

दोषथी हर्योभर्यो छुं छतां, दादा! तुजने मळवानी घणी आश छे,
हुं भले नीरखी शकुं ना तने, दादा! तुं परंतु मारी आसपास छे! ॥१॥
भले तुं कोयलना गाने, भले कोई ग्रंथना पाने,
मने तुं आवीने मळजे, हो दादा! कोई पण बहाने,
जळ बधां में पी लीधां आ विश्वना हो दादा!
तुजने पीवानी हवे प्यास छे... हुं भले०॥२॥
वस्यो तुं धरती गगनमां, वस्यो तुं सुंदर मधुवनमां,
वस्यो तुं मां अने संतमां, छतां शांति नथी मनमां,
दृष्टिगोचर था हवे, आ विश्वमां हो दादा!,
तुज विना अहीं सहु निराश छे... हुं भले०॥३॥
वस्यो मीरांनी भक्तिमां, वस्यो साधकनी शक्तिमां,
लाज राखो हवे मारी, रहीने हरपळ स्मृतिमां,
तारो मानी बाळने संभाळजो हो दादा!,
यादोमां वितावुं दिवस ने रात रे... हुं भले०॥४॥

हुं ने मारुं ने मारामां, ए ज वातो मने गमे,
बीजाना गुण तणी सरगम, हृदयमां खूब रे दमे,
हुं तणा समुद्रमां डूबी गयो हो दादा!,
तारी पासे आवी एक लाश छे... हुं भले०॥५॥

(९९) धर्मना दायक तमे धुरंधर...

(राग : ये सब तुम्हारा करम है...)

धर्मना दायक तमे धुरंधर, तमे परमतारक शुभंकर,
तमे कृपानो सरस सागर, तमने आपुं अनंत आदर.
साहेब... साहेब... साहेब...साहेब ...
तमे तो मुजने बधु ज आप्युं, में तो तमोने कांई न आप्युं;
तमे छो मारा जीवनदाता, तमे ज पिता तमे ज माता;
हुं छुं तमारो, तमे छो अमारा (२)
आ वात तमने कही दउं छुं... ॥१॥
तमारी पासे ज बेसवुं छे, तमारी छायामां वसवुं छे;
तमारी भक्तिथी खुशी मळे छे, तमारी शक्तिथी दुःख टळे छे;
हुं छुं तमारो, तमे छो अमारा (२) आ वात०॥२॥
साहेबजी... मारा साहेबजी...
याद करुं छुं हर पळे, मनमां धरुं छुं हर पळे;
जे तमारामां मळे, तेवुं बीजामां ना मळे;
साहेब मारा प्राण तमे छो, साहेब मारुं ध्यान तमे छो;
सौथी सलामत स्थान तमे छो, आतम तत्त्वनुं ज्ञान तमे छो;
हुं छुं तमारो, तमे छो अमारा (२) आ वात०॥३॥
हुं तमारा संगमां दिन-रात रहेवा चाहुं छुं,
मारा मननी वात बधी तमने ज कहेवा चाहुं छुं,
तमारा दरबारनी देवर्द्धिने जोया करुं,
क्यारे मळशे परमपद ए चिंताथी रोया करुं,

तमारी पासे ज बेसवुं छे, तमारी छायामां वसवुं छे;
तमारी भक्तिथी खुशी मळे छे, तमारी शक्तिथी दुःख टळे छे;
हुं छुं तमारो, तमे छो अमारा (२) आ वात०॥४॥

(६७) नवाब श्री शंखेश्वरा...

(राग : गिरनारे श्री प्रभु नेम छे...)

पूनमना चांदाने जोई, उछळे छे दरिये मोजा,
पूनमना दादाने जोई, भावोनां उछळे दरिया,
धीर गंभीर मुखडुं आजे, खूब खूब मलकाय छे,
ए जोईने पूनमनो, चांदो पण हरखाय छे...
नवाब श्री शंखेश्वरा... रूवाब श्री शंखेश्वरा...
मारा बधा सवालोनो, जवाब श्री शंखेश्वरा.. ॥१॥

पूनमना भक्तोनी भीड, शाने उभराय छे,
पूनम ने पारसनों, राशीमेळ लखाय छे,
भक्तोने मळवानुं मन, दादाने बहु थाय छे,
माटे दादानों हुकम छे, एवुं अहीं बोलाय छे...
नवाब श्री शंखेश्वरा...॥२॥

कोइनी दस ने कोइनी वीश, सो बसो ने पांचशो,
मारा जेवा भक्तनी, एक पूनम स्वीकारशो,
पूनमना सथवारे, दादा अमने तारशो,
भाग्यमां पधारीने, यशने खूब विस्तारशो...
नवाब श्री शंखेश्वरा...॥३॥



(६८) नाता जोड लिया...

नाता जोड लिया तुमसे नाता जोड लिया,
ईस जग की माया नगरी से रिश्ता तोड लिया,
हाथ में हाथ लिए, साथ चलना दादा,
आश बस तुमसे है, लाज रखना दादा,
दुनिया वाली गलियों से, मुंह ही मोड लिया. ईस जग०॥१॥
कृपा जो हमपे हुई, तो ये विश्वास जगा,
किया जितना तुमने, करे कोई ना सगा,
जीवन का हर फैसला,तुज पे छोड दिया. ईस जग०॥२॥
ये रिश्ता तुमसे है, तेरी माया से नहीं,
रिझाया दिल से है, सिर्फ काया से नहीं,
सेवक को ईतना काफी है, तुमने गौर किया. ईस जग०॥३॥



(६९) नाम तमारुं गमी गयुं छे...

(राग : सिद्धारथना राजकुंवरनुं...)

नाम तमारुं गमी गयुं छे, कहो अमे शुं करीये, (२)
रात दिवस ए नाम जपीने, श्वासे श्वासे स्मरीये. ॥१॥
नाम बीजा कोईनुं अमने, याद हवे ना आवे,
एक तमारा नामनी साथे, खूब अमोने फावे,
नामनी होडीमां बेसीने, भवनो दरियो तरिये. ॥२॥
एवुं कंईक करो के खुदनुं, नाम अमे विसरिये,
अने तमारा नामनी साथे, भीतरमां विस्तरीये,
एक अगोचर धाम अलखनुं, आपना नामे धरिये. ॥३॥

(७०) निष्फळ अमारुं जीवन...

(राग : बडे अच्छे लगते है...)

ओघा अनंती वार मैं लीधां, सघळा गया ए निष्फळ,
आ वार प्रभुजी तारा सहारे, मोहने करशुं निर्बल,
निष्फळ अमारुं जीवन...
आ भोगोनी पाछळ, वहे छे भगवंत... ॥१॥
तारा वचन पर श्रद्धा मारी, केम करे छे हलचल,
गुणमां ज सुख छे, ने दोषोमां दुःख छे,
समजे ना मन मारूं पागल,
निष्फळ अमारुं जीवन... ॥१॥
पांच प्रहरनो स्वाध्याय करजो, आपे कीधुं हरपळ,
पण मन अमारुं केवुं चंचल, निंदा विकथा पाछळ...
निष्फळ अमारुं जीवन... ॥३॥

(७१) पगथिये राह जोउं छुं...

(राग : मुझे तेरी महोब्बत का सहारा...)

पगथिये राह जोउं छुं, इशारो कर हवे स्वामी!
जरा नजदीक बोलावी, समावी ल्यो हवे स्वामी! ॥१॥
तमारा महेलमां दीवा, जले छे रोज झगमगतां,
अमे अंधारने ओढी (२), ऊभा आजे'य डगमगता;
तमारा ओटले बेठां, भीतर बोलावने स्वामी! जरा०॥२॥
भरी संगीतनी महेफील, तमे ज्यारे हतां बेठां,
पूनमनी ए भीनी राते (२), अमे तुज द्वार पर बेठां;
परंतु एक छे आशा, स्वीकारी ल्यो हवे स्वामी! जरा०॥३॥
कोई तरुवर तणी छांये, तमे शोभो ऋषि जेवा,
अने सिंहासने बेसो (२), तो लागो राजवी जेवा;
उदयने कई रीते मळवुं, विचारी ल्यो हवे स्वामी! जरा०॥४॥



(७२) परमात्मा बनी जाशे मारो...

परमात्माथी रंगाशे मारो आत्मा,
परमात्मा बनी जाशे मारो आत्मा...
थाशे प्रभुनुं मिलन वातवातमां,
परमात्मा बनी जाशे मारो आत्मा... ॥१॥
आतमने परमातमनो जे संग जड्यो छे राज...
हरख हरख मन हरख हरखमां झूमी रह्युं छे आज...
मारुं हृदय प्रभु, तारुं मंदिर छे,
तुं हृदये वसे ए, मारी तकदीर छे,
केवा शुभ परिणामो जागे आ मुलाकातमां,
परमात्मा बनी जाशे मारो आत्मा... ॥२॥
तारा अंजननी, केवी शुभपळ हशे,
तारा प्राण थकी, मूर्ति जीवंत थशे,
राजप्रिय बनी जाशे तु एक ज रातमां,
परमात्मा बनी जाशे मारो आत्मा... ॥३॥



(७३) परमातमा...

(राग : वे कमलेया)

परमातमा... परमातमा...
परमातमा... तुजमां मोहायुं मन...
तुज स्मित परमनी प्रीत अनोखी जगावे,
ललचावे तुज गुण रसने माणवा,
आतमने परमातमनो रंग लगावे,
तलसावे हरपल तुजमां लयलीन थवा,
तुज प्रीतमां, तुज स्मितमां,
परमातमा... तुजमां मोहायुं मन... ॥१॥

नहीं अस्त-व्यस्त हवे मस्त छुं,
तुज चरणोमां आश्वस्त छुं,
वालमा... परमातमा...
तुज विण हरक्षण हुं त्रस्त छुं,
भले होय उदय तो'य अस्त छुं,
वालमा... परमातमा...
प्रभु गुण अनुभवनी मस्ती प्यारी लागे,
हवे समतारसमां डूबकी व्हाली लागे,
प्रभु संगे मळे ते खुशी न्यारी लागे...
मन रंगायुं छे आज परम वैरागे,
चल, संयमस्पर्शे आतम भींजवा,
प्रभु प्रीतमां घेलो दुनियादारी त्यागे,
भगवद् भक्तिथी अंतरमनने रंगवा,
रहेवुं हवे तुज संगमां...
परमातमा... तुजमां मोहायुं मन... ॥२॥

(७४) पल पल तुंही...



पल पल तुंही, रहे मोरे मन में,
हलचल और न कोई;
चंचलता चल गई मोरे मन से,
तुज संग सुधबुध खोई (२) ॥१॥
भूख न लागे, प्यास न जागे,
मन भी कुछ ना मांगे;
अंखिया मेरी, खोल दी तुंने,
जग ये अनोखा लागे. पल०॥२॥

धन है पराया, ये तन है पराया,
अपना एक आतमजी;
तुज को मिलकर मिलुं आतम को,
नंदप्रभा के प्रीतमजी. पल०॥३॥



(७५) प्रभु वसंतना पगला...

प्रभु वसंतना पगला बनीने आवे छे,
अळवतर दरियो सुवासोनो, प्रभुजी लावे छे... ॥१॥
हवाने स्पर्श मले छे, अनेरी मौसमनो,
प्रभुनु स्मित, सृष्टिने सतत सजावे छे... ॥२॥
नवा ते रंग धरे छे, अहीं बगीचाओ,
प्रभुनो स्नेह सुमनने सुवास आपे छे... ॥३॥
पधारो आज प्रभुजी, अमारा अंतरमां,
प्रभुनुं तेज तिमिरने, दूरे हटावे छे... ॥४॥
खीली ऊठे छे कळीओ, भरे छे चेतनने;
प्रभुनी प्रीत धराने, लीली बनावे छे... ॥५॥



(७६) प्रभु! तमारा पगले पगले...

प्रभु! तमारा पगले पगले, पा पा पगली मांडी छे;
हवे तो अक्षर पाडो प्रभुवर!, मारी कोरी पाटी छे. ॥१॥
बाळक छुं हुं, मने खबर क्यां, शुं छे साचुं जीवन,
पडी जाउं ना क्यांये प्रभु!, करो रोम रोम संजीवन,
सिंचन करजो मारा कण कणमां, मारी सूकी माटी छे. ॥२॥
बाळक पकडे मानी आंगळी, एम हुं झालुं छुं तमने,
वर्षा राणी भरे सरोवर, एम भरी दो अमने,
अमे अमारी हथेळीओमां, मिलननी रेखा आंकी छे. ॥३॥

(७७) प्रभु! तें मने जे...



प्रभु ! तें मने जे आप्युं छे, एनो बदलो हुं शें वाळुं!
बस तारी भक्ति करी करीने, मारा मनडाने वाळुं. प्रभु तें०॥१॥
प्रभु! नरक निगोदथी तें तार्यो,
मने अनंत दुःखोथी उगार्यो,
तारा उपकार अनंता छे... एनो बदलो०॥२॥
अहीं लगी पहोंच्यो प्रभु तारी कृपा,
तुज शासन पाम्यो तारी कृपा,
जैनधर्मतणी बलिहारी छे... एनो बदलो०॥३॥
प्रभु! मोक्ष नगरनो सथवारो,
हुं मोह नगरमां वसनारो,
तुं भवोभवनो उपकारी छे... एनो बदलो०॥४॥

(७८) प्रभु! विरह तारो हुं नहीं रे सहीश...



(रागः हवे वात मारी कोने जईने कहीश)

तुं ज मारा प्रेमनुं ने प्रीतनुं सरनामुं,
तुं ज मारो स्नेह छे वितराग,
तुं ज मारो छे अनादि काळनो भवभेरुं,
साथ छोडी ते लीधुं शिवराज... ॥१॥
रातदिवस साहिबा बस तने झंख्या करुं,
भक्ति केरी कुंज गलीओमां तने गोत्या करुं,
हवे विरह तारो हुं नहीं रे सहीश,
मारा हृदयमां ध्यान तारुं धरीश... ॥२॥
हारतो हुं होउं ज्यारे, दाव संभाळी लेतो,
हो हजारो छेद तो ये, नाव उगारी लेतो,
हवे विरह तारो हुं नहीं रे सहीश,
तुज चरणे रहेवा श्रमण हुं रे बनीश... ॥३॥

तारुं मुख देखुं तो नयनने, परम हर्ष थतो,
तुं मलकाय तो, आनंद मारो, निरवधि बनी जतो,
तुं जो राजी थईश तो मारो, आतमा राजी थशे,
तुं जो ताळी दईश तो मारुं, गीत आ गाजी जशे,
हवे तारी-मारी दूरी दूर करीश,
हुं भक्तियोगे तारा जेवो थईश,
हवे विरह तारो हुं नहीं रे सहीश,
अध्यात्मयोगे राज तारुं लईश... ॥४॥

(७९) प्रभुने सर्व सोंपीने...

(राग : युगोथी हुं पुकारुं छुं.../मुजे तेरी महोब्बत का...)

प्रभुने सर्व सोंपीने, प्रभुनुं धार्युं थावा दे,
प्रभुनी आ बदनबंसी, प्रभुने तुं बजावा दे. ॥१॥
प्रभुना सूरथी न्यारो, करे तुं सूर ममतानो,
प्रभुना सूरमां तारा, हृदयनो सूर मिलावी दे. ॥२॥
प्रभु शिरस्वामी छे मोटो, पछी शो छे तने तोटो,
प्रभुना अंकमां बेसी, प्रभुनुं धार्युं थावा दे. ॥३॥
प्रभुना जगत बाझारे, बन्यो सेवक तुं व्यवहारे,
प्रभुना नाम पर त्यारे, नफो नुकशान थावा दे. ॥४॥
प्रभुनी नाट्यशाळामां, बन्यो नरदेह आ ज्यारे,
रमाडे खेल खेलाडी, वृथा शुं तुं कूदे त्यारे. ॥५॥
न धार्युं थाय तारुं तो, चिंता तलभार ना करतो,
प्रभुनी ए ज छे इच्छा, प्रेमे स्वीकार तुं करजे. ॥६॥

(८०) फरुं छुं पहाड ने जंगल...

(राग : युगोथी हुं पुकारुं छुं...)

फरुं छुं पहाड ने जंगल, कहो ने क्यां छुपाया छो;
मनोहर मीठडा मोहन, कहो ने क्यां छुपाया छो... ॥१॥
तृषातुर आंखडी मारी, तलसती रात दिन व्हाणे;
नयननी दिलगीरी खातर, कहोने क्यां... ॥२॥
फरुं हुं क्यां सुधी वन-वन, प्रतीक्षा आपनी पल पल;
चाहुं छुं हुं झलक तारी, कहोने क्यां... ॥३॥
प्रभु भीतर अगर बाहिर, समोसरणे के मुक्तिमां;
रमो छो शुं आ ब्रह्मांडे, कहोने क्यां... ॥४॥
हृदयना छो तमे स्वामी, हटावी द्यो हवे अंतर;
करी करुणा हवे मुज पर, कहो ने क्यां... ॥५॥

(८१) बहु आश धरीने नाथ...



बहु आश धरीने नाथ, तमारे शरणे आव्यो छुं;
मुज पास नथी कांई नाथ, तमारे शरणे आव्यो छुं.. ॥१॥
में शा अपराधो कीधां, मारा नाथे अबोला लीधां;
नथी विरह खमातो राज, तमारे शरणे आव्यो छुं. ॥२॥
तमे छोडी गया मधदरिये, हवे धीरज ना रही हैये;
मन करतु बहु कल्पांत, तमारे शरणे आव्यो छुं. ॥३॥
रडी रडीने आंखो थाकी, हजु केटली सजा छे बाकी;
मारा माफ करो अपराध, तमारे शरणे आव्यो छुं. ॥४॥

(८२) भगवान! है कहां रे तुं...



है सुना ये पूरी धरती तुं चलाता है,
मेरी भी सुन ले अरज मुझे घर बुलाता है,

भगवान! है कहां रे तुं, हे प्रभु है कहां रे तुं,
है सुना तुं भटके मन को राह दिखाता है,
मैं भी खोया हुं मुझे घर बुलाता है,
भगवान है कहां रे तुं हे प्रभु! है कहां रे तुं. ॥१॥
मैं पूजा करुं या सेवा करुं, या दर्श करुं दिन रे,
ना तुं मंदिर मिले, ना तुं गिरजे मिले,
तुझे ढूंढे थके मेरे नैन (३)
जो भी रस्में हैं वो सारी मैं निभाता हुं,
इन करोडो की तरह मैं सर झुकाता हुं... भगवान०॥२॥
तेरे नाम कंई, तेरे चेहरे कंई तुजे पाने की राहें कंई,
हर बार चला, और तुं ना मिला,
तुं क्या चाहे में समजा नहिं (३)
सोचे बिन, समजे जतन, करता ही जाता हुं,
तेरी जीद सर आँखो पर रखके निभाता हुं. भगवान०॥३॥



(८3) भगवान पधारे छे...

भगवान पधारे छे... भगवान पधारे छे...
केसरभीनी पगली पाडी पुण्य वधारे छे.. भगवान...॥१॥
वृक्षे वृक्षे डाळ पांखडी, झूकी-झूकीने राह जुए,
रस्ते रस्ते तेज भरेलां, दीवडा एनी राह जुए,
फूलो अणधार्या महेकीने एनी छडी पुकारे छे.. भगवान...॥२॥
आजे छोड उपरनां मने केम फूल देखाय नही;
प्रभुनां स्वागतमां फूलोथी डाळ उपर रहेवाय नही.
उदय कहे, प्रभुजीनां पगलां सहुना जनम सुधारे छे. भगवान...॥३॥

(८४) भीनी है अँखिया...



भीनी भीनी भीनी भीनी भीनी है अँखिया (२)
सुमिरन सब उपकार तिहां रे,
आनंद अंसुअन लीनी है अँखिया. भीनी...॥१॥
मोह मिथ्यात्व से मुगति दी है,
जैसे अंध को दीनी है अँखिया. भीनी...॥२॥
विषयलगन की अगन बुझाई,
शीतल शीतल कीनी है अँखिया. भीनी...॥३॥
प्रभु मिले तो खीले है अँखिया,
प्रभु नहीं तो झीनी है अँखिया. भीनी...॥४॥
नंदप्रभा के राज राजेश्वर,
रूप अनुप रस पीनी है अँखिया. भीनी...॥५॥

(८५) मंदिर पधारो स्वामी! सलुणा...



(राग : तेरे सूर और मेरे गीत...)

मंदिर पधारो स्वामी! सलुणा, (२)
तमारा विना नाथ!...कयांये गमे ना. मंदिर पधारो०॥१॥
अंतरनी आंखेथी आंसु वहे छे,
प्रभु मुख जोवा आ दृष्टि चहे छे.
हवे नाथ! झाझुं... तलसावशो ना. मंदिर पधारो०॥२॥
स्मरण जन्म जूना स्मृति मांहे आवे.
नयन शोधता तमने... प्रभु आद्रभावे,
के मुख परथी दृष्टि... हटावी हटे ना. मंदिर पधारो०॥३॥
हरखाती पांपण प्रभु तमने जोई.
हवे दिन विरहना वीते रोई रोई,
वियोगनुं दुःख... आवुं हशे ना. मंदिर पधारो०॥४॥

तमे जई वस्या स्वामी! स्वरूप महेलमां,
रझळता रह्या अमे संसार वनमां,
हवे नाथ! अंतरथी... अळगा थशो ना. मंदिर पधारो०॥५॥
प्रभु! अमने तारो उगारो उगारो,
मूकी मस्तके हाथ पार उतारो,
कृपावंतने झाझुं... कहेवुं घटे ना. मंदिर पधारो०॥६॥



(८६) मा बनीने आवो प्रभुजी...

मा बनीने आवो प्रभुजी, मारे बाळक थई तने मळवुं छे;
खूब थया एकठां आंसुओ, मारे तारा खोळे रडवुं छे. ॥१॥
ना पाम्यो हुं हुंफ के लागणी, ना हालरडा हैयानां,
को'क दिवस तो आव प्रभु तुं, हाल पूछवां छैयानां;
पल बे पल तारा विरहमां पागल थई मारे रडवुं छे. ॥२॥
जगत कहे छे तुं जग जननी, तुं वात्सल्य तणुं झरणुं,
तुं ज हसावे तुं ज रडावे, तुं ज सकल जगनुं शरणुं;
वत्स बनीने वात्सल्य पामवा, मारे जीवन तुजने धरवुं छे. ॥३॥
मातानुं वात्सल्य मळ्युं ना, एनुं जीवन झेर बने,
तने खबर शुं पडे वितरागी, केवी वेदना सहेवी पडे;
मा बनीने खोळे लई ले, मारे प्रेमथी हैयुं भरवुं छे. ॥४॥



(८७) मारा तारणहार...

तुज विण मारुं कोई न बीजुं, मारा तारणहार (२)
हो जेम गौतम साथे कीधो,
एवो चाहुं साथ मारा तारणहार (२) ॥१॥

शास्त्र धरम हुं कांई ना जाणुं, जाणुं तारुं नाम (२);
हुं काची माटीनी काया, तुं मारो घडनार (२). हो जेम ०॥२॥
तुं विण मुजने कोण तारशे, तुं छे मारी आश (२);
तुं एक ज सथवार छे मारो, तुं एक ज आधार. हो जेम ०॥३॥
अन्नने वारि विण पण चाले, चाले न तुज विण नाथ (२);
श्वासे श्वासे नाम छे तारुं, तुं ज छे मारो प्राण (२). हो जेम०॥४॥

(८८) मारा व्हाला प्रभु! ...

मारा व्हाला प्रभु!... क्यारे मळशो मने?,
मारी आशा पूरी... क्यारे करशो तमे? मारा व्हाला०॥१॥
करुणासागर छे बिरुद... तमारुं प्रभु!,
करुणा करशो ए आशा... धरुं हुं विभु!,
रातदिवस हुं समरुं छुं... प्रभु! तुजने. मारी०॥२॥
मारी कबूलात छे के... हुं पतित प्रभु,
पण पतितोने तारनारो... एक ज तुं,
पतितपावन बनी... क्यारे आवशो तमे? मारी०॥३॥
तुजने नीरखी शकुं... एवी दृष्टि तुं दे,
तुजने ओळखी शकुं... एवी शक्ति तुं दे,
तारी छायानी मायामां रहेवुं गमे. मारी०॥४॥





(८९) मारा हृदय सिंहासन पर...

(राग : ईक प्यार का नगमा है...)

मारा हृदय सिंहासन पर, प्रभु! तुं ज बिराजे छे,
मने हर क्षण एवुं लागे के, तुं मारी ज पासे छे. मारा०॥१॥
भले आवे समय कपरो, हुं मोत नहीं मांगुं,
जीवननी आ जंग भले, एमां हार नहीं मानुं,
तुं मारो सारथी छे, हुं तारे इशारे छुं,
हवे हारुं हुं तो शाने, तुं जो मारी ज साथे छे. मारा०॥२॥
तें जे जे कह्युं करवा, आ भवमां ज करवुं छे,
तारी आज्ञा पाळीने, भव पार ऊतरवुं छे,
तुं मारो खेवैयो छे, हुं तारे सहारे छुं,
हवे डूबवुं मारे शाने, तुं जो मारी ज साथे छे. मारा०॥३॥
तारा पंथे विचरवामां, हुं सत्त्व नहीं हारुं,
भले आवे कसोटी लाख, तारो मार्ग नहीं त्यागुं,
तुं पथदर्शक मारो, हुं तारो प्रवासी छुं,
हवे भूलो पडुं शाने, तुं जो मारी समीपे छे. मारा०॥४॥
कुदरत जे करावे ते, मने मंजूर छे सघळुं,
भले आवे प्रतिकूळता, हुं लईश बधुं सवळुं,
मने शासन मळ्युं तारुं, हुं सदा तारो ऋणी छुं,
हवे डरवुं मारे शाने, तुं जो मारी ज पडखे छे... मारा०॥५॥



(९०) मारा होठे तमारुं स्मरण....

(राग : ए मालिक तेरे बंदे....)

मारा होठे तमारुं स्मरण, मने राखो तमारे शरण;
मने निर्मळ करो, अने निर्भय करो, हुं झंखुं तमारा चरण. ॥१॥
में अधर्म घणोये कर्यो, अरे पापोथी पण ना डर्यो,

तुं दयाळु प्रभु, हुं तारा पर नभुं, तोये चोराशी फेरा फर्यो,
मारा जीवननुं तरस्युं हरण...तमे देजो करुणा झरण. मने०॥२॥
मारी भूलो मने याद छे, मधराते वलोपात छे,
जीव मारो बळे, आंसुमां ओगळे, हवे पस्तावो दिनरात छे,
तमे स्वामी! करो अवतरण...तारा पगले थतुं जागरण. मने०॥३॥
महामूली हती जिंदगी.. एनी चिंता करुं क्यां लगी?
कंठमां प्राण हो, अने शुभ ध्यान हो, बस नानी शी छे बंदगी,
पुण्य उदयनुं पहेलुं किरण...मने मळजो समाधि मरण. मने०॥४॥

(९१) मुश्किल डगर छे...



मुश्किल डगर छे लांबो सफर छे, चाहु छुं तारो साथ,
झाल्यो छे तारो हाथ में प्रभुजी हवे ना छोडुं साथ,
तारी मारी जे प्रीति छे, मुजने लागे मीठी छे,
आवी प्रीतनी गांठो, जगमां क्यांय ना बीजी रे... ॥१॥
चकोर चांदो जोईने राचे, मेघ ने जोइ मोरलो नाचे,
तेमज ज्यारे तुजने नीरखुं, मारुं मनडुं थै थै नाचे,
मारा राजदुल्हारा, मारी प्रीतना क्यारा,
मारा तारणहारा, मुजने प्राणथी प्यारा,
हुं तारो थइ जाउं, तुं मारो थई जा,
बस एटलुं करी आप...झाल्यो छे तारो... ॥२॥
सती सीता ने लंकामांथी, युद्ध करी श्री राम बचावे,
गोकुल ज्यारे पूरमां डूबे, गिरि उपाडी श्याम बचावे,
मारो राम तुं छे, मारो श्याम तुं छे,
दुनियाना आ दुःखोमां मारो आराम तुं छे,
अनाथ बनीने रखड्यो घणुं हुं,
हवे तुं मळ्यो मने नाथ... झाल्यो छे तारो... ॥३॥



(९२) मुसाफरी...

(राग : लुका छुपी...)

पंखीडो क्यारे, उडी जशे,
करेलुं भेगु, छुटी जशे, पळमां...
मुसाफरी घणी करी, थाक्यो हवे आत्मा,
स्वने भूली, मजा माणी, वसवुं छे जातमां,
पलटाई जशे, रंगो बधा, छुटी जशे, संगो बधा, पळमां...
पंखीडो क्यारे... ॥१॥

एक दिन चाली जवानुं रे, ना कुण आवे हारे, साथे लाकडा छे,
खाली आवेला झोला, खाली ज जवाना छे, याद रहे,
अंजली जोडी, सहु पाछा वडे, कोई साथे आवे ना,
कोण माता, कोण पिता, कोई साथे आवे ना,
पंखीडो क्यारे... ॥२॥

कदी तडका ने कदी छायडा, कदी आपत्ति ने सजा,
कदी सांज हो तो कदी सवार, कदी सम्पत्ति ने मजा,
कर्मोतणी छे आ बधी लीला, तुं मुंझावे शा?
मंजिल तारी, खुदमां तुं पामे, भटकी रह्यो छे शा?
मुसाफरी घणी करी, शरणे आवी छुं नाथ,
स्वने भूली, मजा माणी, स्वीकारी लेजे ने नाथ,
कठिन लागे छे, मारी डगर, पार करूं हुं किम? तारी वगर हे नाथ!
पंखीडो क्यारे... ॥३॥

थाकी गयी छुं घणु भमीने रे,
हाथे भरेलुं पाणी, निसरतु जाय रे,
साचो मार्ग मुजने, मारा नाथनो जणाय रे,
आ मुसाफरीनो अंत अहीं छे, स्वने पामवानी राह मळी छे...
पंखीडो क्यारे... ॥४॥

(९३) मेरा जीवन तेरी शरण...



मेरा जीवन तेरी शरण...
सारे राग विराग हुए अब,
मोह सारे त्याग हुए अब;
एक यही मेरा बंधन, मेरा जीवन...॥१॥
अविरत रहा भटकता अब तक,
भटकूँ और अभी मैं कब तक,
पालूं केवल तुझ को ही प्रभु,
एक यही है मेरी लगन... मेरा जीवन...॥२॥
तेरे चरणों पर हों अर्पण,
मेरे जीवन के गुण अवगुण,
सारी व्यथाएं दूर करो प्रभु,
हो कुसुमित मेरा नंदन... मेरा जीवन...॥३॥

(९४) मेरे साहेब ने मुजको



मेरे साहेब ने मुजको बहोत कुछ दिया,
मेरे घट घट में बसिया है मोरा पिया. ॥१॥
दाता है साहेबजी माता है साहेबजी,
मैंने कुछ ना किया उसने सब कुछ किया,
मेरे साहेब ने मुझ को बहोत कुछ दिया. ॥२॥
प्रीत से पायो परम पदारथ,
मेरे साहेब ही है मेरी दुनिया,
मेरे साहेब ने मुझ को बहोत कुछ दिया. ॥३॥
साहेब सुमिरन तीरथ सम है,
बीते सुमिरन में ही दिन और रतिया,
मेरे साहेब ने मुझ को बहोत कुछ दिया. ॥४॥

देवर्धि महावीरजी की देखत ही रहिए,
नंदप्रभा में वीरजी को देखत ही रहिए,
मेरी आंखों में रोशन है उसका दिया,
मेरे साहेब ने मुझ को बहोत कुछ दिया. ॥५॥

(९५) युगोथी हुं पुकारुं छुं...

युगोथी हुं पुकारुं छुं, प्रभु क्यारे कृपा करशो?
विनंती हुं गुजारुं छुं, प्रभु क्यारे कृपा करशो? ॥१॥
प्रवासी कोई जंगलमां, सलामत आशरो शोधे,
गरम रणमां तरुवरनो, मुसाफर छांयडो गोते,
तमोने एम चाहुं छुं, प्रभु क्यारे कृपा करशो? ॥२॥
समावी ले सरिताने समंदर जे उमळकाथी,
तमे दिलमां स्वीकारी लो, मने एवी ज ममताथी,
वियोगे हुं सुकाउं छुं, प्रभु क्यारे कृपा करशो? ॥३॥
जनेता जेम डगमगता, शिशुनी आंगळी झाले,
तमे आपो सहारो तो, सरळ मारी सफर चाले,
तमारो साथ मांगु छुं, प्रभु क्यारे कृपा करशो? ॥४॥

(९६) रमे रोम रोम...

रमे रोम रोम, (२) अरिहंत आतम आधार...
एना नामनी आगळ बोलुं ओम् मळे ऊर्जा अपरंपार...
साहेबनो महिमा भारी, साहेबनी छे बलिहारी,
मारा साहेब छे जयकारी,
मारा साहेब छे मनहारी. साहेब... हो...॥१॥
प्रभु तेज तेज अंबार धरे, श्री नंदप्रभा महाराज
रूप रंग अद्भुत अहो! त्रण भुवन छे शिरताज... साहेब ॥२॥

साहेब मारा संगे पळेपळ रहे छे,
साहेबना नामे धारा अखंड वहे छे,
साहेब अनंत उपकार, साहेब हैयानो हार...
शुभध्यान, प्रणिधान, साहेबजी मुजने आपे,
भगवान, गुणगान, करनारनां दुःखडां कापे... साहेब ॥३॥
मीठुं मीठुं मलकातुं मुखडुं रमे छे,पद्मासन मुद्रा हैये रमे छे,
आंखोनुं तेज अपार,रमणीय रूप उदार...
ए अजरअमर, ए गगन शिखर, ए देवोना अधिदेव,
धरे परम प्रेम, करे साची रहेम, देवर्धि छे एकमेव... साहेब ॥४॥

(९७) रात दिवस उपकारो तारा..

रात दिवस उपकारो तारा, याद बहु आवे;
राते चमकता लाख सितारा, याद बहु आवे. ॥१॥
ते तो माफ करीने मारो, सहज स्वीकार कर्यो छे,
पण मुजने अपराधो मारा, याद बहु आवे. ॥२॥
मारी नानकडी दुनियामां, पगलां ते पाड्या छे,
तारी आ करुणानी धारा, याद बहु आवे. ॥३॥
तारी यादमां खूब रड्यो छुं, त्यारे तुं मळ्यो छे,
को'क दिवस ए आंसु खारा, याद बहु आवे. ॥४॥

(९८) रोमे रोमे हुं तारो...

रोमे रोमे... हुं तारो... थतो जाउं छुं,
तारा प्रेममां... प्रभुजी! हुं भींजाउं छुं... रोमे रोमे०॥१॥
हवे परवडे नहीं... रहेवानुं ताराथी दूर,
तारे रहेवानुं हैयामां... हाजराहजूर,
तारा स्मरणोमां... खोवातो जाउं छुं... तारा प्रेममां०॥२॥

हवे जोडुं ना जगमां... हुं नातो कोईथी,
मने व्हालो तुं व्हालो तुं... व्हालो सौथी,
तारी नजरोमां... नजरातो जाउं छुं... तारा प्रेममां०॥३॥
हवे शरणुं लीधुं छे तो... शत राखजे,
तारा बाळकने तारा... शरणने राखजे,
वीतरागी तारा... थकी हुं सोहाउं छुं... तारा प्रेममां०॥४॥

(९९) लगनी लागी छे...

लगनी लागी छे, के अगनी जागी छे, तारा मिलननी प्रभु...
पळेपळ झंख्या करूं तने, के लगनी लागी छे...
घेलुं लाग्युं मुजने, हुं क्यारे तुजने भेटुं?
तारा पावन खोळे, मीठी निंदरमां लेटुं?
शमणामां रोज हुं, रोज हुं, निरख्या करूं तने... के लगनी०॥१॥
हळवा हळवा हाले, आ हैयानां धबकारा,
घडीए घडीए दिलमां, वागे तारां भणकारा,
अंतरना गोखमां, गोखमां, कल्प्या करूं तने... के लगनी०॥२॥
जाय भले जन्मारो, पण धीरज हुं ना हारूं,
मरवानी वेळाए, पण तारूं नाम पुंकारूं,
जीवुं हुं ज्यां सुधी, त्यां सुधी, समर्या करूं तने... के लगनी०॥३॥

(१००) लावो अंतरमां अंतरीक्षजी...

सोंपी तारा चरणमां, सर्वस्व मारुं, हवे आरामी क्षणो,
रहुं तारा शरणमां, बाळ बनी हुं, खरी आनंदी क्षणो...
मारो आराम तुं, मारो विश्राम तुं, अंतरीक्ष पार्श्व प्रभु तुं...
लावो अंतरमां.. अंतरीक्षजी.. गावो अंतरमां.. अंतरीक्षजी..
भावो अंतरमां.. अंतरीक्षजी.. लावो अंतरमां.. अंतरीक्षजी.. ॥१॥

याचे तारी कने, एने आवी मळे, खोबे-खोबे भरीने दे तुं,
मारो धबकार तुं, मारो रणकार तुं, अंतरीक्षजी प्रभुजी तुं...
रडी-रडीने आंखो मारी, याचे भावथी दिक्षा प्यारी,
जे आवे समीपे तारी, एना जाये तो विध्नो हरी,
विघ्न हरनार तुं, साचो दातार तुं, अंतरीक्षजी पार्श्व प्रभु तुं.
लावो अंतरमां...॥२॥

तने दिलमां धरी, नैया पार करी, जावुं संसार सागर तरी,
मारो आधार तुं, मारो सथवार तुं, अंतरीक्षजी पार्श्व प्रभु तुं...
तारा योग ने पामी करी, बनी जाउं सरिखो तरी,
सुणो पासजी वात जरी, तमे परम जगधणी,
तारो वारस हुं, मारो पारस तुं, अंतरीक्षजी पार्श्व प्रभु तुं...
लावो अंतरमां...॥३॥

(१०९) वालम आवोने...

हुं मने शोध्या करुं, पण हुं तने पाम्या करुं,
तुं लईने आवे लागणीनो मेळो...
साथ तुं लांबी मजलनो, सार तुं मारी गझलनो,
तुं अधूरी वार्तानो छेडो रे...
मीठडी आ सजा छे, दर्दोनी मजा छे,
तारो विरह पण लागे व्हालो रे...
वालम आवोने आवोने, वालम आवोने आवोने,
मांडी छे लवनी भवाई...
हो ता थैया थैया ता थैया थै ता थैया थैया ता थै...
के वालम आवोने आवोने, मन भींजावुं आवोने
केवी आ दिलनी सगाई, के मांडी छे लवनी भवाई
हो ता थैया थैया ता थैया थै ता थैया थैया ता थै...

रोज राते के सवारे चालता फरता,
हुं अने तारा विचारो मारता गप्पा,
तारी बोलती आंखो जाणे बोलती वातो,
हर वातमां हुं जात भूलुं रे...
के वालम आवोने आवोने, वालम आवोने आवोने,
मांडी छे लव नी भवाई...
हो ता थैया थैया ता थैया थै ता थैया थैया ता थै...
के वालम आवोने आवोने, मन भींजावुं आवोने,
केवी आ दिल नी सगाई, के मांडी छे लव नी भवाई...
हो ता थैया थैया ता थैया थै ता थैया थैया ता थै...
यादोना बावळ ने आव्या फूल रे हवे,
जो आवे तो दुनिया आखी धूळ रे हवे,
हो ता थैया थैया ता थैया थै ता थैया थैया ता थै...

(१०२) शंखेश्वर तुं सहारो...

राग : झूमे रे झूमे.../तिरंगा...)

तारा ज नामे, जीवुं छुं स्वामी, श्वासे-श्वासे स्मरूं छुं...
तारा ज नामे, जीत छे स्वामी, तारा ज नामे तरुं छुं...
श्वासोमां तुं छे ख्वाबोमां तुं छे, मारा जीवनमां तुं ज रहे,
बस तुं ज रमे, बस तुं ज गमे, एक साचो सहारो तुं छे,
तने ईन्द्रो नमे, तारा चरणो चूमे,
आखी दुनिया तुजने पूजे रे... ॥१॥
ओ शंखेश्वर तुं सहारो, मारा विघ्नोने तुं हरनारो,
ज्यारे पुकारूं तुजने, तुं हाथ मारो झाले,
डुबती जीवन नैया, लावी दे तुं किनारे,
समता समाधि शक्तिने तुं देनारो,
गुण-कीर्ति आपी दिव्य जीवन करनारो... श्वासोमां...॥२॥

आखी दुनिया भले तरछोडे, मारे रहेवुं छे तारा खोळे,
श्रद्धा छे एक मारी, तारा नामनी खुमारी,
मारा रोमे-रोमे व्यापे, बस एक प्रीती तारी,
तारा नामनी माळा श्वासे-श्वासे चाले,
सुख दरिया मारा हैयामां छलकाये... श्वासोमां... ॥३॥

(१०३) श्वासोनी माळामां समरुं हुं...

श्वासोनी माळामां... समरुं हुं तारुं नाम,
बनी जाउं तारो प्रभुजी!... करुणानिधान! श्वासोनी०॥१॥
शासननी सेवा करतो रहुं हुं, चरणोमां मस्तक धरतो रहुं हुं,
भरी दे तुं झोळी प्रभुजी! ओ प्रभुजी! श्वासोनी०॥२॥
इच्छा छे मारी तारा जेवो थावुं, संयम स्वीकारी मोक्षे हुं जाउं,
तन मन मारुं प्रभुजी! तुज पर कुरबान. श्वासोनी०॥३॥
कृपा करो एवी खीले सत्त्व मारुं, छोडीने जंजाळ बनी जाउं तारो,
जे दिन हुं वीसरुं तुजने छूटे मारा प्राण. श्वासोनी०॥४॥
झालो मारो हाथ हुं भटकी न जाउं,
सुखोमां रही तुजने वीसरी न जाउं,
तारो समजी मुजने आपी दे चरणोमां स्थान. श्वासोनी०॥५॥





(१०४) श्वासोमां मारा समावुं तुजने...

(राग : तेरे संग यारा...)

मारा नाथ हुं तारो छुं... मने सौथी व्हालो तुं...
तुं साथ रहे हरपळ... बस एटलुं मांगुं छुं...
श्वासोमां मारा समावुं तुजने... केम हुं चाहुं आटलुं तुजने.. ॥१॥
तुं मारी अधुरी प्यास छे, मने हाश छे तुं पास छे,
मारी जिंदगीनी एक तुंही ज आश छे.
तुं दिलनी आसपास छे, तुं नथी तो बधु आभास छे,
मारो सहुथी खासमखास बस तुं एक छे... श्वासोमां०॥२॥
स्नेहाळ मारी मात तुं, भवरणमां शीतल छाय तुं,
हवे तुज विना रहेवाय ना... आधार... तुं...
मारा सपनामां छलकाय तुं, स्मरणोमां आवी जाय तुं,
हवे तुज विना जीवाय ना...धबकार.. तुं... श्वासोमां०॥३॥
तने छोडीने कयांय भटकुं नहि, आ दुनियामां कयांय अटकुं नहि,
तुं ना मळे तो हवे ना जीववुं माहरे...
तने हवे कशुं कहेवुं नथी, तारा साथ विना मरवुं नथी,
कहे तुं हवे शुं मुजने करवुं माहरे... श्वासोमां०॥४॥
एवी रात नथी कोई माहरी, ज्यां याद नथी प्रभु ताहरी
मारी नींदमां पण भीतरे तुं जागजे,
तुं रहेजे मारी साथमां, हुं जीवुं छुं तुज विश्वासमां,
जन्मो जन्मनो साथ तुं निभावजे... श्वासोमां०॥५॥



(१०५) समयनी आ सूनी सूनी...

(राग : तमे व्हालनो दरियो अमे तरस्या व्हालीडा...)

समयनी आ सूनी सूनी सफरनी डगरने,
पगलुं जड्युं छे तारुं आज, हो...(२)
व्हालाने शोधी रहुं आ बाळकने सूनुं सूनुं,
मनडुं रहे छे आ उदास,
में तो दीवडा प्रगटाव्या मारा रोमरोममां...
वेदना मारे हवे सहेवाय ना...
तारा देहरेथी बोलावजो, मुज मनना मोहनिया,
हवे जलदीथी तेडावजो, मुज मनना मोहनिया...
हुं दर्शननो तरस्यो, तमे मारा छो दरिया,
हवे जलदीथी तेडावजो, मुज मनना मोहनिया... ॥१॥
तारी प्यारी यादोमां, समय रडी जाय तो,
वधु दूर मुजने ना तमे राखजो...(२)
पळपळ पांपणथी वरसे, प्रेमनो प्रवाह तो,
भींजावुं मुजने छे, द्वारने उघाडजो,
मने तारा खोळे रमाडो, मारा मनडानी मैया, (२)
पण बाळनां आंसु लूछजो, मुज मनना मोहनिया...
हुं श्रेयांस छुं तारो, तमे ऋषभजी प्यारा,
हुं राजीमती तारी, तमे नेमजी प्यारा,
हवे बाळनां आंसु लूछजो,मुज मनना मोहनिया,
तारा देहरेथी बोलावजो, मुज मनना मोहनिया... ॥२॥



(१०६) सिद्धारथना राजकुंवरनुं...

सिद्धारथना राजकुंवरनुं अमे लीधुं आलंबन...
जय जय त्रिशलानंदन... ॥१॥
गुलाबजळथी स्नान करावुं, चंदनलेप लगावुं,
शीतल शीतल शाता देवा, कोमळ फूल बिछावुं,
तमे अमारा लाडकवाया,वहाल करुं के वंदन... जय०॥२॥
लाड करुं तो नाना लागो, नमन करुं तो मोटा,
करुणाजळनो तमे समंदर, अमे छीए परपोटा,
केसर घोळी चरण पुजूं के, आंखे आंजु अंजन... जय०॥३॥
पांपण वच्चे छबी तमारी, धबकारामां नाम,
परोढे तारुं स्मरण करुं ने, राते तुं ज विराम,
उदयरतननी आशा पूरो, हे परदुःखभंजन... जय०॥४॥



(१०७) सूरज की गरमी से...

सूरज की गरमी से जलते हुए तन को,
मिल जाये तरुवर की छाया...
ऐसा ही सुख मेरे मन को मिला है
मैं जब से शरण तेरी आया... मेरे नाथ... ॥१॥
भटका हुआ मेरा मन था कोई, मिल ना रहा हो सहारा,
लहेरो से भरी हुई नाव को जैसे, मिल ना रहा हो किनारा,
उस लडखडाती हुई नाव को जो, किसीने किनारा दिखाया,
ऐसा ही सुख मेरे मनको मिला हे... ॥२॥
शीतल बनी आग चंदन के जैसी, कृपा हो जो तेरी,
उजयारी पूनम की हो जाये राते, जो थी अमावस अंधेरी,
युग युग से प्यासी मरुभूमिने, जैसे सावन का संदेश पाया,
ऐसा ही सुख मेरे मनको मिला हे... ॥३॥

(१०८) स्पर्शे छे तारो प्यार...

(राग : कभी अलविदा ना कहेना...)

तुं प्रभु! जो साथ हो, डरवानी शुं वात हो
सुक्या सहु भवसागरो, तरवानी शुं वात हो
तारी आज्ञा पालनमां, गुरुचरणोना आंचलमां मुजने
स्पर्शे छे तारो प्यार (२), झंखु छुं तारो सथवार. ॥१॥
तुं सांप छे तो, कांचळी प्रभु हुं,
तुं आभ छे, हुं वादळी प्रभु;
मारा हृदयना धबकाराओनो,
तुं मात्र एक कारण प्रभु(२). तारी०॥२॥
पल-पलमां तो, तुं ज वसे छे,
हृदयकमळमां, तुं श्वसे छे;
आंखोथी वहेता, आंसुओनी भीतर,
स्मित थईने तुं हसे छे (२). तारी०॥२॥

(१०९) स्वामी! तारा स्नेहनो...

(राग : मैंने पूछा चांद से...)

स्वामी! तारा स्नेहनो मने धरव नथी, प्यास छीपती नथी,
थाय छे के बस! घूंट पीधा करुं... हजी... हजी... हजी... ॥१॥
स्नेह तो मळ्यो मने घणानो, पण बधा स्वार्थना सगानो,
आतमानो एक तुं स्वजन छे, तारो मारो स्नेह छे सदानो,
भाव जेमां स्वार्थनो लगीर पण नथी, एवा आ संबंधनी,
थाय छे के बस! गांठ बांध्या करुं.. हजी.. हजी.. हजी.. ॥२॥
सूर्यनां किरण वधे घटे छे, मेघराज पण कदी रुठे छे,
धान्य आपनारी धरती माता, को'क दि तो धान्य चोरी ले छे,
रात-दिन वहे छे तारा स्नेहनी नदी, ओट आवती नथी,
थाय छे के बस! डूबकी मार्या करुं.. हजी.. हजी.. हजी.. ॥३॥

तारो स्नेह पापथी बचावे, धर्मनी प्रवृत्तिओ करावे,
द्वार दुर्गतिनां बंध करीने, सद्गति भणी सफर करावे,
दीप जे जले छे मुजने मार्ग चींधवा, मंजीले लई जवा,
थाय छे के बस! तेज झील्या करुं.. हजी.. हजी.. हजी.. ॥४॥



(११०) हजी नयनोनां द्वारे...

(राग : अभी मुजमें कहीं...)

हजी नयनोनां द्वारे, नींदोमां आव्या करे तुं प्रभु,
भीनी यादोंने लावे, ऊर्मि जगाव्या करे तुं प्रभु,
हवे लागे प्रभु! मारी साथे छे तुं,पळ पळमां तमारी सुवास,
तने चाह्या करुं, गुण गाया करुं, प्रभु तुं छे मारी दुनिया,
तारा चरणे रहुं, तारी पूजा करुं, तारो साथ ना छोडुं जरा. ॥१॥
यादमां दिनरात आवो छो, खुशीओथी भरो छो जीवन,
लागणीनुं एक मोजुं थई, नवरावी दो छो तन-मन,
पल पल तारुं ध्यान, माहरी जिंदगी छे,
पल पल रटण तुज नाम, बस एक बंदगी छे... हवे लागे०॥२॥
मीठां मीठां आपनां स्मरणो, म्हेंकावी दे छे हर निशा,
प्यारा प्यारा प्रीतनां गीतो, अजवाळी दे छे हर दिशा,
हवे बस ताहरी अभेद प्रीति बांधवी छे,
ताहरा गुणोना समुंदरे बस न्हावुं छे... हवे लागे०॥३॥

(१११) हमें रास्तो की...



(राग : सागर किनारे...)

हमें रास्तो की जरुरत नहीं है,
हमे तेरे पेरो के निशान मिल गये है,
तुम्हीं से ज्ञान का दीपक जला हैं,
तुम्हीं से घनघोर अंधेरा मीटा हैं,
तुम जो नहीं तो कुछ भी नहीं है. हमे०॥१॥
छाये जो दिल पे गम का अंधेरा,
तन्हाईओने जब मनको घेरा,
खिलता सवेरा लेकर तुं रुबरु है. हमे०॥२॥
कलियों में तुं है, फूलो में तुं है,
सागर की ईक ईक लहर में भी तुं है,
कहीं मैं जाउं बस तुं ही तुं है. हमे०॥३॥
आज्ञा का पालन, यही मेरी पूजा,
तुम ही तुम हो कोई न दूजा,
तुम से है सबकुछ रोशन, कण कण में तुं है. हमे०॥४॥

(११२) हर श्वासमां स्मरुं...



(राग : मैं कभी बतलाता नहीं...)

हर श्वासमां स्मरुं तमने प्रभु , उच्छ्वासे तुजने मारा नाथ!,
शमणामां तारी यादो मने, आवीने भींजवे मारा नाथ!,
हुं जागुं छुं ज्यारे मारा नाथ!, मारा मस्तके होये तारो हाथ ॥१॥
आधार तुं धबकार तुं, मारा जीवननो रणकार तुं मारा नाथ!,
भीतरे तुं अंतरे तुं, रोमे रोमे तुं ही ज तुं मारा नाथ!,
आव्यो छुं तारा शरणे प्रभु!, स्वीकारोने मुजने मारा नाथ!,
साथी तुं मारो एक प्रभु!, पकडी ल्योने हाथ मारा नाथ!,
तने वीनवुं तुं सुणजे मारा नाथ!, मारा मस्तके०॥२॥

तुं मात छे, तुं तात छे, तुं भ्रात छे, तुं शात छे मारा नाथ!,
तुं ज्ञान छे, तुं ध्यान छे, तुं शान छे, तुं जान छे मारा नाथ!,
चरणमां मने आपजे शरण, तारो ज छुं हुं मारा नाथ!,
अर्पण तुजने जीवन मुजने, निर्मल करोने मारा नाथ!,
हुं जागुं छुं ज्यारे मारा नाथ! मारा मस्तके०॥३॥
तुं मारुं गीत, तुं मारुं स्मित, तुं मारी प्रीत,
तुं मारी जीत मारा नाथ!,
तुं श्वास छे, तुं प्यास छे, तुं खास छे, तुं आश छे मारा नाथ!,
दिलमां प्रभु! मारा मनमां, स्मरणोमां वसजे मारा नाथ!,
मंगलं तुं सर्वमंगलं, मारा जीवननुं मारा नाथ!,
हुं जागुं छुं ज्यारे मारा नाथ! मारा मस्तके०॥४॥

(९९३) हुं तने कयां मळुं?...

हुं तने कयां मळुं? प्रभु! मने कहेने तुं,
हुं तने कयां मळुं? प्रभु! मने कहेने तुं,
क्यां मारुं आ दिल धरुं? प्रभु! मने कहेने तुं, ॥१॥
में कर्या भव घणा, तुं क्याये ना मळ्यो,
गोतुं छुं भवेभवे, तोये तुं ना जड्यो,
आ भवे जो तुं मळे, वियोगने विसारी लउं. ॥२॥
ज्यां हती धारणा, त्यां जोयो ना तनें,
क्यां तुं छुपायो छे, कोण कहे मने?
तुं ज था प्रगट प्रभु! जीगरमां छुपावी लउं. ॥३॥
जे क्षणे मिलन थशे, तुज साथे ओ प्रभुजी,
भवचक्रनी आ घडी, अतुल्य हशे प्रभुजी,
केटली राह बाकी हवे, रहेम करने मुज पर... ॥४॥

(११४) हुं तने समजावुं शुं ?

(रागः में तेनुं समजावा की...)

हुं तने समजावुं शुं ? न तुज विना ठरतो हुं,
तुं शुं जाणे प्रीत मारी ? जोउं हुं राह तारी,
तुं नाथ ने साथ मारो,
हुं तने समजावुं शुं ? न तुज विना ठरतो हुं... ॥१॥
मारा हैये शोधी लीधी छे, तुज होवानी सुवास,
तुं जो मारी साथे रहे तो, ए मारो अभिलाष,
जीवन मारुं होये, सघळुं तारुं, हुं शुं करुं बीजुं?
साची प्रतीत मारी, जोउं हुं राह तारी,
तुं नाथ साथ मारो... हुं तने...॥२॥
आ नथी थतुं सारुं हवे, तुं माराथी दूर रहे,
हुं निशदिन दर्शन विना (२), मारी आंखोथी आंसु वहे...
तारा विना क्यां हुं जाउं? मारा हैयाना श्वास!
तारा चरणे शरणुं मारुं, ए मारो विश्वास,
तारी कृपा होये, मंडन मारुं, करती रहे,
खूटे न हाम मारी, जोउं हुं राह तारी,
तुं नाथ ने साथ मारो... हुं तने... ॥३॥

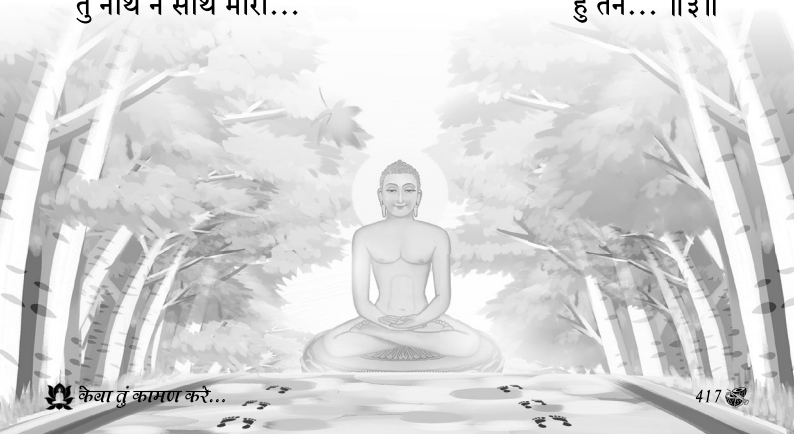



(९९५) हुं तारो तुं मारो...

(राग : सब तेरा...)

तारुं ने मारुं हो मिलन, के झंखे छे मारां आ नयन,
श्वासोमां तारुं छे रटन, झंखुं छुं तारुं ज शरण,
हुं तो तारा प्रेममां छुं खोवायो, तारा रंगमां छुं रंगायो,
ना थाजे दूर कदी... हुं तारो तुं मारो... हुं तारो तुं मारो... ॥१॥
शुं वांक छे गुरु मारो, वचनोथी वंचित राख्यो,
नियतिनो शुं छे इशारो, बस मौननो योग पाम्यो,
एक वार आवीने मुजने, मारा नामथी तो पुकारो,
अमूल्य ए क्षणनी मुजने, क्यारेक तो भेट आपो...
तारो मारो प्रेम तो छे सवायो, तारा मौनमां छुं भींजायो,
ना थाजे दूर कदी... तुं मारो हुं तारो... हुं तारो तुं मारो... ॥२॥
तुं सूरज ने हुं तारी रज, कहुं छुं तुजने दिलनी अरज,
तुं तारणने मारुं शरण के मळे तुज हस्ते रजोहरण,
अंतेवासी थवाने तारो, एकांते करुणा करजो,
सर्वांशे बनुं अंश तारो, हवे आवी ने मुजने तारो,
हुं छुं तारा व्हालामां सौथी व्हालो, तारो शिष्य सौथी निरालो,
ना थाजे दूर कदी... हुं तारो तुं मारो... हुं तारो तुं मारो... ॥३॥
आपीने तारी ओळख, तुज अंतरमां वसाव्यो,
अदृश्य कृपा वहावी, तुं दूर जईने छुपायो,
रडतो रह्यो छुं हुं भवमां, क्यां तारुं सरनामुं शोधुं,
तारा चरणे भेट धरवा, मारामां कांई ना मारुं,
तुं छे मारो तीर्थ ने तीर्थंकर, बनी जाउं तारा माटे हुं गणधर...
ना थाजे दूर कदी... तुं मारो हुं तारो... हुं तारो तुं मारो... ॥४॥
ना दूर तुजथी हुं रहुं के, ना दूर मुजथी तुं थजे,
तारा जेवो हुं बनुं, कृपा तुं एवी करजे,
हुं तो बस तारा गुणोनो ग्राहक, तारा ज गुणोनो चाहक,
गुणोनो वाहक बनुं... तुं मारो हुं तारो... हुं तारो तुं मारो. ॥५॥

(११६) हुं दास तमारो छुं...

(राग : जब कोई बात बिगड जाए...)

हुं दास तमारो छुं, तमारे शरणे आव्यो छुं,
तमे दिलमां धरजो ने, राखीने नेह,
दीवानो हुं तमारो छुं, तमारो प्रेम चाहुं छुं,
तमे दिलमां धरजोने, राखीने नेह... ॥१॥
नयनमां आवजो प्यारा, तमारो वास त्यां करजो,
तमारा दर्शने भीना, तमे एने प्रभु करजो... ॥२॥
वरदान ए देजे, हृदय एवुं मने देजे,
छलोछल भक्तिथी एने, भरेलुं तुं प्रभु! करजे... ॥३॥
ऊंडा अंधारथी मुजने, प्रकाशे तुं प्रभु लई जा,
झलक तारी प्रभु! मुजने, एकांते आवी तुं दई जा... ॥४॥
खाली छे मारुं आ जीवन, सुनूं छे मारुं आ अंतर,
कहुं छुं तुजने व्हाला!, हवे तुं पास आवी जा... ॥५॥

(११७) हुं बाळ तमारो छुं...

हे जिनेश्वर... हे परमेश्वर... हे व्हालेश्वर...
हे दीनबंधु... हे जीवबंधु... हे जगबंधु ...
तारणहारा... पालनहारा... रक्षणहारा मारा....
प्रीतम प्यारा... व्हालम व्हाला... मोहनगारा मारा...
हुं बाळ तमारो छुं, तमारो वहाल चाहुं छुं,
तमे राखजो माथे हाथ, तमे बनजो मारी मात,
तमारो प्रेम चाहुं छुं... हुं बाळ...॥१॥
व्हालो प्यारो मीठो मारो, उपकारी जिणंद,
खोळे पोढाडी आपे, आतमनो आनंद,
तें खूब दीधो मने प्रेम, एनो आभार मानुं छुं हुं बाळ...॥२॥

राग तोडी वैराग्य जगाडे, एवो तारो स्नेह छे,
काढो कषायो उरना भयवं! मम मुंडावेह,
रहेवा सद्गुरु संगाथे, हवे संयम याचुं छुं... हुं बाळ...॥३॥

(११८) हुं मीरा हुं राधिका...

हुं मीरा हुं राधिका, तुं श्याम छे प्रभु!
हुं सीता तुं राम तुं विराम छे प्रभु!
मात्र तारा प्रेमथी नभुं (२) हे प्रभु... ॥१॥
मारा हृदयमां जे सद्भावना,
ते तारी दयाना अमीछांटणा;
हुं तरसने पाणी तारुं नाम छे प्रभु,
हुं नीरसने तुं जीगरनी हाम छे प्रभु... ॥२॥
मोतमां ए ओथ तुं, मोत पछी साथ तुं,
हुं पडुं तो हाथ तुं, हैयुं साची वात तुं,
हुं दिवसनो थाक छुं, पूर्णिमानी रात तुं,
प्रभात हुं निरात तुं, व्हालभरी वात हुं
हुं आयखुं ने श्वास तारो प्रेम छे प्रभु,
हुं गरीबनी द्रष्टि तारी रहेम छे प्रभु....
भीनुं भीनुं हैयुं ने भावनी भीनाश,
प्रभुने रीझववो एक छे प्रयास;
आवी जा ने पास लई ले बाथमां प्रभु,
भूली जा ने भूल बधी अकळाव ना प्रभु... ॥३॥
राग-द्वेषने अहंकार नडे,
आतमा मारो चकरावे चडे;
हुं पर्याप्त छुं ने मारो पंथ तुं प्रभु,
तुं विराट विश्व तारो अंश हुं प्रभु... ॥४॥

(११९) हृदय मंदिरना मारा देव...



(राग : नयनने बंध राखीने...)

हृदय मंदिरना मारा देव में तो, तमने मान्या छे;
नजरमां हो भले लाखो, हृदयमां तमने राख्या छे. ॥१॥
सांनिध्य हो भले ना हो, परंतु स्नेह छे साथे;
श्रद्धाना सेतुए मने, आप साथे जोडी राख्या छे. ॥२॥
आज सुधी मने नहोती, मारा अस्तित्वनी खबर;
जाणी लीधुं छे में, सघळुं ज्यारथी, तमने जाण्या छे. ॥३॥
अनराधार वरसे छे, आपना आशिषो मुज पर,
आपनी कृपानां फळ, समये समये, में तो चाख्या छे. ॥४॥
तमारी स्तुति करवामां पडे छे, शब्दो पण ओछा;
आ ज कारणथी मारा, मनना भावो, तमने सोंप्या छे. ॥५॥
करुं हुं आप चरणोमां, समर्पण आयखुं आखुं;
आपना ऋण सामे, तोय मूल्य, ओछा लाग्या छे. ॥६॥
आप भगवान छो मारा, ने सेवक आपनो हुं छुं;
आप साथे, ऋणानुबंध भवोभव, में तो मांग्या छे. ॥७॥

(१२०) हे उपकारी कृपा वरसावो...



(रागः राम करे ऐसा हो जाये)

हे उपकारी, कृपा वरसावो, सिद्धशिलाए, मने तेडावो,
राह जोवुं... राह जोवुं, प्रभु आवशे ने लई जाशे... ॥१॥
जन्मोनी प्रीति मारी, आँखो बोले, आँसुओनां सागर छलके,
युग-युगनां स्वामी तमे, हैयुं बोले, प्रीतमां मारूं मनडुं डोले,
हैयुं मारूं हवे नही वशमां,
ओ भगवंत मने, पासे बोलावो, सिद्धशिलाए, मने तेडावो,
राह जोवुं... राह जोवुं, प्रभु आवशे ने लई जाशे... ॥२॥

तारो मारग लागे मने, प्यारो प्यारो, आपो मने वेश तमारो,
पाप नथी रे करवा मारे, आ जीवनमां, संयम केरा भाव प्रगटावो,
मारग साचो आ जगमां, मळजो मने आ भवमां,
ओ वीतरागी, राग तोडावो, वैरागीनां भाव प्रगटावो,
राह जोवुं... राह जोवुं, प्रभु आवशे ने लई जाशे... ॥३॥
तारा विनानुं जीवतर लागे, सुनुं-सुनुं, हैयुं मारूं रूदन भीनुं,
प्रभु नथी तो कांई नथी रे, आ जीवनमां, तारी साथे तार जोडाणुं,
तारी प्रीति एकज साची,
ओ भगवंत मारा, भाव प्रगटावो, सिद्धशिलाए, मने तेडावो,
राह जोवुं... राह जोवुं, प्रभु आवशे ने लई जाशे... ॥४॥

(१२१) हे जीरावला! तुं...

हे जीरावला! तुं मनमां समातो...
मने याद आवशे, तारी गमती वातो...
तारी आंगी ऊतरे, तुं लागे मजानो;
ने आंगी चडे त्यां, तुं लागे अजाण्यो.
पळ पळ रूप पलटे, हर क्षण तुं मलके;
आ प्रेमरमतमां, मारी आंखो छलके.
आ फरक हवे ना, केमे भुलातो... मने०॥१॥
में चंद समय जे, तुज साथे गाळ्यो;
पण आंख खूली त्यां, बस तुजने भाळ्यो.
तने प्रेम करीने, अमे अहींथी जाशुं;
आ रंगमहेलमां, हवे स्मित ने आंसु.
आ विरह हवे ना, अमथी खमातो... मने०॥२॥
मरुधरमां स्वामी! तुं शीतळ छांयो;
तुं भीड वचाळे, हुं एकलवायो.

हुं चरणकमळमां, प्रतिपळ रहेवानो;
तुं हृदयकमळमां, हरपळ रहेवानो.
आ उदय कदी ना, भूलशे आ रातो... मने०॥३॥

(१२२) हे त्रिशलाना जाया!...



हे त्रिशलाना जाया! मांगुं तारी माया,
घेरी वळ्या छे मुजने मारा, पापोना पडछाया. हे त्रिशला०॥१॥
बाकुळाना भोजन लईने, चंदनबाळा तारी (२)
चंडकौशीना झेर उतारी, एने लीधो उगारी (२)
रोहिणी जेवा चोरलुंटारा, तुज पंथे पलटाया. हे त्रिशला०॥२॥
जुदा थईने पुत्री जमाई, केवो विरोध करतां?
गाळो दे गोशाळो तोये, दिलमां समता धरता,
झेरना घूंटडा गळी जईने, प्रेमना अमृत पायां. हे त्रिशला०॥३॥
सुलसा जेवी श्राविकाने, करुणा आणी संभारी,
विनवुं छुं हे महावीर स्वामी, लेशो नहिं विसारी,
सळगता संसारे देजो, सुखनी शीतळछाया. हे त्रिशला०॥४॥

(१२३) हे दीनबंधु! हे दीनानाथ!...



हे दीनबंधु! हे दीनानाथ!, तेरी दया से सब है सनाथ!;
जपुं नाम... प्रभु नाम... रटुं नाम... प्रभु नाम... ॥१॥
प्रभु नाम है तेरो साचो, जो पार लगा दे भव फेरो;
मैं तेरा हुं तुं हि संभाल... तेरी दया से सब है सनाथ.. ॥२॥
डोर जीवन की तेरे हवाले, तुं चाहे बिगाडे संवारे;
मैं तेरा हुं तुं हि संभाल... तेरी दया से सब है सनाथ... ॥३॥
जीवन की सरगम तुं ही, मधुरा गीत प्रभु! तुं ही,
मैं तेरा हुं तुं हि संभाल... तेरी दया से सब है सनाथ... ॥४॥

(१२४) हे प्रभु! हे प्रभु!...

(राग : जय गणेश (२) देवा...)

हे प्रभु! हे प्रभु! खूब चाहुं तने,
आप दूरे रहो ए न फावे मने... ॥१॥
आंख श्यामल प्रभु ने गुलाबी गाल छे,
आभमां वादळां एटलुं व्हाल छे,
नाथ! जोवा तने देवो पण थनगने... आप दूरे रहो०॥२॥
तारा होठे प्रभु! स्मित एवुं वसे,
फूल पण जोईने खूब मीठुं हसे,
फूल कहे नाथ! मने आप राखो कने... आप दूरे रहो०॥३॥
तारा श्वासोनी सुगंधने माणता,
एटले फूल शरमाई राता थता,
फूल कहे नाथ! अमे छोड्युं मधुवनने... आप दूरे रहो०॥४॥
तारुं रूपने स्वरूप जोई आंखो ठरे,
एवुं लागे प्रभु मारी चिंता हरे,
एक अरमान मने राख तारी कने... आप दूरे रहो०॥५॥

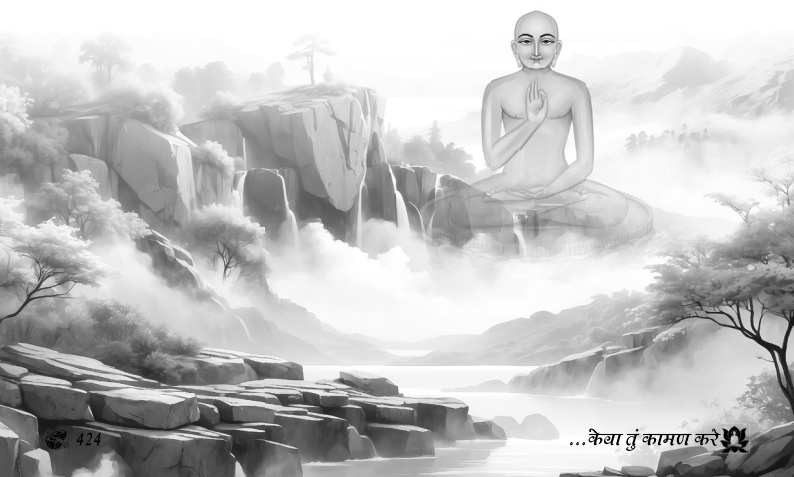

(१२५) हे वीर महावीर...



हे वीर महावीर, हे वीर महावीर,
जगमां साचुं तारुं नाम, हे वीर महावीर (२) ॥१॥
तुं छे माता, तुं ज पिता छो (२)
तुं तो छे तारणहार, हे वीर महावीर (२) ॥२॥
तुं अंतर्यामी, जगनो स्वामी (२)
तारा चरणोमां मोक्ष धाम, हे वीर महावीर (२) ॥३॥
तुं तो नैया, जीवतरनी हंकारे (२)
तुं उगारे तुं संभाळे, हे वीर महावीर (२) ॥४॥
तुं जगत्राता, विश्व विधाता (२)
तुं तो छे हैयानो हार, हे वीर महावीर (२) ॥५॥
हे वीर महावीर... हे वीर महावीर...
हे वीर महावीर... हे वीर महावीर...

(१२६) होठ करे छे तारुं कीर्तन...



होठ करे छे तारुं कीर्तन, हैये रहे छे तारुं चिंतन...
परम पिता तुं पावन... ॥१॥
परमेश्वर तुं पुण्य निकेतन, तुं छे आंखोनुं आकर्षण;
तुं छे आतमनुं आलंबन... ॥२॥
प्रीतम तुं छे परदुःखभंजन, सुख छलकावे छे तुज दर्शन;
पाप मिटावे तारुं पूजन... ॥३॥
प्रभु! तुं पूर्ण आनंद संवेदन,क्षणक्षण तुजने याद करे मन;
नंदप्रभाना नाथ निरंजन... ॥४॥

नमो आदीश्वरम्

(१) अंतरनी अयोध्यानो राम छे...

अंतरनी अयोध्यानो राम छे, मननी मथुरानो श्याम छे,
दादा आदेश्वरनो दरबार छे, शत्रुंजयनो शणगार छे. ॥१॥
मारा जीवननी तुं तो आंख छे, तारा विना जीवन राख छे. ॥२॥
मूर्ति तारी अलबेली छे, जीवननो तुं तो बेली छे. ॥३॥
आंखो तारी कामणगारी छे, तारा पर दुनिया वारी छे. ॥४॥
करुणा तारा हैये अपार छे, तुजथी सहुनो बेडो पार छे. ॥५॥

(२) आदिनाथ दादा मारे हैये वसोने...

(रागः ताकते रहते तुज को शाम सवेरे..)

आदिनाथ दादा मारे हैये वसोने, हैये वसोने मारा दिलमां वसोने,
गिरिराजना आदिनाथ, मारे हैये वसोने नाथ,
सिद्धाचलना आदिनाथ, मारे हैये वसोने नाथ... ॥१॥
तारी कृपा जो मुजने मळशे, भवोभवना मारा फेरा टळशे,
जिनवाणीनुं श्रवण करीने, सम्यक्दर्शन मुजने मळशे,
तारा जेवा प्रभु मारे थावुं
दुर्गतिमां मारे नथी जाउं...(२)... गिरिराजना०॥२॥
मारा जीवनमां, मारा नयनमां, मारा हृदयमां वसजो तमे,
स्मरण तमारुं, रटण तमारुं, शरण तमारुं मळजो मने,
आ भव मळीया, परभव मळजो,
सेवा तमारी दादा भवोभव मळजो...(२) गिरिराजना०॥३॥



(3) ऋषभजी बोलावे...

(राग : धीरे धीरे बोल कोई सुन ना ले...)

ऋषभजी बोलावे छे, एना सपना आवे छे,
जे एना थई जावे छे, एना ए थई जावे छे,

ऋषभजी...॥१॥

सपनामां एनाथी वातो थाय, आंख खूले त्यां सौ पहेला देखाय,
होठ ने हैयुं एना गीतो गाय, एना नाम-स्मरणथी सघळुं थाय..
ए आवशे... कोई पण रीते, एनी यादमां रातो वीते,
अधराते हरखावे छे ने मधराते मलकावे छे,

ऋषभजी...॥२॥

एनो एक भरोसो साचो थाय, एनी पासे हैयुं आ खोलाय,
आम जुओ तो दूर रहे छे क्यांय, आम तो जाणे साव समीप कहेवाय..
ए त्यां रहे, हुं अहीं रहुं, तो पण सुणे, हुं जे कहुं,
पछी एक इशारे आवे छे ने हळवेथी समजावे छे,

ऋषभजी...॥३॥

दादा एना आंगण बेसाडे, सांज सवारे रात अने दा'डे,
मुश्केलीमां मारग देखाडे, हाथ झालीने मंदिर पहोंचाडे..
पगलुं मुकूं, रस्तो जडे, रस्ते चडुं मंझिल मळे,
गिरिराजना दर्शन पावे छे ए पुण्य उदय प्रगटावे छे,

ऋषभजी...॥४॥



(४) गिरिवर पर बेठा छे...

(राग : एक दिन बिक जायेगा...)

गिरिवर पर बेठा छे, आदिनाथ भगवान,
अनंता सिद्धो छे, करुणा निधान,
यात्रा करता गिरिवरनी, खपे कर्म अमाप,
नमो सिद्धाणंना चाले, मनमां अजपा जाप,
गिरिवर पर बेठा छे... यात्रा करता...॥१॥
अर्हम् सिद्धं ने वंदना...
पांच पांडवो वीस करोडनी साथे सिद्ध्या,
सत्तर करोडनी साथे अजितसेन मुक्तिए पहोंच्या,
पांच कोटीशुं भरतराय ने तेर करोड,
सोमयशा सिद्ध्या वंदु हुं बे कर जोड,
मारे पण जोवो छे, सिद्धोनो प्रदेश,
सिद्धो नी करुणाओ, छूटे राग ने द्वेष... यात्रा करता...॥२॥
एक करोड बावन लाख, पंचावन हजार,
मुनिवर पहोंच्या कर्म खपावी मुक्ति मोझार,
शांति प्रभु गिरिराज पर चौमासु कीधुं,
कैं केटलाए जीवोए आत्मकल्याण लीधुं,
प्रभु हुं केम रहुं, आ सळगते संसार,
जावुं मारे मोक्षमां वरसावो अमीधार... यात्रा करता...॥३॥
राम भरत तो त्रण करोडनी साथे सिद्ध्या,
सागर ने धीसार एक करोडशुं सिद्ध्या,
कदंब गणधर एक करोडशुं पाम्या मुक्ति,
आसो सुद पूनमना त्रेसठ करोडनी सिद्धि,
लागी छे लगनी मुजने, मुक्ति केरी नाथ,
आदिनाथ दादा मारो, हवे तो पकडो हाथ.. यात्रा करता...॥४॥

अणु परमाणु शिव बनी जाये प्रार्थना मारी,
आखा विश्वनुं मंगल थाये लब्धि तुमारी,
सर्वे जीवो मोक्षे जाये विक्रम करीने,
पद्मनंदीनी निर्मल भावना दिलमां भरीने,
अजितयशसूरिना हैये, एवो छे उमंग,
मुक्ति देनारो सहुने, चढजो भक्ति रंग... यात्रा करता... ॥५॥

(५) जेनी कीकी काळी छे...

(रागः क्या खूब लगती हो...)

जेनी कीकी काळी छे... ने आंख रुपाळी छे,
आदीश्वरनुं मुख मलकतुं, रुपनी प्याली छे;
मंदिरोनी नगरीमां जाहोजलाली छे... जेनी०॥१॥
मरुदेवा मा हरखावे.. हरखावे,
पुंडरिक स्वामी जेनी आंखमां आंख मिलावे;
शेत्रुंजी नदीनां पाणी... हां पाणी,
लई आवे ने, संघ तने नवरावे;
एनां उपर छाया करवा, रायण डाळी छे...
मंदिरोनी नगरीमां जाहोजलाली छे... जेनी०॥२॥
अहीं कहेनारा छे झाझा... हां झाझा,
सांभळनारा एक ऋषभ महाराजा;
कोई वातो करतुं गातुं... हां गातुं,
कोई मारा जेवुं आंसुमां अटवातुं;
सार करे, संभाळ करे, एनी प्रीत निराळी छे...
मंदिरोनी नगरीमां जाहोजलाली छे... जेनी०॥३॥
तमे श्वास लइने बेठां... हां बेठां,
पण मारा तो श्वास थइने बेठां;
तुज द्वारे बजे शहेनाई... हां शहेनाई,

मारा हैयानी ऋषभ संग सगाई;
ऋषभकथा तो उदयरतनने व्हाली व्हाली छे...
मंदिरोनी नगरीमां जाहोजलाली छे... जेनी०॥४॥



(६) दिल में बस जाओ आदिनाथ दादा...

(राग : भर दो झोली मेरी...)

दिल में बस जाओ आदिनाथ दादा,
तेरे बिन जिंदगानी अधूरी...
मैं हुं बालक मुझे अपना ले, अपने दिल में मुझे तुं समा ले,
गुनाह मेरे सब तुं मीटा दे, तेरे जैसा मुझे तुं बना दे,
आया हुं आज ना, जाउंगा खाली,
भर दो नाथ मेरी, छोटी सी झोली,
सिर पर रख दो मेरे अपने दोनो हाथ,
अब तो सुन लो, मेरी यह बिनंति. तेरे बिन०॥१॥
तेरी पूजा से खुशीयाँ मैं पाऊँ प्रभु,
मेरी भक्ति से तुजको रीझाऊँ प्रभु,
दीवाना तेरा मैं बना हुं प्रभु,
तुजको ही सदा चाहता हुं प्रभु,
मैं हुं प्यासा मुझे आज अपना प्यार दे,
अब सही ना जाये यह दूरी. तेरे बिन०॥२॥
मैं हुं दुःखिया तुं हैं सहारा, बिन तेरे मैं हुं बेबस बिचारा,
दिल में छाया हैं घोर अंधेरा, तेरे आने से होवे सवेरा,
सारी दुनिया मैं तुझ पे लूटा दूं,
तुझ को आज मैं, अपना बना लुं,
करके करुणा मेरी बिगडी तुं बना दे,
अब तो आओ क्यों करते हो देरी, तेरे बिन०॥३॥

(७) प्रथम राजेश्वर प्रथम संयमधर...



(राग : नमामि नेमि...)

प्रथम राजेश्वर प्रथम संयमधर प्रथम तीर्थंकर प्यारा,
शत्रुंजयमंडन नाभिनंदन, मरुदेवाना दुलारा;
त्रण जगना पालनहारा, भविजीवना तारणहारा,
गिरिराजना सितारा, बनी शोभनारा जे;
नमो आदीश्वरम् युगादि जिनेश्वरम्,
नमो शत्रुंजयम् नमो सिद्धाचलम्... ॥१॥
अभवी-पापी जीव जेने, नजरे पण ना देखे,
स्पर्श जेनो पामी जीवो, भव्यताने लेखे;
स्वामी सीमंधरा, जेना गुण गावे,
शाश्वता ए गिरिने, हुं भेटुं भावे;
पूर्व नव्वाणुं वार, समोसर्या आदिनाथ,
करी यात्रा नव्वाणुं वार, आतम पखाळुं रे; नमो... ॥२॥
रायणरुख सोहामणुं, जीहां प्रभुना पाय,
महिमा एनो जगमां न्यारो, सेवे सुरवर राय;
नृत्य करता मोरलानो, मीठो टहुकारो,
रणझणती घंटडीनो, मीठो झमकारो;
शिखरे शिखरे लहेराती, प्रभुनी धजा मलकाती,
गिरिराजना गुणलां गाती, गगने लहेराती रे; नमो... ॥३॥
सिद्धि भद्र ॐकार नंदन, अरविंदसूरि राया,
वावपथकना प्राण प्यारा, यशोविजयसूरि व्हाला;
अनराधार कृपा गुरुवर, आपे वरसावी,
आत्मना कल्याणनी, शुभ घडी आवी;
शत्रुंजय उत्सव आव्यो, यात्रा नव्वाणुं लाव्यो,
ॐ श्री अजित शांति यशस्वी, परिवार मन भायो रे; नमो...॥४॥



(८) व्हाला आदिनाथ में तो...

व्हाला आदिनाथ!... में तो पक्ड्यो तारो हाथ,
मने देजो सदा साथ... ओ(४) ...व्हाला आदिनाथ ओ...
आव्यो तुम पास... लई मुगतिनी आश,
मने करशो ना निराश. ओ०॥१॥
तारा दर्शनथी मारां नयनो ठरे छे... नयनो ठरे छे,
रोमे रोम आ मारा पुलकित बने छे... पुलकित बने छे,
भवोभवनो मारो ऊतरे छे थाक, हुं तो पामुं हळवाश. ओ०॥२॥
तारी वाणीथी मारुं मनडुं ठरे छे... मनडुं ठरे छे,
कर्मवर्गणा मारी क्षण क्षण खरे छे... क्षण क्षण खरे छे,
ठरी जाय छे मारा कषायोनी आग, छूटे राग-द्वेषनी गांठ. ओ०॥३॥
तारी आज्ञाथी मारुं हैयुं ठरे छे... हैयुं ठरे छे,
तुज पंथे आगळ वधवा सत्त्व मळे छे... सत्त्व मळे छे,
टळी जाय छे मारो मोह अंधकार, खीले ज्ञान अजवाश. ओ०॥४॥
तारुं शासन पामीने आतम ठरे छे... आतम ठरे छे,
मोक्ष मार्गमां ए तो स्थिर बने छे... स्थिर बने छे,
मळ्यो तारो मार्ग, मारा केवा सद्भाग्य, मारा केवा धन्यभाग. ओ०॥५॥



(९) सिद्धगिरीने भेटवानो...

(रागः विरतिधरनो वेश प्यारो प्यारो)

सिद्धगिरीने भेटवानो भाव जाग्यो रे...
गिरिवरनी भक्तिमां मारो मनडो लाग्यो रे...(२) ॥१॥
भवसागरने तरवा माटे गिरिवर नैया छे,
उज्जवल गिरिने भेटता बस हर्षित हैया छे,
मेरु महीधर तीरथ तने, में आराध्यो रे. ॥२॥

सिद्धाचल, विमलाचल रैवत गिरिवर नाम छे,
भद्रंकर गुणकंद चरणमां, नित्य प्रणाम छे,
महोदय गिरि महापिठगिरि शाश्वत भाख्यो रे. ॥३॥

(९०) सिद्धाचल दरबार जाजरमान लागे छे...

(रागः विरतिधरनो वेश...)

सिद्धाचल दरबार, जाजरमान लागे छे...
राजा ऋषभदेव, महेरबान लागे छे...
आज अनंता सिद्धोनो, अहेसान लागे छे..
शाश्वत सुखना अहीं, सन्मान लागे छे... ॥१॥
केवो एनो ठाठ छे, ने केवो छे रुआब,
शत्रुंजयनां बागनुं, श्री ऋषभजी छे गुलाब,
फूलोना झुलामां कोई, महेमान लागे छे... ॥२॥
गिरि-शिखर पर नाथनुं, साम्राज्य छे अकबंध,
तो ये ऋषभजी ए, राख्यो मुजथी संबंध,
आखो आ संसार हवे, स्मशान लागे छे... ॥३॥
आ तीरथनां अणु-अणुमां, सिद्धना स्पंदन,
ऋषभजीने रोज करूं हुं, लाख-लाख वंदन,
एनी पाछळ दुनिया आ, कुरबान लागे छे... ॥४॥
कोई जे न आपे, ए तो सघळु आपे छे,
मारा ऋषभजी तो, मारुं ध्यान राखे छे,
ऐना हैये करुणानुं, महामान लागे छे... ॥५॥
शेत्रुंजीना जळमां जेवी, गिरिवरनी छाया,
ऋषभजीनी एवी सहुने, लागी छे माया,
रण-झणता जळमां घणा, अरमान लागे छे... ॥५॥

धरती ने आकाश पर छे, ऋषभजीनुं राज,
भारतनी भूमिनुं, आ वरदान लागे छे... ॥६॥
रोज सवारे आंखो जुए, सूर्योदयने संग,
ऋषभजीनी गुण-कीर्तिनो (समृद्धिनो), उछळतो उमंग,
तीरथनुं आ तीरथ, आलिशान लागे छे... ॥७॥



(११) सिद्धाचल मारो सिद्धाचल प्यारो...

सिद्धाचल मारो सिद्धाचल प्यारो,
मने सिद्धशिलाए लई जनारो,
आदिनाथ मारो आदिनाथ प्यारो,
सर्व जीवोना हैयानो धबकारो,
मारो रक्षणहार मारो तारणहार,
मारा आतमने शुद्धि देनारो,
गिरिराज, गिरिराज, गिरिराज, गिरिराज,
गिरिराज, गिरिराज... जय गिरिराज
आदिनाथ,आदिनाथ, आदिनाथ, आदिनाथ,
आदिनाथ, आदिनाथ.. जय आदिनाथ. ॥१॥
तुं मारो नाथ छे, तुं मारो साथ छे, तारा नामे वहे जीवनधारा,
तुं मारो साज छे, तुं ज संगाथ छे, तुजथी थावुं मारे भवपारा...
तारी कृपाथी ठरे विकार, तारी भक्तिथी सघळुं साकार,
तुजमां भींजाउं हुं अनराधार, तारामां थई जाउं एकतार..
मारा हर एक श्वासमां रहे तुं, रोमे रोमे आनंद भरे तुं,
जेवो छुं एवो स्वीकारे मने तुं, तारा स्नेहे शणगारे मने तुं..
सिद्धाचल मारो सिद्धाचल प्यारो.... ॥२॥

(१२) सिद्धाचलना शिखरोने वंदन...

(रागः हमारी अधूरी कहानी...)

तीर्थोमां कीधुं जेने महातीर्थ छे,शत्रुंजय ए महातीर्थनुं नाम छे..
कांकरे कांकरे, थया सिद्ध अनंत, जाणी लो जाणी लो..
भवि आतमने ज, मळे छे आ तक, माणी लो माणी लो...
पूर्व नवाणुं वार, ज्यां पधार्या आदिनाथ,
एवो शाश्वत छे गिरिराज...
ए गिरीने भेटता, थई जशे भवपार, एवी श्रद्धा धरुं महाराज...
सिद्धाचलना शिखरोने वंदन...शत्रुंजयना शिखरोने वंदन... ॥१॥
तळेटीथी जात्रानी, करुं हुं शुभ शरुआत,
दोडीने रामपोळ पहोंचुं, थशे दादानो संगाथ,
सात श्वासो लई, मूर्ति अंजन थई, एवा दादा बिराजे छे ज्यां...
भावथी जे चडे, तेना कर्मो खपे, भरतक्षेत्रनुं मोक्ष छे ज्यां..
सिद्धाचलना शिखरोने वंदन...शत्रुंजयना शिखरोने वंदन... ॥२॥

(१३) हुं तो शत्रुंजय नदीनी पासे...

हुं तो शत्रुंजय नदीनी पासे, जाउं जळ भरवा,
मारा हैये हरख न माय, जाउं जळ भरवा,
शीर उपर ईंढोणी बेडलुं, जाउं जळ भरवा रे..जाउं जळ भरवा...
हुं तो शत्रुंजय नदीनी पासे.. हुं तो०॥१॥
मनडुं नाचे, तनडुं नाचे,
पहेरी पटोळुं अंग - अंग नाचे, नाचे-नाचे मनडुं नाचे..
मारुं हैयुं करे कलशोर, जाउं जळ भरवा..
अभिषेक करवा,दादाने भेटवा, हुं तो०॥२॥

आदि जिणंदा, प्यारा मुणींदा,
एना अभिषेक करवा चाली, करवा चाली, आदि जिणंदा..
मारा झांझर करे झणकार, जाउं जळ भरवा..
अभिषेक करवा, दादाने भेटवा... हुं तो०॥३॥





(१४) हो राज! मने लाग्यो छे...

(रागः हो राज मने लाग्यो कसुंबीनो रंग...)

हो राज! मने लाग्यो छे भक्तिनो रंग,
गिरिराज! मने लाग्यो छे भक्तिनो रंग...
दादा सीमंधरना दरबारे गुंज्यो छे गिरिवरनी... भक्तिनो रंग
ईहां पूरव नवाणुं मरुदेवाना लाडकडे,
पाथरीयो भक्तिनो रंग... हो राज०॥१॥
पावन तळेटीनी पूजा करतां करतां, पीधो छे... भक्तिनो रंग
रुडी नवली नवटूंकोनी यात्रा करतां करतां
संभळातो भक्तिनो रंग.. हो राज०॥२॥
वहेती शेत्रुंजीनी शीतल सरवाणीमां,वह्यो छे... भक्तिनो रंग
रुडा रायण तरुवरीयानी नीलुडी छायामां,
छलकातो भक्तिनो रंग... हो राज०॥३॥
उजला मंदीरियानी कतारोमां, शोभे छे... भक्तिनो रंग...
रुडा गगने लहेराती धोळी धजाओमां,
लहेरातो भक्तिनो रंग... हो राज०॥४॥
लीलीछम छायामां चोमासुं वसनारे, चाख्यो छे... भक्तिनो रंग...
एवा गरवा गिरिराजनी जात्रा नव्वाणुंमां,
रेलातो भक्तिनो रंग... हो राज०॥५॥

अनंता आतमने तार्या उगार्या छे, तारक छे... भक्तिनो रंग...
ए तो भावी अनंताने सिद्धि देनारो छे,
सिद्धाचल भक्तिनो रंग... हो राज०॥६॥
धन धन धरतीने ए धन धन, रज रेतीमां, धबके छे...भक्तिनो रंग...
जेनो महीमा वर्णवाने, कविओए गीतोमां,
गायो छे भक्तिनो रंग... हो राज०॥७॥
जय हो! सिद्धाचलजी! जय जय आदेश्वरजी!
जयवंती भक्तिनो रंग...
आजे आतम जय करवानो आव्यो छे अवसरीयो,
पीवो छे भक्तिनो रंग... हो राज०॥८॥



नेमरस

(१) आनंद रंग...

आनंद रंग, भगवंत संग, अनहद उमंग उपजायो,
अम अंग अंग, सागर तरंग, उछरंग सुमंगल पायो,
गुणगान प्रभुनां, सूरतालमां, अद्भूत अनुपम छायो,
नेमिनाथ मंदिरे, मनोहर, नेमिनाथ मंदिरे. ॥१॥
आंगी केवी जाजरमान, शोभे जाणे देवविमान,
दीवे दीवे सोनेरी, ज्योति करती नर्तनगान,
आ पुण्य अमारा जाग्या केवा! भाग्य फळ्या छे केवा!
जे शक्ति मळी छे, तेना योगे करीए उत्तम सेवा. गुण०॥२॥
सुखकारण दुःखवारण छे, जिनराया भवतारण छे,
भयहारण मदमारण छे, वर्धमान गुणधारण छे,
जे भक्ति करी ते ओछी लागे, जागे नित नित प्रीति,
अम अंतर आ हंमेशा गातुं, परम प्रभुनी गीति. गुण०॥३॥

(२) गिरनारीनां नेम ...

धोम धखतां तापमां, तमे शीतळ छाया छो,
गिरनारीनां नेम, तमे हैये समाया छो... ॥१॥
प्रेम दीधो तमे आठ भवोमां, राजीमती थई रागी,
आसुं दीधा अंते तो'य, ए तो थया वीतरागी,
प्रेम ने आंसु बे'य रमतमां, तमे जिताया छो... ॥२॥
राजीमतीना तारणहारा, मांगु तमारी माया,

काळी-काळी कीकीओमां, शामळीया सचवाया,
मांगु ते देनारा दाता, तमे सवाया छे... ॥३॥
पगले-पगले नाम तमारूं, लईने हुं तो चालु,
श्वासे-श्वासे स्मरण तमारूं, लागे व्हालु-व्हालुं,
प्रेम बीडेला परबिडीयांमां, तमे लखाया छो... ॥४॥
होठ तमारा लाल-गुलाबी, जादुई परवाळो,
मरक-मरकता होठे बांध्यो, मैं तो जीवनमाळो,
कहेशुं केवी रीते स्वामी! तमे पराया छो... ॥५॥
रूप तमारुं कस्तूरीने, काजलनो सरवाळो,
तो'य सूरजनुं तेज वहावी, सृष्टिने अजवाळो,
गुण-कीर्तिना नाथ बनीने, तमे गवाया छो... ॥६॥
गुणोनी जाहोजलाली जोई, तमारी पासे,
आजथी मारी आखी दुनिया, नाम तमारे लखाशे,
मोक्ष नगरना महाराजा थई, तमे छवाया छो... ॥७॥

(3) गिरनारे शोभे देखो नेमजी...

(राग : कोन दिशा में लेके चला रे...)

नेम नेम मारा, नेम नेम मारा, नेम नेम मारा नेमजी...(२)
गिरनारे शोभे देखो नेमजी शामलीया
मुखडुं जोवा ने टमटम, चमके छे तारलीया,
जोवा चमके छे तारलीया, बेठा मलके छे शामलीया,
राजीमतीना मन बसीया... गिरनारे शोभे...॥१॥
मधुवनमां ज्यां पगला मांडे, योगी एवा नेमकुमार,
विचरे त्यां वनराजी खीलती, साधनानी उगती सवार,
उगता साधकने वंदे, सुरज ने चांदलीया. गिरनारे शोभे...॥२॥
जुनागढनी धरती कहेती, नेम राजुलनी प्रीतकथा,

साक्षी बनी सहसावन कहेतुं (२) संयम केवल मोक्षकथा,
अभिषेक करवा रुमझुम, वरसे छे वादळीया. गिरनारे शोभे... ॥३॥
मधुर स्वरे कोयलीया गावे, जय जय दादा नेमिनाथ,
दर्शन करता भक्तो कहेता, राजुल हुं छुं पकडो हाथ,
पर्वतना शिखर पर साथे (२) टहुके छे मोरलीया. गिरनारे शोभे... ॥४॥
राजुलने तजी नेमकुमार, चढीया ए तो गढ गिरनार,
अखंड प्रीतने साचवे, राजुल सती शिरदार,
नेमना पगले चालवा, थनगने ए राजुल नार,
प्रीत थकी ते पामती, हो केवल लक्ष्मी श्रीकार (२) ॥५॥



(४) गिरनारे श्री प्रभु नेम छे...

(दुहो)

अग्यार हजार बसो कीलो, सुवर्णथी करी रक्षा,
ए पेथडशानी तीर्थरक्षा, एनी केवी अजबनी कक्षा,
शक्ति फोरवी तीर्थभक्तिनी, आपी सुंदर शिक्षा,
होय संयमना मनोरथ, तो नेमि आपे दीक्षा...
हृदय मारुं श्वास भरे छे, धबकार तो श्री नेम छे,
साधना पंथे सत्त्वनो, रणकार तो श्री नेम छे.
कोईना होय जो साथे मारी, सथवार तो श्री नेम छे,
सर्वत्र छे सर्वस्व छे, देवाधिदेव नेम छे...
गीरनारे श्री प्रभु नेम छे, ए नेमनो मने प्रेम छे,
मनमां रमतुं दिलने गमतुं, नाम व्हालुं नेम छे... ॥१॥
नेमिनाथ दीनानाथ, नेमिनाथ प्राणनाथ,
नेमिनाथ जगनानाथ, नेमिनाथ नेमिनाथ,
नेमिनाथ दीनानाथ, नेमिनाथ व्हालानाथ,
बोलो जय जय नेमिनाथ...

तुं गीरनारे बीराजे छे, हुं संसारे खोवायो छुं,
क्यारे मळशे मुजने तुं, ए प्रश्ने परोवायो छुं,
चोर्याशी हजार वर्षोथी, नेम तुं अहीं सोहे छे,
लाख चोराशी योनि भटक्यो, आजे तुं मने मोहे छे,
तारी मारा उपर जाणे, आजे अनहद रहेम छे,
तारा चरणे सोप्युं जीवन, मारो स्वामी नेम छे...
गीरनारे श्री प्रभु नेम छे... ॥२॥
काजलना अंजन जेवा, सुंदर नेमि निरंजन छे,
झाकळ जेवुं भीनुं-भीनुं, नेमि तारुं स्पर्शन छे,
कामणगारुं रूप तमारुं, जोयुं मैं पलवार,
लागे तुजने पामी आजे, धन्य थयो अवतार,
अघरूं-अघरूं जीवतर मारुं, करतां सहेलुं नेम छे,
मुमुक्षुओने मुनिजीवन, आपे वहेलुं नेम छे...
गीरनारे श्री प्रभु नेम छे... ॥३॥

(५) जय जय गरवो गिरनार...

जय जय गरवो गिरनार... जय जय गरवो गिरनार...
नेमनाथ गिरि शणगार... जय जय गरवो गिरनार...
वंदन वंदन वंदन वंदन गिरनार तने वंदन... ॥१॥
पंचम शिखर शत्रुंजय तणुं ए, सिद्धगिरि छे धाम,
कैलास उज्जयंत रैवत नंदभद्र, स्वर्ण गिरि गिरनार,
नमो कर्णविहार प्रासाद... जय जय गरवो गिरनार... ॥२॥
ज्यां शोभे अंबिका मात, शासनने सदा सुखकार,
भावे प्रणमुं श्री नेमिजिनेश्वर, गिरि भूषण शणगार,
पृथ्वीना तिलक समान... जय जय गरवो गिरनार... ॥३॥

छे अनंत आत्माओ तणी, दीक्षा भूमि गिरनार,
छे अनंत तीर्थंकरो तणी, कैवल्यभूमि गिरनार,
ने आवती चोवीसी तणी, निर्वाणभूमि गिरनार,
अध्यात्म नगरी गिरनार... जय जय गरवो गिरनार... ॥४॥
चौद हजार नदीनां ज्यां जळ समायां, शीतळ गजपद कुंड,
ज्यां दृष्टि अनुभवे धन्यता जोई राजुल रहनेमि टूंक,
दीक्षा केवळ सहसावने नमो, समवसरण जिनबिंब,
दीपे शिखरोनी माळ...जय जय गरवो गिरनार... ॥५॥
ज्यांना कणेकणमां वसे, महापुरुषोनां बलिदान,
धार पेथड सज्जन झांझणशा नामे वही आ रक्तधार,
वंदु हिमांशुसूरि धर्मरक्षित, हेमवल्लभ मुनिराय,
सौ चालो जईऐ गिरनार...जय जय गरवो गिरनार... ॥६॥

(६) जय हो गिरनार...

गिरनार गिरि तरणतारण जहाज,
नेमनाथ दादो मारो गिरि शिरताज,
तारा गुण गातां गिरि थाये बेडो पार,
हाथ मारो झाली हवे भवपार उतार,
तुं ज मारो श्वास गिरि तुं ज विश्वास,
तुं ज एक गिरि मारी आश...
जय हो गिरनार गिरनार गिरनार...
गरवो गिरनार गिरनार गिरनार...
जय हो गिरनार.... गरवो गिरनार ॥१॥
तार गिरि तार मने भवसागर तराव तुं,
तुं ज भक्ति तुं ज शक्ति तुं शरणआधार,
तार गिरि तार मने भवनिस्तार कराव तुं,

तुं ज गति तुं ज मति तुं परमआधार,
हो...गिरनार तारो छे संगाथ, माथे हाथ तारो नेमनाथ,
भवोभव मळजो तारो साथ, स्वीकारो अरज ओ नाथ,
तुं ज मारुं गीत गिरि, तुं ज मारी प्रीत छे,
तुं ज मारुं स्मित गिरि, तुं ज मारी रीत छे,
तुं ज मारो श्वास गिरि तुं ज विश्वास,
तुं ज एक गिरि मारी आश...
जय हो गिरनार गिरनार गिरनार... ॥२॥
हो... तारुं शरणुं जेणे स्वीकार्युं, गिरि कर्या अनंता उद्धार,
सिद्धपदगिरि गिरिराय मने तारी करो उपकार,
तुं ज मारुं हित गिरि, तुं ज मारी जीत छे,
तुं ज मारुं लक्ष्य गिरि, तुं ज थकी मोक्ष छे,
तुं ज मारो श्वास गिरि तुं ज विश्वास,
तुं ज एक गिरि मारी आश...
जय हो गिरनार गिरनार गिरनार... ॥३॥

(७) जोगी बनीने चाल्या नेमकुमार...

(दुहो)

वादळथी वातो करे, उंचो गढ गिरनार,
पावन थई डोली रह्यो, ज्यारे आव्या नेमकुमार,
राजुल आवी साथमां छोडी सकल संसार,
अमर कहानी प्रेमनी गाई रह्यो गिरनार...

(मुखडुं)

जोगी बनीने चाल्या नेमकुमार,
धन्य बन्यो रे पेलो गढ गिरनार,

विचरे ज्यां विश्वना तारणहार,
धन्य बन्यो रे पेलो गढ गिरनार... ॥१॥
जेने जग कल्याणनी लागी लगन,
जीवननी साधनामां मनडुं मगन,
अंतरमां प्रगटे छे प्रीतनी अगन,
आतम उडे छे एनो उंचे गगन (२),
वायरामां वहेती वसंती बहार... ॥२॥
एना प्राणमांथी प्रसरे छे एवो प्रकाश,
उजाळी दीधा छे धरती आकाश,
भवोभवनी प्रीतडीनो बांध्यो छे पाश,
पूरी छे राजुलना अंतरनी आश (२),
मोक्षे सिधाव्या राजुल नेमकुमार... ॥३॥

(८) निरखी नयणा भींजाय...

(राग : मिले मन भीतर...)

निरखी नयणा भींजाय, निरखी नयणा भींजाय,
श्री गिरनारी नेमप्रभुने, निरखी नयणा भींजाय,
व्हालाजीनुं मुखडुं देखी, हियडे हरख न माय,
जिनेश्वर! निरखी नयणा भींजाय (२). ॥१॥
स्वामी स्पर्शे रोमराजी, पलमां पुलकित थाय (२),
श्री जिनवरना गुणलां गाता, आनंद अति उभराय. जि०॥२॥
श्यामल वरणी देहडीने, उज्जवल एनी कांति (२),
अषाढ मासे घनघोर मेहे, वीज तणी ए भ्रांति. जि०॥३॥
पदवी लहीं षट्जीवत्राता, आपता सौने शाता (२),
सहसावनमां साधनाए, हुआ केवलज्ञाता. जि०॥४॥

चंदनवने सर्पनाशे, मोर तणे टहुकार (२),
श्री नेमीश्वर नाम समरता, दूर टळे विकार. जि०॥५॥
आर्य अनार्य भूमि विहरता, जिन वचनामृत पाता (२),
श्री गिरनारनी पंचमटूंके, मुगतिपतिने थाता. जि०॥६॥
घेर बेठां ए गिरि ध्यावे, भवचोथे शिव सजावे (२),
हेम वदे ए गिरि सेवे, वल्लभपदने पावे. जि०॥७॥

(९) नेम तुं प्राण आधार...

नेम तुं प्राण आधार मेरो प्रभु, नेम तुं प्राण आधार....
विसरुं जो प्रभु एक घडी तो, प्राण रहे ना हमार. ॥१॥
भोग त्यजीने जोग लेवाने, नीकळ्या नेमकुमार,
गढ गिरनारने घाटे वसिया, ब्रह्मचारी शिरदार. ॥२॥
तुज मूरतिनी भक्ति करतां, थाय हरि एक तान;
पद तीर्थंकर करे निकाचित, अकल तुज उपगार. ॥३॥
समतारस भरीयो गुण दरियो, नेमनाथ गिरनार;
सुता जागता ध्यावुं निशदिन, श्वासमांहि सो वार. ॥४॥
मन माणिककुं सोंप्युं में तो, मनमोहनने उधार;
प्रेम व्याज चढ्यो छे इतनो, किम छूटशे किरतार. ॥५॥
हारुं नहि तुज बळ थकीजी, सिद्धसुख दातार;
श्रद्धा भरी छे एक हृदयमां, तुजथी पामीश पार. ॥६॥
शामळियाकुं अखियन जाणे, करुणारस भंडार;
हेम वदे प्रभु तुज अखियनकुं, दीयो छबी अवतार. ॥७॥



(१०) नेमजीना नामनी तुं लूंट लूंटी ले...

नेमजीना नामनी तुं लूंट लूंटी ले;
नेमिनां चरणे जई बेडो पार करी ले. ॥१॥
शरणे जाये एने प्रभु राह बतावे;
जपे नेम एने मोह केम सतावे;
राजुलना नाथनुं तुं नाम रटी ले. नेमि०॥२॥
ध्यान धरे एने प्रभु ज्ञान अपावे;
जाप जपे एना प्रभु पाप खपावे;
हितकारी नेमिने प्रणाम करी ले. नेमि०॥३॥
कृपा थाये प्रभुनी तो दोष दूर थाय;
बंधनो जे रागनां ए चूर चूर थाय;
नेमि भजी संसार तमाम त्यजी ले. नेमि०॥४॥



(११) नेम रस...

संसारथी विरती रथनो गिरनारथी मुक्तिपथनो... (२)
सथवार छे एक माहरो, आधार छे एक बस...
नेम...नेम...नेम...नेमरस!!! ॥१॥
ओ नेम तुं मारो प्रेम छे, सोंप्युं तने आ जीवन...
जोई तने पहेली ज क्षणे, मोहायुं छे मारुं मन...
गिरनारी ब्रह्मचारी जाउं तुज पर हुं ओवारी,
मुक्तिनो वेषधारी राजीमती बनुं तारी...
भरथार तुं रहेजे मारो, भवोभवनी छे तरस...
सथवार छे एक माहरो, आधार छे एक बस...
नेम...नेम...नेम...नेमरस!!! ॥२॥
गिरनार तो ए भूमि छे, ज्यां शिव वर्या, जीव अनंत...
अरिहंत सिद्ध मुनि तर्या, धन्य बन्या साधु संत...

नेमिनो हाथ झाली बनुं हुं प्रशम व्रतधारी,
रैवतनो साथ पामी हवे बनवुं मुक्तिगामी...
प्रभु नेमनो गिरि हेमनो, मारे बनवुं छे वारस...
सथवार छे एक माहरो, आधार छे एक बस...
नेम...नेम...नेम...नेमरस!!! ॥३॥

(१२) नेमि निरंजन...

(रागः देस मेरे...)

ओ नेमि निरंजन, शिवादेवीनो नंदन,
राजुल मन वसियो, नेमि प्रीतम प्यारो,
श्यामळीयो मारो, मने सौथी व्हालो,
गिरनार शणगारो, तुं छे दुनिया मारो... ॥१॥
दर अमावसनी राते, श्री अंबिकादेवी पधारे,
नेमने प्रदक्षिणा आपे,
चौद हजार नदीओना पाणी, स्पर्शे प्रभु ने छलकाई,
गजपद कुंड अहीं एवुं शोभे... ॥२॥
ओ गिरनारी, तुं छे वितरागी,
तारा अभिषेक पर जाउ ओवारी,
ने संध्या समये, ए आरती तारी,
ए दृश्य जुहारी, भीनी अश्रु अमारी...
नेमी नाम पुकारी, राजुल आवी,
प्रीतम एना नव भवना, छे वितरागी... ॥३॥
सहसावननी आ भूमि, ज्यां नेम साधना सांधी,
पाम्या विरति केवलज्ञानी,
संयम जीवननी वेशा, मळजो मने हंमेशा,
रजोहरण तुज हस्ते हुं मांगु... ॥४॥

तारी अभिषेकनी धारा, ए नेमनाथना नारा,
नर अने नरेन्द्रना वारा...
नथी मान के अहंकारा, मुख पर सहजनी धारा,
धन्य छे ए दृश्य जोनारा... ॥५॥
ओ गिरनारी, तुं छे अविनाशी,
विनाशी तणो हुं, थयो छुं आशी,
बांधी छे मैं तो, कर्मोनी राशि,
मांगु प्रभुजी, दर्शन अविनाशी... ॥६॥
नेमि नामनुं अंजन, करे निरंजन,
करजो मुज हृदयामां, प्रेमनुं सिंचन,
हुं टीपां माटे तरस्यो, ते दरियो आखो पीरस्यो,
गुरु तणा वचनोथी, मने स्पर्श्यो,
सर्वत्र परमनुं होवुं, बस ताराथी ए जोवुं,
हुं अने मारापणानुं खोवुं... ॥७॥
ओ गिरनारी, तुं छे अविकारी,
पशुओनी वातो, ते सर्व स्वीकारी,
जीव मात्रमां रहेलुं, शिव तत्त्व निहारी,
तव द्रष्टि आपो, ए अरज अमारी... ॥८॥



(९३) नेमि प्रीतम प्यारा...



(रागः अभी मुझमें कहीं...)

नेमि प्रीतम प्यारा, व्हाला मारा नेमिनाथ (२),
तुज संग प्रीतलडी एवी लागी मने, नवभव केरी प्रीतलडी...
प्रभु हाथ झाली भवपार उतार, भवपार उतारो मने,
मारा नेमिनाथ (२), भवपार उतारो मने (२) ... ॥१॥
संयम लेवाने काज, प्रभु जइ वस्यां गढ गिरनार,
सहसावने करी निवास, प्रभु केवल वर्या गिरनार,
रैवतगिरि मंडन दुःखडा दूर निवारो,
स्वर्णगिरि मंडन भवना फेरा टाळो... प्रभु हाथ झाली... ॥२॥
दीक्षा केवल ने निर्वाण, त्रण रत्न पाम्या गिरनार,
शाश्वतगिरि शणगार, तमे छो जीवन आधार,
शिवादेवी नंदन चरण शरण आपो,
मुज भक्तिनी विनंति प्रभुजी स्वीकारो... प्रभु हाथ झाली... ॥३॥

(९४) मारा चित्तमां...



(रागः गुरु प्यार है...)

मारा चित्तमां, मारा वित्तमां, नेमिनाथ तुं, नेमिनाथ तुं...
मारी भक्तिमां, अभिव्यक्तिमां... नेमिनाथ तुं, नेमिनाथ तुं. ॥१॥
मारुं स्वप्न तुं, मारी आंख तुं, मारुं आभ तुं, मारी पांख तुं,
मारी मांगणी, बस एक छे, तारा संगमां, मने राख तुं,
तन मन तणी, मुज शक्तिमां... नेमिनाथ तुं... ॥२॥
मम सत्य तुं, सौन्दर्य तुं, जीवन तणुं, तात्पर्य तुं,
मम देव तुं, मम धर्म तुं, उपदेश तुं, गुरुवर्य तुं,
श्रद्धाभरी, अनुरक्तिमां... नेमिनाथ तुं. ॥३॥

साची समज, मने आपजे, काची समज, प्रभु कापजे,
जीवन तणी, केडी उपर, कुमकुमना पगलां थापजे,
मुज आतमा तणी तक्तीमां... नेमिनाथ तुं. ॥४॥

(१५) मारा शमणामां नेम प्रभु आवता...

मारा शमणामां नेम प्रभु आवतां रे लोल,
मारी आंखोमां अमृत वरसावता रे लोल,
ए तो आवीने मुजने जगाडता रे लोल... ॥१॥
मारी घेरी नींदर उडाडता रे लोल,
ए तो उरना आसनीये बिराजता रे लोल,
हुं तो अंतरथी आरती उतारतो रे लोल,
हुं तो भावभर्या फूलडे वधावतो रे लोल... मारा...॥२॥
हुं तो स्नेहनी सितार आज छेडतो रे लोल,
मारा स्वामीने दिलथी रीझवतो रे लोल,
प्रभु हसी हसी मुजने बोलावता रे लोल,
मने मुक्तिनो मारग बतावता रे लोल... मारा...॥३॥
एना शिखरे धजाओ मोंघी फरफरे रे लोल,
एना सोनेरी कळशा जनमन हरे रे लोल,
एनी जाळीनी कोतरणी जीणवी रे लोल,
मने जोवी गमे बहु ए अनेरी रे लोल... मारा...॥४॥



(१६) राजुलने नेम मळी जाशे...



(राग : राधाने श्याम...)

के आजे संयमनुं पानेतर पहेरीने जो,
राजुलने नेम मळी जाशे तुं जो...
राजुलने नेम मळी जाशे.
प्रीतने नवी रीत मळी जाशे तुं जो (२)
राजुलने नेम मळी जाशे.
संसार त्यजी नेमजी चाल्या धरी पावन केडी;
राजुलराणी पाछळ चाल्या नेम राह दोडी... ॥१॥
नेम तारी प्रीतमां हुं शानभान भूली जाउं,
लाग्युं रे अमने तारुं घेलुं,
नेम तारा मारगडे हुं पण दोडी आउं,
नथी रे तुज विण रहेवुं,
के आज संयमनो साज नेम देशे तुं जो,
मने सिद्धशिलाए लई जाशे तुं जो...
राजुलने नेम मळी जाशे. ॥२॥
गिरनारे शुभ घडी आवी ऊभी द्वारे आज,
गिरिनुं अंग थाये घेलुं,
मळशे रजोहरण नेमजीने हाथे आज,
मनडुं नाचे आज मारुं,
के आज नवभवनी प्रीत पूरी थाशे तुं जो...
के साची प्रीत करी जाणी मारा नेमे तुं जो...
के आजे संयमनुं पानेतर पहेरीने जो...
राजुलने नेम मळी जाशे. ॥३॥



(९७) रोमे रोमे गिरनार...

नेम नेम नेम व्हाला नेम... (२)
मारा रोमे तुं गिरनार, मारा श्वासे तुं नेमिनाथ... (२)
मारो आधार तुं, मोक्ष दातार तुं...
मारो सथवार तुं... मारो पगथार तुं...
मुक्ति तणुं सरनामुं तुं, हैयानो धबकार तुं...
रोमे रोमे गिरनार गुंजे श्वासे श्वासे
श्वासे श्वासे नेमिनाथ बिराजे रोमे रोमे... ॥१॥
गिरिना शिखरे छे तुज स्पंदन, कण-कणमां अहीं तारुं ज कीर्तन...
शिवादेवी नंदन नेमि निरंजन, रुप तमारुं शीतल अंजन...
गिरि शणगार तुं, गुण भंडार तुं,
मारो सथवार तुं, मारो पगथार तुं...
भक्ति तणुं सरनामुं तुं, सरगम ने सुरताल तुं. रोमे०॥२॥
हृदय मंदिरीये छे तुज आसन, तारी कृपाथी मळ्युं जिनशासन...
तन मन जीवन तुजने हो अर्पण,तुं छे मारग मोक्षनुं दर्पण...
दुःख हरनार तुं, सुख देनार तुं,
मारो सथवार तुं, मारो पगथार तुं...
शक्ति तणुं सरनामुं तुं, आतमनो रखवाळ तुं. रोमे०॥३॥
नेमिनिरंजन किमही ना वीसरे (२)
मनमोहनकी मोहनगारी, मूरत देखी हियडुं हरखे...
नेमि निरंजन किमही ना वीसरे (२)
रोमे रोमे गिरनार गुंजे, श्वासे श्वासे नेमिनाथ बिराजे (२)
हेमवल्लभ कहे नाम प्रभुनुं (२) जपीए भवजळ तरवा काजे,
रोमे रोमे गिरनार गुंजे, श्वासे श्वासे नेमिनाथ बिराजे (२)

(९८) श्याम! कहोने क्यारे मळशुं?...



श्याम! कहोने क्यारे मळशुं?
डुंगरनी टोचेथी देखो, अमे प्रभु टळवळशुं... श्याम०॥१॥
नथी भूल्या अमे तमने व्हाला, भूल्या अमारी जातने व्हाला,
तमथी छेटा रहीने अमथा अग्निमां परजळशुं! श्याम०॥२॥
आम तेम अमे भटक्या करीए, धीमे पगले वळग्या करीए,
बोलोने स्वामी, एक बीजामां कदी हवे ओगळशुं? श्याम०॥३॥
थाय अमोने, गिरनारे तुज टेरवा पकडी चडीए,
थाय कदी तमने एवुं के, चाल आंगळी दईए...?
तमे अमे संगाथे क्यारे राजुल जेम विहरशुं...? श्याम०॥४॥
साचु कहेजो, व्हालम! तमने मळवानुं मन थाय छे अमने?
अमे वियोगी छीए तमे मळशो तो रणझणशुं. श्याम०॥५॥
तमारा मननी वात अमे, ने अमारा दिलनी वात तमे रे,
उदय कहे एकबीजाने कदी हवे सांभळशुं? श्याम०॥६॥

(९९) सामुं जुओने-९



सामुं जुओने मारी सामुं जुओने एक वार
नेम मारी सामुं जुओने...
करुणादृष्टिथी मारी सामुं जुओने,
अमीदृष्टिथी मारी सामुं जुओने... सामुं...॥१॥
निगोदना दिवसो मने याद ज आवता,
तुं अने हुं रह्या एक ज धाममां,
अनादिकाळथी दुःखोने खमतां,
आ चोराशी लाख योनिमां भमतां,
भवोभव सुधी साथे रह्या, आजे मने केम छोडी गया,

तारा विना दादा मने कोण पूछे ना,
मारी अखियोना आंसु कोण लूछे ना. सामुं...॥२॥
संसार असार छे, मोक्ष ज सार छे,
तारी वातो में तो सुणी नलवार छे
मोहमायाना झूले हुं झूलीयो,
राचीमाचीने कर्मो में बांध्यां,
हसतां हसतां कर्मो में बांध्यां,
आत्मामां कर्मोना ढगला भर्या,
रोतां रोतां आजे मारां कर्मो छूटे ना,
दुःखोना डुंगर मारा आजे तूटे ना. सामुं०॥३॥
छेल्ली विनंती मारी दादा तुं सुणजे,
अंत समये आवी तुं मळजे,
पीडा ज्यारे रग रगमांथी व्यापे,
तारा दर्शननी ठंडक तुं आपजे,
जंजाळ जगनी छोडी गई,
मने तारा ज ध्यानमां स्थिर करी,
समाधि मरण मळे एवुं हुं मांगुं,
भवोभवना फेरा टळे एवुं हुं मांगुं. सामुं०॥४॥

(२०) सामुं जुवोने-२

जीवन समर्पण तुजने कर्युं छे, सर्वस्व मारुं, में तुजने धर्युं छे,
तारे तो लाखो पण मारे तुं एक छे,
दिन रात यादमां, स्मरणमां तुं एक छे,
तारी आणा हुं मस्तके धरुं, तव आणाथी शिवपद पामुं,
मन वच कायामां, तुजने हुं स्थापुं

अंत समय ध्यान धरी मुक्ति हुं पामुं,
सामुं जुवोने मारी सामुं जुवोने,
एकवार दादा मारी सामुं जुवोने... ॥१॥
महाविदेहमां जन्म मने आपजो,
समवसरणमां मुजने बोलावजो,
अमृत सम एवी वाणी संभळावजो,
तारा ज हस्ते मने रजोहरण आपजो,
करेमि भंते मळे, साधना मारी फळे,
पंचम ज्ञानने आत्मा वरे..
समाधि मरण मळे एवुं हुं मांगुं,
भवोभवना फेरा टळे एवुं हुं मांगुं, सामुं०॥२॥
नेमिनाथ दादा मने प्राण थकी प्यारा,
सर्वजीवोना ए तो तारणहारा,
मारा हृदय मंदिरमां बिराजो,
कर्मो कापी मने सिद्ध बनावजो,
जिम तारी तमे राजुलनार,
तिम तमे आजे तारो आ बाळ...
तारी मारी प्रीत भवोभवनी तुं बांधजे,
तारो मारो साथ भवोभवनो तुं राखजे,
नेम बोलावो मने नेम बनावो,
गिरनार बोलावी मने नेम बनावो.
यात्रा करावी मने नेम बनावो,
कृपा वरसावी भवपार उतारो. सामुं०॥३॥

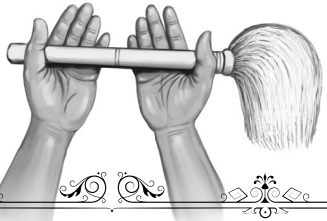

सुगंधनुं सरनामुं संयम

(१) क्यारे बनीश हुं साचो रे संत...

क्यारे बनीश हुं साचो रे संत,
क्यारे थशे मारा भवनो रे अंत. ॥१॥
लाख चोराशीना चोरे ने चौटे, भटकी रह्यो छुं मारग खोटे,
क्यारे मळशे मने मुक्तिनो पंथ. क्यारे०॥२॥
काल अनादिनी भूलो छूटे ना, घणुंये मथुं तोये पापो खूटे ना,
क्यारे तोडीश ए पापोनो तंत. क्यारे० ॥३॥
छक्काय जीवनी हुं हिंसा रे करतो, पापो अढारे जरी ना वीसरतो,
मोहमायानो हुं रटतो रे मंत्र. क्यारे०॥४॥
पतित पावन ओ प्रभुजी! उगारो, रत्नत्रयीनो हुं याचक तारो,
भकत बनी मारे थावुं महंत. क्यारे०॥५॥

(२) छोडवा जेवो संसार छोडी...

(राग : मौला मेरे ले ले मेरी जान...)

छोडवा जेवो संसार छोडी, मोहमायाना बंधन तोडी...
जगतथी जे जुदा थाय.. मुनि तारा दर्शनथी दुःख जाय... ॥१॥
कहे मुनिवर राया, सांभळ मारी काया,
धरुं नहीं तारी माया, तप तपुं सुखदाया,
नित्य समरे ए धन्ना मुनि ने,

तपने अजवाळ्यो समता धरीने... छोडवा जेवो... ॥२॥
बाळने लाड लडावे, वृद्धनुं अंतर ठारे,
ग्लाननी भक्ति टाणे, ग्लानि कदी नहीं आणे,
करवी नंदिषेण मुनि जेवी सेवा,
वहेला लेवा छे शिवसुख मेवा.. छोडवा जेवो... ॥३॥
स्वाध्याय पंच प्रकारे, भणे भणावे धारे,
आगम अर्थ विचारे, संयम तेज सवारे,
गुरुवर तमे छो समकितदाता,
गुरुवर मळजो तारी छाया.. छोडवा जेवो... ॥४॥
ज्ञानी कहुं के ध्यानी, तमे छो गुणखाणी,
गुणगरिमा जेनी, जगतथी नहीं छानी,
रंगे उमंगे गुरुवर पाया,
आजे जयकार एना गवाया.. छोडवा जेवो... ॥५॥

(3) जेनां पावन पगलांथी...

जेनां पावन पगलांथी धरती धबकार करे,
ने वीर प्रभुनो वेश धरी संयम शणगार करे,
देवो पण साधुजीवननो, जयजयकार करे, जयजयकार करे (२) ॥१॥
कोई भक्त बनीने आवे, अरे आवे आवे आवे,
पण मनमांहे मुनिवर, ना हरखावे, ना हरखावे,
कोई उपसर्गो वरसावे, एनुं हैयुं तो, रमतुं समताभावे,
सन्मान अने अपमान भूली, सरखो उपकार करे. देवो०॥१॥
दीक्षा लईने अणगारा, अणगारा रे अणगारा,
भिक्षा माटे घरघरमां, फरनारा ए फरनारा,
मळशे तो संयमवृद्धि, ना मळशे तो माने तपनी वृद्धि,
ए राग विना ने द्वेष विना, सहुनो स्वीकार करे. देवो०॥२॥

कोई निंदे ने कोई वंदे, हां वंदे रे भाई वंदे,
भीतरथी रहे आनंदे, आनंदे रे आनंदे,
मुनिवर जंगम तीरथ छे, मारे रहेवुं छे मुनिवरना संबंधे,
मुनिराज तणा आ जीवनथी, उदय भवपार करे. देवो० ॥३॥



(४) झूमे रे झूमे आनंदे

(राग : तिरंगा...)

मेरु महालय, जेवा महाव्रत, धरवा तुं चाली उमंगे,
बाली उंमरमां, वैरागी थईने, वहेती तुं त्याग तरंगे,
दुंदुभि बाजे, बाजे मृदंगम्, गाजे गगननी गोख तले,
जग आखुं नमे, महात्याग करे तुं, रंगाई संयम रंगे,
जयनाद करे, उजमाळ रहे तुं, झूमे रे झूमे आनंदे... ॥१॥
तारो ओघो केवो नानो-नानो,
आपे ओळख तारी वीरतानो,
तुं एनी प्रीत धरजे, संयम केलि करजे,
गुरुकुलवास सेवी, मुक्तिनी माळ वरजे,
तुं नानी नानी श्रमणी बनीने सोहे,
तुज दर्शने लाखो भाविक मन मोहे...
दुंदुभि बाजे... झूमे रे झूमे आनंदे... ॥२॥
तारी दीक्षानो संदेश सुणतां,
तने ईन्द्रो-नरेन्द्रो रे नमतां,
दीक्षाना स्वर्ण पाने, तुज नाम रे लखाशे,
गुण-कीर्ति-यश तारो, जिनशासने गवाशे,
तुं साधनानी श्रेणि, सदा आरोहे,
तुज दर्शने लाखो भाविक मन मोहे...
दुंदुभि बाजे... झूमे रे झूमे आनंदे... ॥३॥

(५) थावुं मारे रजोहरण रसिया रे...

हे... शणगारी संयमनी, मैं साज सवारी रे,
अलगारी बनवानी, मैं करी तैयारी रे,
मुक्तिना मारगने जोवा, मनथी विचारी रे,
गुरुवर संगमां आतम रंगमां आया अवसरीया रे,
थावुं मारे रजोहरण रसिया रे... ॥१॥
प्यारा प्रीतमनी प्रीतने पामी, अरिहंत अविकारी साथमां,
व्हाली गुरुमाँ निराळी, पीरसे छे वीरवाणी संगाथमां,
आपोने ओघो जल्दी हाथमां..
हे... थनगन नाचवा, निजमां राचवा, उमंग उछळीया रे... ॥२॥
जागी परमनी तरस जागी, मुक्तिनी लगनी लागी जेहथी,
एवा श्रमणोनी संगत पामी, बनवुं रे अनुगामी स्नेहथी,
अंकित करवुं रे मन तेहथी..
हे... विरती वरवा, व्रतने धरवा, संयम रंगरसिया रे.. ॥३॥

(६) धन्य धन्य बनावीश जन्म माहरो...

(राग : रोमे रोमे हुं तारो थतो...)

धन्य धन्य बनावीश जन्म माहरो,
मने पंथ जड्यो छे दादा ताहरो (२)
जे पथ पर चाल्या स्वयं तीर्थंकरो,
एवो पंथ जड्यो छे दादा ताहरो... धन्य धन्य०॥१॥
कोई कहेशे के हैये मने डर हशे;
कोई कहेशे के मुश्किल सफर हशे,
मने विश्वास छे मारा शासन पर;
जेनी करुणाथी भीनी आ सृष्टि सफर,
गुरु भगवंतनो मळ्यो मने आशरो,
जेना धणी बेठा स्वयं तीर्थंकरो... धन्य धन्य०॥२॥

ज्यारे संयम अपाशे हशे मुक्ति लक्ष;
नाचीश ओघो लईने हुं सौनी समक्ष,
मनमां राखीश सत्य-अहिंसानो पक्ष;
दादा रहेजो हाजराहजुर प्रत्यक्ष,
मारा श्वासमां श्वास नवो पाथरो,
लखी आपो मुक्ति सुखना हस्ताक्षरो... धन्य धन्य०॥३॥
भले चालतां विहारोमां कांटा खूंचे,
भले कोई मने सुखशाता पूछे,
भले ना कोई मान मळे ऊंचे;
भले कोई मने गुरु जेम पूजे,
नही बांधीश हुं आशानां वादळो,
राखीश समता ने शातामां हर पळो... धन्य धन्य०॥४॥

(७) परथी थया पराया...

परथी थया पराया... अमे स्वना सगा थया;
संसारनो सार समजी... परमना पथिक थया;
आतम थयो ऊजागर... परमातमा थवा;
संयम!... मारो श्वास... संयम!... प्रभुनो अहेसास... ॥१॥
कायानो मेल धोवा, केटला भवो कर्या,
आतमनो मेल धोवा, गुरुना चरण मळ्या,
गुरुना वचनथी जाणे.. (२) सिद्धिना द्वार खूल्या.. संयम..॥२॥
दुनियानी दृष्टि छूटी, अंतरना नयना खूल्या,
प्रभुने पामवा हवे, पल पल तलसी रह्या,
प्रीत परमनी पामवा.. (२) प्रभुना पगले चाल्या.. संयम..॥३॥
जगमां मारुं न कोई, ए सत्यने समजी गया,
आ आतम एक ज मारो, ए सत्यने जाणी गया,
वीतरागी जेवा बनवा...(२) अमे वैरागी थया... संयम॥४॥

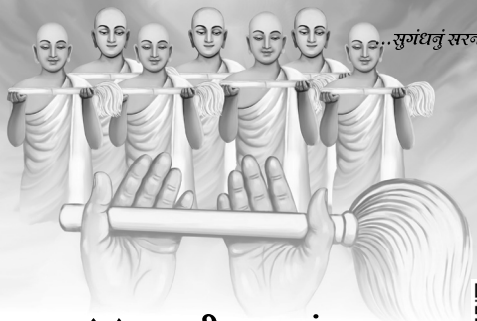

(८) परमनी सफरमां...

परमनी सफरमां एक ज सथवारमां, श्वासथी अधिक विश्वास, (२)
गुरुवचन पर अंतर बहुमानथी, प्रगटे अजब उल्लास, (२)
मने संयम जीवननी रढ लागी, मारा स्वामी...
मने परमतणा पंथनी रढ लागी, मारा स्वामी... ॥१॥
गुरुचरणने तन-मन-जीवनना, पुष्पोथी पुजूं दिन-रात,
पांपण पलकार पण थाय गुरुआणथी, प्रगटे जीवन प्रभात,
में तो श्रमणनी साधना रे मांगी... मारा स्वामी... ॥२॥
भवमां भटकतुं चेतनानुं पंखी, अंतर उपवनमां आवे,
पानखर विरमे ने प्रगटे वसंत त्यां, आनंद उत्सव प्रगटावे,
मारी अंतर संवेदना रे जागी... मारा स्वामी... ॥३॥
कंटकोनी केडी पर विचरे आनंदथी, परिषहोने वधावे,
वीरना मारगडे वीर बनी चाले, काया सहिष्णु बनावे,
मारो आतम थयो रे वैरागी... मारा स्वामी... ॥४॥
पळना प्रमाद वीण स्वाध्याय रटणा, करता श्वासे-श्वासे,
भाव श्रमणनी उघडे दिशाओ, दोषो दूर नाशे,
मारुं जीवन बने रे बडभागी... मारा स्वामी... ॥५॥
राग अने द्वेषना बंधनो टळ्या ने, अंतर दशा अजवाळी,
जन्मो जूना अंधार टळ्या तस, प्रगटी ज्योति निराळी,
मारी भवभवनी भावठ रे भांगी... मारा स्वामी... ॥६॥



(९) मनडो लागो रे लागो रे विरति में...

मनडो लागो रे लागो रे विरति में... (२)
साधु जीवन की खूबसूरती में.. हो... (२)
मनडो लागो रे लागो रे विरति में.. (२)
धरुं नहीं में धन्यता धन्य में ना धरती में.. (२)
ना काया की माया में.. (२) ना कंचन कीर्ति में,
मनडो लागो रे लागो रे विरती में... (२) ॥१॥
खुद्दारी से छोड रहा है, तुं दुनिया ये सारी.. (२)
यौवन वय में तुं बनेगा वीर का विरतिधारी.. (२)
हमने जीवन व्यर्थ गवाया, इच्छाओ की पूर्ति में..(२)
अब जीवन को सौपना है, प्रभुवर करुणा मूर्ति में,
धरुं नहीं में धन्यता धन्य में ना धरती में.. (२)
ना काया की माया में.. (२) ना कंचन कीर्ति में,
मनडो लागो रे लागो रे विरति में.. (२) ॥२॥



(१०) मने वेश श्रमणनो मळजो रे...

मने वेश श्रमणनो मळजो रे, मने वेश श्रमणनो फळजो रे,
ममता मोटाई मोहमायानां... बंधन सघळां टळजो रे. ॥१॥
पंच महाव्रत पाळुं हुं पावन... निर्दोष ने निष्कलंक,
समतामां लयलीन रहेवुं... सरखा राय ने रंक,
आंख ईर्यासमितिऐ ढळजो रे... मने०॥२॥
आठ पहोरनी साधना काजे... वहेली परोढे हुं जागुं,
श्वासो लेवा माटे पण हुं... गुरुनी आज्ञा याचुं,
मन गुरुआणाए भळजो रे... मने०॥३॥

सूत्र अर्थ ने स्वाध्याय साधी... शास्त्रो सघळां वांचुं,
जिनवाणीनुं परम रहस्य... पामी अंतर राचुं,
मारी अज्ञानता सवि टळजो रे... मने०॥४॥
आहारमां रस होय न कोई... घर घर गोचरी भमवुं,
गामोगाम विचरतां रहेवुं... कष्ट अविरत खमवुं,
मारा कर्मो निर्जरी जाजो रे... मने०॥५॥
द्वेष जीवनमां कोई नथी रे... रागना बंधन त्यागुं,
मोह मायाने तजवा माटे... गुरुकुलवासने याचुं,
मारा सघळां कषायो टळजो रे... मने०॥६॥
आजीवन अणिशुद्ध रहीने... पामुं अंतिम मंगल,
साधी समाधि मोक्षने पंथे... आतम रहे अविचल,
मारी सद्भावनाओ फळजो रे... मने०॥७॥

(११) मारे तो लेवानी छे दीक्षा...

संयमना भावनी करोने परीक्षा (२)
मारे तो लेवानी लेवानी छे दीक्षा...
लेवानी लेवानी लेवानी छे दीक्षा...
लेवानी मनभावनी लेवानी छे दीक्षा... (२) ॥१॥
जीद कहो तो जीद परंतु अहीं मुजने ना फावे (२)
मुनिवर बनीने विहरवुं छे (२) पळपळ आनंद आवे...
साधुपणानी हुं चाहुं ते दीक्षा... मारे तो०॥२॥
खावुं, पीवुं, हरवुं, फरवुं शुं छे आ ज जीवन? (२)
लडवुं, झघडवुं, मळवुं, रझळवुं (२) आ ते केवुं जीवन?
झंखे हवे हैयुं वैराग्यनी दीक्षा... मारे तो०॥३॥

आ मारी माता, आ मारा पिता, आ मारां भाई-बहेन (२)
संसारी सगपणथी अदकेरां लाग्या(२), मुनिवरनां ढळतां नैन,
साचा संबंधनी मेळववा शिक्षा... मारे तो०॥३॥
मीठा मधुरा ने मनमगता पाम्यो छुं परमातम, (२)
ज्ञानी ध्यानी श्रमणपुष्पथी (२), मघमघतुं जिनशासन,
अनंता भवोनी अनंती प्रतीक्षा... मारे तो०॥४॥



(९२) मारे बनवुं छे अणगार...

गुरु वचनो पर विश्वास करी, आ भोगो ने हुं ठुकरावुं छुं,
बेरंगी आ संसार त्यजीने, संयमना रंगे रंगाउ छुं...
मारे बनवुं छे अणगार हवे, शणगार बधा आ छोडीने,
मारे करवा छे हवे केसरीया, कर्मोना बंधन तोडीने...
ओ मारा प्रभु वितराग विभु, मारी नस नसमां तारी आज्ञा छे,
काचो ना पडे मारो वैराग्य, अंतरनी एक ज प्रार्थना छे...
तारा शासनमां भळी जाउं, बस तारामय बनी जाउं,
अंतरना एवा आशिष आपजो...
तारा संयम ने हु पामु, मारा आतमने अजवाळुं,
अंतरना एवा आशिष आपजो...
तारा कुलमां पिता मने जन्म मळ्यो, ए मारुं परम सौभाग्य छे,
तारा खोळे मारो उछेर थयो, ए मां मारुं अहोभाग्य छे,
तारुं नाम सदा दीपावीश हुं, तारा संस्कारोने पाळीश हुं,
तारी कुक्षीने अजवाळीश हुं, तारी आंखोने ना भींजवीश हुं,
ओ उपकारी माता पिता, मुज जन्म जीवनदाता,
अंतरना एवा आशिष आपजो...

(१३) मुनि क्यारे बनीए...

मुनि क्यारे बनीए, सुव्रत क्यारे लईए
मुनिसुव्रत जेवा अमे क्यारे थईए ॥१॥
मारग बताव्यो, बताव्या छे तत्त्वो, चाली शकीए नथी एवुं सत्व
ममत्व ने त्यागी, विरक्त क्यारे थईए... मुनिसुव्रत...॥२॥
सामेथी चालीने, तार्यो रे अश्व,एवुं छे स्वामी तमारुं महत्व, (२)
तुं तारवा आवे, तो अमे पण तरीए... मुनिसुव्रत...॥३॥

(१४) रजोहरण संग लगी प्रीतलडी...

(राग : मेरी माँ के बराबर...)

संयम उपवन, संयम मधुवन, संयम थी खीले, मुक्ति मारी,
शिवपदमां रमे, मनडु तलसे, प्रभुना पगले, विरति प्यारी...
भवसागरमां मारी नावलडी, गुरु हेम कृपाथी तरी गई,
रजोहरण संग लगी प्रीतलडी..(२)
प्रभु करुणानो शुभ धोध वहे, गुरु समतानो कोई मोल नहिं,
रजोहरण संग लगी प्रीतलडी..(२) ॥१॥
मारा तात स्नेह दरिया, मारी मात खोळे निंदीया,
तारा चरणे अर्पित मारुं आयखुं...
तारा थशे आंगण सूना, प्रवज्याना प्रांगण रुडा,
हसता हसता आशिष मुजने आप तुं....
सुख शाश्वत मुजने मळनारा, आतममां प्रगटे अजवाळा,
विरती वाटे शमणां जोउं न्यारा,
अक्षतथी वधावुं अश्रुथी, तारा संस्कारोनो मोल नहि...
रजोहरण संग लगी प्रीतलडी..(२) ॥२॥

तारी मारी केवी सगाई, प्रभुने सोनाथी वधावी,
करुं मारा संघना वधामणां...
शत शत नमन मुनिराया, गुरु माता छे घडवैया,
खोल्या मुक्तिना दरवाजा...
गुरुवरनी छे मीठी वाणी, नंदीसूत्र गुणनी खाणी,
क्यारे आवे रजोहरणनी घडी,
ओघो अणमूलो प्यारुं रतन, तेनी रज रज नो कोई मोल नहि...
रजोहरण संग लगी प्रीतलडी..(२) ॥३॥

(९५) विरति आपो

(रागः मेरे यारा)

संयम तणा भावो जाग्या रे, गुरु चरणोमां सुख रह्या रे,
विरती केरी वातो सुणीने, वीर वचनोना नाद वह्या रे,
हो मांगुं हवे आजीवन संगे रहेवा,
हो ओघो लई हुं नाचुं झुमुं रे उमंगे एवा,
विरती आपो, विरती आपो, मांगु गुरुवर विरती आपो,
आतमना उजाशमां, वीरना अहेसासमां,
विरती आपो, विरती आपो, मांगु गुरुवर विरती आपो... ॥१॥
हो दुनियाने जोई जाणी लीधी, कषायोए कारीगरी कीधी,
साची वातो सीधे सीधी, अंतरमां समावी दीधी,
संसारीओ केरा स्नेह तजी, संयमीना साजे सजीधजी,
सिद्धि पदे हैयुं सजी, अंतरंगे प्रभु भजी,
हो मांगुं हवे आजीवन संगे रहेवा,
हो ओघो लई हुं नाचुं झुमुं रे उमंगे एवा... विरती...॥२॥

(धून)

गुणवैभवना दातार, विरति आपोने गुरुराज,

यश पुण्यना भंडार, विरति आपोने गुरुराज,
महा रश्मि पाथरनार, विरति आपोने गुरुराज,
मन हरखे मनोहार, विरति आपोने गुरुराज,
ऋत आवी थवा भवपार, विरति आपोने गुरुराज,
करूं अंकित भावे अपार, विरति आपोने गुरुराज... विरती...॥३॥

(१६) संयम क्यारे मळशे...

सिद्धि माटे गावी पडे साधनानी सरगम,
आखरे तो लीधुं संयम स्वामीए पण स्वयं;
ओ संयम क्यारे मळशे, क्यारे क्यारे मळशे,
मुजने क्यारे मळशे, संयम क्यारे मळशे... ॥१॥
हतुं राजपाट, हतां ए सम्राट,
तो ये वीरे लीधी विरतिनी वाट;
संगम जेवा आवे स्वामीने सतावे,
सघळुं सहन कर्युं स्वामीए समभावे;
सुखसामग्री ने सुविधाओ सळगावीने सघळुं,
साचुं सुख मेळववा मांड्युं संयम पंथे डगलुं, संयम...॥२॥
अनादि समयथी में भ्रमण कीधुं,
एमां वार अनंती रजोहरण लीधुं;
हवे भावना छे ए ज कामना छे,
आज प्रार्थना छे करुं साधना जे;
एथी मुजने मळजो शक्ति ने टळजो आसक्ति,
मोह तणा आ बंधनमांथी मळजो मुजने मुक्ति;
मुक्ति क्यारे मळशे, विरक्ति क्यारे मळशे
आसक्ति क्यारे टळशे, मुक्ति क्यारे मळशे, संयम...॥३॥

(९७) संयम मनोरथ...

(राग : भारत की बेटी)

रात 'दि मैं सेव्या, विरतीना विचार,
मैं नजरे निरख्या, श्रमणोना आचार,
हवे जागी रे मनमां एक ज प्यास...
हुं मांगुं परमनो पथ, मारा संयम मनोरथ,
मने लागी संयमनी रढ, मारा संयम मनोरथ,
प्रभु आणना लई शपथ, मारा संयम मनोरथ,
जागी गयो..जागी गयो रे... ॥१॥
हे वीर तारी मीठी वाते, गोयमादि विनयी थया,
ने शरणुं साचुं पामीने, तुज शासन वंशी बन्या,
ए वैशाखी अगियारसे, उजळा ए वेष धर्या,
ते शासन स्थापी धन्यदिने, तुज वेषमां घेला कर्या,
ए धन्य पळे भळवा, गुरु शरणमां विहरवा,
वीरवचने अंकित थवानो, एक ज आ तो छे जिनपथ...
हुं मांगुं परम नो पथ... ॥२॥
चौद राजे अभयपथ, मारा संयम मनोरथ..
वीरनो निर्मळ पथ, मारा संयम मनोरथ..
हसता मुखे शपथ,मारा संयम मनोरथ..
आशिष वर्षानो पथ, मारा संयम मनोरथ..
खुशीमां रहेवानो पथ, मारा संयम मनोरथ..
कृपावृष्टि अनहद, मारा संयम मनोरथ..
मारा संयम मनोरथ, मारा संयम मनोरथ... ॥३॥



(९८) सर्व स्वीकारनी संयम यात्रा...

(रागः भला क्या वो करेगा लेके चढावा...)

सर्व स्वीकारनी संयम यात्रा, सादि अनंत छे वीरे कहीं,
भव भ्रमणोनी यात्रानो तो, अंत छे अनंत नहीं...
हुं कहेतो नथी संसारे दुःख, पण शाश्वत सुखनो अंश नहीं,
भव भ्रमणोनी यात्रानो तो, अंत छे अनंत नहीं... ॥१॥
पैसा पाछळ भव जशे, साथ न आवशे पाई,
स्वार्थ भरेला संबंधो छे, प्रभु संग करी ले सगाई...
तुं भव अनंता करी आव्यो, तुं नश्वर देह पाछळ भाग्यो,
जीवनमां सुख जे कोतरे छे, मृगजल बनी ते छेतरे छे;
केम मन मंदिर तारुं खाली छे? केम खाली आतम? सुख नहीं,
भव भ्रमणोनी यात्रानो... ॥२॥
नेमिनुं बस नाम जपे, बनशे नेम जेम ए मन मेरे,
देहथी अंजन छे मन रंजन, छोड्या एने धन कंचन;
आ नेमि तो गिरनारी छे, एने राजुल राणी तारी छे,
वळी पशुओने पण उगारी रे, एतो पाम्या शिववधु प्यारी रे....
पुण्य नहीं जोशे ए तारुं, बस मन पवित्र छे के नहीं,
भव भ्रमणोनी यात्रानो... ॥३॥
हुं कांईक छुं ए भ्रमणा छे, एनाथी दुःखो बमणा छे,
बस हुं छुं एवी मात्रा छे, त्यां सर्व स्वीकारनी यात्रा छे;
बस आनंद छे आनंद छे ज्यां , लेश मात्र संकलेश नहि,
भव भ्रमणोनी यात्रानो...

(धुन)

मुंडन करावी प्रव्रज्या स्वीकारी, स्वाध्याये बेठो रहे मौन तुं,
बंध छे आंखों आनंदे राचो, संयम यात्रा नो पथिक तुं...

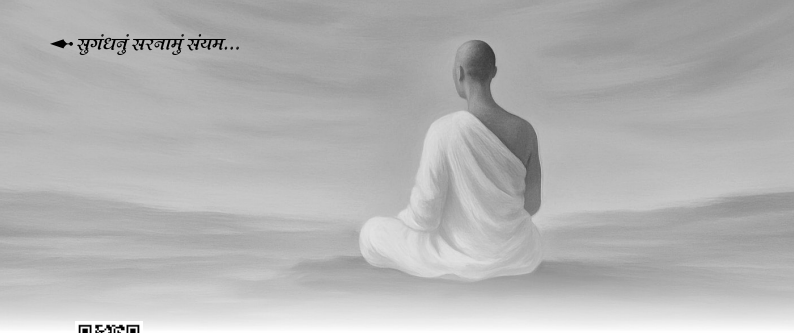

(१९) साधनाना पंथे आज...

साधनाना पंथे आजे एक ऊंचो आत्मा जाय,
आज एने आपीए अंतरना रुडा आशीर्वाद;
वहेली वहेली मळजो एने मुक्तिनी मंझिल (२) ॥१॥
ज्यां जुओ त्यां लोको आजे सुखना साधन मांगे छे,
ने दुःखथी छेटा भागे छे,
विरला कोई नीकळे छे जे सुखसामग्री त्यागे छे,
ने कष्ट कसोटी मांगे छे;
वडलानो छांयो छोडीने (२), रणना रस्ते तपवा जाय. ॥२॥
धर्म तणां मारगमां जातां लोको हांफी जाय छे,
ने वचमां बेसी जाय छे;
अभिनंदन ए आत्माने जे लांबी सफरे जाय छे,
ने होंशे होंशे जाय छे;
नानुं एवुं बाळक जाणे (२), मोटो डुंगर चढवा जाय. ॥३॥
रागद्वेषना आ दरियामां कैंक जीवो खेंचाय छे,
ने अधवच डूबका खाय छे,
ए आत्माने वंदन हो जे समये जागी जाय छे,
ने डूबतां उगरी जाय छे;
संयमनो सथवारो लईने (२), भवनो सागर तरवा जाय. ॥४॥

(२०) हवे सामुं जुओ प्रभु परमात्मा...

(राग : जो भेजीथी दुआ...)

थशे साचुं, हवे शमणुं, हर्ष पायो, आत्मा रे,
सहुथी पर, थवा चाहुं, मन चहे छे, मुक्तिनी धरा रे,
हैयुं विरतिना रंगे रमे छे, पाप विनानुं जीवन गमे छे... ॥१॥

मळे क्यारे रजोहरण, आ हाथोने,
आत्मश्रेयाना उत्सवनो, थाशे रे समय,
हवे सामुं जुओ, प्रभु! परमातमा!
के हुं संयम धरी, ताहरा शरणे रहुं सदा...
मने लागी लगन, गुरुवर माहरा,
के हुं श्रमणी थई, ताहरा चरणे रहुं सदा...

श्वासोमां रमे दिन-रैन गमे, बस तारी, डगर मन भावे,
अंतर तो कहे जग छोडी हवे, पग पाडुं, हुं प्रभु! तुज राहे..

संसार छे असार ए, वचन छे आपना,
मुज हाथ झालीने उगारो, मारो आत्मा,
हवे सामुं जुओ, प्रभु! परमातमा!
के हुं संयम धरी, ताहरा शरणे रहुं सदा...
मने लागी लगन, गुरुवर माहरा,
के हुं श्रमणी थई, ताहरा चरणे रहुं सदा...

ईहलोक सुखं, परलोक हितं, श्रमणत्वमिदं रमणीयतरं...
शम मोक्षधरं, वर `कीर्ति` करं, श्रमणत्वमिदं रमणीयतरं...

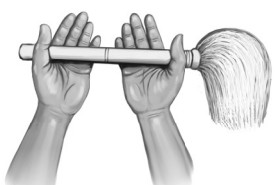

मने सद्गुरु मळ्या

(१) ऐसा चिद्रस दियो...

(राग : मैली चादर ओढके कैसे...)

ऐसा चिद्रस दियो गुरुमैया, प्रभु से अभेद हो जाउं मैं;
सब अंधकार मिटा दो गुरुमैया, सम्यग्दर्शन पाउं मैं... ॥१॥
प्रभु स्वरूप है अगम अगोचर, कहो कैसे उसे पावुं मैं;
करो कृपा करुणारस सिन्धु, मैं अज्ञानी बालक हुं... ॥२॥
शिवरस धारा वरसावो गुरुमैया, स्वारथ व्याधि मिटावुं मैं;
सवि जीव करुं शासन रसिया, एसी भावना भावुं मैं... ॥३॥
सिद्धरस धारा वरसावो गुरुमैया, परमातम को पावुं मैं;
आनंदरस वेदन करके गुरुमा, परमानंद पद पावुं मैं... ॥४॥
विश्वकल्याणी प्यारी गुरुमैया, तेरी कृपा में खो जावुं मैं;
द्यो ऐसा वरदान गुरुमा, तेरे गुण नित गावुं मैं... ॥५॥

(२) आप छो मारा संवेग दाता...

आप छो मारा संवेग दाता, आप छो मारा श्वासोनी शाता,
आप छो मारा हैये समाता, आप छो मारा ब्रह्मा-विधाता,
आप छो मारा... ॥१॥
आपनुं पगलुं, मारी दिशा छे, आपना संगे, खीलती उषा छे,
आपना होठे, आपनी भाषा, आपना खोळे, मळता दिलासा,
आपनी छाया, वात्सल्य दाता, आप छो मारा... ॥२॥
आपनुं केवुं, भोळुं हृदय छे, आपना नामे, सहुनो उदय छे,
आप छो केवा? आपनी जेवा, आपनी तुलना, थाय ना एवा,
आपनी सेवा, चाहुं हुं दाता, आप छो मारा... ॥३॥

(3) गुरु एवा मळ्या...



(राग : एक तुं ना मिला...)

गुरु एवा मळ्यां, मारा जीवतरमां रंगो भर्या...
पुण्य एवा फळ्यां, मारा भवोभवना फेरा टळ्यां.... ॥१॥
करी जातरा में शरु ज्यारथी, हंमेशा बन्या छे गुरुसारथी,
आंगळी झालीने, मारी संगाथे डगला भर्या. गुरु एवा०॥२॥
कदी लागणीओने गाती करी, ने थई भूल तो आंख राती करी,
सुख दुनिया तणां, जेनां चरणोमां आवी मळ्यां. गुरु एवा०॥३॥
जेवो छुं तेवो तमारो उदय, गुरु राम नामे धबकतुं हृदय,
हुं भूलुं ना जरा, मारी आंखोमां आंसु भर्या. गुरु एवा०॥४॥

(४) गुरु तत्त्व तुं...



गुरु तत्त्व तुं, तीर्थ तुं, तारणहार तुं, गुणनो वैभव तुं,
गुरु धैर्य तुं, ध्यान तुं, ध्येय मारो तुं, सरल स्वभावी तुं;
आत्मशुद्धिना योगी, आत्मसुखना भोगी, आत्मनंदी गुरु तुं,
अध्यात्मना योगी, भक्तिमारगना जोगी, समतानी प्रतिमा तुं. ॥१॥
तुज वचनमां माधुर्य, तुज नयनमां वात्सल्य,
मुज आतम शिल्पी, गुरुवर मारी माता तुं,
तुज हृदयमां करुणा, तुज चित्तमां निर्मलता,
प्रभुतानी प्रतिमा, जिनवर तणी वाणी तुं,
मळजो भवोभव गुरु, मने तारो ज संगाथ,
शुभयोग तारो पामी, थाउं भवथी निस्तार... ॥२॥
प्रभु हरपळ हृदयमां, वैराग्य छे जीवनमां,
रगेरगमां प्रभुआणा, प्रभुवर गुरु तुं ही ज तुं,
कृपानिधि गुरुदेव, क्षमानिधि गुरुदेव,

मारा मनना मंदिरे, मारा गुरुवर तुं ही ज तुं,
गुरु तारा चरणे करुं, मारुं जीवन आ अर्पण,
तुज आण शिर धरी, करुं आतम आ निर्मल... ॥३॥

(५) गुरुदेव...

देव भलेने मोटो छे पण देवोनो तुं देव
देवाधिदेव... गुरुदेव...
दिवाकर दिलनो छे तुं, निशाकर नयननो छे तुं,
तुं तो केवो मजानो मळ्यो, खुशीनो तो खजानो मळ्यो
तने ना छोडुं नातो ना तोडुं, करुं भवोभव तारा चरणोनी सेव
गुरुदेव... गुरुदेव... गुरुदेव... गुरुदेव...
प्यारा गुरुदेव! तारी साथे आजे हुं झगडो करुं छुं,
आ रीते पण तारा प्रत्येना मारा प्रेमने तगडो करुं छुं,
तारा प्रेममां पागल बनी मने जीववानी टेव...
मारो प्रीतम तुं, मारो व्हालम तुं...
मोक्षे जाशुं साथे आपणे बेव...
गुरुदेव... गुरुदेव...गुरुदेव... गुरुदेव...

(६) गुरुमाँ मने स्वीकारजो...

(राग : लगजा गले...)

गुरुमाँ तमारा चरणमां, रहेवुं छे आजीवन,
गुरुमाँ तमारा वचनने, झीलवा छे आजीवन. ॥१॥
वात्सल्यथी भरपूर छे, गुरु आपना वचन,
अविरत करुणाधारने, वरसावता नयन,
आप थकी ज तरीश हुं, श्रद्धा छे आजीवन. गुरुमाँ मने०॥२॥

अस्तित्व मारुं ओगळे, गुरु आप चरणमां,
व्यक्तत्व मारुं पांगरे, गुरु आप शरणमां,
सम्यक्त्वनी सरगम थकी, महेके मारुं जीवन. गुरुमाँ मने०॥३॥
सर्व समर्पणनी साधना, शीखवाडजो गुरुमाँ,
आत्म- रमणनी भावना, प्रगटावजो गुरुमाँ,
परने भूली स्वमां हवे, रहेवुं छे आजीवन. गुरुमाँ मने०॥४॥

(७) गुरुवर यशोविजय सूरीश्वर...

(मुखडा)

गुरुमां मारी साथे छे तो हर पल मारे खुशाली,
गुरुमां मारी साथे नथी तो बधुं ज खाली खाली,
मारी प्यारी प्यारी गुरुमां खूब खूब मने छे वहाली,
वहाली गुरुमांनां चरणोमां मारे रोज रोज दिवाली... ॥१॥
गुरुवर यशोविजय सूरीश्वर, मारा हृदयना परमेश्वर,
गुरुवर यशोविजय सूरीश्वर, मारा हृदयना राजेश्वर...
प्रभुना प्रेममां गुरुमां तमे विचरो,
प्रभु स्वयं तमारामां मने जडी गया,
तमारुं मुख लागे साक्षात् प्रभु जेवुं,
जाणे प्रभु स्वयं एने हळवे हाथे घडी गया,
बाळ बनी प्रभु सम गुरुमांनी आंगळी में तो झाली... ॥२॥
लाखो भक्तो आपे मान तोय जे डोले नही,
अज्ञानी करे अपमान तोय जे बोले नहीं,
निष्कारण कोईनी आगळ जे मुखने खोले नहीं,
नानो-मोटो एम जे कोईने पण तोले नहीं,
जीवंत जिन सम गुरुमांथी शासनमां जाहोजलाली... ॥३॥

(धून)

गुरुवर मारी माता छे ने गुरुवरथी सुख-साता छे,
गुरुवर भवथी त्राता छे ने गुरुवर मोक्षना दाता छे,
गुरुवर मारा तरुवर छे ए तरुवरनुं हुं पान छुं,
गुरुवर मुज भगवान छे भगवानमां एकतान छुं...



(८) जय जय यशोविजय सूरिराया...

जय जय यशोविजय सूरिराया (४)
भगवनना छो भक्त तमे ने भक्तोना भगवन छो,
तव चरणोनी रज पण अमने लागे जाणे चंदन हो;
रोम रोम मां ओम वसे ने ओमकारना नंदन छो,
आत्मस्वरूपमां रमण करे ए श्रमणना चरणे वंदन हो...
महावीर पूत, तमे सिद्धी सूत, अद्भूत अवधूत कहाया...
जय जय यशोविजय सूरिराया (४) ॥१॥
भक्तियोगथी रोग मटाडे भोगना ए योगी जोमे,
मौन शिबिरथी तिमिर घटाडे मिहिर ए शासन व्योमे;
तव युक्तिथी मुक्ति आजे खोली दे जाणे दरवाजो,
वावनी नावना खेवनहारा तमे अमारा सर्वेसर्वा छो...
निर्मलतम आतमना धारक गौतम सम गुरु अम पाया...
जय जय यशोविजय सूरिराया (४) ॥२॥
पलपल तमने मलवाने सांभलवाने चाहे लाखो,
तुझने जोवा, तुझमां खोवा तरसे छे मारी आंखो;
शिष धरु छुं आशिष आपो हाथ तमे माथे राखो,
विनती एक ज मुक्तिना दरवाजे मने साथे राखो...
बस विनती आ अवधारो, तारो कंचन मातना जाया...
जय जय यशोविजय सूरिराया (४) ॥३॥

भविजन भाया, कविजन गाया, सविजन मन पर छाया....
जय जय यशोविजय सूरिराया (२)
श्रमण संघना पदस्थ गण पण चरणे प्रणमे पाया...
जय जय यशोविजय सूरिराया (२)
यशगाथा सूरि यशोविजयनी जिन-हंस मुनिवर गाया...
जय जय यशोविजय सूरिराया (२) ॥४॥

(९) जय हो... यशोविजय सूरिराज...

पडे पगलिया गुरुवरनां त्यां प्रगट थती दीपमाळा,
यशोविजय गुरुनां नामे, छे झळहळता अजवाळां,
जय हो यशोविजय सूरिराज...
जय जय यशोविजय गुरुराज०॥१॥

ए मलके तो लागे संसारीनो संग परायो,
ए छलके तो भीतर ऊगतो शीतळ चंदन छांयो,
एनी वाचामां प्रगटे भगवाननां रूप निराला...
यशोविजय०॥२॥

स्थिर-शांत ने शुद्ध स्वरूपी अखंड आनंद माणे,
ज्ञान-ध्याननां सूर्य-उदयथी परम तेजने जाणे,
एनी आंखोमां अवतरती, आतम अनुभव शाळा....
यशोविजय०॥३॥





(९०) तमे छो भगवन् तमे सहारा...

(राग : तुम्ही हो माता...)

तमे छो भगवन् तमे सहारा, गुरु तमोने नमन अमारा...
ज्यां ज्यां मूके छे पगला अमस्ता, एनां इशारे खूले छे रस्ता;
वाणी प्रभुनी फेलावनारा... गुरु०॥१॥
अमारी आंखो निंदरमां पोढी, त्यारे विहरता कंबलने ओढी;
तमे छो सागर तमे किनारा... गुरु०॥२॥
आंखोमां छलके वैरागी मस्ती, तमारा पगले उघडे समस्ति;
अमे तो पामर तमे सितारा... गुरु०॥३॥
तमारा नामे उदयने अस्त, तमारा नामे जीवन समस्त;
तमे अमारा अमे तमारा... गुरु०॥४॥



(९१) तुं गौतम सम लागे मने...

गुरु राख मने तारी कने, तुं गौतम सम लागे मने...
ग्रंथोमां छे खूब गवाया, शास्त्रोमां छे खूब छवाया,
तीर्थंकर महावीर प्रभुथी, पण नीकळ्यां गौतम सवाया... ॥१॥
एक एक शिष्यने, सिद्धिनुं दान आपी गया,
अचरज पामे सौ जीवो, एवा वीरला ए थया,
आवुं सदीओमां, युगयुगमांहि क्यारे बने,
आवुं युगयुगमां, युगयुगमांहि क्यारेक बने... ॥२॥
गुरु राख मने तारी कने, तुं गौतम सम लागे मने...
मनमंदिरमां तुं ज रमे छे, मने तमारो संग गमे छे,
ज्यारे तमारो संग मळे छे, जीवनमां रंग भळे छे,
तुं मारो गौतमस्वामी, तारी मारी जोडी जामी,
तुज थकी वीर ने पामी, मारे बनवुं आतमरामी,
तुं मारो गौतमस्वामी, मारे बनवुं आतमरामी... ॥३॥

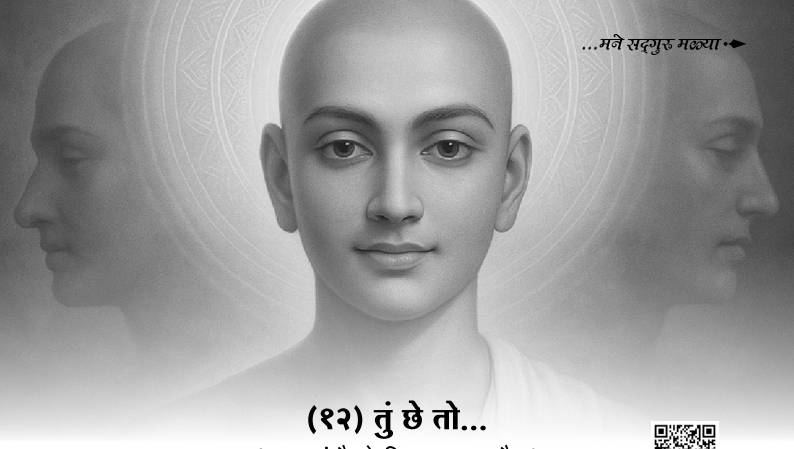

(१२) तुं छे तो...

(राग : तुं है तो दिल धडकता है...)

कंई ना चाहुं, झंखना तारी, पामीने गुरु, मांगु शुं प्रभु समजी,
तुं छे तो दिल धबकतुं छे, तुं छे तो श्वास चाले छे..
तुं ना तो पर परमां हुं रही जात, तुं छे तो छे परमनो साथ,
तुं छे तो राह ना भटकुं, तुं छे तो पापथी अटकुं..
के तारा विना सांज हो ना सवार, थशे संवेगथी भवपार,
तुं छे तो दिल धबकतुं छे...

मुजमां तारो अंश-अंश, पामुं मारा सारथी,
सौ जनम पण ओछा लागे, लागे तारी साथजी,
छुं ऋणी तारो ऋणी, धूल छुं तारा चरणोनी,
हुं हारूं त्यां तुं जीतावे, नाव तुं मारा जीवननी,
साथ तारी जीत नाते, जीत ना लागे, तुं छे तो...
छे ऋणानुबंध जे, आ बंध ना तूटे कदी,
श्वास छूटे हाथथी पण, हाथ ना छूटे कदी,
हूं नासमज नादान छुं, तुं आवी मुजने थामी ले,
लागे के प्रभु पुकारे, ज्यारे तुं मारूं नाम ले,
एक संगे मुक्ति पामुं, अलग ना थाजे, तुं छे तो...



(१३) दर्शनथी तारा...

(राग : हे जीरावाला! तुं...)

दर्शनथी तारा, मारुं मुखडुं मलके,
यादोथी तारी, मारी आंखो छलके;
गुरु तारा चरणे, मथुरा ने काशी,
ए चरणे रहेवा, हुं सदाय आशी;
गुरुमाँ कदी ना दिलथी भूलाये,
गुरु तारी छबीमां, गौतम देखाये...(२) गुरुमाँ कदी०॥१॥
प्रीतिथी तारी, संसार भूलाये,
भक्तिथी तारी, संयम पमाये;
आज्ञापालनथी, तद्रूप बनाये,
जीवन अर्पणथी, मोक्षे जवाये... गुरुमाँ कदी०॥२॥
तुज हाथ फरे ने, दुःखो दूर थाता,
तुज अनुशासनथी, दोषो पलाता;
समीपे आवुं, ज्यारे ओ गुरुमाता,
मुज तन-मन आतम, पावन थाता... गुरुमाँ कदी०॥३॥
तप त्यागथी शोभे, गुरु आपनी काया,
सौभाग्ये मळी छे, गुरु आपनी छाया;
आपनी छायानी, मने लागी माया,
प्रभु सुधी पहोंचवा, बनी मीडिया वाया... गुरुमाँ कदी०॥४॥



(१४) नानी मारी पगली उपर...

नानी मारी पगली उपर वरसावोने हेली जी,
तमे अमारुं वृक्ष मनोहर अमे तमारी वेली जी
गुरुमैया... मारी गुरुमैया... ॥१॥

नानी मारी आंखोमां, सपना मोटा ने जाजाजी;
मारा आदीश्वर दादाए, खोल्या छे दरवाजाजी।
रमता रमता घणु भणीशु, भणता-भणता खेलीजी... तमे० ॥२॥
नानी नानी श्रमणी हुं तो, मारी कोमल कायाजी;
मळे गुरुजीनो पडछायो, मारी छतर - छायाजी
संसारीनुं जीवतर अघरूं, दीक्षा सहेली सहेलीजी... तमे० ॥३॥
गुरुमैयानी आंगली झाली, आखी दुनिया फरशुजी;
नानी छुं पण राजकुमारी मोटो दरियो तरशुजी
उदय कहे भगवाननी दीकरी लागे छे अलबेलीजी... तमे० ॥४॥

(१५) मारी तो दुनिया...

(रागः तेरे हवाले...)

ना छो तमे, पास पण हंमेशा साथ छो...
के हाथ आपनो सदा माथे राखजो... (२)
मारी तो दुनिया, हुं ने मारा गुरु
तुज विना ना कोई, आतम मित मारुं... (२) ॥१॥
हुं पामर छुं, तुं परम छे, हुं सामान्य, तुं उत्तम छे,
तुजने वंदन मारूं हर रोम करे,
कल्याण मारूं, कर्तव्य तारूं, तुजने सोंप्युं, सर्वस्व मारूं
मारा आतमनो उद्धार तुं करजे
आशातना के अविनय ना तारो हुं करुं
यथार्थ शिष्य बनी तारो भार हळवो करुं...
मारी तो दुनिया, हुं ने मारा गुरु
तुज विना ना कोई, आतम मित मारुं... ॥२॥



(१६) परमात्मानुं रूप तुं...

(राग : हे कालरात्री छे कल्याणी...)

रोमे रोममां, सत्व जगाडे, तत्त्वोथी भर्या मारा गुरु...
पुद्गल परनी, ममता मटाडे, समताथी सज्या मारा गुरु...
ओ मारा गुरु ओ मारा गुरु, तने जोइने हुं एक कहुं,
परमात्मानुं रूप तुं... ॥१॥
ओ मारा गुरु ओ मारा गुरु, अंतरथी आजे एक कहुं,
परमात्मा नुं रूप तुं...
दूर करे जे अंधापो, एवो तुं छे एक दीवो,
आत्माने झळहळावे छे तुं....
गुरुवर प्रेमनो प्यालो, पळे पळे मारे पीवो,
प्यास मारी छिपावे छे तुं...
मारा दुःख टळे ने सुख मळे, तारा चरणे सर्वस्व मळे,
नाम तारुं जीवनने उजाळे.
अमावस ने जे करे पूनम, छे एवुं अजब स्वरूप तुं,
परमात्मानुं रूप तुं... ओ मारा गुरु०॥२॥
आ तन थी मारो, आतम छे आ अलगो,
समजाव्युं छे ते मने,
शुं कहुं तारी माया, विसराई मारी काया,
जीवन समर्प्युं में तने....
आहारनी संज्ञा तोडी, मारा कर्मोने तोडाव्या ते,
शरणे तुं मुजने राखजे...
माराथी गुरु जे कई थयुं, ते शक्तिनो छे स्रोत तुं.
परमात्मा नुं रूप तुं... ओ मारा गुरु०॥२॥

(१७) मने सद्गुरु मळ्या...



भूल्या रे अमे (४)
कटपुतला रे कांठे ना जी, अमे मेली रे मेली माटी ना जी (२)
भुला रे पड्या (२), आवी रे चढ्या क्यां आवी चढ्या,
मने सद्गुरु मळ्या (२) के साचा गुरु मळ्या, मने सद्गुरु मळ्या,
मारा तो जाणे के भाग्य खुल्या, मने सद्गुरु मळ्या (२). ॥१॥
अंधारामां हुं भूली रह्यो, भवरणमां जाने हुं भटकी रह्यो
भुला रे पड्या (२), आवी रे चढ्या क्यां आवी रे चढ्यां,
मने सद्गुरु मळ्या (२),
नावलडी मारी ए तारी रह्या, मने सद्गुरु मळ्या (२). ॥२॥

(१८) मळ्या संत स्वरूपे भगवंत...

(पू.आ.भ.श्री मुनिचंद्रसूरि म.सा.की २५वीं आचार्य पदवी निमित्ते)

(राग : तारुं धार्युं बधुं थाय छे...)

मळ्या संत स्वरूपे भगवंत, जाग्या पुण्य जन्मोना अनंत
तित्थयर सम ओ गुरुवर, तुम चरणोमां शत (२) नमन... ॥१॥
होठे शास्त्र वचन, हैये प्रभुनुं स्मरण,
हाथ ग्रंथो लखे, आंखे अमीनुं झरण... हो... हो...
रात दिवस रहे संशोधनमां जे रक्त,
बनी देहथी पर, जिनवाणीमां मस्त;
जीवंत आगमनुं तुं तो निदर्शन,
तारा दर्शनथी मन आ प्रसन्न... तित्थयर... ॥२॥
सूरि पद पर रहे, ना ए गर्व करे,
गुरुआणा वहे, गुरुचरणे रहे, हो... हो...
नाना भूलका साथे, ए तो बाळ बने,
मीठी वार्ता कही, सौना मन हरे,

करे प्रेमे ए सौनुं जतन,
जिनशासननुं जे छे रतन... तित्थयर... ॥३॥
तारो वंश मळे, तुज कने मांगीए,
तारो अंश मळे, तारा गुण पामीए हो... हो...
श्रुतनी वृद्धि थाये, ए छे स्वप्न तारुं,
एने साकार करवा, हो जीवन मारुं,
आजे आपो गुरु ए वचन,
तारी छाया रहे हरजनम... तित्थयर... ॥४॥

(९९) महा उपकारीने वंदन हजारो...

(रागः महा हेतवाळी...)

खोवायो हतो हुं भवना भ्रमणमां,
ने फेरा फर्यो जन्म ने मरणना,
सूतो हतो आ आतमने आपे जगाड्यो,
महा उपकारीने वंदन हजारो... ॥१॥
शिष्योना कर्मोनो भार उपाडे,
ने कर्मोना बंधन हळवा करावे,
चित्तमां एक ज चिंता सतावे,
रही जाय ना कोई मझधारे,
नीकळ्या हता स्व कल्याण काजे,
छतां डूबता आतमने बचावे,
जहाज समान सर्वने उगारे,
तरी जाय पोते ने सर्वने तारे,
खोवायो हतो हुं भवना भ्रमणमां... ॥२॥
करुणानिधान गुरुदेव छे मळ्यां,
दृष्टि पामीने अनेको छे तर्या,

मारी भक्तिमां शक्ति हुं एवी जगावुं,
तारी संगे ज मुक्तिने हुं पामी जावुं...
तारी कृपाथी सहु काम थाता,
उपकारो ना कदीये विसराता,
आभमां अगणित झळके छे तारा,
एनाथी वधु उपकारो तमारा,
खोवायो हतो हुं भवना भ्रमणमां... ॥३॥

(२०) मानुं गुरु अनहद आभार...

(राग : हे दीनबंधु...)

गुरुवर मारा करुणाधार, मानुं गुरु अनहद आभार,
मने सूझती ना कोई वातो अने मारग को ना भळातो,
पंथ बताव्यो अनराधार... ॥१॥
तुज नाम मथुरा-काशी, महेसूस थती ना उदासी,
गुरुनां नामे नित तहेवार... ॥२॥
तमे नाम अमारुं आप्युं, अमे जीवन तमोने आप्युं,
एक सहारो एक आधार... ॥३॥
तमे व्हाल बधा पर वेर्युं, एमां नाम उदयनुं उमेर्युं,
माफ कर्या अपराधो अपार... ॥४॥

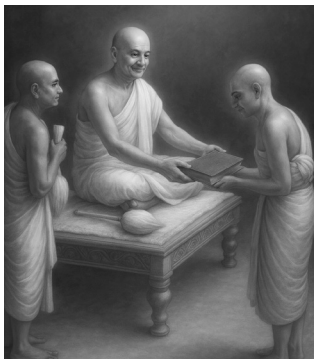

(२१) मारी गुरुमाँ व्हाली छे...

(रागः क्या खूब लगती हो.../जेनी कीकी काळी...)

मारी गुरुमाँ व्हाली छे, मारी गुरुमाँ प्यारी छे,
मारा गुरुनुं मुख मलकतुं रूपनी प्याली छे,
एना प्रतापे वाव पथकमां (जिनशासनमां) जाहोजलाली छे. ॥१॥
गुरुमाँ छे व्हालनो दरियो (२),
प्रभु भक्तिथी एनो आतम भरियो,
एना शरणे जे कोई आवे (२),
गुरुमाँ एने व्हालथी नवरावे,
लाड करे, प्यार करे, एनी प्रीत निराळी छे. ॥२॥
तमे सर्व जीवोना प्यारा (२),
पण मारा तो हृदयना धबकारा,
तुज द्वार बजे शहेनाई (२),
मारा हैयानी गुरुजी संग सगाई,
मारी गुरुमाँ वाव पथकने (जिनशासनने) व्हाली-व्हाली छे. ॥३॥
अही कहेनारा छे झाझा (२),
सांभळनारा यशोविजय महाराजा,
कोई वातो करतुं-गातुं-छलकातुं,
कोई मारा जेवुं आंसुमां अटवातुं
एना स्वरमां रात-दिवस प्रभुभक्तिनी प्याली छे. ॥४॥

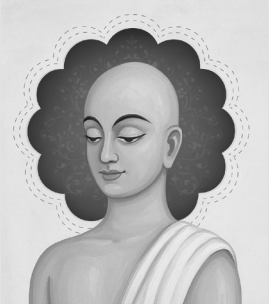

(२२) मीले हो गुरु हमको...



(राग : मीले हो तुम हमको...)

मीले हो गुरु हमको, ये भाग्य हमारा है,
शिष्य तेरा होना एहसास ही न्यारा है,
तेरा ही ईंगीत मीले उत चले,
सोचे कया समजे, फीर हम भला. ॥१॥
तेरे नाम की हि माला जपते है,
सांसों की लय में तुम को रटते है,
झींदगी में मेरी कैसे कोई कमी हो,
तेरा होना गुरुवर सबकुछ है,
सदा ही तुमने तो हमें संभाला है. ॥२॥
तेरे चरणों में वारी हो जाउं में,
भक्ति में सुधबुध सारी खो जाउं में,
बंदगी जो ऐसी हो तो लु अमर,
गौतमजी के जैसा मर के भी,
डरुं मैं कयुं आखीर, जो तुं सहारा है... ॥३॥

(२३) में झाल्यो तारो हाथ...



(राग : मैया तेरी जयजयकार.../सुगंध नु सरनामुं...)

में झाल्यो तारो हाथ गुरुमाँ! हवे थयो हुं सनाथ गुरुमाँ!
तारा चरणोनी छे आश गुरुमाँ! प्रभु प्रीतिनी छे प्यास गुरुमाँ!
जीवन तारे चरणे समर्पण, मारा स्मितनुं तुं ज छे कारण,
तारी भक्तिथी महेकुं गुरुमाँ! में झाल्यो...
मारा हृदयना धबकार, गुरु यशोविजय जयकार...
करुणा जेनी अपरंपार, गुरु यशोविजय जयकार... ॥१॥

छे आंखोमां करुणा, हृदयमां निर्मलता, चित्तमां छे शीतलता,
वाणीमां मधुरता, साथ तारो मल्यो छे गुरुमाँ;
भवसागरथी सहेजे डरुं ना, मारा हृदयना... ॥२॥
आत्मानंदनुं धाम छे तुं, आ संसारे विश्राम छे तुं,
मारा तीर्थनुं धाम छे तुं, हुं हनुमान अने राम छे तुं,
आतमरामी, आतमज्ञानी,
साधकोनो प्राण छे गुरु तुं, मारा हृदयना... ॥३॥



(२४) मोहे लागी लगन गुरु...

मोहे लागी लगन गुरु! चरनन की...
चरण बिना मोहे कछु नहि भावे, जग माया है सपनन की,
भवसागर अब सुख गयो है, फिकर नहि मोहे तरनन की.. ॥१॥
चरनन ध्यान से आनंद परगट, चिंता गई अब मरनन की,
आनंद रस में झीलत-झीलत, प्यास लगी प्रभु रटनन की. ॥२॥
अंग अंग मैं ज्वाला उपजी, गुरु विरहा के अगनन की,
तिनही कारण भान नहीं मनु, ग्रीष्म ऋतु के तपनन की. ॥३॥
अमर भये हम चरण की छाव में, भागी चिंता जननन की,
रसना मोरी रत बनी जो, आश करे तोरे भजनन की. ॥४॥
कान में गुंज रही है अहर्निश, वाणी गुरु मुख झरनन की,
लगन लागी गुरु! तेरे चरण की, और उनके शरणन की. ॥५॥



(२५) रंगी दो प्रभुना रंगे ...

(राग : झूमे रे झूमे आनंदे.../तिरंगा...)

सदुरुः शरणं मम, परमगुरु शरणं मम
तव वचनं शरणं मम, तव आज्ञा शरणं मम
सर्वस्वीकारनी साधनादाता, कृपा करो गुरुमैया!
भवसागरमां तुं ही ज शाता, पार उतारो मुज नैया! ॥१॥

वीरना वारस, आपो परम रस, स्पर्शे छे तारो प्रेम मने,
जय जय गुरुदेव, व्हला गुरुदेव, अर्पु हुं सघळुं उमंगे,
जय जय गुरुदेव, प्यारा गुरुदेव, रंगीदो प्रभुना रंगे... ॥२॥
तारो व्हाल छे केवो मजानो, गुणवैभवनो तुं खजानो,
भीतर लगावी डूबकी, जगथी रहे तुं न्यारो,
निर्मळ हृदयनो स्वामी, सहु जीवने तुं प्यारो,
तुज वदन कमलनुं स्मित सहुने मोहे,
स्वानुभूतिनो शिरताज थईने सोहे... वीरना वारस०॥३॥
तारी वाणी आतमने जगावे, प्रभुप्रीतिनो रंग लगावे,
कृपा तुं एवी करजे, दोषो तुं मारा हरजे,
चरणे स्वीकारी मुजने, पल-पल तुं साथ रहेजे,
तुं साधकोना भीतरने अजवाळे,
तुज स्नेहथी भक्तोना श्वास चाले... वीरना वारस०॥४॥
अर्पु हुं सघळुं उमंगे, रंगी दो प्रभुना रंगे...
जुग जुग जीवो गुरुमैया, जुग जुग जीवो सूरि यशोविजय गुरुमैया,
जुग जुग जीवो गुरुमैया, जुग जुग जीवो मारा यशोविजय गुरुमैया,
जुग जुग जीवो गुरुमैया, अमने तारो गुरुमैया...
सूरि यशोविजय मारा यशोविजय मारा व्हाला गुरुमैया...

(२६) रोमे रोमे परमनो वास...

(राग : गलीमे आज चांद निकला...)

रोमे रोमे परमनो वास, गुरुमां एवा मळ्या,
जाणे प्रभुनो मळ्यो सहवास, गुरुमां एवा मळ्या (२) ॥१॥
नयणा करुणा रसथी भरेला, प्रभु शासन-आज्ञाने वरेला,
ज्ञान भक्तिनो सुरीलो जे प्रास (२) गुरुमां...॥२॥

शब्दो जेना मंत्र बने छे, आभा जेनी यंत्र बने छे,
जेना ग्रंथो बने उपन्यास (२) गुरुमां...॥३॥
सर्व स्वीकारनी सुरत लागे, आनंदघननी मूरत लागे,
हैयुं रमतुं रोमांचथी रास (२) गुरुमां...॥४॥
धार्युं करवानो रोग मटाडे, समर्पणनुं चूरण चटाडे,
करे साधनानो शिलान्यास (२) गुरुमां...॥५॥
गुणो सहुने कीधां करुं हुं, अमृतवाणी पीधां करुं हुं,
पीधे नाहि छीपाये प्यास (२) गुरुमां...॥६॥
यशोविजय गुरुमां बहु प्यारा, ओलीया अवधूत जगथी न्यारा,
चाले भक्तोना श्वासो श्वास (२) गुरुमां...॥७॥
मुज अज्ञानीने तारजो गुरुमां, अरजी हैये धारजो गुरुमां,
साकेत ने घणो विश्वास (२) गुरुमां...॥८॥

(२७) सद्गुरु परमात्मा...

सद्गुरु परमात्मा, हमको तुं ले चल वहां...
तेरी शरण हो, तेरी लगन हो, ना हो कोई कामना... ॥१॥
भूले कभी हम राह दिवाकर, याद करे हम तेरे वचन,
तन-मन-धन सब तुमको समर्पण अब तेरा हे ये जीवन;
अंतरमें तुं ही बसा, तुज से ही मेरा जहां;
तुज को हि ध्याउं, शीश झुकाउं, चरणो में रखना सदा... ॥२॥
अज्ञान अंधेरा मिट जाये गुरुमाँ, वो रोशनी तुम देना हमे,
बिखरे कभी ना साथ रहे हम, संयम पथ पर चलते रहे;
जाने हम क्या कै धरम (परम), अच्छे हो हमारे करम,
सेवा में अर्पण, हो मेरा जीवन, है बस यही प्रार्थना... ॥३॥

तारी अभिषेक धारा

(१) स्तुति...

जिम भाव निक्षेपे महाविदेहमां सीमंधरो,
तिम स्थापना निक्षेपथी, आ भरतमां शंखेश्वरो;
आर्हन्त्य अतिशयथी पूजाता, नाथ भव बंधन हरो,
शंखेश्वरा प्रभु पार्श्वनो, अभिषेक विश्व मंगल करो. ॥१॥
अभिषेक थाय आपनो ने, थाय शुद्धि माहरी,
अभिषेकमां शीतल जळे, वधती शीतलता माहरी;
छो शुद्ध बुद्ध प्रभु तमे, मुज पाप दोषोने हरो,
प्रभु आपनी अभिषेक पूजा, विश्वनुं मंगल करो. ॥२॥
तुज बिंब परथी वही रही, अभिषेकनी धारा प्रभु,
तुज भक्तना आतम तणा, धोती करम सारा प्रभु;
साक्षात् बिंब वहावे तुज,वात्सल्य वसुधारा प्रभु,
शंखेश्वरा प्रभु पार्श्वनो, अभिषेक विश्व मंगल करो. ॥३॥
जे जन्म समये मेरुगिरिनी, स्वर्ण रंगी टोच पर,
लई जई तमोने देवने, दानव घणो भावे सभर;
क्रोडो कनक कळशो वडे, करता महाअभिषेकने,
त्यारे तमोने जेमने जोया हशे ते धन्य छे.
आजे तमोने जेमने जोया हशे ते धन्य छे. ॥४॥
अभिषेक छे प्रभु आपनो, शांति अने तुष्टि करे,
महापुष्टि रिद्धि सिद्धि ने, समृद्धि उन्नति सुख करो;
पापो पखाळे दोष जावे, मुक्ति पावे भव तरे,
आजे तमोने जेमणे जोया हशे ते धन्य छे. ॥५॥

अभिषेकनी धारा वहंती, शुक्लवर्णी सोहती,
तन-मन सकल निर्मळ करंती, भक्तोना मन मोहती;
वरसावता करुणा-झरण, प्रभुजी तमे जे आ क्षणे,
आजे तमोने जेमणे जोया हशे ते धन्य छे. ॥६॥
भक्तिभर्यो सुधर्म इन्द्र, जाणी अवसर जन्मनो,
सवि देव देवी साथमां, उत्सव करे महापुण्यनो,;
मेरुशिखर उपर आपनो, अभिषेक जे छे गुणकरो,
प्रभु! भव्य आपनो जन्म उत्सव, आज अहींया अवतरो.
प्रभु! भव्य आपनो जन्म उत्सव, नयन मन पावन करो. ॥७॥

(२) करीए महा-अभिषेक...

(राग : जय जय गरवो गिरनार)

करीए महा-अभिषेक, करीए मंगल अभिषेक,
करीए अखंड अभिषेक, मारा प्रभुजीना अभिषेक..(२)
महा अभिषेक, महा अभिषेक, प्रभुजीना महा अभिषेक (२) ॥१॥
अद्भुत सुंदर, अखंड अनुपम, जल धारा वहेती...(२)
निर्मल पावन, परम पावन, मुज आतमने करती..
विश्व कल्याणने काज, करीए महा अभिषेक...
आत्म कल्याणने काज, करीए मंगल अभिषेक.. करीए...॥२॥

(3) झूले महावीरजी खेले महावीरजी...

झूले महावीरजी खेले महावीरजी,
झीणी झीणी घूघरीओ गावे;
रूडां पारणिये रमे देव देवीओने गमे,
मोंघा महेलोमां बाळपण वितावे... ॥१॥

फूलनी पथारीमां, पोढे छे प्रेमथी,
देवताओ गीतो संभळावे;
अंगुठे अमृतनो, आनंद ए ले छे,
त्रिशलाजी पारणुं झुलावे. ॥२॥
चांदलियो आंखोमां, शीतलता आंजे छे,
सूरजनुं तेज छे कपाळे;
होठ तो हंमेश हसे, गाले गुलाल वसे,
सौने बांधे छे प्रेमजाळे... ॥३॥

(४) तारी अभिषेक धारा...

(रागः रमैया वता वैया...)

तारी अभिषेक धारा, तारी अभिषेक धारा,
जोई दुःख जाये अमारा, जोई दुःख जाये अमारा... ॥१॥
सोनाना कलशो भराय, हांडा कुंभो भराय,
क्षीरनीरनां जाणे सागर लहेराय (२),
केवी धारा वरसे, जोवा हैया तलसे,
ए धारा झीलसे नक्की भव ए तरसे (२)
सागरीया ओछा पडे, भक्तिनी जोड ना जडे,
आदेश्वर छे अमारा, आदेश्वर छे अमारा... तारी०॥२॥
चोसठ इन्द्रो आवे, इन्द्राणीओ आवे,
बधा भक्तिमां भींजाय कोरा कोई ना रही जाय (२)
मळी आवे नरनार, आजे आनंद अपार,
हैयुं थाये एकतार, जाणे मुक्तिनो अणसार (२),
प्रभु छे मोटी हस्ती, भक्तोनी जामे मस्ती,
कर्मो गळी जाय पोबारा, कर्मो नासी जाय नठारा, तारी०॥३॥



(५) मारा रूपाळा भगवान...

ओ मारा रूपाळा भगवान, तमारुं रूप भूलावे भान,
तमारो उजळो उजळो वान, तमारुं रूप भूलावे भान. ॥१॥
तारी अणियारी पांपणमां, मने मोरपींछ देखातुं;
तारा भाल-तिलकमां जाणे, के मेघधनुष विखरातुं,
तारा प्रेम तणी पहेचान. तमारुं०॥१॥
कोई हळवे हळवे हाथे, तारा अंग अंगने लूंछे;
पेलुं अंगलूंछणुं पूछे, तारा देहथी कोमळ शुं छे?
आ दुनिया छे कुरबान. तमारुं०॥२॥
हुं फूल चडावुं तुजने, तो फूल घणुं शरमातुं;
सौंदर्य तमारुं निरखी, एनुं अंग गुलाबी थातुं,
तारुं दर्शन अमृत पान. तमारुं०॥३॥
हे भुवन विमोहन स्वामी! त्रिभुवनने भले विसारो;
पण उदयरतन झंखे छे, तारी आंखनो नेह-इशारो,
मारी विनंती धरजो कान. तमारुं०॥४॥



(६) वीर झूले, त्रिशला झुलावे...

वीर झूले त्रिशला झूलावे,धीरे धीरे मीठा मीठा गीत सुणावे, ॥१॥
घडी रमे घडी हसे करे मनमानी, शिशु बनीने खेले जगनो स्वामी!
प्यार भरी माता पोढाडे, पोढाडे. धीरे धीरे०॥२॥
सोनानां फूमतां, हीरानां झूमखां, पारणिये बांध्या, मोतीना झूमखां,
झळहळां तेज करे निलम परवाळा, रूपा केरी घंटडीना थाय रणकारा,
हीरातणी दोरी बंधावे, बंधावे. धीरे धीरे०॥३॥
माता हरखाती, मनमां मलकाती, मुखडुं देखीने, ममता छलकाती,
चुमी भरे व्हाल करे, बने घेली घेली, हैयुं वरसावे हेतनी हेली,
स्नेहभर्या नयणे निहाळे, निहाळे. धीरे धीरे०॥४॥

(७) सोना रूपाना कळशे...



(राग : ये बंधन तो...)

सोना रूपाना कळशे प्रभुने नवरावुं हरसे,
पावन नदीओना पाणी, देवो लाव्या छे ताणी,
आ धारा तो.. पुण्यनी धारा छे.. प्रभुजी तो म्हारा छे. ॥१॥
वादळ उमटे रोज गगनमां अभिषेक जळ भरवा,
हुं पंचेन्द्रिय छुं पण चाहुं एकेन्द्रिय पद धरवा,
तारा अंग अंगना स्पर्शे खळ-खळ थईने हुं नाचुं,
तारी अभिषेक पूजामां हुं एज विचारे राचुं... आ...॥२॥
देवोनी दुनियानो मेळो लाग्यो छे आकाशे,
स्पर्श तमारो पामी स्वामी! मेरु पण भींजाशे,
अभिषेकनी रंग छटाओ, तव मस्तक उपर वहेती,
ए जोवा देवनी आंखो जाणे अनिमेष रहेती. आ...॥३॥
रोज परोढे जळनी धारा थईने चरण पखाळुं,
सूर्य उदयना तेजे, चमके मुखडुं तारुं रूपाळुं,
लई आवुं मेघ सवारी भरी आवुं जळनी झारी,
पक्षाल पूजामां आजे लावुं कळशो शणगारी... आ..॥४॥

(८) सोनाना पारणीये झूले...

(राग : चांदी जैसा रंग हैं तेरा...)

प्रेम अने करुणाथी सोहे जेना रुडा गाल,
सोनाना पारणीये झूले माँ त्रिशलानो लाल...
जन्म महोत्सव करवा सौए मेरु उपर आवे,
देव विमाने बेसी इन्द्र-इन्द्राणी हुलरावे,
देश देशना जळ मंगावी प्रभु ने सौ नवरावे,
माडी केरा जाया उपर, सौना वरसे व्हाल... सोनाना०॥१॥

झगमग झगमग ज्योति एना, नयनोमांथी वरसे,
त्रण भुवननो स्वामी आजे, बाळ बनीने हरखे,
बाळने जोई माता घेली, घेली थईने हरखे,
हैयाथी चांपीने माडी, चूमे एना गाल... सोनाना०॥२॥
सूर्य अधिका तेजे सोहे, कंचन वर्ण शरीर,
पुत्र लक्षण पारणे देखी, पारखी लीधुं हीर,
शांत सलुणा मुखे सोहे, समता रस गंभीर,
एना दरिशन करता करता, कोटी थया छे न्याल... सोनाना०॥३॥



(९) हाथमां कळशा भरी आज...

(रागः गुरुए आप्यो ओघो...)

अभिषेक काजे आवतो, करवा निर्मल देह,
तुज नाममां अंकित करुं, करमोनो करुं छेद...
हाथमां कळशा भरी आज, नवरावुं मारा नाथ (२)
जळ उमंगे भरुं, विविध सुगंध करुं (२)
बनवा निर्मळ नाथ... हाथमां कळशा...॥१॥
मेरुगिरी आवे छे,
सुरपति लावे छे भावे प्रभुमां अंकित रे (२)
नदीओना जळ वहे,
देवो आनंद लहे निर्मळ थाए चित्त रे (२)
जोई तारा रूपने, भुलुं स्वरूपने (२)
थावुं मारे एकाकार... हाथमां कळशा...॥२॥
क्षीरोदधि पाणी छे, प्रभुजीनी वाणी छे करुणारसे रेलाय रे (२)
सुखड चंदन, केशर कस्तुरी, अंगेअंग फेलाय रे (२)
प्रभु देदार जोई, मन आनंदे होई (२)
निर्मल आंखो वरसे छे... हाथमां कळशा...॥३॥

अजब धुन अर्हम्‌नी

(१) अजब धुन अर्हम् नी लागी रे...

(रागः देशी)

अर्हम् अर्हम् अर्हम् अर्हम्
अजब धुन अर्हम् नी लागी रे (२),
आ धुने मारो आतम गयो जागी रे,
अजब धुन अर्हम् नी लागी रे...
के अर्हम् अणु अणुमां गाजे, के अर्हम् परमाणुमां गाजे,
आ धुने मारो आतम गयो जागी रे... अजब धुन...॥१॥
के अर्हम् रोमे रोमे गाजे, के अर्हम् रग रगमां दोडे रे,
आ धुने मारो अहं गयो भागी रे... अजब धुन...॥२॥
के अर्हम् होठे होठे गाजे, के अर्हम् हैये हैये बिराजे,
आ धुने मारा दुर्गुण गयां भागी रे... अजब धुन...॥३॥
के अर्हम् शंखेश्वरमां गाजे, के अर्हम् सिद्धाचलमां गाजे,
आ धुने मारो आतम गयो जागी रे... अजब धुन...॥४॥

(२) आणी मन शुद्ध आस्था...

आणी मन शुद्ध आस्था, देव जुहारुं शाश्वता;
पार्श्वनाथ मनवांछित पूर, चिंतामणी मारी चिंता चूर. ॥१॥
अणियाली तारी आंखडी, जाणे कमल तणी पांखडी;
मुख दीठे दुःख जावे दूर, चिंतामणी मारी चिंता चूर. ॥२॥
को कोईने कोईने नमे, मारा मनमां तुं ही रमे;
सदा जुहारुं उगते सूर, चिंतामणी मारी चिंता चूर. ॥३॥

मुज मन लागी तुजशुं प्रीत, दूजो कोई न आवे चित्त;
कर मुज तेज प्रताप प्रचूर, चिंतामणी मारी चिंता चूर. ॥४॥
शंखेश्वरना साचा देव, अशुभ कर्मने पाछा ठेल;
तुं छे मारे हाजरा हजूर, चिंतामणी मारी चिंता चूर. ॥५॥
आ स्तोत्र जे मनमां धरे, तेहना चिंत्या काज सदाय सरे;
आधि-व्याधि दुःख जावे दूर, चिंतामणी मारी चिंता चूर. ॥६॥
भवोभव देजो तुम पद सेव, श्री चिंतामणी अरिहंत देव;
'**समयसुंदर**' कहे गुण भरपूर, चिंतामणी मारी चिंता चूर. ॥७॥



(3) आदेश्वर वंदना...

आदेश्वर जिनराजने भावे करुं हुं वंदना,
मारा शत्रुंजयना ताजने भावे करुं हुं वंदना...
मरुदेवाना नंदने भावे करुं हुं वंदना,
मुज पळपळना आनंदने (२) भावे करुं हुं वंदना. आदीश्वर०॥१॥
मुज आंखलडीना तारने भावे करुं हुं वंदना,
मुज हृदयना धबकारने (२) भावे करुं हुं वंदना. आदीश्वर०॥२॥
पुण्यतणां भंडारने भावे करुं हुं वंदना,
गुणो तणां दरबारने (२) भावे करुं हुं वंदना. आदीश्वर०॥३॥
विश्वहितेश्वरने भावे करुं हुं वंदना,
राजराजेश्वरने... (२) भावे करुं हुं वंदना. आदीश्वर०॥४॥
संयमना दातारने भावे करुं हुं वंदना,
मोक्ष तणा दातारने (२) भावे करुं हुं वंदना. आदीश्वर०॥५॥



मारवाडी भक्ति गीत

(१) एक बार मुखडो बताओ...

एक बार मुखड़ो बताओ दीनानाथ जी,
थोरी मोहनी (२) मूरत लागे प्यारी, आदेश्वर अरज सुणो ॥१॥
सिद्धाचल रा राजा थे तो विमलाचल रा राजा ओ,
मरुदेवी रा (२) लाडका लाला, आदेश्वर अरज सुणो ॥२॥
युगला धर्म निवारक दादा, भव तारक भगवान ओ,
मारा वालाजी (२) सुनंदा रा कंत, आदेश्वर अरज सुणो ॥३॥
बाहुबली तार्या दादा, भरत जी तार्या ओ,
मारी नाव (२) लगावो भव पार, आदेश्वर अरज सुणो ॥४॥
दादा थाने मालुम होवे, थारे चरणे आया ओ.
नहीं भूलोंला (२) थारो ऊपकार, आदेश्वर अरज सुणो ॥५॥
कोयलडी बोले, मीठा मोरीयाजी बोले ओ,
थोरो नैन करे रे पुकार, आदेश्वर अरज सुणो ॥६॥

(२) ओ गुरुसा

ओ गुरु सा थोरो चेलो बनुं मैं,
के थोरो चेलो बनुं मैं, हर पल तेरे साथ रहूँ मैं. ॥१॥
पहला रुषभदेव जिनजी ने वोंदु (२)
के चौवीसमा महावीर स्वामी देवन को,
हर पल तेरे साथ रहूँ मैं.. ॥२॥

श्रावन का महिना होगा, उसमे होगी राखी (२)
तुं राखी तेरी डोर बनुं मैं (२)
हरपल तेरे साथ रहूँ मैं.. ॥३॥
अनंत चोवीसी ने नीत उठ वोंदु (२)
के वीस विहरमान देवण को,
हर पल तेरे साथ रहूँ मैं.. ॥४॥
भादरवा महिना होगा, उसमे होगी बारीश (२)
तुं बादल तेरी बुंद बनुं मैं,
हर पल तेरे साथ रहूँ मैं.. ॥५॥
ग्यारह गणधर जिनजी ने वोंदु (२)
के तरन तारन गुरु देवन को,
हर पल तेरे साथ रहूँ मैं.. ॥६॥
कार्तिक का महिना होगा, उसमे होगी दीवाली (२)
तुं दीपक तेरी ज्योत बनु मैं (२)
हर पल तेरे साथ रहूँ मैं.. ॥७॥
सोलवा श्री शांतिनाथ जिणजीने वोंदु (२)
के तीवसमा पारसनाथ देवन को,
हर पल तेरे साथ रहूँ मैं.. ॥८॥
फागुन का महिना होगा, उसमे होगी होली (२)
तुं पीचकारी तेरा रंग बनुं मैं
हर पल तेरे साथ रहूँ मैं.. ॥९॥





(3) झूलो झूलो रे थे तो...

झूलो झूलो रे थे तो त्रिशला रा जाया,
थांने झुलावे आखो मारवाड रे, आखो गुजरात रे,
थे तो त्रिशला रा जाया... ॥१॥

सोना रा पारणिया मांही, रत्नोरी घुंघरिया लगाई,
फूलो से पैने सजवाई मोतियो री झांझरिया लगाई,
रेशम री नीली पीली डोरी हाथ रे,
थे तो त्रिशला रा जाया... ॥२॥

मोमा मोमी थारे काजे, झबला टोपी लावे आजे,
गालो में गुलाब छांटे, आँखो में काजलिया लगाये,
लाडु मंगावे थारे मोतीचूर रे,
थे तो त्रिशला रा जाया... ॥३॥

त्रिशला माता हरखे हरखे, धीरे धीरे हलवे हलवे,
वीर ने पोढावे मलके, हालरियो गावे ने ललके,
जनमिया रे मारी कुखे तारणहार रे,
थे तो त्रिशला रा जाया... ॥४॥

धन्य धन्य हो त्रिशला माता, जण्या जेने त्रिभुवन नाथ,
जुग जुग जीवो जगत रा त्राता, संघ रे माथे राखजो हाथ,
संघ झुलावे थोने पारणीये हो...
थे तो त्रिशला रा जाया... ॥५॥



(४) नाकोडा रा पारसजी...

मारो बेडो लगा दीजो पार, नाकोडा रा पारसजी ॥
दुनिया में थोरो परचो भारी, महिमा अपरंपार,
नाकोडा रा पारसजी... मारो ०॥१॥
भैरुजी थोरी चौकी पूरे, जग रा तारणहारा,
नाकोडा रा पारसजी... मारो ०॥२॥
देश देशोंरा जातरु आवे, करता जय जय कार,
नाकोडा रा पारसजी... मारो ०॥३॥
मनवांछित फल देवो सबने, जिनवर जगदाधार,
नाकोडा रा पारसजी... मारो ०॥४॥
जैन अजैन सभी गुण गावे, ऊतरे भव जल पार,
नाकोडा रा पारसजी... मारो ०॥५॥
कर्म भयंकर काटो सब रा, करतां घणो उपकार,
नाकोडा रा पारसजी... मारो ०॥६॥
मंगलकारी पार्श्व प्रभुजी, तीन भुवन करतार,
नाकोडा रा पारसजी... मारो ०॥७॥
श्री शांति मंडल थोरी भावना भावे, सफल हुआ अवतार,
नाकोडा रा पारसजी... मारो०॥८॥



(५) प्रभुजी आछी लागी रे...

प्रभुजी आछी लागी रे थारी प्रीतडी,
मारा मनडा में जागी जगमग ज्योत प्रभुजी....॥१॥
प्रभुजी तारा दर्शन सुं सुख निपजे (२) निपजे (२)
थारी ओलूडी (२) आवे रे घणी आज प्रभुजी...॥२॥
प्रभुजी लगनी लागी रे थारी नामरी (२) नामरी (२)
मारा अन्तर में (२) उठे रे हिलोर प्रभुजी...॥३॥

प्रभुजी भक्ति करवा रा घणा कोड है (२) कोड है (२)
लागो मनडा ने (२) मीठो घणा नाथ प्रभुजी...॥४॥
प्रभुजी तारा वियोगे छाती धुजती (२) धुजती (२)
दादा मांगू मांगू (२) थारी माया नाथ. प्रभुजी...॥५॥
दादा श्री शांति मंडल'री सुणजो विनती (२) विनती (२)
थारा नैन ने बोलावो थारे पास प्रभुजी...॥६॥

(६) बोल बोल आदेश्वर व्हाला...

बोल बोल आदेश्वर व्हाला, कांई थारी मरजी रे,
मांसू मुंढे बोल, बोल बोल... ॥१॥
माता मरुदेवी वाट जोवन्ता, इतने बधाई आई रे,
आज ऋषभजी उतर्या बाग में सुण हरसाई ने. मांसू०॥२॥
न्हाय धोय ने गज असवारी करी मरुदेवी माता रे,
जाय बाग में नन्दन निरख्यो पाई शाता रे. मांसू०॥३॥
राज छोड़ने निकल्या रिषभो, आ लीला अद्भुति रे,
चंवर छत्र ने और सिंहासन, मोहिनी मूरति रे. मांसू०॥४॥
दनभर बैठी वाट जोवंती, कद मारो रिषभो आवे रे,
कहती भरत ने आदिनाथ री, खबरां लावों रे. मांसू०॥५॥
किसी देश में गयो वालेश्वर, तुज बिन विनती सूनी रे,
बात कहो दिल खोल लालजी, यों बण गया मुनि रे. मांसू ० ॥६॥
रह्या मजा में, हो सुख पाता, खूब किया दिल चाया रे,
अब तो बोल आदेश्वर मांसू, कलपे काया रे. मांसू०॥७॥
खैर हुई सो हो गई व्हाला, बात भली नहीं कीनी रे,
गया पछे कागद नहीं दीनो, मारी खबरां न लीनी रे. मांसू०॥८॥
ओलंभा में देउं कठालन, पाछो क्यूं नहीं बोले रे,
दुःख जननी से देख आदेश्वर, हिवडो तोले रे. मांसू ०॥९॥

अनित्य भावना भाई मात, निज आतम ने तारी रे,
केवल पामी मोक्ष सिधाया, ज्याने वंदना हमारी रे. मांसू०॥१०॥
मुक्ति का दरवाजा खोल्या, मरुदेवी माता रे,
काल असंख्य रह्या उघाडा, जम्बू जड़ गया ताला रे. मांसू ०॥११॥
साल बहत्तर तीर्थ ओसिया, गयवर मुनि गुण गाया रे,
मूरति मनोहर प्रथम जिणंद की, प्रणमुं पाया रे. मांसू०॥१२॥



(७) भक्ति की है रात...

भक्ति की है रात...
भक्ति की है रात दादा आज थाने आणो है,
भक्ति की है रात...
भक्ति की है रात दादा आज थाने आणो है,
मने थारो ही सहारो है...
केसरीया सरकार वेगा आवो आवो
सुनो हे दरबार वेगा आवो... ॥१॥
दरबार ओ दादा, ऐसो सज्यो प्यारो, दयालु आपरो.
सेवा में दादा सगला खडा द्वारे, हुकुम बस आपरो,
सेवा में थारी (२) मोने आज बिक जानो है
भक्ति की है रात... केसरीया सरकार वेगा आवो. ॥२॥
भक्ति की है प्यारी भक्ति करा जमकर, दादा क्यो देर करो?
वादो थासे दादा भक्ति में आने को तनिक क्यो देर करो,
भजना सु थाने (२) दादा आज रिझानो है,
भक्ति की है रात केसरीया सरकार वेगा आवो. ॥३॥
जो कुछ बन्यो मासु अर्पण करु थोने दादा स्वीकार करो... (२)
मासुम हु गलती होती ही आयी है, दादा हमे माफ करो... (२)
मण्डल ओ दादा (२) थारो बहुत पुरानो है... (२)
भक्ति की है रात केसरीया सरकार वेगा आवो. ॥४॥

(८) म्हारी अरजी सुणो...



म्हारी अरजी सुणो ने भगवान पारसनाथ,
नाकोडा रा दादा थोरे पाय लागु,
में तो भव भव रो दुःखियो चरणे.
आयो दीनानाथ, नाकोडा रो दादा... ॥१॥
सुखद सुरिलो बचपन खोयो, खो दी झबक जवान (२)
मोने मारग भूल्यो ने दरसण दीजो दीनानाथ! (२)
नाकोडा रो दादा...॥२॥
धरणेन्द्र पद्मावती कीधां नाग नागीणी तार,
बाबा कमठ योगी से गर्व घाल्यो दीनानाथ! (२)
नाकोडा रो दादा. ..॥३॥
भवसागरमां, भमता लाखो दुःखियो ने थे तार्या,
म्हारी क्युं नहीं सुणो थे, फरीयाद वामानंद! (२)
नाकोडा रो दादा...॥४॥
मन वंचित फल पावन सारु... शांतिनाथ मंडल आया,
स्वामी सेवक ने चरणों में राखो दीनानाथ (२)
नाकोडा रो दादा...॥५॥

(९) वारी जाउं रे...



(राग : राजस्थानी जैन लोकगीत)

वारी जाउं रे, बलिहारी जाउं रे... (२)
मारा जिनवर मने भाया, मैं वारी जाउं रे... (२) ॥१॥
मंगल गाओ रे, सखी चौक पुरावो रे,
मेरा मन अत आनंद पाया, मैं वारी जाउं रे... (२) ॥२॥
जिनवर मने भाया, मारे हिवडे आनंद छाया,
मारी निर्मल हो गयी काया, मैं वारी जाउं रे... (२) ॥३॥

वारी जाउं रे, बलिहारी जाउं रे... (२)
मारा जिनवर मनडे भाया, मैं वारी जाउं रे... (२) ॥४॥



(९०) हर जनम में दादा तेरा साथ चाहिए...

(राग : देखा एक ख्वाब तो...)

हर जनम में दादा तेरा साथ चाहिए,
सर पे मेरे दादा तेरा हाथ चाहिए,
सिलसिला ये टूटना नहीं चाहिए,
मुजको तो बस इतनी सी सौगात चाहिए... ॥१॥
मेरी आंखो के तुम तो तारे हो,
जान से ज्यादा मुझे प्यारे हो,
रुठे सारी दुनिया, तुम रुठना नहीं,
मुजको तो बस इतनी सी सौगात चाहिए... ॥२॥
मुझपे तेरी कृपा ये कम ना है,
फिर भी छोटी सी एक तमन्ना है,
मर ना जाये दादा तुम्हे याद करके,
जीते जी एक तुमसे मुलाकात चाहिए... ॥३॥
मेरी दुनिया को तुम बसाये हो,
सांसो में तुम समाये हो,
दिन में साथ साथ तुम रहो मेरे,
सपनो में आते रहो, वो रात चाहिए... ॥४॥

अहो! जिनशासनम्

(१) अहो! जिनशासनम्...

वंदन हो वीरने शौर्यरसधारने, समता भंडार वळी करुणावतारने;
आपनुं शासन पामी... आप कने मांगतो,
केसरियो रंग... जिनशासननो आपजो... केसरियो रंग०॥१॥
साडा बार वर्षोनी साधनाना अंतमां,
वैशाखी सांजे वसे ज्ञाननी वसंतमां;
वरसे जिन मेहुलो... जैनत्व वहावतो... केसरियो रंग०॥२॥
इन्द्र-चक्री-राजा-सुकानीना पद तणुं,
शासनविहीन हुं मनुष्यपणुं अवगणुं;
शासन सुभटनी... पदवी प्रभु! आपजो... केसरियो रंग०॥३॥
सत्ता-सौंदर्य-सुकानने न मापतो,
शासननी तोले हुं क्रोडो ना मानतो;
देवोना मालिकने... डींगो बतावतो... केसरियो रंग०॥४॥
राजवीओ मंत्रीओ श्रेष्ठीओ ने श्रावको,
वीरवचन वाहको शासनना चाहको;
आदर्शो एमना... अंतरे वसावजो... केसरियो रंग०॥५॥
शासनने काजे जेणे सुख साह्यबी त्यजी,
शासनने काजे जेणे जीदंगी धरी दीधी;
शासन शहीदोने... अंजलि हुं आपतो... केसरियो रंग०॥६॥
वायरो विषम तेथी मुजने उगारजो,
दईने प्रशम कुणा काळजाने ठारजो;
काष्ठ सीसम शी मने... मक्कमता आपजो... केसरियो रंग०॥७॥

कर्मथी ने काळथी कुमित्रोना वारथी,
रक्षा करजो मारी वासना प्रहारथी;
काबरियो चीतरेलो... रंग आ उतारजो... केसरियो रंग०॥८॥
व्हाला मारा वीरजी! वारस बनावजो,
श्यामळ पाषाण छुं आरस बनावजो,
श्रद्धाना स्वर्णस्पर्शे... पारस बनावजो... केसरियो रंग०॥९॥
शासन हीलनाने टाणे अम हृदय दाझता,
पडकारो देखीने आंखे अश्रु बाझता,
हैयाना भाव फळे... एवुं बळ आपजो... केसरियो रंग०॥१०॥
हिंमत खूटे ना कदी श्रद्धा तूटे ना;
शासनना राग सामे कोई कदी ना;
शांतिनी पळमां के... साहसनी चळवळमां... केसरियो रंग०॥११॥
सूर्य तेज सूरिवरनुं आंखे चमकावजो,
पुण्य तेज तेमनुं कार्यमां झळकावजो;
ज्ञान तेज तेमनुं... बुद्धिए समावजो... केसरियो रंग०॥१२॥
शासननी चाले मुज पगलां मंडावजो,
शासनना व्हाले मुज आतमा पलाळजो;
शासनना ताले मुज... रोम रोम नाचजो... केसरियो रंग०॥१३॥
शासन आराधना पळपळ हुं मांगतो,
शासन प्रभावना हुं घट घटमां चाहतो;
शासन सेवाना रूडा अवसरिया आपजो... केसरियो रंग०॥१४॥
तारा शासननो छुं प्रेमी सदायनो,
तारा शासननो हुं ऋणी सदायनो;
सेवक छुं सैनिक छुं... तत्परता आपजो.. केसरियो रंग०॥१५॥

शासनना दीवडामां तन मननुं तेल दई,
शासनना कोडियामां जीवतरनी वाट थई;
प्रगटेला दीवडाने... प्रगटेलो राखजो... केसरियो रंग०॥१६॥
भवोभव मळजो शासन भावना ए भावजो,
पाम्या शासन तेनी धन्यता अनुभवजो;
अंतर कहे छे पछी... कर्मने हंफावजो... केसरियो रंग०॥१७॥
मारा अंतरनी काळाश बधी काढजो,
साधु जीवननी सफेदी मने आपजो;
सर्व जीव मैत्रीनी... हरियाळी आपजो.. केसरियो रंग०॥१८॥
अर्हंनो नाद दिनरात रहे गाजतो,
सिद्धोनी शुद्धिनुं लक्ष्य हुं साधतो;
केसरियो चांदलो... भाले चमकावजो... केसरियो रंग०॥१९॥
श्वासने शरीरथी अधिक चहुं शासनम्,
रोम रोमे नाद गुंजे अहो! जिनशासनम्;
भक्ति, मैत्री, शुद्धिने, शौर्यथी सजावजो.. केसरियो रंग०॥२०॥

(२) आ शासन तारणहारु...

(राग : ये बंधन तो../सोना रूपाना कळशे...)

आ शासन तारणहारु, आतम पावन करनारुं
जीवोनुं हित करनारु, आ भवथी तारणहारु
आ शासन तो प्राणथी प्यारुं छे, जिनशासन अमारुं छे... ॥१॥
जे शौर्य सरिता वहावे, क्षमा सुगंध प्रसरावे,
बळ जो हो तो निर्बळना, रक्षणने जे शीखवाडे;
जे विषधरने पण ठारे, अभिमानीने पण वारे,
लालचने जे ललकारे, विकराळ काळ पडकारे आ शासन०॥२॥

जेणे झील्युं छे रोम रोममां, श्वास श्वासमां शासन,
हर घडी हर पळ जस नेत्रमां, जाणे थयुं अधिवासन;
जेणे भौतिकताने त्यागी, थावा शासनना रागी,
तस चरणे हुं लागुं छुं, ने आलंबन मांगु छुं. आ शासन०॥३॥
जेम उदधि उछाळे तरंगो, जयां दीठे पूनम चंदा,
शासन सेवा अवसर देखी, तिम उछाळे आ बंदा;
नवि गणु तन मनने स्वजन ने, नहीं धन ने, ने जीवनने,
एम थातु घडी घडी मनने, सवि जीव चाहे शास नने. आ शासन०॥४॥



(3) जिनवर! तारुं शासन... आ जगमां...

(राग : चाहा है तुझको...)

जिनवर! तारुं शासन... आ जगमां छे महान,
एना आधारे... मारे तरवो आ संसार,
मने एज तारशे भवपार उतारशे,
मझधारमां नैया कांठे पहोंचाडशे,
एवी मुजने श्रद्धा छे.. साची साची श्रद्धा छे,
दृढ मुजने श्रद्धा छे... पाके पाये श्रद्धा छे... ॥१॥
नश्वर संबंधो ज्यारे साथ छोडशे,
त्यारे निश्चय मारो हाथ पकडशे,
समजण देशे...सांत्वना देशे... शक्ति पण देशे,
भूलो जो पडीश मुजने... मार्ग देखाडशे,
ढीलो जो पडीश मारुं... सत्त्व ए वधारशे... ॥२॥
मुंझवण थशे तो मार्गदर्शन आपशे,
अवढवमां साची मने समजण आपशे,
मोक्षमार्गनुं... एकांते आकर्षण आपशे,

पुरुषार्थ करशे एने... आधार आपशे,
समर्पित थयेलानुं... ध्यान सदा राखशे... ॥३॥
अज्ञान अंधकारने ए दूर करशे,
ज्ञानना अजवाळा ए जरुर करशे,
सत्त्व देशे... तत्त्व देसे... मिथ्यात्व हरशे,
अशुद्ध एवा आतमाने शुद्ध ए बनावशे,
साधना करावी अंते... सिद्ध पण बनावशे... ॥४॥
शासन एकांते सहुने सुखदायी छे,
शासनथी विपरीत बहु दुःखदायी छे,
जिनशासननी... प्रत्येक आज्ञा... शिरदायी छे,
आज्ञा जे पाळशे ते... शिवसुख पामशे,
शरणे जशे जे एना... भवदुःख भांगशे... ॥५॥

(४) जिनशासन का परचम लहरा दो...

(रागः लहरा दो)

जैनी है हम आज के, दुनिया को जाके बोल दो, बोल दो..
ऐसे जागो रे साथियों, दुनिया की आँखें खोल दो, खोल दो..
लहरा दो लहरा दो, जिनशासन का परचम लहरा दो...
बहने दो बहने दो, ज्ञान की गंगा घर घर बहने दो.. ॥१॥
अहिंसा परमो धर्म अपना, जयणा अपनी माता है, (२)
देव गुरु और धर्म दिखाए, सच्चा मार्ग वो होता है; (२)
सच्ची श्रद्धा दिल में हो तो, परमात्मा सम होता है,
जा जमाने को दिखा दे, सच्चा सुख क्या होता है... ॥२॥



(५) वंदे शासनम्...

वंदे शासनम्... वंदे शासनम्...
वंदे शासनम्.. वंदे शासनम्...
ओ वीर तारुं शासन मुजने प्राण थकी पण प्यारुं,
तारा शासन काजे जीवी फीटवानी हिंमत धारुं,
तारा शासन काजे मरी फीटवानी हिंमत धारुं...
वंदे शासनम् (२) ॥१॥

वैशाख सुद अगियारस दिवसे, शासन स्थाप्युं तें तो,
भव तरवा काजे ए नावडु, तरतुं मूक्युं तें तो,
जन्म्या अमे जिनशासन मांही, गौरव एनो धारुं...
वंदे शासनम् (२) ॥२॥

चोर लुटारु डाकु तर्या, तारा आ शासनथी,
आशा छे निश्चय अमे तरशुं, भीम भयंकर भवथी,
लोही तणा आ बुंदे बुंदे, शासन प्रेम वधारुं...
वंदे शासनम् (२) ॥३॥

जिनशासननी रक्षा काजे, कुरबानी छे मारी,
अंगे अंगे व्यापी रही छे, जिनशासन खुमारी,
प्राण अमारो ऋण तमारुं, हे वीर शासन तारुं...
वंदे शासनम् (२) ॥४॥

विषय केरी आग ने ठारे, शासनरूपी पाणी,
पापी ने पण पुनित करती, वीरनी मधुरी वाणी,
रग रग मांही नस नस मांही, वसजो शासन तारुं...
वंदे शासनम् (२) ॥५॥

जुग जुग सुधी जग हितकाजे, जीवो आ जीनशासन,
एना चरणे धरशु अमे आ, तन मनने नर जीवन,
शासन केरी ज्योति कापे, पाप तणुं अंधारुं...
वंदे शासनम् (२) ॥६॥

शासन केरी भक्ति करतां, देह भले छुटी जातो,
मोत मळे शासन खातर तो, अंगे हरख न मातो,
जयवंतु जिनशासन पामी, लागे जग आ खारुं...
वंदे शासनम् (२) ॥७॥

(९) शासन मेरे शासन मेरे आबाद रहे तुं...

(राग : ए वतन वतन मेरे आबाद रहे तुं...)

शासन मेरे शासन मेरे आबाद रहे तुं,
शासन मेरे शासन मेरे मेरी जान है रे तुं,
मोक्षमार्ग की ही एक पहचान है तुं,
शासनम् जिन शासनम्... ॥१॥
तुं ही मेरी मंझिल है पहचान तुझी से (२),
रहुं मैं जहां भी मेरी बुनियाद रहे तुं (२), शासन मेरे०...॥२॥
तुझपे कोई गम की आंच आने नहीं दूं (२)
कुर्बान मेरी जान तुझ पे शाद हे तुं. शासन मेरे०...॥३॥





(७) रजा आपो हवे दादा!..

(राग : तमे आंखे कर्युं...)

रजा आपो हवे दादा!, अमारी वात थई पूरी,
अधूरी वात छे तोये, आ मुलाकात थई पूरी. अमारी०॥१॥
कर्यां कामण तमे एवां, अमे तारा बनी बेठा,
तमारी प्रीतमां घायल, अमे घेला बनी बेठा,
तमे आधार थई बेठा, अमे लाचार थई बेठा. अमारी०॥२॥
तमे सरिता तणी लहेरो, तमे सागर घणो गहेरो,
तमारा स्मितनां पुष्पो, अने झाकळ भीनो चहेरो,
तमारा मुखने जोयुं, हवे फरियाद थई पूरी. अमारी०॥३॥
स्मरण तारुं हंमेशां दे, मरण टाणे समाधि दे,
रहे निर्लेपता सुखमां, अने दुःखमां दिलासो दे,
फक्त जो आटलुं आपो, अमारी मांगणी पूरी. अमारी०॥४॥
उदय विनवे छे कर जोडी, फरी आवीश हुं दोडी,
झुकावी आंखने अमथी, रजा आपो हवे थोडी,
जवानुं मन नथी थातुं, अमारी आज मजबूरी. अमारी०॥५॥
दीवाओ साव बूझ्या, तेल खूट्युं, रात थई पूरी. अमारी०
अमारो कंठ थाक्यो, गान थंभ्युं, वात थई पूरी... अमारी०
तमे मोक्षे जई बेठा, अमे संसार लई बेठा... अमारी०
अधूरी वात थई पूरी, मधुरी वात थई पूरी. अमारी०॥६॥

सज्झाय विभाग

(१) जगत है स्वार्थ का साथी...



जगत है स्वार्थ का साथी, समज ले कौन है अपना
ये काया काचका कुंभा, नाहक तुं देख के फूलता,
पलक में फूट जावेगा, पत्ता ज्युं डालसे गिरता. जगत०॥१॥
मनुष्यकी एसी जींदगानी, अबी तु चेत अभिमानी;
जीवनका क्या भरोसा है? करी ले धर्मकी करणी. जगत०॥२॥
खजाना, मालने मिल्कत, क्युं कहेतां मेरा मेरा तुं?
ईहां सब छोड जाना हे, न आवे साथ अब तेरा. जगत०॥३॥
कुटुंब-परिवार-सुत-दारा, सुपन सम देख जग सारा;
नीकल जब हंस जावेगा, उसी दिन हे सभी न्यारा. जगत०॥४॥
तरे संसार सागर को, जपे जो नाम जिनवर को;
कहे '**खांति**' वही प्राणी, हटावे कर्म जंजीर को. जगत०॥५॥

(२) धर्म दृढता की सज्झाय...



(रागः तुं प्रभु मारो, हुं प्रभु तारो...)

जुओ रे जुओ जैनो केवा व्रतधारी;
केवा व्रतधारी आगे थया नरनारी रे;
थया नरनारी तेने वंदना हमारी. जुओ०॥१॥
जुओ जुओ जंबूस्वामी, बाळ वये बोध पामी;
तजी भोग रिद्धि जेणे, तजी आठ नारी. जुओ०॥२॥
गजसुकुमाल मुनि, धखे शिर पर धूणी;
अडग रह्या ते ध्याने, डग्या ना लगारी. जुओ०॥३॥

कोश्याना मंदिर मध्ये, रह्या मुनि स्थूलभद्र;
वेश्या संग वासो तोये, थया ना विकारी. जुओ०॥४॥
सती ते राजुल नारी,जगमां न जोडी एनी;
पतिव्रता काजे कन्या, रही ते कुंवारी. जुओ०॥५॥
जनक सुता ते सीता, बार वर्ष वनमां वीत्या;
घणुं कष्ट वेठ्युं तोये, डग्या ना लगारी. जुओ०॥६॥
धन्य धन्य नरनारी, एवी दृढ टेक धारी;
जीवित सुधार्युं जेणे, पाम्या भव पारी. जुओ०॥७॥
एवुं जाणी सुज्ञजनो, एवा उत्तम आप बनो;
'**वीरविजय**' धर्म प्रेमे, दीए गति सारी. जुओ०॥८॥

(3) क्रोधनी सज्झाय...

कडवा फळ छे क्रोधनां, ज्ञानी एम बोले;
रीसतणो रस जाणीए, हलाहल तोले. ॥१॥
क्रोधे क्रोड पूरवतणुं, संजम फळ जाय;
क्रोध सहित तप जे करे, ते तो लेखे न थाय. ॥२॥
साधु घणो तपीओ हतो, धरतो मन वैराग;
शिष्यना क्रोध थकी थयो, चंडकोशीयो नाग. ॥३॥
आग ऊठे जे घर थकी, ते पहेलुं घर बाळे;
जळनो जोग नवि मळे तो, पासेनुं परजाळे. ॥४॥
क्रोध तणी गति एहवी, कहे केवळ नाणी;
हाणकरे जे हेतनी जाळवजो एम जाणी. ॥५॥
'**उदयरत्न**' कहे क्रोधने, काढजो गळे साही;
काया करजो निर्मळी, उपशम रसे नाही. ॥६॥

अनुक्रमणिका-२ (अकारादि क्रम से प्राचीन स्तवन)

अंतरजामी सुण अलवेसर... २२०
अखियां दरिशन की है... २२१
अखियां हरखण लागी... २२१
अजब बनी रे मेरे... १०२
अजित अजितजिन... ७८
अजित जिणंद दया करो रे... ७९
अजित जिणंदशुं प्रीतडी... ८०
अजित जिणंदा!... ८०
अजित जिणेसर चरणनी... ८१
अजित जिनेश्वर सांभळो रे... ८१
अनंत जिनराजना चरणनी... १४६
अनंत प्रभु के आश की... १४७
अनंतविरज अरिहंत!... ३००
अब में साचो साहिब... ३०२
अब मोहे! ऐसी आय... २२२
अबोलडां शाना लीधां छे... ३०२
अभिनंदन जिन दरिसण... ९२
अभिनंदन स्वामी हमारा... ९३
अर जिनवर दीये देशना... १८१
अरज सुणो हो नेम... २०४
अरनाथकुं सदा मोरी... १८०
अष्ट भवांतर वालहो रे... २०५
अहा! केवुं भाग्य जाग्युं... २५६
अहो भवि प्राणी रे... ३३८
अहो श्री सुमति जिन... ९७
अहो! अहो! पासजी!... २२२
आई बसो भगवान... २२३
आज जिनराज मुज... २८४
आज जिनराज! मुज काज... २५७
आज मनोरथ माहरो... २२४
आज मारा प्रभुजी सामुं... ३०३
आज मारां नयणां सफळ... ३८
आज सफल दिन मुज तणो... १९१
आनंद की घडी आई... ३०४
आव आव रे माहरा मनडा... २५८
ऊंचा ऊंचा शत्रुंजयनां... ३८
ऋषभ जिणंद दयाल रे... ६२
ऋषभ जिणंदशुं प्रीतडी... ६२
ऋषभ जिणंदा ऋषभ... ६३
ऋषभ जिनराज मुज आज... ६३
ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम... ६५
ऋषभदेव हितकारी... ६५
एक दिन पुंडरीक... ५७
एकवार बोलो मारां नाथ... २०७
एकवीसमा जिन आगलेजी... १९७
ऐसी दशा हो भगवन... ३९
ओलगडी अवधारो... २२४
ओलगडी तो कीजे ... १९२
करुणायर प्रभु वीनवुं रे... १४८
करुणासागर जीवजीवन... २५९
कुंथु जिनेश्वर जाणजो रे... १७४
कुंथु जिनेश्वर साचो देव... १७५
कुंथु जिनेश्वर साहिब... १७६
कोयल टहुंकी रही मधुवन... २२५
क्युं कर भक्ति करुं... ३०५
क्युं जाणुं कयुं बनी आवशे... ९३

क्युं न भये हम मोर... ४०
क्युं न हो सुनाई स्वामी... १०७
क्षण क्षण सांभरो शांति... १६१
गढ गिरनारे जई रह्या रे... २०७
गिरिराजकुं सदा मोरी... ४३
गिरिवर दरिसण विरला... ४०
गिरुआ रे गुण तुम तणा... २६०
गोयम कहे सुणो वीरजी रे... २६०
चंद्रप्रभ चित्तमां वस्या... ११२
चंद्रप्रभ जिन साहिबा रे... ११३
चंद्रप्रभनी चाकरी नित्य... ११३
चउमासी पारणुं आवे... २६१
चित्त समरी शारदा... २२६
छेल्लो बोध आपी... २६२
जईने रहेजो मारा वालाजी... २०८
जग जनमन रंजे रे... १६२
जगचिंतामणि जगगुरु... ६६
जगजीवन जगवालहो... ६७
जगत दिवाकर जगत... १६३
जगपति तुं तो देवाधिदेव!... २६२
जय! जय! पास जिणंदा... २२७
जिणंदा! वे दिन क्युं... ३०५
जिन तेरे चरण की शरण... ३०६
जिनजी त्रेवीशमो जिन पास... २१९
ज्ञान अनंतु ताहरे रे... १४८
ज्ञानादिक गुण संपदा रे... ८२
ज्ञानी विण किण आगळ... १७६
तमे महाविदेह जईने... २८५
तार तुज तार मुज... २२७
तार मुज तार मुज तार... १६४
तार हो तार प्रभु मुज... २६३
तारक बिरुद सुणी करी... १३०
तारजो दीन दयाळ... १३५
तारा नयना रे प्याला... २२८
तारी मूरतिए मन मोह्युं रे... २८६
तारी मूरतिनुं नहि... २२९
तारे वयणे मनडुं वींध्युं रे... २६४
ताहरी अजबशी योगनी... ११८
तुं गत मेरी जाने जिनजी... ८३
तुं पारंगत तुं परमेश्वर... १६५
तुं प्रभु मारो हुं प्रभु... २३०
तुज मुख सन्मुख निरखतां... १२५
तुम दरिसण भले पायो... ६७
तुमे बहु मैत्री रे साहेबा... १३१
तेरो दरश मन भायो... २६४
तो बिन ओर न जाचुं... ३०६
तो शुं प्रीत बंधाणी... २६५
तोरण आवी रथ फेरी गया... २०९
थाशुं प्रेम बन्यो छे राज... १५३
दादा आदीश्वरजी दूरथी... ६८
दिल भरी दरिशन पाउं के... १९३
दिलभर दरशन पाउं रे... १९८
दिलरंजन जिनराजजी रे... ९९
दीठी हो प्रभु दीठी जगगुरु... ९४
दीठो सुविधि जिणंद... ११९
दीन दुखियानो तुं छे... २६६
दुःख दोहग दूरे टळ्यां रे... १४१
देखण दे रे सखी! मुने... ११४
देखत ही चित्त चोर लियो... २०९
देखो माई! अजब रुप... २१०
द्वारापुरीनो नेम राजियो... २१०
धन दिन वेळा धन घडी... १६६
धन्य धन्य क्षेत्र महाविदेहजी... २८७
धरम जगनाथनो धर्म... १५४
धरम परम अरनाथनो... १८१
धर्म जिनेश्वर गाउं रंगशुं... १५५
धर्म जिनेश्वर धर्मधुरंधर... १५७
धर्म जिनेश्वर सुण... १५७
धार तलवारनी सोहिली... १४९
ध्रुवपद रामी!... २३०

नवपद धरजो ध्यान... ३३९
ना रे प्रभु नहि मानुं... २६७
नाभिराया वंशे वारुं... ६८
नित्य समरुं साहिब... २३२
निरंजन नाथ मोहे... ३०६
निरखी निरखी तुज बिंबने... १०८
निरख्यो नेमि जिणंदने... २०४
नीलुडी रायण तरु तळे... ५५
नेमजी रे... तोरणे... २११
नेमि जिनेश्वर निज... २११
नेमि निरंजन नाथ... २१२
पंचम सुरलोकना वासी रे... १८६
पंथडो निहाळुं रे... ८३
पद्मप्रभ जिन जई अलगा... १०३
पद्मप्रभ जिन! तुज मुज... १०३
पद्मप्रभ प्राण से प्यारा... १०४
परमातम पूरणकला... २१३
परमानंद विलासी... ३०७
पायोजी! मैंने तेरो... ३०७
पारसनाथ आधार... २३३
पार्श्व जिणंदा वामाजी... २३३
पार्श्व जिन! ताहरा... २३४
पास शंखेश्वरा सार... २३४
पुक्खलवई विजये जयो रे... २८८
पूजना तो कीजे रे बारमा... १३६
प्यारा सीमंधर स्वामी... २८८
प्रणमुं पद पंकज पासना... २३५
प्रणमो श्री अरनाथ... १८२
प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए... ६१
प्रभाते ऊठी करुं वंदना रे... २८९
प्रभु जगजीवन जगबंधु... २३६
प्रभु तुज दरिशन मळीयो... ९५
प्रभु तुज नाम छे नाथ... १५०
प्रभु तेरी मूरति मोहनगारी... १०५
प्रभु पार्श्व जिणंद सदा... २३७
प्रभु मल्लिजिणंद शांति... १८७
प्रभु मेरे ऐसी आय... ३०८
प्रभु! ताहरो ताग... १८३
प्रभु! तेरे नयन की... ९६
प्रभुजी! तुम दीठे... ३०८
प्रभुजी! मुज अवगुण... १४२
प्रीतलडी बंधाणी रे विमल... ४१
प्रीतलडी बंधाणी रे... ८४
बापलडा रे पातिकडा तुमे... ४२
बालुडो निःस्नेही थई गयो... ७०
बाळपणे आपण ससनेही... ६९
बेर बेर नहि आवे... ३०९
भक्तवत्सल प्रभु सांभळो... ७०
भक्ति सदा सुखदाई... ३०९
भरतनी पाटे भूपति रे... ४३
भवजल पार उतार... २३७
भवियण वंदो भावशुं रे... २१४
भेटीए भेटीए... २३८
मन मोह्युं प्रभु गुण... ३१०
मनडुं किमहि न बाजे हो... १७७
मनना मनोरथ सवि... ४४
मनमंदिर मोहन आवीये... २६७
मनमोहन प्रभु पासजी... २३८
मल्लि जिणंद सदा नमीये... १८७
मल्लि जिणेसर मुजने... १८८
मल्लिनाथ जगनाथ ... १८८
महावीरस्वामी रे विनंती... २६८
माता त्रिशलानंद कुमार... २६९
माता मरुदेवीना नंद... ७१
मारा साहिब! श्री अरनाथ... १८४
मारी नावलडी मझधार... ३१०
मारुं मन मोह्युं रे... ४५
मारो मुजरो ल्योने राज... १६६
मुख खोल जरा... २३९
मुज घट आवजो रे नाथ... ११५

मुज मन पंकज भमरलो... १९८
मुज मन भमरो... १०९
मुज मनडामां तुं वस्यो रे... १२६
मुज सरीखा मेवासी ने... २३९
मुजरो ल्योने माहरो साहिबा... ८६
मुनिसुव्रत जिन वंदतां... १९४
मुनिसुव्रत जिनराय... १९३
मुनिसुव्रत मन मोह्युं मारुं... १९५
मूरति हो प्रभु मूरति... १५१
मेरे प्रभुशुं प्रगट्यो... ३११
मेरे साहिब तुम हि हो... २४०
मेरो प्रभु पारस... २४१
मेरो मन! कितही न लागे... १३१
मेरो मन! हरखे प्रभु... ३१२
मैं आज दरिसण पाया... २१५
मैं कीनो नहीं... १२०
यात्रा नव्वाणुं करीए... ४५
राधा जेवा फूलडां ने... २४१
रीझो रीझो श्री वीर देखी.... ३३४
रुडी ने रढियाळी रे... २७०
लघु पण हुं तुम मन नवि... १२१
लागी रे मुने! धर्म... १५८
लाग्यो लाग्यो प्रभ शुं नेह... ९९
वर्धमान जिनवरना... २७१
वामानंदन जगदानंदन... २४२
वामानंदन वंदना... २४२
वासुपूज्य जिन अंतरजामी... १३६
वासुपूज्य जिन त्रिभुवन... १३७
विनंती कैसे करुं... ३१२
विमल जिन विमलता... १४३
विमल जिनेश्वर जगतनो... १४३
विमल जिनेश्वर मुज... १४४
विमलगिरि वंदो रे... ४७
विमलगिरि विमलता... ४६
विमलगिरि शिखर सुंदर... ४६
विमलनाथ मुज मन वसे... १४४
विमलाचल नितु वंदीए... ४८
विरह से भयो रे उदासी... २७१
वीर जिणंद जगत... २७२
वीर जिनेश्वर चरणे... २७२
वीर वड धीर महावीर... २७३
वीर वहेला आवो रे... २७४
वीर विण वाणी कोण... २७६
वीरजी सुणो एक... २७६
शत्रुंजय गढना वासी रे... ४८
शरण तुमारे आयो... २४३
शा माटे साहिब... २४४
शांति जिन एक मुज... १६७
शांति जिनेश्वर साचो... १६८
शांति जिनेश्वर साहिबा रे... १६८
शांति! तेरे लोचन है... १६९
शासन नायक शिवसुख... २५५
शीतल जिन मोहे प्यारा... १२६
शीतल जिनपति प्रभुता... १२७
शीतल जिनपति ललित... १२८
शुभ वेळा शुभ अवसरे... ८५
शोभा शी कहुं रे शेत्रुंजा... ४९
श्री अनंतजिन शुं करो... १५२
श्री अरजिन भवजलनो... १८५
श्री चंद्रप्रभ जिनपद सेवा... ११५
श्री चिंतामणी प्रभु... २४४
श्री जगनाथ जगगुरु देव रे... ७२
श्री जिनवरने प्रगट थयुं रे... ३२७
श्री नमि जिनवर सेव... १९९
श्री नमिजिननी सेवा करतां... १९९
श्री नमिनाथने चरणे... २००
श्री पद्मप्रभ जिन गुणनिधि... १०५
श्री पद्मप्रभना नामने रे... १०६
श्री मुनिसुव्रत साहिबा रे... १९५
श्री राजगृही शुभ ठाम... ३२९

श्री वासुपूज्य नरिंदनोजी... १३८
श्री शंकर चंद्रप्रभ रे लो... ११६
श्री शंखेश्वर निज रंगी... २४५
श्री शांति जिनेश्वर दीठो... १६९
श्री शीतलजिन भेटीए... १२८
श्री श्रेयांस कृपा करो... १३२
श्री श्रेयांस जिन अंतरजामी... १३२
श्री श्रेयांस जिन साहिबा... १३३
श्री श्रेयांस प्रभु तणो... १३३
श्री संभव जिनराजजी रे... ८७
श्री संभवजिन साथे में तो... ८७
श्री सीमंधर जिनवर स्वामी... २९०
श्री सीमंधर विनंती... २९०
श्री सीमंधर साहिबा सुणो... २९१
श्री सीमंधर साहिबा हुं... २९२
श्री सीमंधर साहिबा... २९१
श्री सीमंधरस्वामी मुक्तिना... २९३
श्री सुपास आनंदमें... १०९
श्री सुपास जिन वंदीए... ११०
श्री सुपास जिनराज... १११
षट्दरशण जिन अंग... २०१
संभव जिन जब... ८८
संभव जिनवर खुब बन्यो रे... ८९
संभव जिनवर विनंती... ९०
संभवदेव ते धुर सेवो सवे रे... ९०
सकल समता सुरलतानो... ३१३
समकित दाता समकित... ९१
समय समय सो वार... २४५
समरथ साहिब समता... ७२
समवसरण बेसी करी रे... १७८
सरस्वती स्वामीने पाये... २७७
सहज गुण आगरो... २४६
सार कर सार कर स्वामी... २४७
साहिबा जिनराज हमारा... १३८
साहेलां हे कुंथु जिनेश्वर... १७९
सिद्धगिरि मंडण पाय... ७३
सिद्धाचल शिखरे दीवो रे... ५०
सिद्धाचलगिरि भेट्या रे... ५१
सिद्धाचलना वासी... ५२
सिद्धाचलनो वासी प्यारो... ५२
सिद्धारथना रे नंदन... २७८
सीमंधर जिन वंदीऐ... २९४
सुखदाई रे सुखदाई... २४८
सुगुण सुगुण सौभागी... ७४
सुण सुगुण सनेही... २७९
सुणजो शाजन संत... ३३३
सुणो चंदाजी! सीमंधर... २९४
सुणो पार्श्व जिनेश्वर... २४९
सुणो शांति जिणंद!... १७०
सुणो शांति जिनेश्वर... १७१
सुणो सुविधि जिणंद... १२२
सुमति चरणकज आतम... १००
सुमतिनाथ गुणशुं मिलीजी... १००
सुरजमंडन पार्श्व जिणंदा... २५०
सुविधि जिणंद मुज... १२३
सुविधि जिणेसर पाय... १२४
सेवक किम अवगणीए हो... १८९
सेवो भवियां विमल... १४५
सोलमा शांति जिनेश्वर देव... १६०
स्वामी तुमे कांई कामण... १३९
हम मगन भये प्रभु ... १७२
हम लीने हे प्रभु... ३१३
हुं तो पाम्यो प्रभुना पाय... ७५
हे प्रभु! पार्श्व... २५०
हो अविनाशी! नाथ... २५१
हो जिनवरजी अब मेरे... १४०
हो मन! ते तो क्युं जिन... १०१

सुबह-शाम के पच्चक्खाण



सुबह के पच्चक्खाण

नवकारशी-मुट्ठिसहिअं: उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाई, (पच्चक्खामि) चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाईमं, साईमं अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरई (वोसिरामि)

पोरिसि-साड्ढपोरिसि-पुरिमड्ढ-अवड्ढः उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, सूरे उग्गए पुरिमड्ढं, अवड्ढं, मुट्ठिसहिअं, पच्चक्खाई, (पच्चक्खामि), उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाईमं, साईमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरई (वोसिरामि)

आयंबिल-नीवि-एकासणुं-बियासणुं: उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं सूरे उग्गए पुरिमड्ढं, अवड्ढं, मुट्ठिसहिअं, पच्चक्खाई, (पच्चक्खामि), उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाईमं, साईमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं, आयंबिलं, निव्विगईअं विगईओ पच्चक्खाई (पच्चक्खामि) अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खित्त-विवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं, एगासणं, बियासणं, पच्चक्खाई (पच्चक्खामि), तिविहंपि, आहारं, असणं, खाईमं, साईमं अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरई (वोसिरामि)

चउविहार उपवासः सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं, पच्चक्खाई, (पच्चक्खामि), चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाईमं, साईमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं, वोसिरई (वोसिरामि)

तिविहार उपवासः सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाई, (पच्च्क्खामि), तिविहंपि आहारं, असणं, खाईमं, साईमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं, पाणहार, पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, सूरे उग्गए पुरिमड्ढं, अवड्ढं, मुट्ठिसहिअं, पच्चक्खाई, (पच्चक्खामि), अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेणवा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरई (वोसिरामि)

देशावगासिकः देसावगासियं, उवभोगं, परिभोगं, पच्चक्खाई (पच्चक्खामि) अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं, वोसिरई (वोसिरामि)

शाम के पच्चक्खाण

पाणहारः पाणहार दिवसचरिमं, पच्चक्खाई (पच्चक्खामि), अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं, वोसिरई (वोसिरामि)

चउविहार-तिविहार-दुविहारः दिवसचरिमं, पच्चक्खाई (पच्चक्खाई), चउविहंपि, आहारं, तिविहंपि आहारं, दुविहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाईमं, साईमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरई (वोसिरामि)

मुट्ठिसिः मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाई (पच्चक्खामि), अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरई (वोसिरामि)

मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाण पारवानुं सूत्रः मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाण फासिअं पालिअं, सोहिअं, तीरिअं, किट्टिअं, आराहिअं, जं च न आराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं.

तिविहार उपवास पच्चक्खाण पारवानुं सूत्रः सूरे उग्गए उपवास कर्यो तिविहार, पोरिसि, साढपोरिसि, सूरे उग्गए पुरिमड्ढ, अवड्ढ, मुट्ठिसहिअं, पच्चक्खाण कर्युं पाणहार पच्चक्खाण फासिअं, पालिअं, सोहिअं, तीरिअं, किट्टिअं, आराहिअं, जं च न आराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं.

(एक से अधिक उपवास का पच्चक्खाण लिया हो, तो दूसरे दिन 'पोरिसीथी...मिच्छामि दुक्कडं' तक का पाठ बोलना।)

आयंबिल-नीवि-एकासणुं-बियासणुं पारवानुं सूत्रः उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसि, साढपोरिसि, सूरे उग्गए पुरिमड्ढं, मुट्ठिसहिअं, पच्चक्खाण कर्युं चउविहार, आयंबिल-नीवि-एकासणुं-बियासणुं पच्चक्खाण कर्युं तिविहार, पच्चक्खाण फासिअं, पालिअं, सोहिअं, तीरिअं, किट्टिअं, आराहिअं, जं च न आराहिअं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

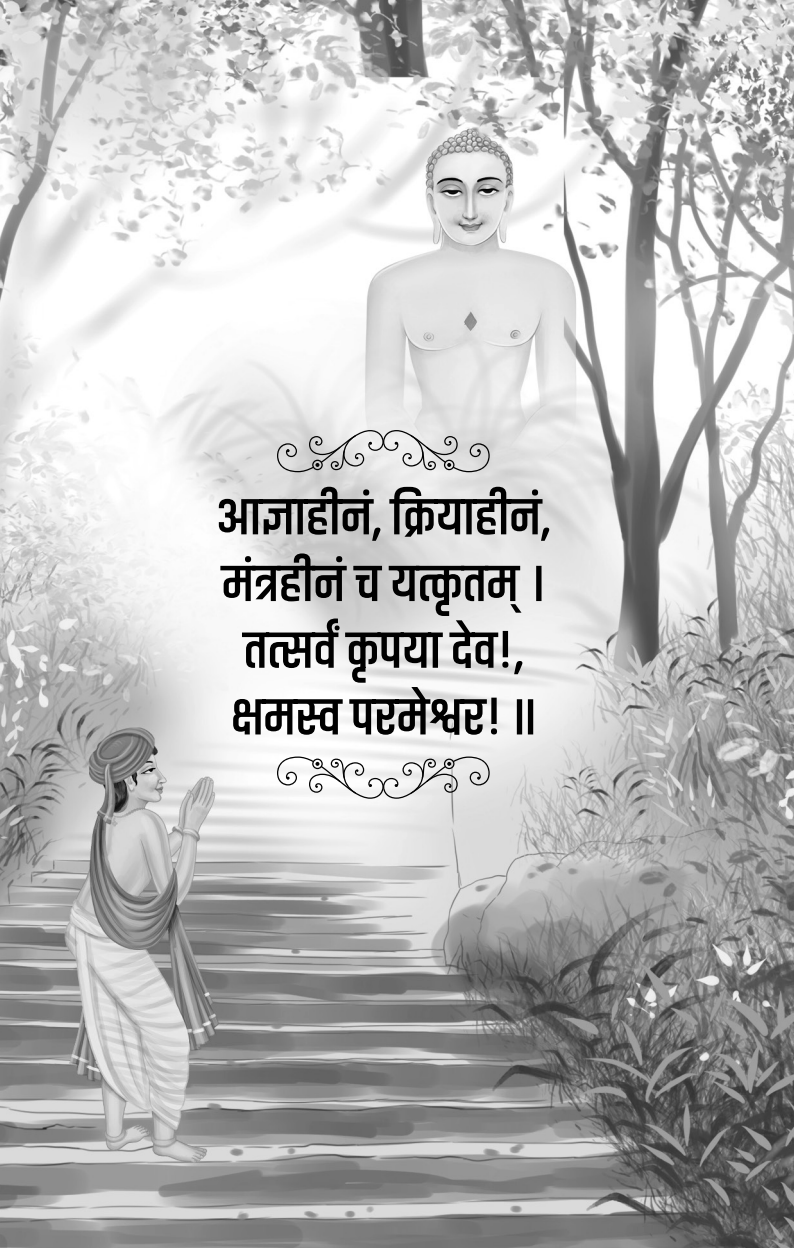
आज्ञाहीनं, क्रियाहीनं,
मंत्रहीनं च यत्कृतम् ।
तत्सर्वं कृपया देव!,
क्षमस्व परमेश्वर! ॥



Instagram

Youtube

श्री आनंदघनजी, महो.यशोविजयजी, श्री देवचंद्रजी, श्री ज्ञानविमलसूरिजी वगैरह

भक्तियोगाचार्यों के ऐसे स्तवन कि जो पूर्व में सरल राग में गाये हुए नहीं होने से आज तक बहुत ही कम लोगों में प्रचलित हुए हैं। ऐसे साधना, अध्यात्म और भक्ति के गूढ रहस्यों से तरबतर

60 से भी अधिक प्राचीन स्तवनों का नूतन भाववाही रागों में पुनर्जीवन...

सुनने के लिए Scan कीजिए

प्रभावना उपयोगी पुस्तक

प्रभुभक्ति में डूबने के लिए घर-घर में

बसाने जैसी पुस्तक...

इस पुस्तक ने अनेक भक्तहृदयों पर कामण किया है। उपधान, नव्वाणुं, संघ, ओली, तपश्चर्या, चातुर्मास, सामायिक मंडल, पाठशाला, शिबिर आदि अनुष्ठान में भेंट देकर दूसरों को भी भक्ति में तरबतर करने का लाभ प्राप्त कीजिए।



केवां तुं कामण करे

'ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम माहरो रे...'
आ छे पू. आनंदघनजी भगवंत नी
पवा वाणी.

प्रभु छे प्रियतम.
'मने ओ ज व्हालो, ओ ज व्हालो.
जीजुं कोई नाहि व्हालुं, जीजुं ४शुं
नाहि व्हालुं...
प्रभुने प्रियतम बनाववा माटेनुं पहेलुं
पगथियुं: 'केवा तुं कामण करे, तुज
विण जीजुं ना गमे..'



PARMESHWAR STUDIOS
+91 9901754118